CTET 2022 -23

SST

सामाजिक अध्ययन

PART – 1

PAPER – 2

SACHIN CHOUDHARY

SACHIN ACADEMY

FARMAN MALIK

CP STUDY POINT

SACHIN ACADEMY

YouTube

WARNING

The E-Notes is Proprietary & Copyrighted Material of **Sachin Academy**. Any reproduction in any form, physical or electronic mode on public forum etc will lead to infringement of Copyright of **Sachin Academy** and will attract penal actions including FIR and claim of damages under Indian Copyright Act 1957.

ई-नोट्स **Sachin Academy** के मालिकाना और कॉपीराइट सामग्री है। सार्वजनिक मंच आदि पर किसी भी रूप, भौतिक या इलेक्ट्रॉनिक मोड में किसी भी तरह फैलाने से **Sachin Academy** के कॉपीराइट का उल्लंघन होगा और भारतीय कॉपीराइट अधिनियम 1957 के तहत प्राथमिकी और क्षति के दावे सहित दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

NOTE - कुछ लोगो ने ये नोट्स शेयर किये थे या इन्हे गलत तरीके से बेचा था तो उनके खिलाफ कानून कार्यवाही की जा रही है इसलिए आप अपने नोट्स किसी से भी शेयर न करे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

PART - 1

Geography

भूगोल

ACADEMY 9855977782

खगोलीय पिंड (Celestial Bodies)

- सूर्य, चंद्रमा तथा वे सभी वस्तुएँ जो रात के समय आसमान में चमकती हैं, **खगोलीय पिंड** कहलाती हैं। खगोलीय पिंडों को **तारा (stars)** कहते हैं। सूर्य भी एक तारा है।
- तारों के विभिन्न समूहों द्वारा बनाई गई विविध आकृतियों को **नक्षत्रमंडल (Constellation)** कहते हैं। **अर्सा मेजर या बिग बीयर** इसी प्रकार का एक नक्षत्रमंडल है। उत्तरी तारा उत्तर दिशा को बताता है। इसे **ध्रुव तारा (Pole Star)** भी कहा जाता है।
- कुछ खगोलीय पिंडों में अपना प्रकाश एवं ऊष्मा नहीं होती है। वे तारों के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। ऐसे पिंड **ग्रह (Planets)** कहलाते हैं।
- **उपग्रह** एक खगोलीय पिंड है, जो ग्रहों के चारों ओर उसी प्रकार चक्कर लगाता है, जिस प्रकार ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं।

- **पौराणिक रोमन** कहानियों में **'सोल'** सूर्य देवता को कहा जाता है। 'सौर' शब्द का अर्थ है, सूर्य से संबंधित। इसीलिए सूर्य के परिवार को **'सौरमंडल (Solar System)** कहा जाता है।

आकाशगंगा (Galaxy)

- तारों वाले, खुले आकाश में, एक ओर से दूसरी ओर तक फैली **सफ़ेद चौड़ी पट्टी** जो एक चमकदार रास्ते की तरह दिखाई देती है यह लाखों तारों का समूह है। यह पट्टी **आकाशगंगा** है। हमारा सौरमंडल इस आकाशगंगा का एक भाग है।
- इस प्रकार की लाखों आकाशगंगाएँ मिलकर **ब्रह्मांड (Universe)** का निर्माण करती हैं।

SACHIN ACADEMY 9956977782

सौरमंडल (Solar System)

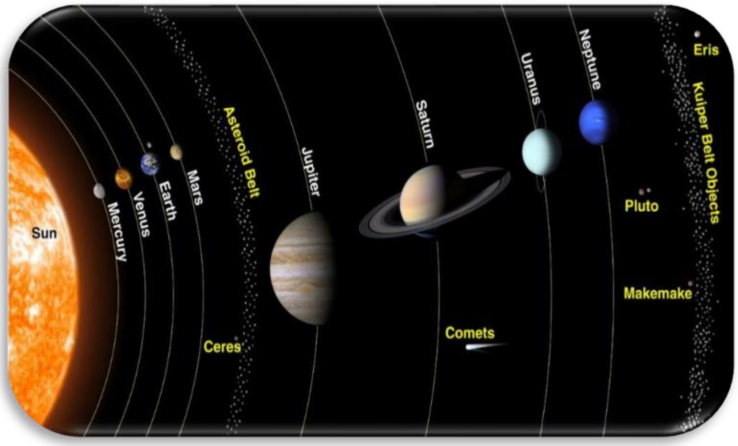

सूर्य, आठ ग्रह **(planets),** उपग्रह **(Satellite)** तथा कुछ अन्य खगोलीय पिंड **(celestial bodies),** जैसे **क्षुद्र ग्रह (Asteroids) एवं उल्कापिंड (meteoroids)** मिलकर सौरमंडल **(Solar System)** का निर्माण करते हैं।

सूर्य (The Sun)

- सूर्य सौरमंडल के केंद्र में स्थित है। यह बहुत बड़ा है एवं अत्यधिक गर्म गैसों से बना है। सूर्य, सौरमंडल के लिए प्रकाश **(Light)** एवं ऊष्मा **(Heat)** का एकमात्र स्रोत है। सूर्य पृथ्वी **(Earth)** से लगभग 15 करोड़ किलोमीटर दूर है।
- सूर्य के सबसे ज्यादा निकट तारा **प्रोक्सिमा सेंचुरी** है।
- प्रकाश की गति लगभग 3,00,000 किमी./प्रति सेकंड है। इस गति को पृथ्वी तक पहुँचने में लगभग **8 मिनट 19 सेकंड** का समय लगता है।

ग्रह (Planets)

- हमारे सौरमंडल में आठ ग्रह हैं। सूर्य से दूरी के अनुसार, वे है- बुध **(Mercury),** शुक्र **(Venus),** पृथ्वी **(Earth),** मंगल **(Mars),** बृहस्पति **(Jupiter),** शनि **(Saturn),** यूरेनस **(Uranus)** तथा नेप्च्यून **(Neptune)।** सौरमंडल के सभी आठ ग्रह एक निश्चित पथ **(fixed paths)** पर सूर्य का चक्कर लगाते हैं। ये रास्ते दीर्घवृत्ताकार **(elongated)** में फैले हुए हैं। ये **कक्षा (Orbits)** कहलाते हैं। **बुध** सूर्य के सबसे नजदीक का ग्रह है।
- ग्रह का अपने अक्ष पर घूमना **घूर्णन (Rotation)** कहलाता है। सूर्य के चारों ओर एक स्थिर कक्ष में पृथ्वी की गति को **परिक्रमण (Revolution)** कहते हैं। पृथ्वी का अक्ष

खगोलीय पिण्ड (2003 UB_{313}, सिरस) तथा **प्लूटो** 'बौने ग्रह **(Dwarf Planets)** कहे जाते है।

- शुक्र एवं यूरेनस को छोड़कर सभी ग्रह घड़ी की सूई के विपरीत दिशा में परिभ्रमण करते हैं। इन दोनों ग्रहों की परिभ्रमण की दिशा घड़ी की सूई की दिशा में होती है।

बुध (Mercury)

- बुध ग्रह सौरमंडल के आठ ग्रहों में सबसे छोटा और सूर्य का सबसे निकटतम ग्रह है। इसका परिक्रमण काल लगभग **88 दिन** है। इसका कोई उपग्रह नहीं है ।

शुक्र (Venus)

- शुक्र पृथ्वी का सबसे निकटतम और सौरमंडल का **सबसे गर्म ग्रह** है। **Venus** Planet को यह नाम प्रेम और **सुंदरता की देवी (रोमन देवी)** के नाम पर दिया गया है। शुक्र ग्रह चंद्रमा के बाद रात के समय आकाश में **सबसे अधिक चमकीला ग्रह** है। इस ग्रह को **पृथ्वी की बहन** भी कहा जाता है क्योंकि Venus Planet का द्रव्यमान व आकार पृथ्वी के आकार के लगभग बराबर है । इसका कोई उपग्रह नहीं है ।
- शुक्र ग्रह को भोर का तारा (morning star) तथा सांझ का तारा (Evening Star) भी कहते है।

पृथ्वी (The Earth)

- सूर्य से दूरी के हिसाब से पृथ्वी तीसरा ग्रह है। आकार में, यह पाँचवाँ सबसे बड़ा ग्रह है। यह **ध्रुवों (poles)** के पास थोड़ी **चपटी** है। यही कारण है कि इसके आकार को **भू-आभ (Geoid)** कहा जाता है। भू-आभ का अर्थ है, पृथ्वी के समान आकार।
- पृथ्वी के पास केवल एक **उपग्रह (Satellite)** है, चंद्रमा।
- अंतरिक्ष से देखने पर पृथ्वी **नीले रंग** की दिखाई पड़ती है, क्योंकि इसकी दो-तिहाई सतह पानी से ढकी हुई है। इसलिए इसे, **नीला ग्रह (Blue Planet)** कहा जाता है।

- पृथ्वी अपने अक्ष पर एक घूर्णन पूरा करने में 23 घंटे, 56 मिनट और 4.09 सेकेंड का समय लेती है।
- यह अपने अक्ष पर लम्बवत 23.5 डिग्री झुकी हुई है। इसके कारण इस पर विभिन्न प्रकार के मौसम आते हैं।
- पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा 365 दिन 6 घंटे 48 मिनट और 45.51 सेकेंड में पूरा करती है।

- **उपसौर (Perihelion) :-** जब पृथ्वी सूर्य के बिल्कुल पास होती है तो उसे उपसौर (Perihelion) कहते हैं । उपसौर की स्थिति 3 जनवरी को होती है।
- **अपसौर (Aphelion) :-** जब पृथ्वी सूर्य से अधिकतम दूरी पर होती है तो यह अपसौर (Aphelion) कहलाता है. अपसौर की स्थिति 4 जुलाई को होती है।

मंगल (Mars)

- सौरमंडल में यह ग्रह दूसरा सबसे छोटा ग्रह है। मंगल ग्रह की मिटटी मै लोह आक्साइड पाया जाता है जिससे इसका रंग लाल दिखाई देता है। इसी कारण इसे **"लाल ग्रह"** भी कहते है।
- मंगल ग्रह के दो उपग्रह **फोबोस और डिमोज़** हैं। मंगल को पृथ्वी से नंगी आँखों से देखा जा सकता है।

बृहस्पति ग्रह (Jupiter Planet)

- बृहस्पति ग्रह आकार में हमारे सौरमण्डल का **सबसे बड़ा ग्रह** है। यह अपने अक्ष पर सबसे अधिक तेजी से परिक्रमा करने वाल ग्रह है यह मात्र 9 घन्टे 56 मिनट में अपने अक्ष पर घूर्णन पूर्ण कर लेता है। बृहस्पति ग्रह के 67 उपग्रह है ।

शनि ग्रह (Saturn Planet)

- शनि ग्रह हमारे सौरमण्डल का दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है इस ग्रह के **चारो और वलय** है। **टाइटन** शनि ग्रह का सबसे बड़ा उपग्रह है। शनि ग्रह के 62 उपग्रह है ।

अरुण (Uranus)

SACHIN ACADEMY 9955697782

- यूरेनस ग्रह की खोज **विलियम हरचेल नें 1781** में की थी इसे लेटा हुआ ग्रह भी कहते हैं। यूरेनस ग्रह के 27 उपग्रह है ।

वरुण (Neptune)

- नेप्च्यून ग्रह हमारे सौर मण्डल का सूर्य से दूरी के अनुसार **सबसे दूर** का ग्रह है। यह **सबसे ठन्डा** ग्रह हैं। नेप्च्यून ग्रह के 14 उपग्रह है।

उपग्रह (Satellite)

- कुछ आकाशीय पिण्ड अपने ग्रह की परिक्रमा करते हुए सूर्य की परिक्रमा करते हैं। अपने ग्रह की परिक्रमा करने के कारण इन्हें उपग्रह कहते हैं। जैसे चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। यह पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है।
- **'मानव निर्मित उपग्रह' :-** भारत ने आर्यभट एजुसेट और ओसनसेट नामक उपग्रह बनाए है।

चंद्रमा (The Moon)

- हमारी पृथ्वी के पास केवल एक **उपग्रह (Satellite)** है, चंद्रमा। इसका व्यास **(Diametre)** पृथ्वी के व्यास का केवल एक-चैथाई है। पृथ्वी से चंद्रमा की दूरी लगभग **3,84,400 km** है। यह हमारी पृथ्वी के सर्वाधिक निकट स्थित **आकाशीय पिण्ड** है।
- चंद्रमा पृथ्वी का एक चक्कर लगभग **27 दिन 7 घंटे और 43 मिनट** में पूरा करता है।
- **नील आर्मस्ट्रांग** पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने 21 जुलाई 1969 को सबसे पहले चंद्रमा की सतह पर कदम रखा।
- चन्द्रमा का अपना कोई प्रकाश नहीं होता है। यह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है। और सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करता है। जो हमारी पृथ्वी पर लगभग **1.25 सेकेण्ड** में पहुँचता है। इस प्रकाश को चाँदनी (Moon Light) कहते हैं।

SACHIN ACADEMY 9955607782

क्षुद्र ग्रह (Asteroids)

तारों **(Stars),** ग्रहों एवं उपग्रहों के अतिरिक्त, असंख्य छोटे पिंड **(tiny bodies)** भी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। इन पिंडों को **क्षुद्र ग्रह (Asteroids)** कहते हैं। ये मंगल **(Mars)** एवं बृहस्पति **(Jupiter)** की कक्षाओं के बीच पाए जाते हैं

उल्कापिंड (Meteoroids)

सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने वाले पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़ों को **उल्कापिंड (Meteoroids)** कहते हैं। कभी-कभी ये उल्कापिंड पृथ्वी के इतने नजदीक आ जाते हैं कि इनकी प्रवृत्ति **(tend)** पृथ्वी पर गिरने की होती है। इस प्रक्रिया के दौरान वायु के साथ घर्षण **(friction)** होने के कारण ये गर्म होकर जल जाते हैं। इन्हें ही टूटता हुआ तारा कहा जाता है।

पुच्छल तारे Comets)

पुच्छल तारे अथवा धूमकेतु चट्टानों, बर्फ, धूल और गैस के बने आकाशीय पिण्ड होते हैं। गुरुत्वाकर्षण के कारण इस तारे का सिर सूर्य की तरफ तथा पूँछ हमेशा सूर्य से दूर बाहर की तरफ होती है, जो हमें चमकती दिखाई देती है।

कुइपर मेखला (Kuiper-Belt)

यह नेपच्यून के पार सौरमण्डल के आखिरी सिरों पर एक तश्तरी के आकार की विशाल पट्टी है। इसमें असंख्य खगोलीय पिण्ड उपस्थित हैं जिनमें कई बर्फ से बने हैं। धूमकेतु इसी क्षेत्र से आते हैं। प्लूटो भी इसी मेखला में स्थित है।

सूर्य ग्रहण एवं चन्द्रग्रहण

सूर्य ग्रहण :- जब सूर्य और पृथ्वी के बीच चन्द्रमा आ जाता है तो इस स्थिति को युति (Conjunction) कहते हैं। यह अमावस्या को होती है। इस स्थिति में चन्द्रमा की छाया, पृथ्वी पर पड़ती है, जिससे सूर्यग्रहण होता है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

चन्द्रग्रहण :- इसी प्रकार जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच पृथ्वी आ जाती है तो उस स्थिति को वियुति (Opposition) कहते हैं। यह पूर्णिमा को होती है। इस स्थिति में पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है, जिससे चन्द्रग्रहण होता है।

ग्लोब (GLOBE)

काल्पनिक रेखा (imaginary line) जो ग्लोब को दो बराबर भागों में बाँटती है। इसे **विषुवत् वृत्त (Equator)** कहा जाता है। पृथ्वी के उत्तर **(North)** में स्थित आधे भाग को **उत्तरी गोलार्ध (Northern Hemisphere)** तथा दक्षिण वाले आधे भाग को **दक्षिणी गोलार्ध (Southern Hemisphere)** कहा जाता है।

विषुवत् वृत्त **(Equator)** से ध्रुवों **(Poles)** तक स्थित सभी समानांतर वृत्तों **(parallel circles)** को **अक्षांश (समानांतर)** रेखाएँ **(Parallels of Latitudes)** कहा जाता है। अक्षांशों **(Latitudes)** को **अंश (Degrees)** में मापा जाता है।

1. **उत्तरी गोलार्ध में कर्क रेखा (Tropic of Cancer)** ($23\frac{1}{2}°$ **उ**)
2. **दक्षिणी गोलार्ध में मकर रेखा (Tropic of Capricorn)** ($23\frac{1}{2}°$ **द.**)
3. **विषुवत् वृत्त के $66\frac{1}{2}°$ उत्तर में उत्तर ध्रुव वृत्त (Arctic Circle)**
4. **विषुवत् रेखा के $66\frac{1}{2}°$ दक्षिण में दक्षिण ध्रुव वृत्त (Antarctic Circle)।**

पृथ्वी के ताप कटिबंध (HEAT ZONES OF THE EARTH)

कर्क रेखा (Tropic of Cancer) एवं **मकर रेखा (Tropic of Capricorn)** के बीच के सभी अक्षांशों पर सूर्य वर्ष में एक बार दोपहर में सिर के ठीक ऊपर होता है। इसलिए इस क्षेत्र में सबसे अधिक उष्मा प्राप्त होती है तथा इसे **उष्ण कटिबंध (Torrid Zone)** कहा जाता है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

कर्क रेखा तथा मकर रेखा के बाद किसी भी अक्षांश **(Latitudes)** पर दोपहर का सूर्य कभी भी सिर के ऊपर नहीं होता है। ध्रुव की तरफ सूर्य की किरणें तिरछी होती जाती हैं। इस प्रकार, उत्तरी गोलार्ध में कर्क रेखा एवं उत्तर ध्रुव वृत्त तथा दक्षिणी गोलार्ध में मकर रेखा एवं दक्षिण ध्रुव वृत्त के बीच वाले क्षेत्र का तापमान मध्यम रहता है। इसलिए इन्हें, शीतोष्ण कटिबंध **(Temperate Zones)** कहा जाता है।

उत्तरी गोलार्ध में उत्तर ध्रुव वृत्त एवं उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिण ध्रुव वृत्त एवं दक्षिणी ध्रुव के बीच के क्षेत्र में ठंड बहुत होती है। क्योंकि, यहाँ सूर्य
क्षितिज **(horizon)** से ज्यादा ऊपर नहीं आ पाता है। इसलिए ये शीत कटिबंध **(Frigid Zones)** कहलाते हैं।

- **टोंगा द्वीप (Island)** एंव हिंद महासागर में स्थित **मारीशस द्वीप** एक ही अक्षांश (20°00 द.) पर स्थित हैं।

SACHIN ACADEMY

यामयोत्तर या ध्रुववृत्त (Meridian)

पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव के मिलाने वाली और उत्तर-दक्षिण दिशा में खींची गयी

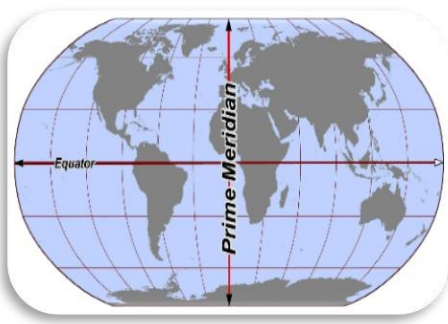

काल्पनिक रेखाओं को **याम्योत्तर या ध्रुववृत्त (Meridian)** कहते हैं। लन्दन के निकट स्थित **ग्रीनविच** से जाने वाली यामोत्तर को **'प्रधान याम्योत्तर' (Prime Meridian)** माना गया है। इसका मान **0° देशांतर (longitude)** है तथा यहाँ से हम 180° पूर्व या 180° पश्चिम तक गणना करते हैं। प्रमुख याम्योत्तर तथा 180° याम्योत्तर मिलकर पृथ्वी को दो समान भागों, **पूर्वी गोलार्ध (Eastern Hemisphere) एवं पश्चिमी गोलार्ध (Western Hemisphere)** में विभक्त करती है।

देशांतर और समय (LONGITUDE AND TIME)

समय को मापने का सबसे अच्छा साधन पृथ्वी, चंद्रमा एवं ग्रहों की गति है। स्थानीय समय का अनुमान सूर्य के द्वारा बनने वाली **परछाईं (shadow)** से लगाया जा सकता है

पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर चक्कर लगाती है, अतः वे स्थान जो ग्रीनिच के पूर्व में हैं, उनका समय ग्रीनविच समय से आगे होगा तथा जो पश्चिम में हैं, उनका समय पीछे होगा

पृथ्वी लगभग 24 घंटे में अपने अक्ष पर **360°** घूम जाती है, अर्थात् वह 1 घंटे में 15° एवं **4 मिनट में 1°** घूमती है। इस प्रकार जब ग्रीनविच में दोपहर के 12 बजते हैं, तब **ग्रीनविच** से 15° पूर्व **(east)** में समय होगा 15 × 4 = 60 मिनट अर्थात्, ग्रीनविच के समय से 1 घंटा आगे, अर्थात् वहाँ दोपहर का 1 बजा होगा। लेकिन ग्रीनविच से 15° पश्चिम **(west)** का समय ग्रीनविच समय से 1 घंटा पीछे होगा यानी, वहाँ सुबह के 11 बजे होंगे। इसी प्रकार जब ग्रीनविच पर दोपहर के 12 बजे होंगे उस समय 180° पर मध्य रात्रि **(midnight)** होगी।

किसी भी स्थान पर जब सूर्य आकाश में अपने उच्चतम बिंदु पर होता है, दोपहर में उस समय घड़ी में दिन के 12 बजते हैं। इस प्रकार, घड़ी के द्वारा दिखाया गया समय उस स्थान का **स्थानीय समय (local time)** होगा।

भारत ग्रीनविच के पूर्व 82°30' पू. में स्थित है तथा यहाँ का समय ग्रीनविच समय से **5 घंटा 30 मिनट** आगे है। इसलिए जब लंदन में दोपहर के 2 बजे होंगे, तब भारत में शाम के 7:30 बजे होंगे।

पृथ्वी की गतियां (MOTIONS OF THE EARTH)

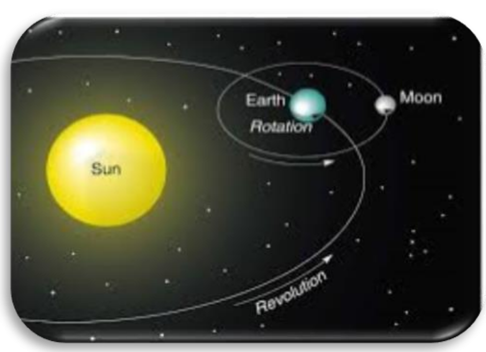

पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूमना **घूर्णन (Rotation)** कहलाता है। सूर्य के चारों ओर एक स्थिर कक्ष में पृथ्वी की गति को **परिक्रमण (Revolution)** कहते हैं। पृथ्वी का अक्ष एक काल्पनिक रेखा है, जो इसके कक्षीय सतह से $66\frac{1}{2}^{\circ}$ का कोण बनाती है। वह समतल जो कक्ष के द्वारा बनाया जाता है, उसे **कक्षीय समतल (orbital plane)** कहते हैं।

ग्लोब पर वह **वृत्त (Circle)** जो दिन तथा रात को विभाजित करता है उसे **प्रदीप्ति वृत्त (circle of Illumination)** कहते हैं।

पृथ्वी एक वर्ष या **365 दिन और 6 घंटे** में सूर्य का एक चक्कर लगाती है। हम लोग एक वर्ष 365 दिन का मानते हैं तथा 6 घंटे को इसमें नहीं जोड़ते हैं।

ये 6 घंटे चार साल में 24 घंटे हो जाते है अर्थात एक दिन तो ये एक दिन फरवरी के महीने में जोड़ दिया जाता है जिस कारण फरवरी के महीने में प्रत्येक चौथे वर्ष एक दिन बढ़ जाता है और वो महीना 29 दिन का हो जाता है जिसे **लीप वर्ष (Leap year)** कहते है।

- **ऋतुओ (Seasons)में परिवर्तन** सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की स्थिति में परिवर्तन के कारण होता है।
- **21 जून** को उत्तरी गोलार्ध **(Northern Hemisphere)** सूर्य की तरफ झुका हुआ होता है। सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर सीधी पड़ती हैं। इसके परिणामस्वरूप इन क्षेत्रों में उष्मा अधिक प्राप्त होती है।
- **21 जून** को इन क्षेत्रों में सबसे लंबा दिन तथा सबसे छोटी रात होती है। पृथ्वी की इस अवस्था को **उत्तर अयनांत (Summer Solstice)** कहते हैं।
- **22 दिसंबर** को **दक्षिण ध्रुव (South Pole)** के सूर्य की ओर झुके होने के कारण मकर रेखा पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं।
- **उत्तरी ध्रुव रेखा** के बाद वाले भागों पर लगभग 6 महीने तक लगातार दिन रहता है।
- **दक्षिणी गोलार्ध (Southern Hemisphere)** में लंबे दिन तथा छोटी रातों वाली ग्रीष्म ऋतु होती है। पृथ्वी की इस अवस्था को **दक्षिण अयनांत (Winter Solstice)** कहा जाता है।
- **आस्ट्रेलिया** में ग्रीष्म ऋतु **(summer season)** में क्रिसमस का पर्व मनाया जाता है
- **21 मार्च एवं 23 सितंबर** को सूर्य की किरणें विषुवत् वृत्त **(equator)** पर सीधी पड़ती हैं। इस अवस्था में कोई भी ध्रुव सूर्य की ओर नहीं झुका होता है, इसलिए पूरी पृथ्वी पर **रात एवं दिन बराबर** होते हैं। इसे **विषुव (equinox)** कहा जाता है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

मानचित्र (MAP)

पृथ्वी की सतह (earth's surface) या इसके एक भाग का पैमाने के माध्यम से चपटी सतह पर खींचा गया चित्र है।

मानचित्र कई प्रकार के होते है

भौतिक मानचित्र (Physical Maps)

पृथ्वी की प्राकृतिक आकृतियों जैसे- पर्वतों (mountains), पठारों (plateaus), मैदानों (plains), नदियों (rivers), महासागरों (Oceans) आदि को दर्शाने वाले मानचित्रों को **भौतिक या उच्चावच मानचित्र** (Physical or relief maps) कहा जाता है।

राजनीतिक मानचित्र (Political Maps)

राज्यों, नगरों, शहरों तथा गाँवों और विश्व के विभिन्न देशों व राज्यों तथा उनकी सीमाओं को दर्शाने वाले मानचित्र को **राजनीतिक मानचित्र** कहा जाता है।

थिमैटिक मानचित्र (Thematic Maps)

कुछ मानचित्र विशेष जानकारियाँ प्रदान करते हैं जैसे- सड़क मानचित्र, वर्षा मानचित्र, वन (forests) तथा उद्योगों आदि के वितरण दर्शाने वाले मानचित्र आदि । इस प्रकार के मानचित्र को **थिमैटिक मानचित्र** (Thematic maps) कहा जाता है।

दिशा (DIRECTION)

अधिकतर मानचित्रों में ऊपर दाहिनी (right) तरफ तीर का निशान बना होता है, जिसके ऊपर अक्षर उ. लिखा होता है। यह तीर का निशान उत्तर दिशा को दर्शाता है। इसे **उत्तर रेखा** (north line) कहा जाता है।

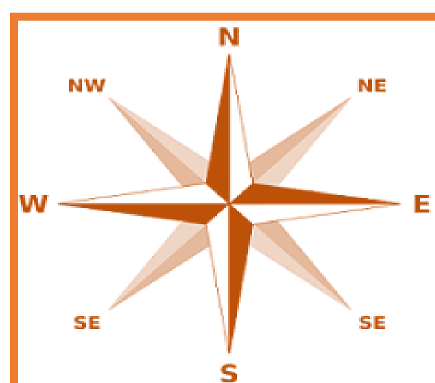

चार मुख्य दिशाओं उत्तर (North), दक्षिण (South), पूर्व (East) एवं पश्चिम (West) को **प्रधान दिग्बिंदु** (cardinal points) कहते है।

SACHIN ACADEMY 9855697782

प्रतीक (SYMBOLS)

किसी भी मानचित्र पर वास्तविक आकार एवं प्रकार में विभिन्न आकृतियों जैसे- भवनों, सड़कों, पुलों, वृक्षों, रेल की पटरियों या कुओं को दिखाना संभव नहीं होता है। इसलिए, वे निश्चित अक्षरों, छायाओं, रंगों, चित्रों तथा रेखाओं का उपयोग करके दर्शाए जाते हैं। ये प्रतीक कम स्थान में अधिक जानकारी प्रदान करते हैं। इन प्रतीकों को **रूढ़ प्रतीक (conventional Symbols)** कहा जाता है इन प्रतीकों के इस्तेमाल के द्वारा मानचित्र को आसानी से खींचा जा सकता है

एक छोटे क्षेत्र का बड़े पैमाने पर खींचा गया रेखाचित्र **खाका (plan)** कहा जाता है।

महाद्वीप (Continents)

पृथ्वी पर सात प्रमुख महाद्वीप हैं। ये विस्तृत जलराशि के द्वारा एक दूसरे से अलग हैं।

एशिया (Asia)

विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह पृथ्वी के कुल क्षेत्रफल के एक तिहाई भाग में फैला हुआ है। यह महाद्वीप **पूर्वी गोलार्ध (Eastern Hemisphere)** में स्थित है। **कर्क रेखा (Tropic of Cancer)** इस महाद्वीप से होकर गुजरती है। एशिया के पश्चिम में **यूराल पर्वत** है जो इसे यूरोप से अलग करता है यूरोप एवं एशिया के संयुक्त भूभाग को **यूरेशिया** कहा जाता हैं।

- **विश्व के क्षेत्रफल** का लगभग 29.5% भाग एशिया के पास है।
- **यह विश्व के कुल** क्षेत्र का लगभग 1/3 भाग पर फैला है।
- **एशिया महाद्वीप** चावल, जूट, कपास, सिल्क आदि के उत्पादन में पहले स्थान पर है।
- **सबसे बड़ा देश** – चीन
- **सबसे छोटा देश** – मालदीव

SACHIN ACADEMY 995569

- **सबसे लम्बी नदी** – यांगटीसीक्यांग
- **सबसे ऊँचा पर्वत शिखर** – माउंट एवरेस्ट (8848 मी.)
- **सबसे बड़ी झील** – कैस्पियन सागर

अफ्रीका (Africa)

एशिया के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है। **विषुवत् वृत्त या 0° अक्षांश** (Equator) इस महाद्वीप के लगभग मध्य भाग से होकर गुजरती है। अफ्रीका का बहुत बड़ा भाग **उत्तरी गोलार्ध** में स्थित है। यही एक ऐसा महाद्वीप है जिससे होकर **कर्क, विषुवत् तथा मकर**, तीनों रेखाएँ गुजरती हैं।
सहारा का रेगिस्तान (Desert) विश्व का सबसे बड़ा गर्म रेगिस्तान है जो कि अफ्रीका में स्थित है। यह महाद्वीप चारों तरफ से समुद्रों एवं महासागरों से घिरा है।

- **विश्व की सबसे लंबी नदी नील** अफ्रीका से होकर गुजरती है।
- **अफ्रीका का 1/3 भाग** मरुस्थल है।
- **यहाँ केवल 10% भूमि** ही कृषि योग्य है।
- **हीरा और सोना** उत्पादन में अफ्रीका सबसे आगे है।
- **सबसे बड़ा देश** – अल्जीरिया
- **सबसे ऊँचा पर्वत शिखर** – किलिमंजारो (5895 मी.)
- **सबसे बड़ी झील** – विक्टोरिया
- **विश्व की सबसे बड़ी हीरे** की खान **किम्बरले** इसी महाद्वीप पर स्थित है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

उत्तर अमेरिका (North America)

उत्तर अमेरिका विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह दक्षिण अमेरिका से एक संकरे स्थल (Narrow Strip) से जुड़ा है जिसे **पनामा स्थलसंधि** (Isthmus of Panama) कहा जाता है। यह महाद्वीप पूरी तरह से उत्तरी एवं पश्चिमी गोलार्ध में

स्थित है। यह महाद्वीप तीन महासागरों से घिरा है। विश्व की कुल मक्का उत्पादन का आधा भाग यहीं पैदा होता है।

- **सबसे बड़ा देश** – कनाडा
- **सबसे छोटा देश** – सेंट-पियरे
- **सबसे लम्बी नदी** – मिसीसिपी-मिसौरी
- **सबसे ऊँचा पर्वत शिखर** – देनाली [पुराना नाम – माउंट मैकिनले] (6194 मी.)
- **सबसे बड़ी झील** – सुपीरियर (विश्व की मीठे पानी की सबसे बड़ी झील)

दक्षिण अमेरिका (South America)

दक्षिण अमेरिका संसार का चौथा बड़ा महाद्वीप है। इसका लगभग दो-तिहाई भाग **विषुवत रेखा** के दक्षिण में **उष्ण कटिबंध** में फैला है। इसका बहुत बड़ा भाग वनाच्छादित है।

- **सबसे बड़ा देश** – ब्राज़ील
- **सबसे छोटा देश** – फ़ॉकलैंड द्वीप
- **सबसे लम्बी नदी** – अमेज़न
- **सबसे ऊँचा पर्वत शिखर** – आकोंकागुआ / आकोंकाग्वा / एकांकागुआ

SACHIN ACADEMY 9956977782

अंटार्कटिका (Antarctica)

अंटार्कटिका संसार का पाँचवां बड़ा महाद्वीप है। जो कि दक्षिणी गोलार्ध में स्थित है। दक्षिण ध्रुव **(South Pole)** इस महाद्वीप के मध्य में स्थित है। चूँकि, यह दक्षिण ध्रुव क्षेत्र में स्थित है, इसलिए यह हमेशा **मोटी बर्फ की परतों** से ढका रहता है। यहाँ किसी भी प्रकार का स्थायी मानव निवास नहीं है। बहुत से देशों के **शोध केंद्र (Research Station)** यहाँ स्थित हैं। भारत के भी शोध संस्थान यहाँ हैं। इनके नाम हैं **मैत्री तथा दक्षिण गंगोत्री।**

यूरोप (Europe)

यूरोप महाद्वीप उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे छोटा महाद्वीप है तथा विश्व का छठा बड़ा महाद्वीप है। इसे **प्रायद्वीपों का प्रायद्वीप** (Peninsula) या **यूरेशिया का प्रायद्वीप** कहते हैं।

यूरोप एशिया से बहुत छोटा है। यह महाद्वीप एशिया के पश्चिम में स्थित है। **आकर्टिक वृत्त** (Arctic Circle) इससे होकर गुजरता है। यह तीन तरफ से जल से घिरा है।

आस्ट्रेलिया (Australia)

आस्ट्रेलिया विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप है, जो कि पूरी तरह से दक्षिणी गोलार्ध में स्थित है। यह चारों तरफ से महासागरों तथा समुद्रों से घिरा है। इसे **द्वीपीय महाद्वीप** (island continent) कहा जाता है।

महासागर (Oceans)

महासागर जलमंडल के मुख्य भाग हैं। ये आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

विश्व के प्रमुख महासागर

प्रशांत महासागर (Pacific Ocean)

प्रशांत महासागर सबसे बड़ा महासागर है। यह पृथ्वी के एक-तिहाई भाग पर फैला है। पृथ्वी का सबसे गहरा भाग **मेरियाना गर्त** (Mariana Trench) प्रशांत महासागर में ही स्थित है। प्रशांत महासागर लगभग वृत्ताकार (Circular shape) है। एशिया, आस्ट्रेलिया, उत्तर एवं दक्षिण अमेरिका इसके चारों ओर स्थित हैं।

अटलांटिक महासागर (Atlantic Ocean)

अटलांटिक महासागर विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महासागर है। यह अंग्रेजी भाषा के 'S'

अक्षर के आकार का है। इसके पश्चिमी किनारे पर उत्तर एवं दक्षिण अमेरिका हैं तथा पूर्वी किनारे पर यूरोप एवं अफ्रीका हैं। व्यापार की दृष्टि से यह **सबसे व्यस्त महासागर** है।

हिंद महासागर (Indian Ocean)

हिंद महासागर ही एक ऐसा महासागर है जिसका नाम किसी देश के नाम पर, यानी **भारत** के नाम पर रखा गया है। यह महासागर लगभग **त्रिभुज आकार** **(triangular shape)** का है। इसके उत्तर में एशिया, पश्चिम में अफ्रीका तथा पूर्व में आस्ट्रेलिया स्थित हैं।

दक्षिणी महासागर (Southern Ocean)

दक्षिणी महासागर अंटार्कटिका महाद्वीप को चारों ओर से घेरता है। यह अंटार्कटिका महाद्वीप से उत्तर की ओर 60° दक्षिणी अक्षांश **(latitude)** तक फैला हुआ है।

आकर्टिक महासागर (Arctic Ocean)

आकर्टिक महासागर उत्तर ध्रुव वृत्त **(Arctic Circle)** में स्थित है तथा यह उत्तर ध्रुव के चारों ओर फैला है। यह प्रशांत महासागर से छिछले जल **(shallow water)** वाले एक सँकरे भाग **(narrow stretch)** से जुड़ा है जिसे **बेरिंग जलसंधि** **(Berring strait)** के नाम से जाना जाता है। यह उत्तर अमेरिका के उत्तरी तटों तथा यूरेशिया से घिरा है।

SACHIN ACADEMY 9555697782

पर्वत (MOUNTAINS)

पहाड़ी वह स्थलीय भाग है जो कि आस- पास की भूमि से ऊँची उठी होती है। 600 मीटर से अधिक ऊँचाई एवं खड़ी ढाल वाली पहाड़ी को **पर्वत** कहा जाता है।

- कुछ पर्वतों पर हमेशा जमी रहने वाली बर्फ की नदियाँ होती हैं। उन्हें **हिमानी** **(Glaciers)** कहा जाता है।

- **हिमालय**, **आल्प्स** तथा **एंडीश** क्रमशः एशिया, यूरोप तथा दक्षिण अमेरिका की पर्वत शृंखलाएँ हैं
- पर्वतों की ऊँचाई एवं आकार में भिन्नता होती है।
- विभिन्न प्रकार के खेल जैसे- पैराग्लाइडिंग, हैंग ग्लाइडिंग, रिवर राफ्टिंग तथा स्कीइंग पर्वतों के प्रचलित खेल हैं।

पर्वत तीन प्रकार के होते हैं -

1. **वलित पर्वत (Fold Mountains)**
2. **भ्रंशोत्थ पर्वत (Block Mountains)**
3. **ज्वालामुखी पर्वत (Volcanic Mountains)**

वलित पर्वत (Fold Mountains)

हिमालय तथा **आल्प्स** वलित पर्वत हैं जिनकी सतह ऊबड़-खाबड़ तथा शिखर शंक्वाकार है। भारत की **अरावली शृंखला** विश्व की सबसे पुरानी वलित पर्वत शृंखला है।

भ्रंशोत्थ पर्वत (Block Mountains)

जब बहुत बड़ा भाग टूट जाता है तथा ऊध्र्वाधर **(vertically)** रूप से विस्थापित हो जाता है तब **भ्रंशोत्थ** पर्वतों का निर्माण होता है। यूरोप की **राईन घाटी** तथा **वॉस्जेस पर्वत** भ्रंशोत्थ पर्वत के उदाहरण हैं।

ज्वालामुखी पर्वत (Volcanic Mountains)

ज्वालामुखी क्रियाओं के कारण बनते हैं। अफ्रीका का **माउंट किलिमंजारो** तथा जापान का **फ्युजियमा** इस तरह के पर्वतों के उदाहरण हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

पठार (PLATEAUS)

पठार उठी हुई एवं सपाट भूमि होती है। यह आस-पास के क्षेत्रों से अधिक उठा हुआ होता है। पठारों की ऊँचाई कुछ सौ मीटर से लेकर कई हजार मीटर तक हो सकती है।

- **तिब्बत का पठार** विश्व का सबसे ऊँचा पठार है, जिसकी ऊँचाई माध्य समुद्र तल **(mean sea level)** से 4,000 से 6,000 मीटर तक है।
- **अफ्रीका का पठार** सोना एवं हीरों के खनन **(mining)** के लिए प्रसिद्द है। भारत में
- **छोटानागपुर** के पठार में लोहा **(iron)**, कोयला **(coal)** तथा मैंगनीज **(manganese)** के बहुत बड़े भंडार पाए जाते हैं।

भारत

- भारत एक बहुत बड़े भौगोलिक विस्तार वाला देश है। उत्तर में यह हिमालय के ऊँचे शिखरों से घिरा है। पश्चिम में अरब सागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी तथा दक्षिण में हिंद महासागर तक फैला है।
- भारत का क्षेत्रफल **(Area)** **32,87,263 लाख वर्ग किमी.** **(million sq. km.)** है। उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक इसका विस्तार लगभग 3200 किमी. है तथा पूर्व में अरुणाचल प्रदेश से लेकर पश्चिम में कच्छ तक इसका विस्तार लगभग 2,900 किमी. तक है।
- सात देशों अफगानिस्तान, पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश एवं म्यांमार (बर्मा) की स्थलीय सीमाएँ भारत की सीमाओं से जुड़ी हैं, जबकि श्रीलंका व मालदीव हिन्द महासागर में स्थित दो पड़ोसी द्वीपीय देश हैं।

- **प्रायद्वीप** **(peninsula)** स्थल का वह भाग है जो तीन तरफ से जल से घिरा होता है

SACHIN ACADEMY 9955697782

❖ **भारत उत्तरी गोलार्ध (Northern hemisphere)** में स्थित है। कर्क रेखा देश के लगभग मध्य भाग से होकर गुजरती है।

❖ **पाक जलसंधि (Palk Strait)** भारत को श्रीलंका से अलग करती है।

❖ **जलोढ़ निक्षेप (Alluvial deposits)** ये नदियों के द्वारा लाई गई बहुत बारीक मिटटी होती है तथा नदी बेसिन में निक्षेपित **(deposited)** कर दी जाती है।

❖ **सहायक नदी (Tributary)** एक नदी या सरिता **(stream)** जो कि मुख्य नदी में किसी भी तरफ से आकर मिलती है तथा अपने जल को मुख्य नदी में डालती है।

❖ **गंगा एवं ब्रह्मपुत्रा नदियाँ** विश्व के सबसे बड़े **डेल्टा** का निर्माण करती हैं, जिसे **सुन्दरबन डेल्टा** कहा जाता है। इस डेल्टा की आकृति **त्रिभुजाकार (triangular)** है। डेल्टा स्थल का वह भाग है जो नदी के मुहाने पर बनता है। जहाँ नदियाँ समुद्र में प्रवेश करती हैं उस जगह को **नदी का मुहाना** कहा जाता है।

❖ **महानदी, गोदावरी, कृष्ण तथा कावेरी** बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। ये नदियाँ अपने मुहाने पर **उपजाऊ डेल्टा** का निर्माण करती हैं। बंगाल की खाड़ी में गंगा एवं ब्रह्मपुत्र नदियों के मुहाने पर **सुंदरबन डेल्टा** स्थित है।

❖ **भारत में दो द्वीपसमूह (islands) हैं।** **लक्षद्वीप द्वीपसमूह** अरब सागर में स्थित हैं। ये केरल के तट से कुछ दूर स्थित प्रवाल द्वीप **(coral islands)** हैं। अंडमान एवं **निकोबार द्वीपसमूह** भारत से दक्षिण-पूर्व **(southeast)** दिशा में बंगाल की खाड़ी में स्थित हैं।

भारत के राज्य एंव राजधानी

राज्य का नाम	राजधानी
अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर
असम	दिसपुर
गुजरात	गांधीनगर

SACHIN ACADEMY 9956697782

केरल	तिरुअनन्तपुरम
बिहार	पटना
झारखंड	रांची
छत्तीसगढ़	रायपुर
गोवा	पणजी
उत्तर प्रदेश	लखनऊ
उत्तराखंड	देहरादून & गैरसैंण
हरियाणा	चंडीगढ़
हिमाचल प्रदेश	शिमला
तेलंगाना	हैदराबाद
कर्नाटक	बेंगलुरू
महाराष्ट्र	मुंबई
मणिपुर	इम्फाल
पंजाब	चंडीगढ़
मध्य प्रदेश	भोपाल
तमिलनाडु	चेन्नई
मेघालय	शिलांग
राजस्थान	जयपुर
मिजोरम	आइजोल
आंध्र	प्रदेश हैदराबाद
ओडिशा	भुवनेश्वर
पश्चिम बंगाल	कोलकाता
नगालैण्ड	कोहिमा
सिक्किम	गंगटोक
त्रिपुरा	अगरतला

SACHIN ACADEMY
9956697782

केन्द्रशासित प्रदेश का नाम	राजधानी
अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह	पोर्ट ब्लेयर
चण्डीगढ़	चण्डीगढ़
दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव	दमन
दिल्ली	दिल्ली
लक्षद्वीप	कवारत्ती
पुदुच्चेरी	पुदुच्चेरी
जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर (ग्रीष्मकालीन) जम्मू (शीतकालीन)
लद्दाख	लेह

जलवायु (CLIMATE)

जलवायु किसी स्थान पर अनेक वर्षों में मापी गई मौसम की **औसत दशा** **(average weather)** को **जलवायु** कहते हैं।

भारत की जलवायु को मोटे तौर पर **मानसूनी जलवायु** कहा जाता है। मानसून शब्द अरबी भाषा के मौसिम से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है मौसम। भारत की स्थिति **उष्ण कटिबंध** **(tropical region)** में होने के कारण अधिकतर वर्षा मानसूनी पवन से होती है। भारत में कृषि वर्षा पर निर्भर है।

- किसी स्थान की जलवायु उसकी स्थिति, **ऊँचाई** **(altitude),** समुद्र से दूरी तथा **उच्चावच** **(relief)** पर निर्भर करती है।
- सबसे अधिक वर्षा **मेघालय** में स्थित **मौसिनराम** में होती है

प्राकृतिक वनस्पति (NATURAL VEGETATION)

घास, झाड़ियाँ तथा पौधे जो बिना मनुष्य की सहायता के उपजते हैं उन्हें **प्राकृतिक वनस्पति** कहा जाता है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

वन्य प्राणी (WILD LIFE)

- वन विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों का निवास होता है।
- **बाघ (tiger)** हमारा राष्ट्रीय पशु है। यह देश के विभिन्न भागों में पाया जाता है। **गुजरात के गिर वन** में एशियाई शेरों का निवास है। हाथी तथा **एक सींग वाले गैंडे असम के जंगलों में** पाए जाते हैं। हाथी, केरल एवं कर्नाटक में भी मिलते हैं।
- ऊँट भारत के रेगिस्तान तथा **जंगली गधा कच्छ के रन में** पाए जाते हैं। जंगली बकरी, हिम तेंदुआ, भालू आदि हिमालय के क्षेत्र में पाए जाते हैं।
- भारत में पक्षियों की भी ऐसी ही प्रचुरता है। **मोर** हमारा **राष्ट्रीय पक्षी** है।
- भारत में साँपों की सैकड़ों प्रजातियाँ पाई जाती हैं। उनमें **कोबरा** एवं **करैत** प्रमुख हैं।
- कुछ पक्षी पिंटेल बत्तख, कर्लियू, फ्लेमिंगो, ओस्प्रे, लिटिल स्टिंट प्रत्येक वर्ष सर्दी के मौसम में हमारे देश आते हैं। सबसे छोटी **लिटिल स्टिंट** जिसका वजन लगभग **15 ग्राम** होता है , आर्कटिक प्रदेश से 8000 किलोमीटर की दूरी तय करके भारत आती हैं।
- प्रत्येक वर्ष अक्टूबर माह का पहला सप्ताह, वन्य-जीव सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।
- प्रवासी पक्षी :- पेलिकन, साइबेरियन सारस, स्टोर्क, फ्लेमिंगो, पिनटेल बत्तख, इत्यादि प्रत्येक वर्ष सर्दी के मौसम में हमारे देश में आते हैं। साइबेरियन सारस साइबेरिया से दिसम्बर के महीने में आते हैं। तथा मार्च के आरम्भ तक रहते हैं।

SACHIN ACADEMY
9956697782

पारितंत्र (Ecosystem)

वह तंत्र होता है जिसमें समस्त जीवधारी आपस में एक-दूसरे के साथ तथा पर्यावरण के उन भौतिक **(Physical)** एवं रासायनिक कारकों **(Chemical factors)** के साथ परस्पर क्रिया करते हैं जिसमें वे निवास करते हैं। ये सब ऊर्जा **(Energy)** और पदार्थ के स्थानांतरण द्वारा सम्बंधित हैं।

पर्यावरण (ENVIRONMENT)

जीवित प्राणी के चारों ओर पाए जाने वाले लोग, स्थान, वस्तुएँ एवं प्रकृति **(Nature)** को पर्यावरण कहते हैं। यह प्राकृतिक एवं मानव-निर्मित **(human made)** जैसे-स्थल

परिघटनाओं **(phenomena)** का मिश्रण है।

पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल (Major Domains Of The Earth)

पृथ्वी का ठोस भाग **(solid portion)** जिस पर हम रहते हैं उसे **भूमंडल** **(Lithosphere)** कहा जाता है। गैस की परतें, जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरती हैं उसे **वायुमंडल** **(Atmosphere)** कहा जाता है, जहाँ ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड तथा दूसरी गैसें पाई जाती हैं। पृथ्वी के बहुत बड़े भाग पर जल पाया जाता है जिसे **जलमंडल** **(Hydrosphere)** कहा जाता है। जलमंडल में जल की सभी अवस्थाएँ जैसे- बर्फ, जल एवं जलवाष्प **(water vapour)** सम्मिलित हैं।

जीवमंडल **(Biosphere)** एक सीमित क्षेत्र है, जहाँ स्थल, जल, एवं हवा एक साथ मिलते है, जहाँ सभी प्रकार के जीवन पाए जाते है।

- **पृथ्वी की सतह** को दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है। बड़े स्थलीय भूभागों **(landmasses)** को **महाद्वीपों** **(continents)** के नाम से जाना जाता है तथा बड़े जलाशयों को **महासागरीय बेसिन** **(ocean basins)** के नाम से जाना जाता है।
- **विश्व के सभी महासागर** **(oceans)** आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं
- समुद्री जल का तल सभी जगह समान होता है। स्थल की ऊंचाई को समुद्र तल से मापा जाता है। जिसे **शून्य** **(zero)** माना जाता है।
- **विश्व का सबसे ऊँचा शिखर माउंट एवरेस्ट** समुद्र तल से 8,848 **मीटर** ऊँचा है।
- **विश्व का सबसे गहरा** भाग **प्रशांत महासागर** का **मेरियाना** गर्त है, जिसकी गहराई 11,022 मीटर है।

प्राकृतिक पर्यावरण (The Natural Environment)

भूमि **(Land)**, जल **(Water)**, वायु (Air), पेड़-पौधे **(Trees & plants)** एवं जीव-जंतु **(fauna)** मिलकर प्राकृतिक पर्यावरण बनाते हैं।

SACHIN ACADEMY 9956697782

पृथ्वी की ठोस पर्पटी (Solid layer) या कठोर ऊपरी परत को **स्थलमंडल** (Lithosphere) कहते हैं। यह चट्टानों (The rocks) एवं खनिजों (Minerals) से बना होता है एवं मिट्टी की पतली परत से ढंका होता है। यह पहाड़, पठार, मैदान, घाटी आदि जैसी विभिन्न स्थलाकृतियों (Topography) वाला विषम धरातल होता है। ये स्थलाकृतियाँ महाद्वीपों के अलावा महासागर की सतह पर भी पाई जाती हैं।

स्थलमंडल (Lithosphere)

वह क्षेत्र है, जो हमें वन, कृषि एवं मानव बस्तियों के लिए भूमि, पशुओं को चरने के लिए घासस्थल प्रदान करता है। यह खनिज संपदा (Mineral wealth) का भी एक स्रोत है।

जलमंडल (hydrosphere)

जल के क्षेत्र को **जलमंडल** कहते हैं। यह जल के विभिन्न स्रोतों जैसे-नदी, झील, समुद्र, महासागर आदि जैसे विभिन्न जलाशयों (Reservoirs) से मिलकर बनता है। यह सभी प्राणियों के लिए आवश्यक है।

वायुमंडल (Atmosphere)

पृथ्वी के चारों ओर फैली वायु की पतली परत को **वायुमंडल** कहते हैं। पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल (Gravitational force) अपने चारों ओर के वायुमंडल को थामे रखता है। यह सूर्य की झुलसाने वाली गर्मी एवं हानिकारक किरणों से हमारी रक्षा करता है। इसमें कई प्रकार की गैस, धूल-कण एवं जलवाष्प (water vapour) उपस्थित रहते हैं। वायुमंडल में परिवर्तन होने से मौसम एवं जलवायु में परिवर्तन होता है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

जैवमंडल (Biosphere)

पादप (Plant) एवं जीव-जंतु (fauna) मिलकर **जैवमंडल** या सजीव संसार का निर्माण करते हैं। यह पृथ्वी का वह संकीर्ण क्षेत्र (Narrow area) है, जहाँ स्थल, जल एवं वायु मिलकर जीवन को संभव बनाते हैं।

जीवमंडल (BIOSPHERE)

जीवमंडल स्थल, जल तथा हवा के बीच का एक सीमित भाग है। यह वह भाग है जहाँ

जीवन मौजूद है। यहाँ जीवों की बहुत सी प्रजातियाँ हैं, जो कि सूक्ष्म जीवों **(microbes)** तथा बैक्टीरिया से लेकर बड़े स्तनधारियों **(huge mammals)** के आकार में पाई जाती हैं। मनुष्य सहित सभी प्राणी, जीवित रहने के लिए एक-दूसरे से तथा जीवमंडल से जुड़े हुए हैं। जीवमंडल के प्राणियों को मुख्यतः दो भागों **जंतु-जगत (animal kingdom)** एवं **पादप-जगत (plant Kingdom)** में विभक्त किया जा सकता है।

पृथ्वी का आंतरिक भाग (The interior of the earth)

एक प्याज की तरह पृथ्वी भी एक के ऊपर एक संकेंद्री परतों **(Concentric Layers)** से बनी है। पृथ्वी की सतह की सबसे ऊपरी परत को **पर्पटी (Crust)** कहते हैं। यह सबसे पतली परत होती है। यह महाद्वीपीय संहति में 35 किलोमीटर एवं समुद्री सतह में केवल 5 किलोमीटर तक है।

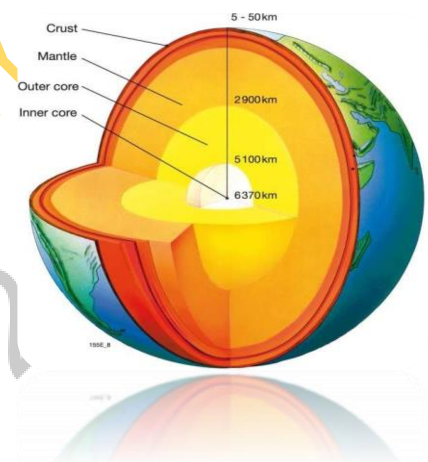

महाद्वीपीय संहति (Continental code) मुख्य रूप से **सिलिका** एवं **ऐलुमिना** जैसे खनिजों से बनी है। इसलिए इसे **सिएल** (सि-सिलिका तथा एल-एलुमिना) कहा जाता है।

महासागर की पर्पटी (Ocean crust) मुख्यतः **सिलिका** एवं **मैग्नीशियम** की बनी है; इसलिए इसे **सिमै** (सि-सिलिका तथा मै-मैग्नीशियम) कहा जाता है।

पर्पटी के ठीक नीचे मैंटल होता है जो 2900 किलोमीटर की गहराई तक फैला होता है। इसकी सबसे आंतरिक परत **क्रोड** है,जिसकी त्रिज्या **(radius)** लगभग 3500 किलोमीटर है। यह मुख्यतः **निकल** एवं **लोहे** की बनी होती है तथा इसे **निफे** (नि-निकिल तथा फे-फैरस) कहते हैं। केंद्रीय क्रोड **(Central core)** का तापमान **(Temperature)** एवं दाब **(Pressure)** काफ़ी उच्च होता है।

SACHIN ACADEMY

शैल (Rocks)

पृथ्वी की पर्पटी अनेक प्रकार के शैलों से बनी है। पृथ्वी की पर्पटी बनाने वाले खनिज पदार्थ

के किसी भी प्राकृतिक पिंड को **शैल (Rocks)** कहते हैं। शैल या चट्टान खनिजों के मिश्रण से बना पदार्थ है।

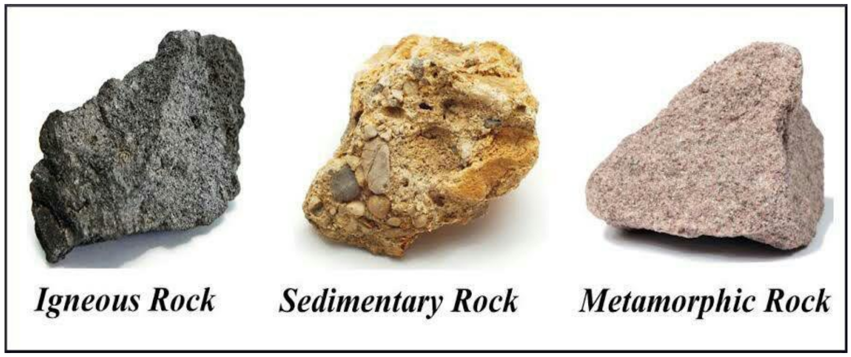

मुख्य रूप से शैल तीन प्रकार की होती हैं-

1. **आग्नेय (Igneous) शैल**
2. **अवसादी (Sedentary) शैल**
3. **कायांतरित (Metamorphic) शैल**

आग्नेय (Igneous) शैल :- आग्नेय शैल दो प्रकार की होती हैं : **अंतर्भेदी शैल (Intersection rock)** एवं **बर्हिभेदी शैल (barbicide rock)।** आग की तरह लाल द्रवित मैग्मा **(Liquefied magma)** ही **लावा** होता है जो पृथ्वी के आंतरिक भाग से निकलकर सतह पर आता है। जब द्रवित लावा पृथ्वी की सतह पर आता है, यह तेज़ी से ठंडा होकर ठोस बन जाता है। पर्पटी पर इस प्रकार से बने शैल को **बर्हिभेदी आग्नेय शैल** कहते हैं। इनकी संरचना बहुत महीन दानों वाली होती है। उदाहरण के लिए - बेसाल्ट। दक्कन पठार बेसाल्ट शैलों से ही बना है।

द्रवित मैग्मा कभी-कभी भू-पर्पटी के अंदर गहराई में ही ठंडा हो जाता है। इस प्रकार बने ठोस शैलों को **अंतर्भेदी आग्नेय शैल** कहते हैं। धीरे-धीरे ठंडा होने के कारण ये बड़े दानों का रूप ले लेते हैं। **ग्रेनाइट** ऐसे ही शैल का एक उदाहरण है।आग्नेय शैलों की रचना भू-गर्भ से निकलने वाले तत्वों और तरल पदार्थों के ठण्डा होकर जमने के फलस्वरूप हुई है। ये तरल पदार्थ पृथ्वी के आंतरिक भागों में गर्म एवं पिघले हुए रूप में रहते हैं। इसे **'मैग्मा'** कहते हैं। जब यह मैग्मा पृथ्वी के धरातल पर पहुँचता है तो 'लावा' कहलाता है। ग्रेनाइट, बेसाल्ट, गैब्रो और डायोराइट आग्नेय शैल के प्रमुख उदाहरण हैं।

पृथ्वी की भू-पर्पटी का दो-तिहाई भाग आग्नेय शैलों से बना है। आग्नेय चट्टानों को प्राथमिक चट्टानें भी कहते हैं क्योंकि इन्हीं चट्टानों से अन्य चट्टानों का भी निर्माण होता है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

परतदार शैल या अवसादी शैल (Sedimentary rocks) :- आग्नेय शैल छोटे-छोटे टुकड़ों में टूटकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होकर अवसादी शैल का निर्माण करते हैं। पृथ्वी के ऊपर तीन चैथाई भाग में परतदार शैल पायी जाती है। 'लोयस' का जमाव वायु निर्मित- अवसादी चट्टान का सबसे प्रमुख उदाहरण है। हिमालय पर्वत जो भारत का पहरेदार कहलाता है, इसमें अवसादी चट्टानें पाई जाती हैं। बालू का पत्थर, स्लेट, चूने का पत्थर, कोयला, खड़िया-मिट्टी आदि चट्टानें अवसादी चट्टान के उदाहरण हैं।
अवसादी चट्टानों में खनिज तेल, कोयला एवं अन्य प्रकार के बहुमूल्य खनिज पाए जाते हैं।

रूपान्तरित शैल (Metamorphic rock) :- ये चट्टानें अन्य चट्टानों के रूप परिवर्तन के फलस्वरूप निर्मित होती हैं। अवसादी शैल तथा आग्नेय शैल में दाब व ताप द्वारा परिवर्तन के फलस्वरूप रूपान्तरित शैल का निर्माण होता है। जैसे भू-परत के नीचे दाब व ताप द्वारा शैल से स्लेट, डोलोमाइट तथा खड़िया मिट्टी (चॉक) अत्याधिक ताप के कारण संगमरमर में बदल जाती है। कोयला हीरे में बदल जाता है। संगमरमर चूने के पत्थर का रूपान्तरित शैल है।

अपरदन (Erosion)

पृथ्वी की सतह के टूटकर घिस जाने को **अपरदन (erosion)** कहते हैं। अपरदन की क्रिया के द्वारा सतह नीची हो जाती है तथा निक्षेपण **(deposition)** की प्रक्रिया के द्वारा इनका फिर से निर्माण होता हैं। ये दो प्रक्रियाएँ बहते हुए जल, वायु तथा बर्फ के द्वारा होती हैं।
वायु, जल आदि अपरदित पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं, और फलस्वरूप एक स्थान पर निक्षेपित करते हैं। अपरदन एवं निक्षेपण के ये प्रक्रम पृथ्वी के धरातल पर विभिन्न **स्थलाकृतियों (Topography)** का निर्माण करते हैं।

- **विश्व की सबसे गहरी खान** दक्षिण अफ्रीका में स्थित है तथा इसकी गहराई लगभग 4 किलोमीटर है। तेल की खोज में इंजीनियर 6 किलोमीटर गहराई तक खोद चुके

SACHIN ACADEMY

हैं। पृथ्वी के केंद्र तक पहुँचने के लिए (जो बिलकुल असंभव है) समुद्र की सतह पर 6000 किलोमीटर गहराई तक खोदना होगा।

- **पृथ्वी के आयतन (Volume)** का केवल 1 प्रतिशत हिस्सा ही पर्पटी **(Crust)** है। 84 प्रतिशत मैंटल एवं 15 प्रतिशत हिस्सा क्रोड है। पृथ्वी की त्रिज्या **(radius)** 6371 किलोमीटर है।
- **इग्नियस** : लैटिन शब्द इग्निस, जिसका अर्थ होता है अग्नि।
- **सेडिमेंट्री** : लैटिन शब्द सेडिमेंटम, जिसका अर्थ होता है स्थिर।
- **मेटामोरफ़िक** : ग्रीक शब्द मेटामोरफोस, जिसका अर्थ होता है रूप परिवर्तन।
- **जीवाश्म (Fossils)** : शैलों की परतों में दबे मृत पौधों एवं जंतुओं के अवशेषों को जीवाश्म कहते हैं।

धरातल के रूप

- हिमालय, आल्पस, राकीज, एण्डीज आदि मोड़दार (वलित) पर्वत के प्रमुख उदाहरण हैं।
- भारत में विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत, ब्लॉक पर्वत के तथा नर्मदा व तापी नदियाँ भ्रंश-घाटी के उदाहरण हैं।
- **V आकार की घाटी :-** नदी पर्वतीय क्षेत्र में अपनी तली को काटकर उसे गहरा करती है। इससे अंग्रेजी के अक्षर V के आकार की घाटी का निर्माण होता है। जब V आकार की घाटी गहरी एवं संकरी होती है तो उसे **गार्ज** कहते हैं। हिमालय पर्वत में सिन्धु सतलज तथा ब्रह्मपुत्र नदियों के गॉर्ज हैं।
- **जल प्रपात :-** जब नदी का जल ऊँचाई से खड़े ढाल के सहारे अधिक वेग से नीचे गिरता है, तो इसे जल प्रपात कहते हैं। विश्व का सबसे ऊँचा जल-प्रपात दक्षिणी अमेरिका के वेनेजुएला का 'एंजेल' है। भारत के कुछ प्रमुख जल प्रपात शरावती नदी पर जोग, कावेरी नदी पर शिवसमुद्रम, नर्मदा नदी पर कपिलधारा एवं धुंआधार आदि हैं।
- **डेल्टा :-** नदी के सागर में गिरने से पहले 'विसर्प' (Meander) (टेढ़े-मेढ़े रास्तों) के कारण उसके बहने की गति अधिक धीमी पड़ जाती है, इस कारण 'डेल्टा' का निर्माण होता है। गंगा, ब्रह्मपुत्र का डेल्टा संसार के प्रमुख डेल्टाओं में से एक है।

SACHIN ACADEMY 9555697782

- **गुफा या सुंरग :-** वर्षा का कुछ जल चट्टान और मिट्टी में प्रवेश कर जाता है। पहाड़ों में कहीं-कहीं चूने की चट्टानें मिलती हैं, जिसमें जल रिस कर चट्टान के भीतर पहुँच जाता है तथा रासायनिक अपक्षय द्वारा चूने को घुला कर दूर बहा ले जाता है। जिससे पहाड़ी में गुफा या सुंरग बन जाती है।
- **हिमानी :-** ऊँचे पर्वतों पर जब कोई बर्फ का बड़ा खण्ड ढाल पर खिसकता है तो उसे 'हिमानी' या हिमनद कहते हैं। पहाड़ी भाग में हिमानी सपाट चौड़ी खड़े ढाल वाली घाटियों का निर्माण करती है, तो इनका आकार अंग्रेजी के U अक्षर की तरह होता है। पहले से बनी v आकार की घाटी को हिमानी U आकार की घाटी में बदल देती है।
- **हिमोढ (Moraine) :-** जब हिमानी चट्टानों को घर्षित कर उसका चूर्ण पर्वत के निचले भागों में जमा कर देता है तो इन्हें हिमोढ (Moraine) कहा जाता है।
- **बालुका स्तूप :-** मरुस्थलीय प्रदेशों में जब पवन के मार्ग में कोई बाधा होती है तब पवन का वेग कम हो जाता है जिससे पवन के साथ उड़ने वाले पदार्थ धरातल पर गिरकर बालू के टीलों का निर्माण करते हैं। इन्हें 'बालुका स्तूप' कहते हैं।
- **छत्रक शिला :-** पवन द्वारा उड़ाए गए बालू के कणों द्वारा अपरदन का कार्य धरातल से कुछ मीटर ऊँचाई तक अधिक होता है। इस प्रक्रिया में पवन निचले भाग को घिस देती है परन्तु ऊपरी भाग छतरी के आकार का हो जाता है, जिसे 'छत्रक शिला' कहते हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

भूकंप (Earthquake)

- **ज्वालामुखी** (Volcano) **भू-पर्पटी** (Earth's crust) पर खुला एक ऐसा छिद्र (Hole) होता है, जिससे पिघले हुए पदार्थ अचानक निकलते हैं। इसी प्रकार, स्थलमंडलीय प्लेटों के गति करने पर पृथ्वी की सतह पर कंपन (vibration) होता है। यह कंपन पृथ्वी के चारों ओर गति कर सकता है। इस कंपन को **भूकंप** कहते हैं।
- भू-पर्पटी के नीचे वह स्थान जहाँ कंपन आरंभ होता है, **उदगम केंद्र** (Origin Center) कहलाता है। उदगम केंद्र के भूसतह पर उसके निकटतम स्थान को **अधिकेंद्र**

(epicenter) कहते हैं। अधिकेंद्र के निकटतम भाग में सर्वाधिक हानि होती है एवं अधिकेंद्र से दूरी बढ़ने के साथ भूकंप की तीव्रता धीरे-धीरे कम होती जाती है।

- भूकंप का मापन करने वाले यंत्र को **भूकंपलेखी** (Seismometer) या Seismograph कहते हैं। भूकंप की तीव्रता **रिएक्टर स्केल** (Reactor scale) पर मापी जाती है। जिस भूकंप की तीव्रता (intensity) 2.0 अथवा उससे कम होती है, उसका प्रभाव नहीं के बराबर होता है। जिस भूकंप की तीव्रता 5.0 होती है, वह वस्तुओं के गिरने से क्षति पहुँचा सकता है। जिस भूकंप की तीव्रता 6.0 अथवा उससे अधिक होती है, वह बहुत शक्तिशाली और जिसकी तीव्रता 7.0 अथवा अधिक होती है, वह सर्वाधिक शक्तिशाली समझा जाता है।

जलप्रपात (Waterfall)

सबसे ऊँचा जलप्रपात दक्षिण अमेरिका के वेनेजुएला का **एंजेल जलप्रपात** है। अन्य जलप्रपात उत्तरी अमेरिका में कनाडा तथा संयुक्त राज्य अमेरिका की सीमा पर स्थित **नियाग्रा जलप्रपात** है और अफ्रीका में जांबिया एवं जिंबाबवे की सीमा पर स्थित विक्टोरिया जलप्रपात है।

नदी (River)

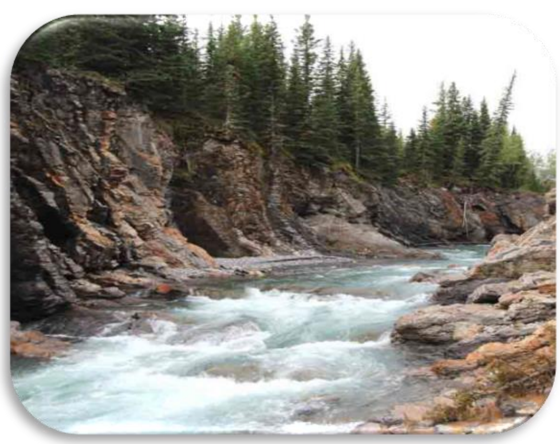

- नदी के जल से दृश्य भूमि का अपरदन होता है। जब नदी किसी खड़े ढाल वाले स्थान से अत्यधिक कठोर शैल या खड़े ढाल वाली घाटी में गिरती है, तो यह **जलप्रपात** बनाती है।
- जब नदी मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है, तो वह मोडदार मार्ग पर बहने लगती है। नदी के इन्हीं बड़े मोड़ों को **विसर्प** (estuary) कहते हैं। इसके बाद विसर्पो के किनारों पर लगातार अपरदन एवं निक्षेपण शुरू हो जाता है। विसर्प

SACHIN ACADEMY 9955697782

लूप के सिरे निकट आते जाते हैं। समय के साथ विसर्प लूप नदी से कट जाते हैं और एक अलग झील बनाते हैं, जिसे **चापझील** भी कहते हैं।

- नदी के उत्थित तटों को **तटबंध** **(embankment)** कहते हैं। समुद्र तक पहुँचते-पहुँचते नदी का प्रवाह **(Flow)** धीमा हो जाता है तथा नदी अनेक धाराओं **(Streams)** में विभाजित हो जाती है, जिनको **वितरिका** **(distributary)** कहा जाता है। यहाँ नदी इतनी धीमी हो जाती है कि यह अपने साथ लाए मलबे का निक्षेपण करने लगती है। प्रत्येक वितरिका अपने मुहाने का निर्माण करती है। सभी मुहानों के अवसादों के संग्रह से **डेल्टा** का निर्माण होता है।
- सिन्धु नदी-तन्त्र की मुख्य नदी सिन्धु और सहायक नदियाँ झेलम, चिनाव, सतलज, रावी, ब्यास आदि हैं। यह नदीतन्त्र जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और पंजाब में फैला है। सिन्धु नदी का उद्गम स्थल, तिब्बत में मानसरोवर झील के निकट है।
- गंगा नदी-तन्त्र की मुख्य नदी गंगा और सहायक-नदियाँ यमुना, घाघरा, गण्डक, गोमती, कोसी, आदि हैं। यह नदी-तन्त्र, उत्तरी मैदान के अधिकांश भाग में फैला है। गंगा नदी का उद्गम स्थल, हिमालय में स्थित गंगोत्री हिमनद है।
- ब्रह्मपुत्र नदी-तन्त्र की मुख्य नदी ब्रह्मपुत्र और सहायक-नदियाँ लुहित, दिबांग, तिस्ता, आदि हैं। यह नदी-तन्त्र अरुणाचल प्रदेश और असम में विस्तृत है। ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम स्थल भी तिब्बत में मानसरोवर झील के निकट है।
- ब्रह्मपुत्र नदी, चीन, भारत और बांग्लादेष में बहती है। इसे चीन में सांगपो और बांग्लादेष में मेघना या जमुना नाम से पुकारा जाता है।
- गंगा नदी को बांग्लादेष में पद्मा नाम से पुकारा जाता है।
- नर्मदा और तापी नदियों का बहाव पश्चिम की ओर है और वह अपने जल का विसर्जन अरब सागर में करती हैं।
- पूर्वी तटीय मैदान में महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियाँ बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरने से पूर्व डेल्टा) Delta) का निर्माण करती हैं। पूर्वी तटीय मैदान की मुख्य झीलें घिरका, कोलेल .पुलीकट, आदि हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- त्रिभुजाकार भू-भाग ही डेल्टा कहलाता है। गंगा एवं ब्रह्मपुत्र नदियाँ विश्व के सबसे बड़े डेल्टा 'सुन्दरवन' का निर्माण करती हैं।

समुद्री तरंग के कार्य (Functions Of The Sea Wave)

- समुद्री तरंग के अपरदन एवं निक्षेपण (Erosion and deposition) तटीय स्थलाकृतियाँ बनाते हैं। समुद्री तरंगें लगातार शैलों से टकराती रहती हैं, जिससे दरार विकसित होती है। समय के साथ ये बड़ी और चौड़ी होती जाती हैं। इनको **समुद्री गुफा (Sea cave)** कहते हैं।
- इन गुफाओं के तटीय मेहराब बड़े होते जाने पर इनमें केवल छत ही बचती है, जिससे **तटीय मेहराब (Coastal arch)** बनते हैं। लगातार अपरदन छत को भी तोड़ देता है और केवल दीवारें बचती हैं। दीवार जैसी इन आकृतियों को **स्टैक** कहते हैं।

हिमनद के कार्य (Glacier works)

हिमनद अथवा हिमानी बर्फ की नदियाँ होती हैं। हिमनद अपने नीचे की कठोर चट्टानों से गोलाश्मी मिट्टी और पत्थरों को अपरदित कर देती है और गोलाश्मी मिट्टी एवं पत्थरों से भूदृश्य का अपरदन करती है। हिमनद गहरे गर्तों का निर्माण करते हैं। पर्वतीय क्षेत्र में बर्फ पिघलने से उन गर्तों में जल भर जाता है और वे **सुंदर झील (Lake)** बन जाते हैं। हिमनद के द्वारा लाए गए पदार्थ, जैसे-छोटे-बड़े शैल, रेत एवं तलछट मिट्टी निक्षेपित होते हैं। ये निक्षेप **हिमनद हिमोढ़** का निर्माण करते हैं।

SACHIN ACADEMY 9956977822

पवन के कार्य (Works Of The Wind)

- रेगिस्तान में पवन, अपरदन एवं निक्षेपण का प्रमुख कारक है। रेगिस्तान में छत्रक के आकार के शैल देखे जा सकते है, जिन्हें सामान्यतः **छत्रक शैल (Mushroom rock)** कहते हैं।
- पवन शैल के ऊपरी भाग की अपेक्षा निचले भाग को आसानी से काटती है। इसलिए ऐसी शैल के आधार संकीर्ण एवं शीर्ष विस्तृत होते हैं। पवन चलने पर यह अपने साथ

रेत **(sand)** को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाती है। जब पवन का बहाव रुकता है तो यह रेत गिरकर छोटी पहाड़ी बनाती है। इनको **बालू टिब्बा (Sand dune)** कहते हैं।

- जब बालू कण महीन एवं हल्के होते हैं, तो वायु उनको उठाकर अत्यधिक दूर ले जा सकती है। जब ये बालू कण विस्तृत क्षेत्र में निक्षेपित हो जाते है, तो इसे **लोएस** कहते हैं। चीन में विशाल लोएस निक्षेप पाए जाते हैं।

वायुमंडल में पायी जाने वाली गैसें

- नाइट्रोजन तथा ऑक्सीजन ऐसी दो गैसें हैं, जिनसे वायुमंडल का बड़ा भाग बना है।
- नाइट्रोजन, वायु में सबसे अधिक पाई जाने वाली गैस है लगभग 78%,
- ऑक्सीजन की मात्रा लगभग 21%, है।
- ऑर्गन की मात्रा लगभग 0.93%, है।
- कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा लगभग 0.03% हमारे वायुमंडल में पायी जाती है।
- इन अन्य सभी गैसों के अलावा धूल के छोटे-छोटे कण भी हवा में मौजूद होते हैं।

SACHIN ACADEMY 9956697782

नाइट्रोजन (Nitrogen)

नाइट्रोजन वायु में सर्वाधिक पाई जाने वाली गैस है। जब हम साँस लेते हैं तब फेफड़ों **(lungs)** में कुछ नाइट्रोजन भी ले जाते हैं और फिर उसे बाहर निकाल देते हैं। परंतु पौधों को अपने जीवन के लिए नाइट्रोजन की आवश्यकता होती है। वे सीधे वायु से नाइट्रोजन नहीं ले पाते। मृदा **(Soil)** तथा कुछ पौधों की जड़ों में रहने वाले जीवाणु **(Bacteria)** वायु से नाइट्रोजन लेकर इसका स्वरूप बदल देते हैं, जिससे पौधे इसका प्रयोग कर सकें।

ऑक्सीजन (Oxygen)

ऑक्सीजन वायु में प्रचुरता से मिलने वाली दूसरी गैस है। मनुष्य तथा पशु साँस लेने में वायु से ऑक्सीजन प्राप्त करते हैं। हरे पादप **(Green plants)**, प्रकाश संश्लेषण

(Photosynthesis) द्वारा ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार वायु में ऑक्सीजन की मात्रा समान बनी रहती है। यदि हम वृक्ष काटते हैं तो यह संतुलन बिगड़ जाता है।

कार्बन डाइऑक्साइड (Carbon dioxide)

- कार्बन डाइऑक्साइड अन्य महत्त्वपूर्ण गैस है। हरे पादप अपने भोजन के रूप में कार्बन डाइऑक्साइड का प्रयोग करते हैं और ऑक्सीजन वापस देते हैं। मनुष्य और पशु कार्बन डाइऑक्साइड बाहर निकालते हैं। मनुष्यों तथा पशुओं द्वारा बाहर छोड़ी जाने वाली कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा पादपों द्वारा प्रयोग की जाने वाली गैस के बराबर होती है, जिससे यह संतुलन बना रहता है। परंतु यह संतुलन कोयला तथा खनिज तेल आदि ईंधनों के जलाने से गड़बड़ा जाता है। वे वायुमंडल में प्रतिवर्ष करोड़ों टन कार्बन डाइऑक्साइड की बढ़ोतरी करते हैं। परिणामस्वरूप कार्बन डाइऑक्साइड का बढ़ा हुआ आयतन (Volume) पृथ्वी पर मौसम तथा जलवायु को प्रभावित करता है।
- कार्बन डाइऑक्साइड वायुमंडल में फैल कर पृथ्वी से विकिरित ऊष्मा (Radiated heat) को पृथ्वी पर रोककर **ग्रीन हाउस प्रभाव** (Green House Effect) पैदा करती है। इसलिए इसे **ग्रीन हाउस गैस** भी कहते हैं। और इसके अभाव में धरती इतनी ठंडी हो जाती कि इस पर रहना असंभव होता। किंतु जब कारखानों एवं कार के धुएँ से वायुमंडल में इसका स्तर बढ़ता है, तब इस ऊष्मा (Heat) के द्वारा पृथ्वी का तापमान बढ़ता है। इसे **भूमंडलीय तापन** (Global warming) कहते हैं।
- तापमान में इस वृद्धि के कारण पृथ्वी के सबसे ठंडे प्रदेश में जमी हुई बर्फ पिघलती है। जिसके परिणामस्वरूप समुद्र के जलस्तर में वृद्धि होती है, जिससे तटीय क्षेत्रों (Coastal areas) में बाढ़ आ जाती है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

गरम और ठंडी वायु (Hot And Cold Air)

जब वायु गरम होती है, तो फैलती है और हल्की होकर ऊपर उठती है। ठंडी वायु सघन और भारी होती है। इसीलिए इसमें नीचे रहने की प्रवृत्ति होती है। गरम वायु के ऊपर

उठने पर आस-पास के क्षेत्रों से ठंडी वायु रिक्त स्थान को भरने के लिए वहाँ आ जाती है। इस प्रकार **वायु-चक्र** **(Air cycle)** चलता रहता है।

वायुमंडल की संरचना (Structure Of The Atmosphere)

हमारा वायुमंडल पाँच परतों **(Layers)** में विभाजित है, जो पृथ्वी की सतह से आरंभ होती हैं। ये हैं - क्षोभमंडल, समतापमंडल, मध्यमंडल, बाह्य वायुमंडल एवं बहिर्मंडल।

क्षोभमंडल (Troposphere)

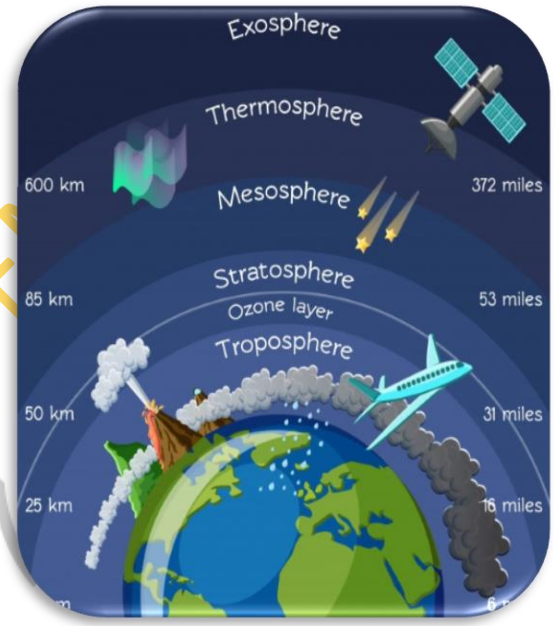

यह परत वायुमंडल की सबसे महत्त्वपूर्ण परत है। इसकी औसत ऊँचाई 13 किलोमीटर है। हम इसी मंडल में मौजूद वायु में साँस लेते हैं। मौसम की लगभग सभी घटनाएँ जैसे वर्षा, कुहरा एवं ओलावर्षण इसी परत के अंदर होती हैं।

समतापमंडल (Stratosphere)

क्षोभमंडल के ऊपर का भाग समताप मंडल कहलाता है। यह लगभग 50 किलोमीटर की ऊँचाई मध्यसीमा तक फैला है। यह परत बादलों एवं मौसम संबंधी घटनाओं से लगभग मुक्त होती है। इसके फलस्वरूप यहाँ की परिस्थितियाँ **हवाई जहाज़** उड़ाने के लिए आदर्श होती हैं। समताप मंडल की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें **ओजोन गैस** **(Ozone gas)** की परत होती है। यह परत सूर्य से आने वाली हानिकारक गैसों से हमारी रक्षा करती है।

मध्यमंडल (Mesosphere)

यह वायुमंडल की तीसरी परत है। यह समताप मंडल के ठीक ऊपर होती है। यह लगभग 80 किलोमीटर की ऊँचाई तक फैली है। अंतरिक्ष से प्रवेश करने वाले **उल्का पिंड** **(Meteorite)** इस परत में आने पर जल जाते हैं।

बाह्य वायुमंडल (Thermosphere)

बाह्य वायुमंडल में बढ़ती ऊँचाई के साथ तापमान अत्यधिक तीव्रता से बढ़ता है। **आयन मंडल** इस परत का एक भाग है। यह 80 से 400 किलोमीटर तक फैला है। **रेडियो संचार (radio communication)** के लिए इस परत का उपयोग होता है। वास्तव में पृथ्वी से प्रसारित **रेडियो तरंगें (radio waves)** इस परत द्वारा पुनः पृथ्वी पर परावर्तित कर दी जाती हैं।

बहिर्मंडल (Exosphere)

वायुमंडल की सबसे ऊपरी परत को बहिर्मंडल के नाम से जाना जाता है। यह वायु की पतली परत होती है। हल्की गैसें जैसे-हीलियम एवं हाइड्रोजन यहीं से अंतरिक्ष में तैरती रहती हैं।

तापमान (Temperature)

- सूर्य से आने वाली वह ऊर्जा जिसे पृथ्वी रोक लेती है, **आतपन (सूर्यातप) (insolation)** कहलाती है। आतपन (सूर्यातप) की मात्रा भूमध्य रेखा **(Equator)** से ध्रुवों **(poles)** की ओर घटती है।
- पृथ्वी सूर्य की ऊर्जा के 2,000.000.00 भाग का केवल एक भाग (दो अरबवाँ) ही प्राप्त करती है।
- तापमान को मापने की मानक इकाई डिग्री सेल्सियस है। इस का आविष्कार **ऐंडर्स सेल्सियस** ने किया था। सेल्सियस पैमाने पर जल 0° सेल्सियस पर जमता है एवं 100° सेल्सियस पर उबलता है।

वायु दाब (Air Pressure)

- पृथ्वी की सतह पर वायु के भार द्वारा लगाया गया दाब, **वायु दाब** कहलाता है। वायुमंडल में ऊपर की ओर जाने पर दाब तेजी से गिरने लगता है। समुद्र स्तर पर वायु दाब सर्वाधिक होता है और ऊँचाई पर जाने पर यह घटता जाता है। वायु दाब

SACHIN ACADEMY

का क्षैतिज वितरण **(Horizontal distribution)** किसी स्थान पर उपस्थित वायु के ताप द्वारा प्रभावित होता है। अधिक तापमान वाले क्षेत्रों में वायु गर्म होकर ऊपर उठती है। यह **निम्न दाब क्षेत्र (Low pressure area)** बनाता है। निम्न दाब, बादलयुक्त आकाश एवं नम मौसम के साथ जुड़ा होता है।

- कम तापमान वाले क्षेत्रों की वायु ठंडी होती है। इसके फलस्वरूप यह भारी होती है। भारी वायु निमज्जित होकर उच्च दाब क्षेत्र बनाती है। उच्च दाब के कारण स्पष्ट एवं स्वच्छ आकाश होता है।
- वायु सदैव उच्च दाब क्षेत्र से निम्न दाब क्षेत्र की ओर गमन करती है।
- चाँद पर वायु नहीं है इसलिए वहाँ वायु दाब भी नहीं है। अंतरिक्ष यात्री जब चाँद पर जाते हैं, तो वे विशेष रूप से सुरक्षित हवा से भरी हुई अंतरिक्ष पोशाक पहनते हैं। यदि वे इस अंतरिक्ष पोशाक को न पहनें तो अंतरिक्ष यात्रियों के शरीर द्वारा विपरीत बल लगने के कारण उनकी **रक्त शिराएँ (blood vessels)** फट सकती हैं। जिससे अंतरिक्ष यात्री रक्तस्त्रावित हो सकते हैं।

पवन (Wind)

उच्च दाब क्षेत्र से निम्न दाब क्षेत्र की ओर वायु की गति को **'पवन'** कहते हैं।

पवन का नाम उसके आने की दिशा के आधार पर निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए पश्चिम से आने वाली पवन को **पश्चिमी (पछुवा) (westerly)** पवन कहते हैं।

पवन को मुख्यतः तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है।

1. स्थायी पवनें (Permanent winds) :- व्यापारिक पश्चिमी **(westerlies)** एवं पूर्वी पवनें **(easterlies)** स्थायी पवनें हैं। ये वर्षभर लगातार निश्चित दिशा में चलती रहती हैं।

2. मौसमी पवनें (Seasonal winds) :- ये पवनें विभिन्न अपनी दिशा बदलती रहती हैं। उदाहरण के लिए भारत में मानसूनी पवनें।

3. स्थानीय पवनें (Local winds) :- ये पवनें किसी छोटे क्षेत्र में वर्ष या दिन के किसी विशेष समय में चलती हैं। उदाहरण के लिए-स्थल एवं समुद्री समीर।

SACHIN ACADEMY 9956697782

आर्द्रता (Moisture)

जब जल पृथ्वी एवं विभिन्न जलाशयों से वाष्पित **(evaporates)** होता है, तो यह **जलवाष्प (water vapour)** बन जाता है। वायु में किसी भी समय जलवाष्प की मात्रा को **'आर्द्रता'** कहते हैं। जब वायु में जलवाष्प की मात्रा अत्यधिक होती है, तो उसे हम **आर्द्र दिन (humid day)** कहते हैं। जैसे-जैसे वायु गर्म होती जाती है, इसकी जलवाष्प धारण करने की क्षमता बढ़ती जाती है और इस प्रकार यह और अधिक आर्द्र हो जाती है। आर्द्र दिन में, कपड़े सूखने में काफ़ी समय लगता है एवं हमारे शरीर से पसीना आसानी से नहीं सूखता और हम असहज महसूस करते हैं।

जब जलवाष्प ऊपर उठता है, तो यह ठंडा होना शुरू हो जाता है। जलवाष्प संघनित होकर ठंडा होकर **जल की बूंद** बनाते हैं। बादल इन्हीं जल बूंदों का ही एक समूह होता है। जब जल की ये बूंदें इतनी भारी हो जाती हैं कि वायु में तैर न सकें, तब ये **वर्षण (precipitation)** के रूप में नीचे आ जाती हैं।

पृथ्वी पर जल के रूप में गिरने वाला वर्षण, **वर्षा (rain)** कहलाता है। ज्यादातर **भौम जल (ground Water)**, वर्षा जल से ही प्राप्त होता है। पौधे जल संरक्षण में मदद करते हैं।

वर्षा के प्रकार (Types of Rainfall)

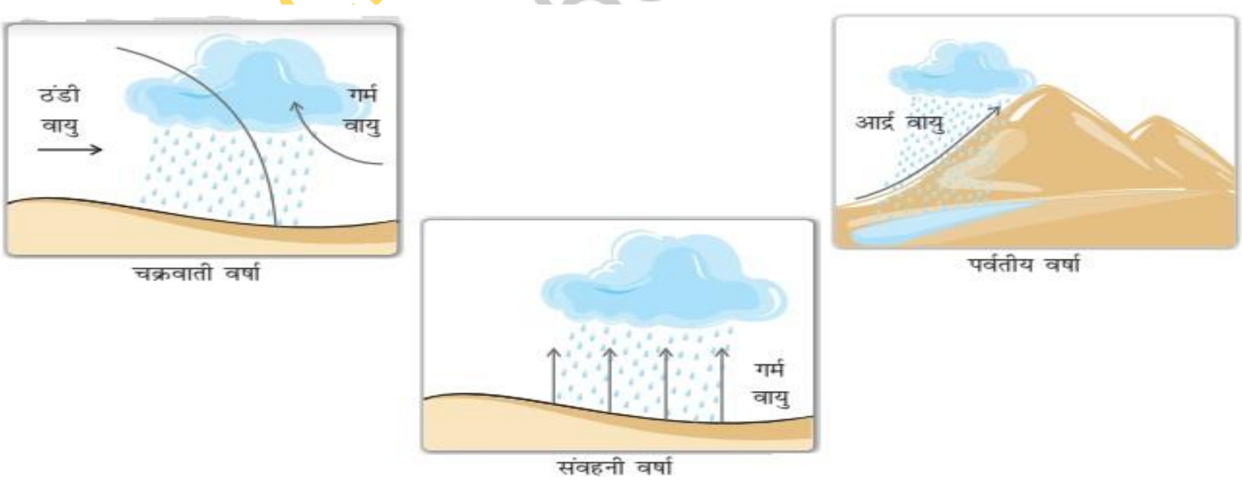

वर्षा तीन प्रकार की होती है

1. सवहनीय वर्षा 2. पर्वतीय वर्षा 3. चक्रवाती वर्षा

(1) सवहनीय वर्षा :- अधिक तापमान के क्षेत्रों में सतह के अत्यंत गर्म हो जाने के कारण होती है। अधिक तापमान एवं सूर्यतप के अत्यधिक प्राप्ति के कारण, सतह की हवाएं अत्यधिक गर्म होकर ऊपर उठने लगती है। और क्रमशः ठंडी होती जाती है। जिससे संघनन की क्रिया होती है तथा कपासी बादलों का निर्माण होता है, जिससे तीव्र एवं मूसलाधार वर्षा होती है। इस प्रकार की वर्षा गर्मियों में या दिन के गर्म समय में प्रायः होती है। यह विषुवतीय क्षेत्र (Equatorial area) तथा खासकर उत्तरी गोलार्ध के महाद्वीपों के भीतरी भागों में प्रायः होती है।

2. पर्वतीय वर्षा :- जब जलवाष्प से लदी हुई गर्म वायु को किसी पर्वत या पठार की ढलान के साथ ऊपर चढ़ना होता है तो यह वायु ठण्डी होने लगती है। ठण्डी होने से यह संतृप्त हो जाती है और संघनन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। संघनन के पश्चात होने वाली इस प्रकार की वर्षा को 'पर्वतीय वर्षा कहते है। यह वर्षा उन क्षेत्रों में अधिक होती है जहाँ पर्वत श्रेणी समुद्र तट के निकट तथा उसके समानान्तर हो। संसार की अधिकांश वर्षा इसी रूप में होती है।

3. चक्रवाती वर्षा :- चक्रवातों के कारण होने वाली वर्षा को चक्रवाती वर्षा कहते है। इस प्रकार की वर्षा शीतोष्ण कटिबंधीय चक्रवातीय क्षेत्रों में होती है। या चक्रवातों द्वारा होने वाली वर्षा को चक्रवातीय या वाताग्री वर्षा कहते हैं। दो विपरीत स्वभाव वाली हवाएं जब आपस में टकराती हैं तो वाताग्र का निर्माण होता है। इस वाताग्र के सहारे गर्म वायु ऊपर की ओर उठती है और वर्षा होती है। यह वर्षा मुख्य रूप से मध्य एवं उच्च अक्षांशों में होती है।

- **'लवणता' (Salinity)** 1000 ग्राम जल में मौजूद नमक की मात्रा होती है। महासागर की औसत लवणता, 35 भाग प्रति हजार ग्राम है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **इजराइल के मृत सागर (Dead sea)** में 340 ग्राम प्रति लीटर लवणता होती है। तैराक इसमें प्लव **(float)** कर सकते हैं, क्योंकि नमक की अधिकता इसे सघन बना देती है।
- 22 **मार्च 'विश्व जल दिवस'** के रूप में मनाया जाता है, जब जल संरक्षण की विभिन्न विधियों को प्रबलित किया जाता है।

महासागरीय परिसंचरण (Ocean Circulation)

ताल **(ponds)** एवं झील **(lakes)** के शांत जल के विपरीत महासागरीय जल हमेशा गतिमान रहता है। यह कभी शांत नहीं रहता है। महासागरों की गतियों को इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं जैसे-तरंगें **(waves)**, ज्वार-भाटा **(tides)** एवं धाराएँ **(currents)**। तूफ़ान में तेज़ वायु चलने पर विशाल तरंगें उत्पन्न होती हैं। इनके कारण अत्यधिक विनाश हो सकता है। भूकंप, ज्वालामुखी उद्गार **(volcanic eruption)**, या जल के नीचे **भूस्खलन (Landslides)** के कारण महासागरीय जल अत्यधिक विस्थापित होता है। इसके परिणामस्वरूप 15 मीटर तक की ऊँचाई वाली विशाल ज्वारीय तरंगें उठ सकती हैं, जिसे **सुनामी** कहते हैं। अब तक का सबसे विशाल सुनामी 150 मीटर मापा गया था। ये तरंगें 700 किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक की गति से चलती हैं। 2004 के सुनामी से भारत के तटीय क्षेत्रों में अत्यधिक विनाश हुआ था। सुनामी के बाद अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में इंदिरा प्वाइंट डूब गया था।

- **जब समुद्री सतह** पर पवन बहती है, तब तरंगें उत्पन्न होती हैं। जितनी ही तेज़ पवन बहती है, तरंगें भी उतनी ही बड़ी होती जाती हैं।

ज्वार-भाटा (Tides)

दिन में दो बार नियम से महासागरीय जल का उठना एवं गिरना **'ज्वार-भाटा'** कहलाता है। जब सर्वाधिक ऊँचाई तक उठकर जल, तट के बड़े हिस्से को डुबो देता है, तब उसे **ज्वार** कहते हैं। जब जल अपने निम्नतम स्तर तक आ जाता है एवं तट से पीछे चला जाता है, तो उसे **भाटा** कहते हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

सूर्य एवं चंद्रमा के शक्तिशाली गुरुत्वाकर्षण बल **(gravitational force)** के कारण पृथ्वी की सतह पर ज्वार-भाटे आते हैं। जब पृथ्वी का जल चंद्रमा के निकट होता है उस समय चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल से जल अभिकर्षित होता हैं, जिसके कारण **उच्च ज्वार (high Tide)** आते हैं। पूर्णिमा **(full moon)** एवं अमावस्या **(new Moon)** के दिनों में सूर्य, चंद्रमा एवं पृथ्वी तीनों एक सीध में होते हैं और इस समय सबसे ऊँचे ज्वार उठते हैं। इस ज्वार को **बृहत् ज्वार (spring tides)** कहते हैं। लेकिन जब चाँद अपने प्रथम एवं अंतिम चतुर्थांश में होता है, तो चाँद एवं सूर्य का गुरुत्वाकर्षण बल विपरीत दिशाओं से महासागरीय जल पर पड़ता है, परिणामस्वरूप, **निम्न ज्वार-भाटा (low tides)** आता है। ऐसे ज्वार को **लघु ज्वार-भाटा (neap tides)** कहते हैं।

महासागरीय धाराएँ (OCEAN CURRENTS)

महासागरीय धाराएँ, निश्चित दिशा में महासागरीय सतह पर नियमित रूप से बहने वाली जल की धाराएँ होती हैं।

महासागरीय धाराएँ गर्म या ठंडी हो सकती हैं। गर्म महासागरीय धाराएँ, भूमध्य रेखा के निकट उत्पन्न होती हैं एवं ध्रुवों की ओर प्रवाहित होती हैं। ठंडी धाराएँ, ध्रुवों या उच्च अक्षांशों से उष्णकटिबंधीय या निम्न अक्षांशों की ओर प्रवाहित होती हैं। **लेब्राडोर** महासागरीय धाराएँ, शीत जलधाराएँ होती हैं: जबकि गल्फस्टीम गर्म जलधाराएँ होती हैं। महासागरीय धाराएँ, किसी क्षेत्र के तापमान को प्रभावित करती हैं। गर्म धाराओं से स्थलीय सतह का तापमान गर्म हो जाता है। जिस स्थान पर गर्म एवं शीत जलधाराएँ मिलती हैं, वह स्थान विश्वभर में सर्वोत्तम मत्स्यन क्षेत्र माना जाता है। जापान के आस-पास एवं उत्तर अमेरिका के पूर्वी तट इसके कुछ उदाहरण हैं।

जहाँ गर्म एवं ठंडी जलधाराएँ मिलती हैं, वहाँ कुहरे वाला मौसम बनता है।

प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation)

स्थल की ऊँचाई एवं वनस्पति की विशेषताएँ एक-दूसरे से संबंधित होती हैं। ऊँचाई में परिवर्तन के साथ जलवायु में परिवर्तन होता है तथा इसके कारण प्राकृतिक वनस्पति में

SACHIN ACADEMY 9955697782

भी बदलाव आता है। वनस्पति की वृद्धि तापमान एवं नमी पर निर्भर करती है। इसके अलावा यह ढाल एवं मिट्टी की परत की मोटाई जैसे कारकों पर भी निर्भर करती है। इन घटकों में अंतर के कारण किसी स्थान की प्राकृतिक वनस्पति की सघनता एवं प्रकार में भी परिवर्तन होता है।

आमतौर पर प्राकृतिक वनस्पति को निम्न तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है :

(1) वन (Forest) :- जो वृक्षों के लिए उपयुक्त तापमान एवं परिपूर्ण वर्षा वाले क्षेत्रों में उगते हैं। इन कारकों के आधार पर सघन एवं खुले वन विकसित होते हैं।

(2) घासस्थल (Grasslands) :- जो मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र में विकसित होते हैं।

(3) काँटेदार झाड़ियाँ (Shrubs) :- काँटेदार झाड़ एवं झाड़ियाँ केवल शुष्क क्षेत्रों में पैदा होते हैं।

वन (FOREST)

उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन (Tropical Evergreen Forests)

इन वनों को **उष्णकटिबंधीय वर्षा वन (tropical rainforests)** भी कहते हैं। ये घने वन भूमध्य रेखा एवं उष्णकटिबंध के पास पाए जाते हैं। ये क्षेत्र गर्म होते हैं एवं पूरे वर्ष यहाँ अत्यधिक वर्षा होती है। चूंकि यहाँ का मौसम कभी शुष्क नहीं होता, इसलिए यहाँ के पेड़ों की पत्तियाँ पूरी तरह नहीं झड़ती। इसलिए इन्हें सदाबहार **(evergreen)** कहते हैं। काफी घने वृक्षों की मोटी वितान के कारण दिन के समय भी सूर्य का प्रकाश वन के अंदर तक नहीं पहुँच पाता है। आमतौर पर यहाँ दृढ़ काष्ठ वृक्ष **(Hardwood trees)** जैसे रोज़वुड, आबनूस **(ebony)**, महोगनी आदि पाए जाते हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

❖ **ब्राजील के उष्णकटिबंधीय सदाबहार** वन इतने विशाल हैं कि ये **पृथ्वी के फेफड़े** की तरह प्रतीत होते हैं।

उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन (Tropical Deciduous Forests)

उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन **मानसूनी वन** **(monsoon forests)** होते हैं जो भारत, उत्तरी आस्ट्रेलिया एवं मध्य अमेरिका के बड़े हिस्सों में पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों में मौसमी परिवर्तन होते रहते हैं। जल संरक्षित रखने के लिए शुष्क मौसम में यहाँ के वृक्ष पत्तियाँ झाड़ देते हैं। इन वनों में पाए जाने वाले दृढ़ काष्ठ वृक्षों में साल, सागवान **(teak)**, नीम तथा शीशम हैं। दृढ़ काष्ठ वृक्ष, फर्नीचर, यातायात एवं निर्माण सामग्री बनाने के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। इन प्रदेशों में आमतौर पर पाए जाने वाले जानवर हैं-बाघ, शेर, हाथी, गोल्डन लंगूर एवं बंदर आदि।

❖ '**ऐनाकोंडा**', विश्व का सबसे बड़ा साँप, उष्णकटिबंधीय वर्षावन में पाया जाता है। यह मगरमछ जैसे बड़े जानवर को मार और खा सकता है।

SACHIN ACADEMY 9953697782

शीतोष्ण सदाबहार वन (Temperate Evergreen Forests)

शीतोष्ण सदाबहार वन मध्य अक्षांश के तटीय प्रदेशों में स्थित हैं। ये सामान्यतः महाद्वीपों के पूर्वी किनारों पर पाए जाते हैं-जैसे दक्षिण-पूर्व अमेरिका, दक्षिण चीन एवं दक्षिण-पूर्वी ब्राजील। यहाँ बांज, चीड़ एवं यूकेलिप्टस जैसे दृढ़ एवं मुलायम दोनों प्रकार के पेड़ पाए जाते हैं।

शीतोष्ण पर्णपाती वन (Temperate Deciduous Forests)

उच्च अक्षांश की ओर बढ़ने पर अधिक शीतोष्ण पर्णपाती वन मिलते हैं। ये उत्तर-पूर्वी अमेरिका, चीन, न्यूज़ीलैंड, चिली एवं पश्चिमी यूरोप के तटीय प्रदेशों में पाए जाते हैं। ये अपनी पत्तियाँ शुष्क मौसम में झाड़ देते हैं। यहाँ पाए जाने वाले पेड़ हैं-बांज, ऐश, बीच, आदि। हिरण, लोमड़ी, भेड़िये, यहाँ के आम जानवर हैं। फ़ीजेंट तथा मोनाल जैसे पक्षी भी यहाँ पाए जाते हैं।

- **भूमध्यसागरीय वृक्ष** **(Mediterranean trees)**,शुष्क ग्रीष्म ऋतु में स्वयं को ढाल लेते हैं। उनकी मोटी छाल एवं पत्तियाँ वाष्पोत्सर्जन को रोकती हैं।
- **भूमध्यसागरीय प्रदेश** **(Mediterranean Region)** को फलों की कृषि के कारण 'विश्व का फलोद्यान' भी कहा जाता है।

शंकुधारी वन (Coniferous Forest)

शंकुधारी वन उत्तरी गोलार्द्ध के उच्च अक्षांशों (50°-70°) में भव्य शंकुधारी वन पाए जाते हैं। इन्हें **'टैगा'** भी कहते हैं। ये वन अधिक ऊँचाइयों पर भी पाए जाते हैं। ये लंबे, नरम काष्ठ वाले सदाबहार वृक्ष होते हैं। इन वृक्षों के काष्ठ का उपयोग लुगदी बनाने के लिए किया जाता है, जो सामान्य तथा **अखबारी कागज़** बनाने के काम आती है। नरम काष्ठ का उपयोग माचिस एवं पैकिंग के लिए बक्से बनाने के लिए भी किया जाता है। चीड़, देवदार आदि इन वनों के मुख्य पेड़ हैं। यहाँ सामान्यतः रजत लोमड़ी, मिंक, ध्रुवीय भालू जैसे जानवर पाए जाते हैं।

घासस्थल (GRASSLANDS)

उष्णकटिबंधीय घासस्थल (Tropical grasslands)

ये वन भूमध्य रेखा के किसी भी तरफ उग जाते हैं और भूमध्य रेखा के दोनों ओर से उष्णकटिबंध क्षेत्रों तक फैले हैं। यहाँ वनस्पति निम्न से मध्य वर्षा वाले क्षेत्रों में पैदा होती है। यह घास काफ़ी ऊँची लगभग 3 से 4 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकती है। अफ्रीका का **सवाना घासस्थल** इसी प्रकार का है। सामान्य रूप से उष्णकटिबंधीय घासस्थल में हाथी, जेबरा, जिराफ़, हिरण, तेंदुआ आदि जानवर पाए जाते हैं

शीतोष्ण घासस्थल (Temperate grasslands)

ये मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों और महाद्वीपों के भीतरी भागों में पाए जाते हैं। यहाँ की घास

आमतौर पर छोटी एवं पौष्टिक होती है। शीतोष्ण प्रदेशों में सामान्यतः जंगली भैंस, बाइसन, एंटीलोप पाए जाते हैं।

कँटीली झाड़ियाँ (Thorny bushes)

ये शुष्क रेगिस्तान जैसे प्रदेशों में पाई जाती हैं। उष्णकटिबंधीय रेगिस्तान, महाद्वीपों के पश्चिमी किनारों पर पाए जाते हैं। तीव्र गर्मी एवं बहुत कम वर्षा के कारण यहाँ वनस्पतियों की कमी रहती है।

विभिन्न प्रदेशों में घासस्थल विभिन्न नामों से जाने जाते हैं

उष्णकटिबंधीय घासस्थल

पूर्वी अफ्रीका ➡ सवाना

ब्राजील ➡ कंपोस

वेनेजुएला ➡ लानोस

शीतोष्ण कटिबंधीय घासस्थल

अर्जेन्टीना ➡ पैंपास

उत्तरी अमेरिका ➡ प्रेअरी

दक्षिण अफ्रीका ➡ वेल्ड

मध्य एशिया ➡ स्टेपी

आस्ट्रेलिया ➡ डान

SACHIN ACADEMY 9955697782

ध्रुवीय प्रदेश (Polar Region)

यह क्षेत्र अत्यधिक ठंडा होता है यहाँ बहुत ही सीमित प्राकृतिक वनस्पति (vegetation) मिलती है। यहाँ केवल काई, लाइकेन एवं छोटी झाड़ियाँ पाई जाती हैं। ये अल्पकालिक ग्रीष्म ऋतु के दौरान विकसित होती हैं। इसे **टुंड्रा** प्रकार की वनस्पति कहा जाता है। ये

वनस्पतियाँ यूरोप, एशिया एवं उत्तरी अमेरिका के ध्रुवीय प्रदेशों में पाई जाती हैं। यहाँ के जानवरों के शरीर पर मोटा फ़र एवं मोटी चमड़ी होती है, जो उन्हें ठंडी जलवायु में सुरक्षित रखते हैं। यहाँ पाए जाने वाले कुछ जानवर हैं - सील, वालरस, कस्तूरी-बैल, ध्रुवीय उल्लू, ध्रुवीय भालू और बर्फीली लोमड़ी।

बस्तियाँ (Settlements)

वे स्थान जहाँ भवन अथवा बस्तियाँ विकसित होती हैं उसे **बसाव स्थान (site)** कहते हैं। आदर्श बसाव स्थान के चयन के लिए प्राकृतिक दशाएँ:

- अनुकूल जलवायु
- जल की उपलब्धता
- उपयुक्त भूमि उपजाऊ मिट्टी

गाँव, ग्रामीण बस्ती होती है; जहाँ लोग कृषि, मत्स्य पालन, वानिकी, दस्तकारी एवं पशुपालन संबंधी कार्य करते हैं। ग्रामीण बस्ती सघन या प्रकीर्ण हो सकती हैं। सघन बस्तियों में घर पास-पास बने होते हैं।

प्रकीर्ण बस्तियों (scattered settlement) में लोगों के घर दूर-दूर व्यापक क्षेत्र में फैले होते हैं। इस प्रकार की बस्तियाँ मुख्यतः पहाडी क्षेत्रों, घने जंगल एवं अतिविषम जलवायु वाले क्षेत्रों में पाई जाती हैं।

गर्म जलवायु (hot climate) वाले क्षेत्रों में मिट्टी की मोटी दीवार वाले घर पाए जाते हैं, जिनकी छतें फूस की बनी होती हैं। स्थानीय सामग्री, जैसे - पत्थर, पंक, चिकनी मिट्टी, तृण आदि का उपयोग घर बनाने में किया जाता है।

नगरीय बस्तियों (towns) में नगर छोटी एवं शहर उनसे बड़ी बस्तियाँ होती हैं। नगरीय क्षेत्रों में लोग निर्माण, व्यापार एवं सेवा क्षेत्रों में कार्यरत होते हैं।

ऋतु-प्रवास (Transhumance)

लोगों के मौसमी आवागमन को **ऋतु-प्रवास** कहते हैं। जो लोग पशु पालते हैं, वे मौसम में

SACHIN ACADEMY 9955697782

परिवर्तन के अनुसार नए चरागाहों की खोज में निकल जाते हैं।

- **दक्षिणी अमेरिका के ऐंडीज पर्वत** के क्षेत्र में लामा का उपयोग उसी तरह होता है, जैसे तिब्बत में याक का उपयोग होता है।

परिवहन (Transport)

परिवहन के चार मुख्य साधन हैं – सड़कमार्ग **(roadways)**, रेलमार्ग **(railways)**, जलमार्ग **(waterways)** एवं वायुमार्ग **(airways)**।

भारत में अनेक राष्ट्रीय एवं राज्य राजमार्ग हैं। भारत में एक्सप्रेस वे का निर्माण नवीनतम है। **स्वर्ण चतुर्भुजीय महामार्ग (Golden Quadrilateral Connects)** दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ता है।

- **जायनिंग से ल्हासा** के बीच चलने वाली रेलगाड़ी समुद्रतल से 4,000 मीटर की ऊँचाई पर चलती है, जिसका सबसे ऊँचा बिंदु समुद्र तल से 5072 मीटर है।

जलमार्ग (Waterways)

मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं-**अंतर्देशीय जलमार्ग (inland Waterways)** एवं **समुद्रीमार्ग (sea routes)**।

अंतर्देशीय जलमार्ग (inland Waterways)

नाव्य नदियों **(Navigable rivers)** एवं झीलों का उपयोग अंतर्देशीय जलमार्ग के लिए होता है। कुछ महत्त्वपूर्ण अंतर्देशीय जलमार्ग हैं : **गंगा-ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र**, उत्तरी अमेरिका में **ग्रेट लेक** एवं अफ्रीका में **नील नदी**।

समुद्रीमार्ग (Sea routes)

समुद्री एवं महासागरीय मार्गों का उपयोग सामान्यतः व्यापारिक माल एवं समान को एक देश से दूसरे देश में पहुँचाने के लिए करते हैं। ये मार्ग पत्तनों से जुड़े होते हैं। विश्व के

SACHIN ACADEMY 9955697782

कुछ महत्त्वपूर्ण पत्तन हैं-एशिया में सिंगापर एवं मुंबई, उत्तर अमेरिका में न्यूयॉर्क एवं लॉस एंजिल्स, दक्षिण अमेरिका में **रियो डि जेनेरियो**, अफ्रीका में **डरबन** एवं **केपटाउन**, आस्ट्रेलिया में सिडनी, यूरोप में लंदन

- **सेटेलाइट** से संचार में तीव्रता आई है। तेल की खोज, वनों का सर्वेक्षण, भूमिगत जल, खनिज संपदा, मौसम पूर्वानुमान एवं आपदा पूर्व चेतावनी आदि में सेटेलाइट सहायक होते हैं।

अमेज़न बेसिन

- उष्णकटिबंधीय प्रदेश (tropical region) **कर्क रेखा** और **मकर रेखा** के मध्य स्थित हैं। **भूमध्य रेखा** (equator) के 10° उत्तर से 10° दक्षिण के मध्य के भाग को **भूमध्यरेखीय प्रदेश** कहते है। अमेज़न नदी इसी प्रदेश से होकर बहती है।
- जिस स्थान पर कोई नदी किसी अन्य जल राशि में मिलती है उसे **नदी का मुहाना** (river's mouth) कहते हैं। अमेज़न नदी में बहुत सारी सहायक नदियाँ मिलकर **अमेज़न बेसिन** का निर्माण करती हैं। यह नदी बेसिन **ब्राजील** के भागों, **पेरू** के कुछ भागों, **बोलीविया**, **इक्वाडोर**, **कोलंबिया** तथा **वेनेजुएला** के छोटे भाग से अपवाहित होती है।
- जब स्पेन के अन्वेषकों (explorers) ने इस नदी की खोज की तब सिर पर सुरक्षा कवच (हेडगियर) एवं घास के स्कर्ट पहने कुछ स्थानीय आदिवासियों ने उन पर आक्रमण किया। इन आक्रमणकारियों ने उन्हें प्राचीन रोमन साम्राज्य के **अमेज़ोंस** नामक महिला योद्धाओं के आक्रामक समूह की याद दिला दी। इस प्रकार यहाँ का नाम **अमेज़न** पड़ा।
- सहायक नदियाँ (Tributaries) छोटी नदियाँ होती हैं जो मुख्य नदी में मिलती हैं। मुख्य नदी अपनी सहायक नदियों के साथ जिस क्षेत्र के पानी को बहाकर ले जाती है वह उसका **बेसिन** अथवा **जलसंग्रहण क्षेत्र** कहा जाता है। अमेज़न बेसिन विश्व का सबसे बड़ा **नदी बेसिन** है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

वर्षा वन (Rain Forest)

- इन प्रदेशों में अत्यधिक वर्षा के कारण यहाँ की भूमि पर सघन वन उग जाते हैं। वन इतने सघन होते हैं कि पत्तियों तथा शाखाओं से **'छत'** सी बन जाती है जिसके कारण सूर्य का प्रकाश धरातल तक नहीं पहुंच पाता है। यहाँ की भूमि प्रकाश रहित एवं नम बनी रहती है। यहाँ केवल वही वनस्पति पनप सकती है जिसमें छाया में बढ़ने की क्षमता हो। **परजीवी पौधों (plant parasites)** के रूप में यहाँ **आर्किड** एवं **ब्रोमिलायड** पैदा होते हैं।
- वर्षावन में प्राणिजात की प्रचुरता होती है। टूकन, गुंजन पक्षी, रंगीन पक्षति वाले पक्षी एवं भोजन के लिए बड़ी चोंच वाले विभिन्न प्रकार के पक्षी जो भारत में पाए जाने वाले सामान्य पक्षियों से भिन्न होते हैं यहाँ पाए जाते हैं। प्राणियों में बंदर, **स्लॉथ** एवं चीटी खानेवाले **टैपीर** भी यहाँ पाए जाते हैं। साँप एवं सरीसर्प की विभिन्न प्रजातियाँ भी इन वनों में पाई जाती हैं। मगर, साँप, अजगर तथा एनाकोंडा एवं बोआ कुछ ऐसी ही प्रजातियाँ हैं। इसके अतिरिक्त हजारों कीड़े-मकोड़े भी इस बेसिन में निवास करते हैं। मांस खाने वाली **पिरान्या मत्स्य** समेत मछलियों की विभिन्न प्रजातियाँ भी अमेजन नदी में पाई जाती हैं। इस प्रकार जीवों की विविधता की दृष्टि से यह बेसिन असाधारण रूप से समृद्ध है।
- वर्षावन अत्यधिक मात्रा में घरों के लिए लकड़ी प्रदान करते हैं। कुछ परिवार मधुमक्खी के छत्ते के आकार वाले छप्पर के घरों में रहते हैं। जबकि कुछ लोग **'मलोका'** कहे जाने वाले बड़े अपार्टमेंट जैसे घरों में रहते हैं जिनकी छत तीव्र ढलान वाली होती हैं।

- **'ब्रोमिलायड'** एक विशेष प्रकार का पौधा है जो अपनी पत्तियों में जल को संचित रखता है। मेढ़क जैसे प्राणी इन जल के पॉकेट का उपयोग अंडा देने के लिए करते हैं।

SACHIN ACADEMY 9556697782

गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन में जीवन (Life In The Ganga-Brahmaputra Basin)

गंगा तथा ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियाँ मिलकर भारतीय उपमहाद्वीप में **गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन** का निर्माण करती है। घाघरा, सोन, चंबल, गंडक, कोसी जैसी गंगा की सहायक नदियाँ एवं ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियाँ इसमें अपवाहित होती हैं।

गंगा एवं ब्रह्मपुत्र के मैदान, पर्वत एवं हिमालय के **गिरिपाद** तथा **सुंदरवन डेल्टा** इस बेसिन की मुख्य विशेषताएँ हैं। मैदानी क्षेत्र में अनेक **चापझील** पाई जाती हैं।

- **पश्चिम बंगाल** एवं असम में चाय के बागान मिलते हैं।
- **बिहार एवं असम** के कुछ भागों में सिल्क के कीड़ों का संवर्धन कर **सिल्क** का उत्पादन किया जाता है।
- **डेल्टा क्षेत्र मैंग्रोव वन** से घिरा है। उत्तराखंड, सिक्किम एवं अरुणाचल प्रदेश की ठंडी जलवायु एवं तीव्र ढाल वाले भागों में चीड़, देवदार एवं फर जैसे शंकुधारी पेड़ पाए जाते हैं।
- **जनसंख्या घनत्व (Population density)** का अर्थ है, एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में रहने - वाले लोगों की संख्या। उदाहरण के लिए उत्तराखंड का जनसंख्या घनत्व 189 है जबकि पश्चिम बंगाल का 1029 तथा बिहार का 1102
- **वेदिकाओं (Terraces)** का निर्माण खड़ी ढलानों पर समतल सतह बना कर कृषि करने के लिए होता है। ढलान को इसलिए हटाया जाता है कि जल का प्रवाह तीव्रता से न हो।
- **सार्वभौमिक स्वच्छता** कवरेज प्राप्त करने और स्वच्छता पर ध्यान केन्द्रित करने के प्रयासों में तेजी लाने के लिए भारत के प्रधानमंत्री ने 2 अक्तूबर 2014 को **'स्वच्छ भारत मिशन'** का शुभारंभ किया।

SACHIN ACADEMY 9956697782

सहारा रेगिस्तान (SAHARA DESERT)

यह विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान है। यह लगभग 8.54 लाख वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में

फैला हुआ है। सहारा रेगिस्तान **ग्यारह देशों** से घिरा हुआ है। ये देश हैं-अल्जीरिया, चाड, मिस्र, लीबिया, माली, मौरितानिया, मोरक्को, नाइजर, सूडान, ट्यूनिशिया एवं पश्चिमी सहारा।

सहारा रेगिस्तान एक समय में पूर्णतया हरा-भरा मैदान था। सहारा की गुफ़ाओं से प्राप्त चित्रों से ज्ञात होता है कि यहाँ **नदियाँ तथा मगरमच्छ** पाए जाते थे। हाथी, शेर, जिराफ़, शतुरमुर्ग, भेड़, पशु तथा बकरियाँ सामान्य जानवर थे। परंतु यहाँ के जलवायु परिवर्तन ने इसे बहुत **गर्म व शुष्क प्रदेश** में बदल दिया है।

सहारा के अल **अजीजिया** क्षेत्र में, जो त्रिपोली, लीबिया के दक्षिणी भाग में स्थित है, यहाँ का सबसे अधिक तापमान 1922 में 57.7° **सेल्सियस** दर्ज किया गया था।

वनस्पतिजात एवं प्राणिजात (Flora and Fauna)

सहारा रेगिस्तान की वनस्पतियों में कैक्टस, खजूर के पेड़ एवं ऐकेशिया पाए जाते हैं। यहाँ कुछ स्थानों पर **मरूद्यान-खजूर** के पेड़ों से घिरे हरित द्वीप पाए जाते हैं। ऊँट, लकड़बग्घा, सियार, लोमड़ी, बिच्छू, साँपों की विभिन्न जातियाँ एवं छिपकलियाँ यहाँ के प्रमुख जीव-जंतु हैं।

विभिन्न समुदायों के लोग (various groups of people)

सहारा रेगिस्तान की कष्टकारी जलवायु में भी विभिन्न समुदायों के लोग निवास करते हैं, जो भिन्न-भिन्न क्रियाकलापों में भाग लेते हैं। इनमें **बेदुईन एवं तुआरेग** भी शामिल हैं। **चलवासी जनजाति** वाले ये लोग बकरी, भेड़, ऊँट एवं घोड़े जैसे पशुधन को पालते हैं।

नील घाटी (Nile Valley)

सहारा में मरूद्यान एवं मिस्र में **नील घाटी** लोगों को निवास में मदद करती है। यहाँ जल की उपलब्धता होने से लोग खजूर के पेड़ उगाते हैं। यहाँ चावल, गेहूँ, जौ एवं सेम जैसी फसलें भी उगाई जाती हैं। मिस्त्र में उगाए जाने वाली **कपास (cotton)** पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

खनिज (minerals)

तेल की खोज संपूर्ण विश्व में अत्यधिक माँग वाले, इस उत्पाद का अल्जीरिया, लीबिया एवं मिस्त्र में होने के कारण सहारा रेगिस्तान में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। इस क्षेत्र में प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण में लोहा, फॉस्फोरस, मैंगनीज़ एवं यूरेनियम सम्मिलित हैं।

मरूद्यान (Oasis)

जब रेत को पवन उड़ा ले जाती है, तो वहाँ **गर्त (Trough)** बन जाती है। जहाँ गर्त में भूमिगत जल सतह पर आ जाता है, वहाँ **मरूद्यान** बनते हैं। ये क्षेत्र उपजाऊ होते हैं। लोग इनके आसपास निवास करते हैं एवं खजूर के पेड़ तथा अन्य फसलें उगाते हैं। कभी-कभी यह मरूद्यान असामान्य रूप से बड़ा भी हो सकता है। मोरक्को में **टैफ़िलालेट मरूद्यान** ऐसा ही एक विशाल मरूद्यान है, जो 13,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

ठंडा रेगिस्तान-लद्दाख (THE COLD DESERT - LADAKH)

- जम्मू एवं कश्मीर के पूर्व में **बृहत् हिमालय** में स्थित लद्दाख एक ठंडा रेगिस्तान है। इसके उत्तर में काराकोरम पर्वत श्रेणियाँ एवं दक्षिण में जास्कर पर्वत स्थित है। लद्दाख से होकर अनेक नदियाँ बहती हैं, जिनमें सिंधु नदी प्रमुख है। ये नदियाँ गहरी घाटियों एवं **महाखड्ड (gorge)** का निर्माण करती हैं। लद्दाख में अनेक हिमानियाँ हैं जैसे- **गैंग्री हिमानी**।
- लद्दाख की ऊँचाई कारगिल में लगभग 3000 मीटर से लेकर काराकोरम में 8000 मीटर से भी अधिक पाई जाती है। अधिक ऊँचाई के कारण यहाँ की जलवायु अत्यधिक शीतल एवं शुष्क होती है। इस ऊँचाई पर वायु परत पतली होती है जिससे सूर्य की गर्मी की अत्यधिक तीव्रता महसूस होती है। ग्रीष्म ऋतु में दिन का **तापमान 0° सेल्सियस** से कुछ ही अधिक होता है एवं रात में तापमान **शून्य से -30°**

सेल्सियस से नीचे चला जाता है। शीत ऋतु में यह बर्फीला ठंडा हो जाता है, तापमान लगभग हर समय -40° सेल्सियस से नीचे ही रहता है। चूंकि यह **हिमालय के वृष्टि-छाया (rain shadow)** क्षेत्र में स्थित है, अत: यहाँ वर्षा बहुत ही कम होती है।

- ❖ **पृथ्वी** के सबसे ठंडे स्थानों में से एक **'द्रास'**, लद्दाख में स्थित है।
- ❖ **लद्दाख** को खा-पा-चान भी कहते हैं जिसका अर्थ होता है **हिमभूमि (snow land)**

वनस्पतिजात एवं प्राणिजात (Flora and Fauna)

यहाँ उच्च शुष्कता **(high aridity)** के कारण वनस्पति विरल है। यहाँ जानवरों के चरने के लिए कहीं-कहीं पर ही घास एवं छोटी झाड़ियाँ मिलती हैं। ग्रीष्म ऋतु में सेब, खुबानी एवं अखरोट के पेड़ फल देते हैं। लद्दाख में पक्षियों की विभिन्न प्रजातियाँ नजर आती हैं। इनमें रॉबिन, रेडस्टार्ट, तिब्बती स्नोकॉक, रैवेन एवं हूप यहाँ पाए जाने वाले सामान्य पक्षी हैं। इनमें से कुछ प्रवासी पक्षी हैं। लद्दाख के पशुओं में जंगली बकरी, जंगली भेड़, याक एवं विशेष प्रकार के कुत्ते आदि पाए जाते हैं।

- ❖ **चीरू या तिब्बती एंटीलोप** एक विलुप्त प्रायः जीव है। इसका शिकार **'शाहतूश'** नामक इसके ऊन के लिए होता है। जो वजन में हल्का एवं अत्यधिक गर्म होता है।
- ❖ **क्रिकेट** का सबसे अच्छा बल्ला **शरपत** (विलो) पेड़ की लकड़ी से बनाया जाता है।
- ❖ **मनाली-लेह राजमार्ग** चार दर्रों से गुजरता है - रोहतांग ला, बारालाचा ला, लुनगालाचा ला एवं टंगलंग ला। यह राजमार्ग केवल जुलाई से सितंबर के बीच खुलता है जब बर्फ़ को मार्ग से हटा दिया जाता है।

संसाधन (Resources)

एक वस्तु अथवा पदार्थ की उपयोगिता अथवा प्रयोज्यता उसे एक **संसाधन** बनाती है। वस्तुएं उस समय संसाधन बनती हैं जब उनका कोई मूल्य होता है। "इसका प्रयोग अथवा उपयोगिता इसे मूल्य प्रदान करते हैं। सभी संसाधन **मूल्यवान** होते हैं।"

SACHIN ACADEMY 9955697782

संसाधनों के प्रकार

सामान्यतः संसाधनों को **प्राकृतिक**, **मानव निर्मित** और **मानव** में वर्गीकृत किया गया है।

प्राकृतिक संसाधन (Types of Resources)

जो संसाधन प्रकृति से प्राप्त होते हैं और अधिक संशोधन के बिना उपयोग में लाए जाते हैं, **प्राकृतिक संसाधन** कहलाते हैं। वायु, जिसमें हम साँस लेते हैं, हमारी नदियों और झीलों का जल, मृदा और खनिज, सभी प्राकृतिक संसाधन हैं।

प्राकृतिक संसाधनों को विस्तृत रूप से नवीकरणीय (Renewable) और अनवीकरणीय (non-renewable) संसाधनों में विभाजित किया जा सकता है।

नवीकरणीय संसाधन वे संसाधन है जो शीघ्रता से **नवीकृत** (Renewed) अथवा पुनः परित हो जाते हैं। इनमें से कुछ असीमित हैं और उन पर मानवीय क्रियाओं का प्रभाव नहीं होता, जैसे **सौर** (solar) और **पवन ऊर्जा** (wind energy)। लेकिन फिर भी कुछ नवीकरणीय संसाधनों, जैसे जल, मृदा और वन का लापरवाही से किया गया उपयोग उनके भंडार को प्रभावित कर सकता है।

अनवीकरणीय संसाधन वे संसाधन हैं जिनका भंडार सीमित है। भंडार के एक बार समाप्त होने के बाद उनके नवीकत अथवा पुनः पूरित होने में हजारों वर्ष लग सकते हैं। इस प्रकार के संसाधन अनवीकरणीय कहलाते हैं। **कोयला**, **पेट्रोलियम** तथा **प्राकृतिक गैस** इसके कुछ उदाहरण हैं।

प्राकृतिक संसाधनों का वितरण भूभाग, जलवायु, ऊँचाई जैसे अनेक भौतिक कारकों पर निर्भर करता है। पृथ्वी पर इन कारकों में विभिन्नता होने के कारण संसाधनों का वितरण असमान है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

मानव निर्मित संसाधन (Human Made Resources)

लोग प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग पुल, सड़क, मशीन और वाहन बनाने में करते हैं जो मानव निर्मित संसाधन के नाम से जाने जाते हैं। **प्रौद्योगिकी (Technology)** भी एक मानव निर्मित संसाधन है।

मानव संसाधन (Human Resources)

लोग और अधिक संसाधन बनाने के लिए प्रकृति का सबसे अच्छा उपयोग तभी कर सकते हैं जब उनके पास ऐसा करने का ज्ञान, कौशल तथा प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो। इसलिए मनुष्य एक विशिष्ट प्रकार का **संसाधन** है। अतः, लोग मानव संसाधन हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य, लोगों को बहुमूल्य संसाधन बनाने में मदद करते हैं। अधिक संसाधनों के निर्माण में समर्थ होने के लिए लोगों के कौशल में सुधार करना **मानव संसाधन विकास** कहलाता है।

संसाधन संरक्षण (Conserving Resources)

संसाधनों का सतर्कतापूर्वक उपयोग करना और उन्हें नवीकरण के लिए समय देना, संसाधन संरक्षण कहलाता है। संसाधनों का उपयोग करने की आवश्यकता और भविष्य के लिए उनके संरक्षण में संतुलन बनाए रखना, **सततपोषणीय विकास (sustainable development)** कहलाता है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

सततपोषणीय विकास के कुछ सिद्धांत

- जीवन के सभी रूपों का आदर और देखभाल।
- मानव जीवन की गुणवता को बढ़ाना।
- पृथ्वी की जीवन शक्ति और विविधता का संरक्षण करना।
- प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास को कम-से-कम करना।
- पर्यावरण के प्रति व्यक्तिगत व्यवहार और अभ्यास में परिवर्तन।
- समुदायों को अपने पर्यावरण की देखभाल करने योग्य बनाना।

भूमि (Land)

विश्व की 90 प्रतिशत जनसंख्या भूमि क्षेत्र के 30 प्रतिशत भाग पर ही रहती है। शेष 70 प्रतिशत भूमि पर या तो विरल जनसंख्या है या वह निर्जन है।

भूमि उपयोग (Land use)

- भूमि का उपयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जाता है, जैसे कृषि, वानिकी, खनन, सड़कों और उद्योगों की स्थापना। साधारणतः इसे भूमि उपयोग कहते हैं।
- भूमि का उपयोग भौतिक कारकों द्वारा निर्धारित किया जाता है, जैसे **स्थलाकृति (topography)**, **मृदा (soil)**, **जलवायु (climate)**, **खनिज (minerals)** और **जल (water)** की उपलब्धता। **मानवीय कारक** जैसे जनसंख्या और प्रौद्योगिकी भी भूमि उपयोग प्रतिरूप के महत्त्वपूर्ण निर्धारक हैं।
- स्वामित्व के आधार पर भूमि को निजी भूमि और सामुदायिक भूमि में बाँटा जा सकता है।
- **निजी भूमि** व्यक्तियों के स्वामित्व में होती है जबकि **सामुदायिक भूमि** समुदाय के स्वामित्व में होती है। सामान्य रूप से इसका उपयोग समुदाय से संबंधित व्यक्तियों के लिए किया जाता है, जैसे चारा, फलों, नट या औषधीय बूटियों को एकत्रित करना। इस सामुदायिक भूमि को साझा **संपत्ति संसाधन** भी कहते हैं।

SACHIN ACADEMY 9555697782

मृदा (Soil)

- पृथ्वी के पृष्ठ पर दानेदार कणों के आवरण की पतली परत **मृदा** कहलाती है। यह भूमि से निकटता से जुड़ी हुई है। स्थल रूप मृदा के प्रकार को निर्धारित करते हैं। मृदा का निर्माण चट्टानों से प्राप्त खनिजों और जैव पदार्थ तथा भूमि पर पाए जाने वाले खनिजों से होता है। यह अपक्षय की प्रक्रिया के

माध्यम से बनती है। **खनिजों** और **जैव पदार्थों** **(organic matter)** का सही मिश्रण मृदा को **उपजाऊ** **(fertile)** बनाता है।

मृदा के प्रकार

जलोढ़ मृदा (Alluvial soil) :- यह मृदा सबसे अधिक उपजाऊ होती है। यह नदियों द्वारा अपने साथ बहाकर लाए गए महीन मलबा के जमाव से बनती है। भारत का उत्तरी विशाल मैदान इसी मिट्टी से बना है। यह मैदान गंगा, सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाए गये मलबों के जमाव से निर्मित है। जबकि प्रायद्वीपीय भारत में महानदी, कृष्णा, गोदावरी और कावेरी नदियों के डेल्टाई भागों में इसका जमाव है। इस मृदा में गेहूँ, चावल, गन्ना आदि फसलों की खेती की जाती है।

काली मृदा (Black soil) :- यह मृदा भारत में ऐसे भू-भाग पर मिलती है जहाँ प्राचीन काल में लावा का जमाव हुआ था। लावा की चट्टानों के टूटने-फूटने से इस मिट्टी का निर्माण हुआ है। इसे 'कपासी' या 'रेगुर' मिट्टी भी कहते हैं। यह कपास की खेती के लिए अधिक उपयुक्त होती है।

लेटराइट मृदा (Laterite soil) :- भारत में यह मिट्टी गर्म और अधिक वर्षा वाले स्थानों पर पाई जाती है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में मृदा के पोषक तत्व पानी में घुलकर रिस-रिस कर नीचे चले जाते हैं। पोषक तत्वों के अभाव में यह मिट्टी कम उपजाऊ हो जाती है। भारत में यह मिट्टी केरल के मालावार (पश्चिमी घाट), छोटा नागपुर पठार और उत्तर-पूर्वी राज्यों में मिलती है। इस मिट्टी में चाय, कॉफी, काजू आदि की बागाती कृषि की जाती है।

मृदा संरक्षण की विधियाँ (methods of soil conservation)

मल्च बनाना (Mulching) : पौधों के बीच अनावरित भूमि जैव पदार्थ जैसे प्रवाल से ढक दी जाती है। इससे मृदा की **आर्द्रता** **(Humidity)** रुकी रहती है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

वेदिका फार्म (Terrace Farmin) चौड़े, समतल सोपान अथवा वेदिका तीव्र ढालों पर बनाए जाते हैं ताकि सपाट सतह फसल उगाने के लिए उपलब्ध हो जाए। इनसे **पृष्ठीय प्रवाह** और **मृदा अपरदन (soil erosion)** कम होता है।

समोच्चरेखीय जुताई (Contour ploughing) : एक पहाड़ी ढाल पर समोच्च रेखाओं के सामान्तर जुताई ढाल से नीचे बहते जल के लिए एक **प्राकृतिक अवरोध (Natural barrier)** का निर्माण करती है।

रक्षक मेखलाएँ (Shelter Belts) : तटीय प्रदेशों और शुष्क प्रदेशों में पवन गति रोकने के लिए वृक्ष कतारों में लगाए जाते हैं ताकि मृदा आवरण को बचाया जा सके

समोच्चरेखीय रोधिकाएँ (Contour bars): समोच्चरेखाओं पर रोधिकाएँ बनाने के लिए पत्थरों, घास, मृदा का उपयोग किया जाता है। **रोधिकाओं (bars)** के सामने जल एकत्र करने के लिए खाइयाँ बनाई जाती हैं।

चट्टान बाँध (Rock dam): यह जल के प्रवाह को कम करने के लिए बनाए जाते हैं। यह नालियों की रक्षा करते हैं और मृदा क्षति को रोकते हैं। बीच की फसल उगाना : वर्षा दोहन से मृदा को सुरक्षित रखने के लिए अलग-अलग समय पर भिन्न-भिन्न फसलें **एकांतर कतारों (Alternate queues)** में उगाई जाती हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

जल (Water)

- जल एक महत्त्वपूर्ण **नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन (Renewable natural resources)** है, भूपृष्ठ **(Surface)** का तीन-चौथाई भाग जल से ढका है। इसीलिए इसे 'जल ग्रह कहना उपयुक्त है। लगभग 3.5 अरब वर्ष पहले जीवन, आदि महासागरों में ही प्रारंभ हुआ था।
- महासागरों **(Oceans)** का जल **लवणीय (Saline)** है और मानवीय उपभोग के लिए उपयुक्त नहीं है। **अलवण जल (Fresh water)** केवल **2.7 प्रतिशत** ही है। इसका लगभग 70 प्रतिशत भाग बर्फ़ की चादरों और हिमानियों **(Glaciers)** के रूप में **अंटार्कटिका**, **ग्रीनलैंड** और **पर्वतीय प्रदेशों** में पाया जाता है। अपनी स्थिति के कारण

ये मनुष्य की पहुँच के बाहर है। केवल एक प्रतिशत अलवण जल उपलब्ध है और वह मानव उपभोग के लिए उपयुक्त है। यह भौम जल, नदियों और झीलों में पृष्ठीय जल के रूप में तथा वायुमंडल में **जलवाष्प** **(water vapour)** के रूप में पाया जाता है।

- पृथ्वी पर जल न बढ़ाया जा सकता है और न घटाया जा सकता है। इसकी कुल मात्रा स्थिर रहती है। इसकी प्रचुरता में विविधता प्रतीत होती है क्योंकि यह वाष्पीकरण, वर्षण और वाह की प्रक्रियाओं द्वारा **महासागरों**, **वायु**, **भूमि** और **पुनः महासागरों** में चक्रण द्वारा निरंतर गतिशील है। इसे **'जल चक्र'** **(water cycle)** कहते हैं।
- अशोधित **(untreated)** या आंशिक रूप से शोधित वाहित मल **(sewage)**, कृषि रसायनों का विसर्जन और जल निकायों में औद्योगिक बहिःस्राव जल के प्रमुख **संदूषक** **(contaminants)** हैं। इनमें शामिल नाइट्रेट धातुएँ और पीड़कनाशी, जल को प्रदूषित कर देते हैं।

जैवमंडल (Biosphere)

प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन केवल स्थलमंडल, जलमंडल और वायुमंडल के बीच जुड़े एक सँकरे क्षेत्र में ही पाए जाते हैं जिसे हम **जैवमंडल** कहते हैं।

पारितंत्र (Ecosystem)

जैवमंडल सभी जीवित जातियाँ जीवित रहने के लिए एक-दूसरे से परस्पर संबंधित और निर्भर रहती हैं। इस जीवन आधारित तंत्र को **पारितंत्र** कहते हैं।

- **भारतीय उप-महाद्वीप** में जिन पशुओं का उपचार **डिक्लोफिनैक**, **एस्प्रीन** अथवा **इबुप्रोफेन** जैसे पीडानाशी से किया जाता था, उनके अपमार्जन उपरांत **गिद्ध किडनी** खराब होने से मर रहे थे। पशुओं पर इन औषधियों के उपयोग करने पर प्रतिबंध लगाने के प्रयास किए जा रहे हैं तथा आरक्षित स्थान पर गिद्ध के प्रजनन के प्रयास किए जा रहे हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

प्राकृतिक वनस्पति का वितरण (Distribution Of Natural Vegetation)

वनस्पति की वृद्धि मुख्य रूप से तापमान और आर्द्रता पर निर्भर करती है। विश्व की वनस्पति के मुख्य प्रकारों को चार वर्गों में रखा जा सकता है, जैसे **वन**, **घास स्थल**, **गुल्म** और **टुंड्रा**।

क्षेत्र (Area)

भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में विशाल वृक्ष उग सकते हैं। इस प्रकार वन प्रचुर जल आपूर्ति वाले क्षेत्रों में ही पाए जाते हैं। जैसे-जैसे **आर्द्रता (Humidity)** कम होती है वैसे-वैसे वृक्षों का आकार और उनकी सघनता कम हो जाती है। सामान्य वर्षा वाले क्षेत्रों में छोटे आकार वाले वृक्ष और घास उगती है जिससे विश्व के **घास स्थलों** का निर्माण होता है। कम वर्षा वाले शुष्क प्रदेशों में **कँटीली झाड़ियाँ** एवं गुल्म उगते हैं। इस प्रकार के क्षेत्रों में पौधों की जड़ें गहरी होती हैं। वाष्पोत्सर्जन से होने वाली आर्द्रता की हानि को घटाने के लिए इन पेड़ों की पत्तियाँ काँटेदार और मोमी सतह वाली होती हैं। शीत ध्रुवीय प्रदेशों की **टुंड्रा वनस्पति** में **मॉस** और **लाइकेन** सम्मिलित हैं।

C.I.T.E.S

CITES (The Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora) सरकारों के बीच एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि **वन्य प्राणी** एवं **पौधों** के नमूनों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से उनके जीवन को कोई खतरा नहीं है। मोटे तौर पर पशुओं की **5,000 जातियाँ** और पौधों की **28,000 जातियाँ** रक्षित की गई हैं। भालू, डाल्फिन, कैक्टस, प्रवाल, आर्किड और ऐलो कुछ उदाहरण हैं।

खनिज (Minerals)

- पृथ्वी पर चट्टानों में कई पदार्थ मिले होते हैं जो खनिज कहलाते हैं। ये खनिज पृथ्वी की चट्टान **पर्पटी (Crust)** पर सभी जगह फैले हुए हैं।"

SACHIN ACADEMY 9955697782

➢ प्राकृतिक रूप से प्राप्त होने वाला पदार्थ जिसका निश्चित रासायनिक संघटन **(Chemical composition)** हो, वह एक **खनिज** है। खनिज सभी स्थानों पर समान रूप से वितरित नहीं हैं। वे किसी विशेष क्षेत्र में या **शैल समूहों (Rock clusters)** में संकेंद्रित हैं। कुछ खनिज ऐसे क्षेत्रों में पाए जाते हैं जो आसानी से अभिगम्य नहीं हैं जैसे **आर्कटिक महासागर संस्तर** और **अंटार्कटिका।**

➢ खनिज विभिन्न प्रकार के भूवैज्ञानिक परिवेश में अलग-अलग दशाओं में निर्मित होते हैं। वे बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के, प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित होते हैं। वे अपने **भौतिक** गुणों, जैसे रंग, घनत्व, कठोरता और रासायनिक गुणों तथा विलेयता **(Solubility)** के आधार पर पहचाने जा सकते हैं।

❖ **शैल** खनिज अवयवों के अनिश्चित संघटन वाले एक या एक से अधिक खनिजों का एक समूहन है।

❖ **शैल** जिनसे खनिजों का खनन किया जाता है, **अयस्क (Ores)** कहे जाते हैं।

❖ **यद्यपि 2,800** से अधिक खनिजों की पहचान की गई है जिनमें से केवल लगभग 100 **अयस्क खनिज** समझे जाते हैं।

❖ **हरा हीरा** एक दुर्लभतम हीरा है।

❖ **विश्व की प्राचीनतम** शैलें पश्चिमी आस्ट्रेलिया में हैं। वे 430 करोड़ वर्ष पूर्व बने, पृथ्वी के निर्माण के मात्र 30 करोड़ वर्ष पश्चात।

SACHIN ACADEMY 9956697782

खनिजों के प्रकार (Types of Minerals)

पृथ्वी पर तीन हजार से अधिक विभिन्न खनिज हैं। संरचना के आधार पर, खनिजों को मुख्यतः **धात्विक (Metallic)** और **अधात्विक (Non-metallic) खनिजों** में वर्गीकृत किया गया है

खनिजों का वर्गीकरण (Classification of minerals)

धात्विक खनिजों में धातु कच्चे रूप में होती है। धातुएँ कठोर पदार्थ हैं, जो ऊष्मा और

विद्युत को सुचालित करती हैं और जिनमें द्युति या चमक की विशेषता होती है। **लौह अयस्क बॉक्साइट**, **मैंगनीज अयस्क** इनके कुछ उदाहरण हैं। धात्विक खनिज लौह अथवा अलौह हो सकते हैं। लौह खनिजों जैसे लौह अयस्क, मैंगनीज और क्रोमाइट में लोहा होता है। अलौह खनिज में लोहा नहीं होता है किंतु कुछ अन्य धातु, यथा सोना, चाँदी, ताँबा या सीसा हो सकती है।

अधात्विक खनिजों में धातुएँ नहीं होती हैं। **चूना पत्थर**, **अभ्रक** और **जिप्सम** इन खनिजों के उदाहरण हैं। खनिज ईंधन जैसे कोयला और पेट्रोलियम भी अधात्विक खनिज है। खनिजों को खनन, प्रवेधन या आखनन द्वारा निष्कर्षित किया जा सकता है।

SACHIN ACADEMY 9956097782

खनिज खनन (mining)

- पृथ्वी की सतह के अंदर दबी शैलों से खनिजों को बाहर निकालने की प्रक्रिया **खनन (mining)** कहलाती है। खनिज जो कम गहराई में स्थित हैं वे पृष्ठीय स्तर को हटाकर निकाले जाते हैं, इसे **विवृत खनन (open-cast mining)** कहते हैं।
- गहन वेधन जिन्हें **कूपक (shafts)** कहते हैं, अधिक गहराई में स्थित खनिज निक्षेपों तक पहुँचने के लिए बनाए जाते हैं। इसे **कूपकी खनन (shaft mining)** कहते हैं।
- पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस धरातल के बहुत नीचे पाए जाते हैं। उन्हें बाहर निकालने के लिए गहन कूपों की खुदाई की जाती है इसे **प्रवेधन (drilling)** कहते हैं।
- सतह के निकट स्थित खनिजों को जिस प्रक्रिया द्वारा आसानी से खोदकर निकाला जाता है, उसे **आखनन (quarrying)** कहते हैं।

खनिजों का वितरण (Distribution of Minerals)

- खनिज विभिन्न प्रकार की शैलों में पाए जाते हैं। कुछ आग्नेय शैलों **(Igneous rocks)** में पाए जाते हैं, कुछ कायांतरित शैलों **(Metamorphic rocks)** में जबकि अन्य अवसादी शैलों **(Sedimentary rocks)** में पाए जाते हैं। धात्विक खनिज आग्नेय और कायांतरित शैल समूहों, जिनसे विशाल पठारों का निर्माण होता है, में पाए जाते हैं।

- उत्तरी स्वीडन में लौह अयस्क **(Iron-ore)**, ऑंटेरियो (कनाडा) में ताँबा और निकेल के निक्षेप, दक्षिण अफ्रीका में लोहा, निकेल, क्रोमाइट और प्लेटिनम, आग्नेय और कायांतरित शैलों में पाए जाने वाले खनिजों के उदाहरण हैं।
- मैदानों और **नवीन वलित पर्वतों** के अवसादी शैल समूहों में अधात्विक खनिज जैसे चूना पत्थर पाए जाते हैं। फ्रांस के **कॉकेशस प्रदेश** के चूना पत्थर निक्षेप, जार्जिया और यूक्रेन के मैंगनीज निक्षेप और अल्जीरिया के फास्फेट संस्तर इसके कुछ उदाहरण हैं। खनिज ईंधन जैसे कोयला और पेट्रोलियम भी अवसादी स्तर में पाए जाते हैं।

एशिया (Asia)

चीन और भारत के पास विशाल लौह अयस्क निक्षेप हैं। यह महाद्वीप विश्व का आधे से अधिक **टिन** उत्पादन करता है। **चीन**, **मलेशिया** और **इंडोनेशिया** विश्व के अग्रणी टिन उत्पादकों में है। चीन सीसा, एन्टीमनी और टंगस्टन के उत्पादन में भी अग्रणी है। एशिया में मैंगनीज, बॉक्साइट, निकेल, जस्ता और ताँबा के भी निक्षेप हैं।

यूरोप (Europe)

यूरोप विश्व में लौह अयस्क का अग्रणी उत्पादक है। **रूस**, **यूक्रेन**, **स्वीडन** और फ्रांस लौह अयस्क के विशाल निक्षेप वाले देश हैं। ताँबा **(copper)**, सीसा **(Lead)**, जस्ता **(Zinc)**, मैंगनीज और निकेल खनिजों के निक्षेप पूर्वी यूरोप और यूरोपीय रूस में पाए जाते हैं।

उत्तर अमेरिका (North America)

उत्तर अमेरिका में खनिज निक्षेप तीन क्षेत्रों में अवस्थित हैं - **ग्रेट लेक** के उत्तर में कनाडियन शील्ड प्रदेश, अप्लेशियन प्रदेश और पश्चिम की पर्वत श्रृंखलाएँ। लौह अयस्क, निकेल, सोना, यूरेनियम और ताँबा का खनन कनाडियन शील्ड प्रदेश में और कोयले का **अप्लेशियन प्रदेश** में होता है। **पश्चिमी कार्डीलेरा** में ताँबा, सीसा, जस्ता, सोना और चाँदी के विशाल निक्षेप हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

दक्षिण अमेरिका (South America)

ब्राजील विश्व में उच्च कोटि के लौह-अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है। **चिली** और **पेरू** ताँबे के अग्रणी उत्पादक हैं। ब्राजील और बोलीविया विश्व में टिन के सबसे बड़े उत्पादकों में से हैं। दक्षिण अमेरिका के पास सोना, चाँदी, जस्ता, क्रोमियम, मैंगनीज, बॉक्साइट, अभ्रक, प्लैटिनम, एसबेस्टस और हीरा के विशाल निक्षेप भी हैं। खनिज तेल वेनेजुएला, अर्जेंटीना, चिली, पेरू और कोलंबिया में पाया जाता है।

अफ्रीका (Africa)

अफ्रीका खनिज संसाधनों में धनी है। यह **हीरा**, **सोना** और **प्लेटिनम** का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादक है। दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और जायरे विश्व के सोने का एक बड़ा भाग उत्पादित करते हैं। **ताँबा**, **लौह अयस्क**, **क्रोमियम**, **यूरेनियम**, **कोबाल्ट** और **बॉक्साइट** दक्षिण अफ्रीका में पाए जाने वाले अन्य खनिज है। तेल नाइजीरिया, लीबिया और अंगोला में पाया जाता है।

आस्ट्रेलिया (Australia)

आस्ट्रेलिया विश्व में बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक है। यह सोना, हीरा, लौह-अयस्क, टिन और निकेल का अग्रणी उत्पादक है। यह ताँबा, सीसा, जस्ता और मैंगनीज में भी संपन्न है। पश्चिम आस्ट्रेलिया के **कालगूर्ली** और **कूलगार्डी** क्षेत्रों में सोने के सबसे बड़े निक्षेप हैं।

अंटार्कटिका (Antarctica)

विभिन्न खनिज निक्षेपों, पूर्वानुमान से कुछ संभवतः विशाल, के लिए अंटार्कटिका का भूविज्ञान पर्याप्त रूप से सुप्रसिद्ध है। ट्रांस-अंटार्कटिक पर्वत में कोयले और पूर्वी अंटार्कटिका के **प्रिंस चार्ल्स पर्वत** के निकट लोहे के महत्त्वपूर्ण मात्रा में निक्षेपों का पूर्वानुमान किया गया है। लौह अयस्क, सोना, चाँदी और तेल भी वाणिज्यिक मात्रा में उपलब्ध हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

खनिजों के उपयोग (Use of minerals)

- खनिज अनवीकरणीय संसाधन है। खनिजों का उपयोग कई उद्योगों में होता है। रत्नों के लिए प्रयोग किए जाने वाले खनिज प्रायः कठोर होते हैं। इन्हें **आभूषण (Jewelry) बनाने** के लिए विभिन्न शैलियों में जड़ा जाता है।
- ताँबा एक अन्य धातु है जिसका उपयोग सिक्के से लेकर पाइप तक प्रत्येक वस्तु में किया जाता है। **कंप्यूटर उद्योग** में प्रयुक्त होने वाला सिलिकन, क्वार्ट्ज से प्राप्त किया जाता है।
- ऐलुमिनियम जिसे उसके अयस्क बॉक्साइट से प्राप्त किया जाता है, का उपयोग **ऑटोमोबाइल** और **हवाई जहाज**, बोतलबंदी उद्योग, भवन निर्माण और रसोई के बर्तन तक में होता है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

ऊर्जा के परंपरागत और गैर-परंपरागत स्रोत (Conventional and non-conventional sources of energy)

परंपरागत स्रोत (Conventional Sources) :- ऊर्जा के परंपरागत स्रोत वे हैं जो लंबे समय से सामान्य उपयोग में लाए जा रहे हैं। **ईंधन (Firewood)** और **जीवाश्मी ईंधन** परंपरागत ऊर्जा के दो मुख्य स्रोत हैं।

ईंधन (Firewood)

- इसका उपयोग पकाने और ऊष्मा प्राप्त करने के लिए व्यापक रूप से होता है। हमारे देश में ग्रामीणों द्वारा उपयोग की गई पचास प्रतिशत से अधिक ऊर्जा ईंधन से प्राप्त होती है।

जीवाश्मी ईंधन (Fossil fuels)

- जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस परंपरागत ऊर्जा के मुख्य स्रोत हैं। इन खनिजों के भंडार सीमित हैं। विश्व की बढ़ती जनसंख्या जिस दर से इनका उपयोग कर रही है वह इनके निर्माण की दर से कहीं अधिक है। इसलिए ये शीघ्र ही समाप्त होने वाले हैं।

कोयला (Coal)

- कोयले से प्राप्त विद्युत को **तापीय ऊर्जा** (thermal power) कहा जाता है। कोयला लाखों वर्ष पूर्व विशाल फर्न और दलदल के पृथ्वी की परतों में दबने से बना। कोयला इसलिए **अंतर्हित धूप** (Buried Sunshine) के रूप में जाना जाता है।
- विश्व में अग्रणी कोयला उत्पादक देशों में चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, रूस, दक्षिण अफ्रीका और फ्रांस हैं। भारत के कोयला उत्पादक क्षेत्र **रानीगंज**, पश्चिमी बंगाल में तथा **झरिया**, **धनबाद** और **बोकारो झारखंड** में हैं।

पेट्रोलियम (Petroleum)

- पेट्रोल और तेल दोनों की शुरुआत **गाढ़े**, **काले द्रव** से होती है जिसे पेट्रोलियम कहते हैं। यह शैलों की परतों के मध्य पाया जाता है और इसका वेधन अपतटीय व तटीय क्षेत्रों में स्थित तेल क्षेत्रों से किया जाता है। तदुपरांत इसे परिष्करणशाला भेजा जाता है जहाँ अपरिष्कृत पेट्रोलियम के प्रक्रमण से विभिन्न तरह के उत्पाद जैसे **डीज़ल**, **पेट्रोल**, **मिट्टी का तेल**, **मोम**, **प्लास्टिक** और **स्नेहक** तैयार किए जाते हैं। पेट्रोलियम और इससे बने उत्पादों को काला सोना कहा जाता है
- पेट्रोलियम के मुख्य उत्पादक देश ईरान, इराक, सऊदी अरब और कतर हैं। अन्य मुख्य उत्पादक संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, वेनेजुएला और अल्जीरिया हैं। भारत में मुख्य उत्पादक क्षेत्र असम में **डिग्बोई**, मुंबई में **'बाम्बे हाई'** तथा **कृष्णा** और **गोदावरी नदियों** के डेल्टा हैं।

प्राकृतिक गैस (natural gas)

प्राकृतिक गैस पेट्रोलियम निक्षेपों के साथ पायी जाती है रूस, नार्वे, यू.के. और नीदरलैंड

SACHIN ACADEMY 9955697782

प्राकृतिक गैस के प्रमुख उत्पादक हैं। भारत में **जैसलमेर**, **कृष्णा-गोदावरी डेल्टा**, त्रिपुरा और मुंबई के कुछ अपतटीय क्षेत्रों में प्राकृतिक गैस संसाधन हैं।

- **संपीडित प्राकृतिक गैस (CNG)** एक प्रचलित पर्यावरण हितैषी ऑटोमोबाइल ईंधन है, क्योंकि यह पेट्रोलियम और डीजल की तुलना में कम प्रदूषण करती है।

जल विद्युत (Hydropower)

- बाँधों में वर्षा जल अथवा नदी जल ऊँचाई से गिराने के लिए संग्रहित किया जाता है। बाँध के अंदर से पाइप के द्वारा बहता जल बाँध के नीचे स्थित टरबाइन के ऊपर गिरता है। घूमते हुए ब्लेड जेनरेटर को विद्युत के लिए घुमाते हैं। यह **जल विद्युत** कहलाती है।
- विद्युत उत्पन्न करने के बाद जो जल बहता है। उसका उपयोग कृषि में किया जाता है। विश्व की ऊर्जा का एकचौथाई हिस्सा जल विद्युत से उत्पन्न होता है। विश्व में जल विद्युत के अग्रणी उत्पादक देश पराग्वे, नार्वे, ब्राजील और चीन हैं। भारत में कुछ महत्त्वपूर्ण जल विद्युत केंद्र
- भाखड़ा नंगल, गाँधी सागर, नागार्जुन सागर और दामोदर नदी घाटी परियोजनाएँ हैं।

ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्रोत (Non-conventional sources of energy)

ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्रोत हैं सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा जो कि नवीकरणीय हैं

सौर ऊर्जा (solar energy)

- सूर्य से प्राप्त सौर ऊर्जा, सौर सेलों में विद्युत उत्पन्न करने के लिए प्रयोग की जा सकती है। इनमें से कई सेलों को **सौर पैनलों (Solar panels)** से तापन व प्रकाश के
- लिए शक्ति उत्पन्न करने के लिए जोड़ा जाता है।
- धूप की प्रचुरता वाले उष्ण कटिबंधीय देशों के लिए सौर ऊर्जा के उपयोग की

- प्रौद्योगिकी बहुत लाभदायक है। सौर ऊर्जा उपयोग का सौर तापक, सौर कुकर, सोलर ड्रायर के साथ-साथ समुदाय को रोशनी देने और यातायात संकेतों में भी होता है।

पवन ऊर्जा (Wind energy)

- पवन चक्कियों का उपयोग अनाजों को पीसने और जल निकालने के लिए चिरकाल से चला आ रहा है। वर्तमान पवन चक्कियों में तीव्र गति से चलती हवाएँ पवन चक्की को घुमाती हैं जो विद्युत उत्पादन करने के लिए **जेनरेटर** से जुड़ी होती हैं।
- पवन चक्कियों के समूह से युक्त **पवन फार्म** तटीय क्षेत्रों और पर्वत घाटियों में जहाँ प्रबल और लगातार हवाएँ चलती हैं, वहाँ स्थित हैं। पवन फार्म नीदरलैंड, जर्मनी, डेनमार्क, यू.के., यू. एस.ए. तथा स्पेन में पाए जाते हैं जो पवन ऊर्जा उत्पादन में उल्लेखनीय हैं।

परमाणु ऊर्जा (Nuclear Energy)

- परमाणु ऊर्जा प्राकृतिक तौर से प्राप्त **रेडियोसक्रिय पदार्थ** जैसे **यूरेनियम** और **थोरियम** के परमाणुओं के केंद्रक में संग्रहित ऊर्जा से प्राप्त की जाती है। ये पदार्थ नाभिकीय रिऐक्टरों नाभिकीय विखंडन से गुज़रते हैं और उत्सर्जन ऊर्जा की प्राप्ति होती है।
- परमाणु ऊर्जा के सबसे बड़े उत्पादक संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप हैं। भारत में राजस्थान और झारखंड के पास यूरेनियम के विशाल निक्षेप हैं। थोरियम विशाल मात्रा में केरल के **मोनोजाइट बालू** में पाए जाते हैं।
- भारत में स्थित परमाणु ऊर्जा के केंद्र तमिलनाडु में कलपक्कम, महाराष्ट्र में तारापुर, राजस्थान में कोटा के निकट राणा प्रताप सागर, उत्तर प्रदेश में नरोरा और कर्नाटक में कैगा हैं।

भूतापीय ऊर्जा (geothermal energy)

- ताप ऊर्जा जो पृथ्वी से प्राप्त की जाती है **भूतापीय ऊर्जा** कहलाती है। पृथ्वी के अंदर गहराई बढ़ने के साथ तापमान में लगातार वृद्धि होती जाती है। कभी-कभी यह तापमान ऊर्जा भू-सतह पर गर्म जल के झरनों के रूप में प्रकट हो सकती है। यह

SACHIN ACADEMY 9955697782

ताप ऊर्जा शक्ति उत्पादन करने में प्रयुक्त की जा सकती है।

- वर्षों से गर्म जल के स्रोतों के रूप में भूतापीय ऊर्जा खाना बनाने, ऊष्मा प्राप्त करने और नहाने के लिए प्रयोग में लाई जाती है।
- यू.एस.ए. विश्व का सबसे बड़ा भूतापीय ऊर्जा का सयंत्र है, इसके बाद न्यूजीलैंड, आइसलैंड, फिलीपींस और मध्य अमेरिका हैं। भारत में भूतापीय ऊर्जा के संयंत्र हिमाचल प्रदेश में मणिकरण और लद्दाख में पूगाघाटी में स्थित हैं।

ज्वारीय ऊर्जा (Tidal energy)

- ज्वार से उत्पन्न ऊर्जा को **ज्वारीय ऊर्जा** कहते हैं। इस ऊर्जा का विदोहन समुद्र के सँकरे मुँहाने में बाँध के निर्माण से किया जाता है। उच्च ज्वार के समय ज्वारों की ऊर्जा का उपयोग बाँध में स्थापित टरबाइन को घुमाने के लिए किया जाता है। रूस, फ्रांस और भारत में कच्छ की खाड़ी में विशाल ज्वारीय मिल के क्षेत्र हैं।

बायोगैस (Biogas)

- जैविक अपशिष्ट जैसे मृत पौधे और जंतुओं के अवशेष, पशुओं का गोबर, रसोई के अपशिष्ट को गैसीय ईंधन में बदला जा सकता है, इसे **बायोगैस** कहते हैं। जैविक अपशिष्ट बैक्टीरिया द्वारा बायोगैस संयंत्र में अपघटित होते हैं जो कि अनिवार्य रूप में मिथेन और कार्बन डाईऑक्साइड का मिश्रण है। बायोगैस खाना पकाने तथा विद्युत उत्पादन का सर्वोत्तम ईंधन है और इससे प्रति वर्ष बड़ी मात्रा में **जैव खाद (organic manure)** का उत्पादन होता है।

SACHIN ACADEMY 9953697782

आर्थिक क्रियाएँ (Economic activities)

पौधे से परिष्कृत उत्पाद तक के रूपांतरण में तीन प्रकार की आर्थिक क्रियाएँ सम्मिलित हैं। ये **प्राथमिक** (primary), **द्वितीयक** (Secondary) और **तृतीयक** (Tertiary) **क्रियाएँ** हैं।

प्राथमिक क्रियाओं के अंतर्गत उन सभी क्रियाओं को शामिल किया जाता है जिनका संबंध प्राकृतिक संसाधनों के उत्पादन और निष्कर्षण से है। कृषि, मत्स्यन और संग्रहण इनके अच्छे उदाहरण हैं।

द्वितीयक क्रियाएँ इन संसाधनों के प्रसंस्करण से संबंधित हैं। इस्पात **(Steel)** विनिर्माण, डबलरोटी पकाना और कपड़ा बुनना इन क्रियाओं के उदाहरण हैं। **तृतीयक क्रियाएँ** प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र को सेवा कार्यों द्वारा सहयोग प्रदान करती हैं। यातायात, व्यापार, बैंकिंग, बीमा और विज्ञापन तृतीयक क्रियाओं के उदाहरण हैं।

कृषि (Agriculture)

कृषि एक प्राथमिक क्रिया है। फ़सलों, फलों, सब्जियों, फूलों को उगाना और पशुधन पालन इसमें शामिल हैं। विश्व में पचास प्रतिशत लोग कृषि से संबंधित क्रियाओं में संलग्न हैं। भारत की दो-तिहाई जनसंख्या अब तक कृषि पर निर्भर है।

जिस भूमि पर फ़सलें उगाई जाती हैं, **कृषिगत भूमि (arable land)** कहलाती है।

SACHIN ACADEMY 99556967

एग्रीकल्चर (कृषि) मृदा की जुताई, फ़सलों को उगाना और पशुपालन का विज्ञान एवं कला है। इसे खेती भी कहते हैं।

सेरीकल्चर (रेशम उत्पादन) रेशम के कीटों का वाणिज्यिक पालन। यह कृषक की आय में पूरक हो सकता है।

पिसीकल्चर (मत्स्यपालन) विशेष रूप से निर्मित तालाबों और पोखरों में मत्स्यपालन।

विटिकल्चर (द्राक्षा कृषि) अंगूरों की खेती।

हॉर्टीकल्चर (उद्यान कृषि) वाणिज्यिक उपयोग के लिए सब्जियों, फूलों और फलों को उगाना।

कृषि तंत्र (Farm System)

कृषि या खेती को एक तंत्र के रूप में देखा जा सकता है। इसके महत्त्वपूर्ण **निवेश बीज (Seeds)**, **उर्वरक (fertilisers)**, **मशीनरी (machinery)** और **श्रमिक (labour)** हैं।

- **जैविक कृषि (Organic farming)** इस प्रकार की कृषि में रासायनिक खादों के स्थान पर जैविक खाद और प्राकृतिक पीड़कनाशी का उपयोग किया जाता है। फ़सलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए कोई **आनुवंशिक रूपांतरण (genetic modification)** नहीं किया जाता है।

कृषि के प्रकार (Types of Farming)

कृषि दो मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत की जा सकती है।

1. निर्वाह कृषि **(Subsistence Farming)**
2. वाणिज्यिक कृषि **(Commercial Farming)**

निर्वाह कृषि (Subsistence Farming)

इस प्रकार की कृषि कृषक परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए की जाती है। पारंपरिक रूप से कम उपज प्राप्त करने के लिए निम्न स्तरीय प्रौद्योगिकी और पारिवारिक श्रम का उपयोग किया जाता है। निर्वाह कृषि को पुनः **गहन निर्वाह कृषि (intensive subsistence agriculture)** और **आदिम निर्वाह कृषि (Primitive subsistence agriculture)** में वर्गीकृत किया जा सकता है।

गहन निर्वाह कृषि में किसान एक छोटे भूखंड पर साधारण औज़ारों और अधिक श्रम से खेती करता है। अधिक धूप वाले दिनों से युक्त जलवायु और उर्वर मृदा वाले खेत में, एक वर्ष में एक से अधिक फ़सलें उगाई जा सकती हैं। **चावल** मुख्य फ़सल होती है। अन्य फ़सलों में **गेहूँ**, **मक्का**, **दलहन** और **तिलहन** शामिल हैं। गहन निर्वाह कृषि दक्षिणी, दक्षिण-पूर्वी और पूर्वी एशिया के सघन जनसंख्या वाले मानसूनी प्रदेशों में प्रचलित है।

आदिम निर्वाह कृषि में स्थानांतरी कृषि और **चलवासी पशुचारण** शामिल हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

स्थानांतरी कृषि (Shifting cultivation) अमेजन बेसिन के सघन वन क्षेत्रों, उष्ण कटिबंधीय अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया और उत्तरी-पूर्वी भारत के भागों में प्रचलित है। ये भारी वर्षा और वनस्पति के तीव्र पुनर्जनन वाले क्षेत्र हैं। वृक्षों को काटकर और जलाकर भूखंड को साफ़ किया जाता है। तब राख को मृदा में मिलाया जाता है तथा मक्का, रतालू, आलू और कसावा जैसी फ़सलों को उगाया जाता है। भूमि की उर्वरता की समाप्ति के बाद वह भूमि छोड़ दी जाती है और कृषक नए भूखंड पर चला जाता है। स्थानांतरी कृषि को **'कर्तन एवं दहन'** **('slash and burn')** **कृषि** के रूप में भी जाना जाता है।

स्थानांतरी कृषि विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न नामों से जानी जाती है।

झूमिंग - उत्तर-पूर्वी भारत

मिल्पा - मैक्सिको

रोका - ब्राजील

लदांग - मलेशिया

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **चलवासी पशुचारण (Nomadic herding)** सहारा के अर्धशुष्क और शुष्क प्रदेशों में, मध्य एशिया और भारत के कुछ भागों जैसे राजस्थान तथा जम्मू और कश्मीर में प्रचलित है। इस प्रकार की कृषि में पशुचारक अपने पशुओं के साथ चारे और पानी के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर निश्चित मार्गों से घूमते हैं।

वाणिज्यिक कृषि (Commercial Farming)

वाणिज्यिक कृषि में फ़सल उत्पादन और पशुपालन बाज़ार में विक्रय हेतु किया जाता है। इसमें विस्तृत कृष्ट क्षेत्र और अधिक पूँजी का उपयोग किया जाता है। अधिकांश कार्य मशीनों के द्वारा किया जाता है। वाणिज्यिक कृषि में **वाणिज्यिक अनाज कृषि**, **मिश्रित कृषि** और **रोपण कृषि** **(plantation agriculture)** शामिल हैं

वाणिज्यिक अनाज कृषि (commercial grain farming) में फ़सलें वाणिज्यिक उद्देश्य से उगाई जाती हैं। गेहूँ और मक्का सामान्य रूप से उगाई जाने वाली फ़सलें हैं।

उत्तर अमेरिका, यूरोप और एशिया के **शीतोष्ण घास** के मैदान वाणिज्यिक अनाज कृषि के प्रमुख क्षेत्र हैं। ये क्षेत्र सैकड़ों हेक्टेयर के बड़े फार्मों से युक्त बिरल आबादी वाले हैं। अत्यधिक ठंड वर्धनकाल को बाधित करती है और केवल एक ही फ़सल उगाई जा सकती है।

मिश्रित कृषि (mixed farming)_में भमि का उपयोग भोजन व चारे की फ़सलें उगाने और पशुधन पालन के लिए किया जाता है। यह यूरोप, पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका, अर्जेंटीना, दक्षिण-पूर्वी आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका में प्रचलित है।

रोपण कृषि (plantation agriculture) वाणिज्यिक कृषि का एक प्रकार है जहाँ चाय, कहवा, काजू, रबड़, केला अथवा कपास की एकल फ़सल उगाई जाती है। इसमें बृहत पैमाने पर श्रम और पूँजी की आवश्यकता होती है। उत्पाद का प्रसंस्करण खेतों पर ही या निकट के कारखानों में किया जा सकता है। इस प्रकार, इस कृषि में **परिवहन जाल** के विकास की अनिवार्यता होती है।

रोपण कृषि के मुख्य क्षेत्र विश्व के उष्ण कटिबधीय प्रदेशों में पाए जाते हैं। **मलेशिया में रबड़**, **ब्राजील में कहवा**, **भारत और श्रीलंका में चाय** इसके कुछ उदाहरण हैं।

मुख्य फ़सलें (Major Crops)

गेंहू, चावल, मक्का और बाजरा मुख्य **खाद्य फसलें** हैं। जूट और कपास **रेशेदार फ़सलें** हैं। चाय और कहवा मुख्य **पेय फ़सले** हैं।

कृषि का विकास (AGRICULTURAL DEVELOPMENT)

अधिक जनसंख्या वाले विकासशील देश अधिकतर गहन कृषि करते हैं, जहाँ छोटी जोतों पर सामान्यतः जीविकोपार्जन के लिए फ़सलें उगाई जाती हैं। बड़ी जोतें **वाणिज्यिक कृषि** के लिए अधिक उपयुक्त होती हैं जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और आस्ट्रेलिया में।

संयुक्त राज्य अमेरिका का एक फार्म

SACHIN ACADEMY 9955697782

संयक्त राज्य अमेरिका में एक फार्म का औसत आकार भारतीय फार्म की तुलना में बहुत बड़ा होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में एक प्रारूपिक फार्म का आकार 250 हेक्टेयर होता है। किसान सामान्यतः फार्म में रहता है। **मक्का**, **सोयाबीन**, **गेहूँ** और **चुकंदर** यहाँ उगाई जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण फ़सलें हैं।

उद्योग (Industries)

उद्योग का संबंध आर्थिक गतिविधि से है जो कि वस्तुओं के उत्पादन, खनिजों के निष्कर्षण अथवा सेवाओं की व्यवस्था से संबंधित है।

उद्योगों का वर्गीकरण (CLASSIFICATION OF INDUSTRIES)

कच्चा माल, आकार और स्वामित्व के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण किया जा सकता है।

आकार (Size)

उद्योग के आकार का तात्पर्य निवेश की गई पूँजी की राशि, नियोजित लोगों की संख्या और उत्पादन की मात्रा से है। आकार के आधार पर उद्योगों को दो भागों में बाँटा जा सकता है

1. **लघु आकार के उद्योग (small scale industries)**
2. **बृहत आकार के उद्योग (large scale industries)**

- **कुटीर या घरेलू** उद्योग छोटे पैमाने के उद्योग हैं।

स्वामित्व (Ownership)

- स्वामित्व के आधर पर उद्योगों को **निजी क्षेत्र**, **राज्य स्वामित्व** अथवा **सार्वजनिक क्षेत्र**, **संयुक्त क्षेत्र** और **सहकारी क्षेत्र** में वर्गीकृत किया जा सकता है। निजी क्षेत्र के

SACHIN ACADEMY 9955697782

उद्योगों का स्वामित्व और संचालन या तो एक व्यक्ति द्वारा या व्यक्तियों के समूह द्वारा किया जाता है। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का स्वामित्व और संचालन सरकार द्वारा होता है जैसे **हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड** और **स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड।**

- संयुक्त क्षेत्र के उद्योगों का स्वामित्व और संचालन राज्यों और व्यक्तियों अथवा व्यक्तियों के समूह द्वारा होता है। मारुति उद्योग लिमिटेड संयुक्त क्षेत्र के उद्योग का एक उदाहरण है। सहकारी क्षेत्र के उद्योगों का स्वामित्व और संचालन कच्चे माल के उत्पादकों या **पुर्तिकारो**, **कामगारों** अथवा दोनों द्वारा होता है। आनंद मिल्क यूनियन लिमिटेड एवं **सुधा डेयरी सहकारी उपक्रम** के उत्तम उदाहरण है

औद्योगिक प्रदेश (Industrial Regions)

औद्योगिक प्रदेश का विकास तब होता है जब कई तरह के उद्योग एक-दूसरे के निकट स्थित होते हैं और वे अपनी निकटता के लाभ आपस में बाँटते हैं।

विश्व के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश **पूर्वोत्तर अमेरिका**, **पश्चिमी और मध्य यूरोप**, **पूर्वी यूरोप** और **पूर्वी एशिया** हैं। मुख्य औद्योगिक प्रदेश अधिकांशतः शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों, समुद्री पत्तनों के समीप और विशेष तौर पर कोयला क्षेत्रों के निकट स्थित होते हैं।

औद्योगिक विपदा (Industrial Disaster)

- भोपाल में 3 दिसंबर 1984 को लगभग 00.30 बजे घटित, अब तक की सबसे त्रासदपूर्ण औद्योगिक दुर्घटना है। यह एक **प्रौद्योगिकीय दुर्घटना** थी जिसमें यूनियन कार्बाइड के कीटनाशी कारखाने से हाइड्रोजन सायनाइट तथा प्रतिक्रियाशील उत्पादों के साथ-साथ अत्यंत विषैली **मिथाइल आइसोसायनेट** (एम.आई.सी.) गैस का रिसाव हुआ था। 1989 में सरकारी सूचना के अनुसार 35,598 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई थी। हजारों लोग जो बच गए वो आज भी एक या अधिक बीमारियों जैसे अंधापन, प्रतिरक्षा तंत्र विकृति, आंत्रशोथ विकृतियों आदि से पीड़ित हैं।

SACHIN ACADEMY 9956697782

- 23 दिसंबर 2005 में चीन के **गाओ कायो**, चोंगगिंग में **गैस कूप** विस्फोट से 243 लोगों की मृत्यु तथा 9000 लोग दुर्घटनाग्रस्त हो गए थे और इन स्थानों से 64,000 लोगों को विस्थापित किया गया था। कई लोग विस्फोट के बाद न भाग सकने के कारण मर गए। वे जो समय पर भाग पाए उनकी आँखें, त्वचा और फेफड़े गैस से क्षतिग्रस्त हो गए थे।

- **उभरते हुए उद्योग 'सनराइश उद्योग** के नाम से भी जाने जाते हैं। इसमें सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य लाभ, सत्कार तथा ज्ञान से संबंधित उद्योग शामिल हैं।

- **प्रगलन (Smelting)** यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें धातुओं को उसके अयस्कों द्वारा गलनांक बिन्दु से अधिक तपाकर निष्कर्षित किया जाता है।
- **मिश्र धातु (Alloy)** इस्पात को असामान्य कठोरता, दृढ़ता और जंग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करती है।

जमशेदपुर

1947 से पूर्व भारत में केवल एक इस्पात का कारखाना था **टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी लिमिटेड** (**टिस्को**) यह निजी स्वामित्व में था। स्वतंत्राता के पश्चात् सरकार ने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया

पिट्सबर्ग

यह संयुक्त राज्य अमेरिका का एक महत्त्वपूर्ण इस्पात नगर है। पिट्सबर्ग के इस्पात उद्योग को स्थानीय सुविधाएँ उपलब्ध हैं। कच्चा माल जैसे कोयला पिट्सबर्ग में ही उपलब्ध है

- **ग्रेट लेक्स** के नाम सुपीरियर, ह्ययूरॅन ओंटारियो, मिशीगन और ईरी हैं। इन पाँचों झीलों में से सुपीरियर झील सबसे बड़ी है जो अन्य की तुलना में उच्च ऊध्वप्रवाह

SACHIN ACADEMY 9955697782

पर स्थित है।

- **शब्द टेक्सटाइल** लैटिन के टेक्सियरे से व्युत्पन्न किया गया है जिसका अर्थ बुनना होता है

सूती वस्त्र उद्योग (COTTON TEXTILE INDUSTRY)

सूती वस्त्र उद्योग विश्व के प्राचीनतम उद्योगों में से एक है। **सूरत व वडोदरा** के **सुनहरी जरी** के काम वाले सूती वस्त्र गुणवत्ता और डिजाइनों के लिए विश्वविख्यात थे।

पहली सफल यंत्रीकृत वस्त्र मिल मुंबई में **1854** ई. में स्थापित की गई।

देश में प्रथम वस्त्र उद्योग 1818 ई. में कोलकाता के समीप **फोर्ट गैलेस्टर** में स्थापित हुआ था लेकिन कुछ समय बाद यह बंद हो गया।

अहमदाबाद

अहमदाबाद गुजरात में साबरमती नदी के तट पर स्थित है। **1859** में यहाँ पहली सूती मिल स्थापित हुई थी। यह बहुत जल्दी ही मुंबई के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा वस्त्र-निर्माता नगर बन गया। अहमदाबाद को प्रायः 'भारत का **मानचेस्टर**' कहा जाता है। भारतीय वस्त्र उद्योग के कुल उत्पादन का लगभग एक-तिहाई हिस्सा निर्यात किया जाता है

ओसाका

ओसाका जापान का एक महत्वपूर्ण वस्त्र-निर्माण केंद्र है। यह 'जापान का **मानचेस्टर**' के नाम से भी जाना जाता है

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

(पीकेवीवाई) को 2015 में एक करोड़ भारतीय युवाओं को 2016 से 2020 तक प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। इस योजना का उद्देश्य संभाव्य और मौजूदा रोजगार अर्जक को गुणवत्ता प्रशिक्षण प्रदान करके **रोजगार योग्य कौशल** की योग्यता को प्रोत्साहित करना है

SACHIN ACADEMY 9955697782

जनसंख्या का वितरण (DISTRIBUTION OF POPULATION)

- विश्व की जनसंख्या का 90 प्रतिशत से अधिक भाग भूपृष्ठ के लगभग 30 प्रतिशत भाग पर निवास करता है।
- **विषुवत वृत्त (Equator)** के दक्षिण की अपेक्षा विषुवत वृत्त के उत्तर में बहुत अधिक लोग रहते हैं। विश्व की कुल जनसंख्या के लगभग तीन-चैथाई लोग दो महाद्वीपों एशिया और अफ्रीका में रहते हैं।
- विश्व के **60 प्रतिशत लोग** केवल दस देशों में रहते हैं। इन सभी देशों में 10 करोड़ से अधिक लोग रहते हैं।

जनसंख्या का घनत्व (DENSITY OF POPULATION)

- पृथ्वी पृष्ठ के एक इकाई क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को **जनसंख्या का घनत्व** कहते हैं।
- भारत की जनसंख्या का औसत घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।
- सामान्य रूप से यह प्रतिवर्ग किलोमीटर में व्यक्त किया जाता है। संपूर्ण विश्व का औसत जनसंख्या घनत्व 51 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व **दक्षिण मध्य एशिया** में है, इसके पश्चात क्रमशः पूर्वी एशिया एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया में है।

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

भौगोलिक कारक (Geographical Factors)

स्थलाकृति, जलवायु, मृदा, जल तथा खनिज,

सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारक (Social, Cultural and Economic Factors)

सामाजिक कारक : अच्छे आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं के क्षेत्र अत्यधिक घने

SACHIN ACADEMY 9955697782

बसे हैं, उदाहरण के लिए **पुणे।**

सांस्कृतिक कारक : धर्म और सांस्कृतिक महत्ता वाले स्थान लोगों को आकर्षित करते हैं। **वाराणसी**, **येरूसलम** और **वेटिकन सिटी** इसके कुछ उदाहरण हैं।

आर्थिक कारक : औद्योगिक क्षेत्र रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। लोग बड़ी संख्या में इन क्षेत्रों की ओर आकर्षित होते हैं। जापान में **ओसाका** और भारत में **मुंबई** दो घने बसे क्षेत्र हैं।

जनसंख्या परिवर्तन (POPULATION CHANGE)

- जन्मों को साधारणतः जन्म दर में आँका जाता है। जन्मदर अर्थात् प्रति 1000 व्यक्तियों पर जीवित जन्मों की संख्या में मापा जाता है। मृत्युदर को प्रति 1000 व्यक्तियों पर मृतकों की संख्या में मापा जाता है।
- किसी क्षेत्र विशेष में लोगों के आने-जाने को **प्रवास (migration)** कहते हैं।
- एक देश के जन्म दर और मृत्यु दर के बीच के अंतर को **प्राकृतिक वृद्धि दर** कहते हैं।
- **उत्प्रवासी (Emigrants)** वे लोग होते हैं जो देश को छोड़ते हैं, **आप्रवासी (Immigrants)** वे लोग होते हैं जो देश में आते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में भीतरी प्रवास अथवा आप्रवास द्वारा संख्या बढ़ी है। सूडान देश एक ऐसा उदाहरण है जिसमें लोगों के बाहर चले जाने अथवा उत्प्रवास के कारण जनसंख्या में कमी का अनुभव किया गया है
- अन्य देशों में जैसे **यूनाइटेड किंगडम** में निम्न जन्म दर और मृत्यु दर के कारण जनसंख्या वृद्धि की दर मंद है।

जनसंख्या संघटन (Population composition)

- जनसंख्या संघटन हमारी यह जानने में सहायता करता है कि कितने पुरुष हैं और कितनी स्त्रियाँ हैं, वे किस आयु वर्ग के हैं, कितने शिक्षित हैं और वे किस प्रकार के व्यवसाय में लगे हैं, उनकी आय का क्या स्तर है

SACHIN ACADEMY 9956697782

HISTORY

इतिहास

ACADEMY

देश के नाम

इण्डिया शब्द **इण्डस** से निकला है जिसे संस्कृत में **सिंधु** कहा जाता है। लगभग 2500 वर्ष पहले उत्तर-पश्चिम की ओर से आने वाले **ईरानियों** और **यूनानियों** ने सिंधु को **हदोस** अथवा **इंदोस** और इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को **इण्डिया** कहा। भारत नाम का प्रयोग उत्तर-पश्चिम में रहने वाले लोगों के एक समूह के लिए किया जाता था। इस समूह का उल्लेख संस्कृत की आरंभिक (लगभग 3500 वर्ष पुरानी) कृति **ऋग्वेद** में भी मिलता है।

अतीत की जानकारी

अतीत की जानकारी हम कई तरह से प्राप्त कर सकते हैं। इनमें से एक तरीका अतीत में लिखी गई पुस्तकों को ढूँढ़ना और पढ़ना है। ये पुस्तके हाथ से लिखी होने के कारण **पाण्डुलिपि (manuscript)** कही जाती है।

SACHIN ACADEMY
9935697782

पाण्डुलिपि (Manuscript)

ये पाण्डुलिपियाँ प्रायः **ताड़पत्रों (palm leaf)** अथवा हिमालय क्षेत्र में उगने वाले **भूर्ज (birch)** नामक पेड़ की छाल से विशेष तरीके से तैयार **भोजपत्र (birch bark)** पर लिखी मिलती हैं। ये पाण्डुलिपियाँ मंदिरों और विहारों में प्राप्त होती हैं। इन पुस्तकों में धार्मिक मान्यताओं व व्यवहारों, राजाओं के जीवन, औषधियों **(medicine)** तथा विज्ञान आदि सभी प्रकार के विषयों की चर्चा मिलती है।

- **प्राकृत भाषा** का प्रयोग आम लोग करते थे।

अभिलेख (Inscription)

ऐसे लेख पत्थर अथवा धातु जैसी अपेक्षाकृत कठोर सतहों पर उत्कीर्ण किए गए मिलते हैं। कभी-कभी

शासक अथवा अन्य लोग अपने आदेशों को इस तरह उत्कीर्ण करवाते थे, ताकि लोग उन्हें देख सके, पढ़ सके तथा उनका पालन कर सके।

अभिलेखों में शासक लड़ाइयों में अर्जित विजयों का **लेखा- जोखा** **(records)** रखा करते थे।

पुरातत्त्वविद् (Archaeologists)

- वस्तुओं का अध्ययन करने वाला व्यक्ति **पुरातत्त्वविद्** **(archaeologists)** कहलाता है। पुरातत्त्वविद् पत्थर और ईंट से बनी इमारतों के अवशेषों, चित्रों तथा मूर्तियों का अध्ययन करते हैं। वे औजारों, हथियारों, बर्तनों, आभूषणों तथा सिक्कों की प्राप्ति के लिए छान-बीन तथा खुदाई भी करते हैं।
- पुरातत्त्वविद् जानवरों, चिड़ियों तथा मछलियों की हड्डियाँ भी ढूँढ़ते हैं। इससे उन्हें यह जानने में भी मदद मिलती है कि अतीत में लोग क्या खाते थे।

आरंभिक मानव (Earliest People)

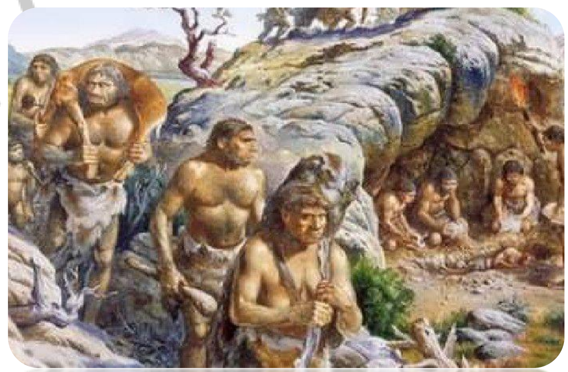

- जो इस उपमहाद्वीप में बीस लाख साल पहले रहा करते थे। आज हम उन्हें **आखेटक-खाद्य संग्राहक** **(Hunter–Gatherers)** के नाम से जानते हैं। भोजन का इंतजाम करने की विधि के आधर पर उन्हें इस नाम से पुकारा जाता है। आमतौर पर खाने के लिए वे जंगली जानवरों का शिकार करते थे,
- मछलियाँ और चिड़िया पकड़ते थे, फल-मूल, दाने, पौधे-पत्तियाँ, अंडे इकट्ठा किया करते थे।

❖ **पत्थर के औजारों** का उपयोग इंसान के खाने योग्य जड़ों को खोदने के लिए किया जाता था, और जानवरों की खाल से बने वस्त्रों को सिलने के लिए किया जाता था।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- ❖ **लोग गुफाओं (caves) में** इसलिए रहते थे, क्योंकि यहाँ उन्हें बारिश, धूप और हवाओं से राहत मिलती थी। ये गुफाएँ नर्मदा घाटी के पास हैं
- ❖ **पुरास्थल (Sites)** उस स्थान को कहते हैं जहाँ औजारों, बर्तन और इमारतों जैसी वस्तुओं के अवशेष मिलते हैं।

पुरापाषाण (The Palaeolithic)

- ➢ पुरापाषाण काल बीस लाख साल पहले से 12,000 साल पहले के दौरान माना जाता है।यह दो शब्दों पुरा यानी 'प्राचीन, और पाषाण यानी 'पत्थर' से बना है। इस काल को भी तीन भागों में विभाजित किया गया है: '**आरंभिक**', '**मध्य**' एवं '**उत्तर' पुरापाषाण युग**। मानव इतिहास की लगभग 99 प्रतिशत कहानी इसी काल के दौरान घटित हुई।

मध्यपाषाण युग (Mesolithic / middle stone)

- ➢ जिस काल में हमें पर्यावरणीय बदलाव मिलते हैं, उसे '**मेसोलिथ**' यानी **मध्यपाषाण युग** कहते हैं। इसका समय लगभग 12,000 साल पहले से लेकर 10,000 साल पहले तक माना गया है। इस काल के पाषाण औजारों आमतौर पर बहुत छोटे होते थे। इन्हें '**माइक्रोलिथ**' यानी **लघुपाषाण** कहा जाता है। प्रायः इन औजारों में हड्डियों या लकड़ियों के मूंठे लगे हँसिया और आरी जैसे औजारों मिलते थे। साथ-साथ पुरापाषाण युग वाले औजारों भी इस दौरान बनाए जाते रहे।

नवपाषाण युग (Neolithic)

- ➢ अगले युग की शुरुआत लगभग 10,000 साल पहले से होती है। इसे नवपाषाण युग कहा जाता है।
- ➢ सबसे पहले जिस जंगली जानवर को पालतू बनाया गया वह **कुत्ते** का जंगली पूर्वज था। धीरे - धीरे लोग भेड़, बकरी, गाय और सूअर जैसे जानवरों को अपने घरों के नजदीक आने को उत्साहित करने लगे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- नवपाषाण युग के सबसे प्रसिद्ध पुरास्थलों में एक **चताल हयूक तुर्की** में है। यहाँ दूर-दराज स्थानों से कई चीजे लाई जाती थीं और उनका उपयोग किया जाता था। जैसे सीरिया से लाया गया **चकमक पत्थर (flint)**, लाल सागर की **कौड़ियाँ (cowries)** तथा भूमध्य सागर की **सीपियाँ (shells)।**

खेती और पशुपालन (farming and herding)

लोगों द्वारा पौधे उगाने और जानवरों की देखभाल करने को '**बसने की प्रक्रिया**' का नाम दिया गया है।

- **बुर्जहोम** (वर्तमान कश्मीर में) के लोग गड्ढे के नीचे घर बनाते थे जिन्हे **गर्तवास** कहा जाता है। इनमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ होती थीं। इससे उन्हें ठंढ के मौसम में सुरक्षा मिलती थी

- **फ्रांस** में गुफा में की गई चित्राकारी में प्रयोग होने वाले रंगो को लौह-अयस्क और चारकोल जैसे खनिज पदार्थों से बनाया जाता था।

हड़प्पा सभ्यता नगर

हड़प्पा सभ्यता नगर आधुनिक पाकिस्तान के पंजाब और सिंध प्रांतों, भारत के गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पंजाब प्रांतों में मिले हैं। इन सभी स्थलों से पुरातत्वविदों को अनोखी वस्तुएँ मिली हैं: जैसे मिट्टी के लाल बर्तन जिन पर काले रंग के चित्र बने थे, पत्थर के बाट, मुहरें, मनके, ताँबे के उपकरण और पत्थर के लंबे ब्लेड आदि।

ऊँचाई वाले भाग को पुरातत्वविदों ने **नगर-दुर्ग** कहा है और निचले हिस्से को **निचला-नगर** कहा है। दोनों हिस्सों की चारदीवारियाँ पकी ईंटों की बनाई जाती थीं।

- **मोहनजोदड़ो** में खास तालाब बनाया गया था, जिसे पुरातत्वविदों ने **महान स्नानागार** कहा है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **कालीबंगा और लोथल** जैसे अन्य नगरों में अग्निकुण्ड मिले हैं, जहाँ संभवतः यज्ञ किए जाते होंगे। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे कुछ नगरों में बड़े-बड़े भंडार-गृह मिले हैं।
- 7000 साल पहले **मेहरगढ़** में कपास की खेती होती थी।
- **नगरों का आरंभ** लगभग 4700 साल पहले हुआ।
- **हड़प्पा के नगरों** के अंत की शुरुआत लगभग3900 साल पहले हुआ।
- **अन्य नगरों का विकास** लगभग 2500 साल पहले हुआ।

कच्चे माल की खोज

हड़प्पा के लोग ताँबे का आयात सम्भवतः आज के राजस्थान से करते थे। यहाँ तक कि पश्चिम एशियाई देश ओमान से भी ताँबे का आयात किया जाता था। **काँसा (bronze)** बनाने के लिए **तांबे (copper)** के साथ मिलाई जाने वाली धातु **टिन (tin)** का आयात आधुनिक ईरान और अफगानिस्तान से किया जाता था। **सोने** का आयात आधुनिक कर्नाटक और **बहुमूल्य पत्थर (precious stones)** का आयात गुजरात, ईरान और अफगानिस्तान से किया जाता था।

सभ्यता के अंत का रहस्य

कुछ विद्वानों का कहना है, नदियाँ सूख गई थीं। अन्य का कहना है, कि जंगलों का विनाश हो गया था। इसका कारण ये हो सकता है, कि ईंटें पकाने के लिए ईंधन की जरूरत पड़ती थी। इसके अलावा मवेशियों के बड़े-बड़े झुंडों से चारागाह और घास वाले मैदान समाप्त हो गए होंगे। कुछ इलाकों में बाढ़ आ गई। लेकिन इन कारणों से यह स्पष्ट नहीं हो पाता है कि सभी नगरों का अंत कैसे हो गया। क्योंकि बाढ़ और नदियों के सूखने का असर कुछ ही इलाकों में हुआ होगा।

फ्रेयन्स

- पत्थर और शंख प्राकृतिक तौर पर पाए जाते हैं, लेकिन फ्रेयन्स कृतिम रूप से तैयार

SACHIN ACADEMY 9955697782

किया जाता है। बालू या स्फटिक पत्थरों के चूर्ण को गोंद में मिलाकर उनसे वस्तुएँ बनाई जाती थीं। उसके बाद उन वस्तुओं पर एक चिकनी परत चढ़ाई जाती थी। इस चिकनी परत के रंगप्रायः नीले या हलके समुद्री हरे होते थे।

ऋग्वेद

- ऋग्वेद सबसे पुराना वेद है, जिसकी रचना लगभग 3500 साल पहले हुई। ऋग्वेद में एक हजार से ज्यादा प्रार्थनाएँ हैं जिन्हें **सूक्त** कहा गया है। सूक्त का मतलब है, अच्छी तरह से बोला गया। ऋग्वेद की भाषा **प्राकृत संस्कृत** या **वैदिक संस्कृत** कहलाती है
- ऋग्वेद का उच्चारण किया जाता था और श्रवण किया जाता था न कि पढ़ा जाता था। रचना के कई सदियों बाद इसे पहली बार लिखा गया। इसे छापने का काम तो मुश्किल से दो सौ साल पहले हुआ।

महापाषाण (megaliths)

- **शिलाखण्ड महापाषाण** (महा: बड़ा, पाषाण: पत्थर) नाम से जाने जाते हैं। ये पत्थर दफन करने की जगह पर लोगों द्वारा बड़े करीने से लगाए गए थे। **महापाषाण कब्रें** बनाने की प्रथा लगभग 3000 साल पहले शुरू हुई। यह प्रथा दक्कन, दक्षिण भारत, उत्तर-पूर्वी भारत और कश्मीर में प्रचलित थी।

जनपद

- जनपद का शाब्दिक अर्थ जन के बसने की जगह होता है। पुरातत्त्वविदों ने इन जनपदों की कई बस्तियों की खुदाई की है। दिल्ली में पुराना किला, उत्तर प्रदेश में मेरठ के पास हस्तिनापुर और एटा के पास **अतरंजीखेड़ा** इनमें प्रमुख हैं। खुदाई से पता चला है कि लोग झोपड़ियों में रहते थे और मवेशियों तथा अन्य जानवरों को पालते थे। वे चावल, गेहूँ, धान, जौ, दालें, गन्ना, तिल तथा सरसों जैसी फसलें उगाते थे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- इन पुरास्थलों में कुछ विशेष प्रकार के बर्तन मिले हैं, जिन्हें '**चित्रित-धूसर पात्र** के रूप में जाना जाता है।

महाजनपद

- करीब 2500 साल पहले, कुछ जनपद अधिक महत्वपूर्ण हो गए। इन्हें **महाजनपद** कहा जाने लगा। अर्थात् इनके चारों ओर लकड़ी, ईंट या पत्थर की ऊँची दीवारें बनाई गई थीं। अतः महाजनपदों के राजा लोगों द्वारा समय-समय पर लगाए गए उपहारों पर निर्भर न रहकर अब नियमित रूप से कर वसूलने लगे फसलों पर लगाए गए कर सबसे महत्वपूर्ण थे क्योंकि अधिकांश लोग कृषक ही थे। प्रायः उपज का **1/6वां** हिस्सा कर के रूप में निर्धारित किया जाता था जिसे **भाग** कहा जाता था।

कृषि में परिवर्तन

- इस युग में कृषि के क्षेत्र में दो बड़े परिवर्तन आए। हल के फाल अब लोहे के बनने लगे। अब कठोर जमीन को लकड़ी के फाल की तुलना में लोहे के फाल से आसानी से जोता जा सकता था।
- लोगों ने धान के पौधें का रोपण शुरू किया अर्थात् खेतों में बीज छिड़ककर धान उपजाने के बजाए धान की पौध तैयार कर उनका **रोपण** शुरू किया गया।

मगध

- **गंगा और सोन** जैसी नदियाँ मगध से होकर बहती थीं।
- **मगध में** दो बहुत ही शक्तिशाली शासक **बिम्बिसार** तथा **अजातशत्रु** हुए
- **बिहार में राजगृह** (आधुनिक राजगीर) कई सालों तक मगध की राजधानी बनी रही। बाद में **पाटलिपुत्र** (आज का पटना) को राजधानी बनाया गया। मगध एक शक्तिशाली राज्य बन गया था। उसके नजदीक ही वज्जि राज्य था, जिसकी राजधानी **वैशाली** (बिहार)थी। यहाँ एक अलग किस्म की शासन-व्यवस्था थी जिसे **गण या संघ** कहते थे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **बुध तथा महावीर** दोनों ही गण या संघ से सम्बंधित थे।

बुद्ध की कहानी

- **बौद्ध** धर्म के संस्थापक **सिद्धार्थ** थे जिन्हें **गौतम** के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म लगभग 2500 वर्ष पूर्व हुआ था।
- बुद्ध क्षत्रिय थे तथा '**शाक्य**' नामक एक छोटे से गण से संबंध्ति थे। युवावस्था में ही ज्ञान की खोज में उन्होंने घर के सुखों को छोड़ दिया उन्होंने **बोध गया** (बिहार) में एक **पीपल** के नीचे कई दिनों तक तपस्या की।
- वे वाराणसी के निकट स्थित **सारनाथ** गए, जहाँ उन्होंने पहली बार उपदेश दिया। **कुशीनगर** में मृत्यु से पहले का शेष जीवन उन्होंने पैदल ही एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करने और लोगों को शिक्षा देने में व्यतीत किया।
- कभी-कभी हम जो चाहते हैं वह प्राप्त कर लेने के बाद भी संतुष्ट नहीं होते हैं एवं और अधिक (अथवा अन्य) वस्तुओं को पाने की इच्छा करने लगते हैं। बुद्ध ने इस लिप्सा को **तृष्णा** कहा है। बुद्ध ने अपनी शिक्षा सामान्य लोगों की **प्राकृत भाषा** में दी।

बौद्ध धर्म (Buddhism)

- कुषाणो का सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था। उसने करीब 1900 साल पहले शासन किया। बौद्ध धर्म दक्षिण-पूर्व की ओर श्रीलंका, म्यांमार, थाइलैंड तथा इंडोनेशिया सहित दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य भागों में भी फैला।
- चीनी बौद्ध तीर्थयात्री **फा-शिएन** काफी प्रसिद्ध है। वह करीब 1600 साल पहले आया। **श्वैन त्सांग** 1400 साल पहले भारत आया और उसके करीब 50 साल बाद इत्सिंग आया।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **श्वैन त्सांग** तथा अन्य तीर्थयात्रियों ने उस समय के सबसे प्रसिद्ध बौद्ध विद्या केंद्र **नालंदा** (बिहार) में भक्ति मार्ग की चर्चा हिन्दुओं के पवित्र ग्रंथ **भगवद्गीता** में की गई है। भगवद्गीता महाभारत का एक हिस्सा है।

<u>उपनिषद्</u>

उपनिषद् उत्तर वैदिक ग्रंथों का हिस्सा थे। उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है। गुरू के समीप बैठना।

<u>जैन धर्म</u>

- लगभग 2500 वर्ष पूर्व जैन धर्म के **24वें** तथा **अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर** ने भी अपने विचारों का प्रसार किया। वह **वज्जि संघ** के **लिच्छवि कुल** के एक क्षत्रिय राजकुमार थे। 30 वर्ष की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया और जंगल में रहने लगे । बारह वर्ष तक उन्होंने कठिन व एकाकी जीवन व्यतीत किया।
- वर्तमान रूप में उपलब्ध **जैन धर्म** की शिक्षाएँ लगभग 1500 वर्ष पूर्व गुजरात में **वल्लभी** नामक स्थान पर लिखी गई थीं

- **जैन शब्द** 'जिन' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है' **विजेता'।**
- **जैन तथा बौद्ध धर्म** जिस समय लोकप्रिय हो रहे थे लगभग उसी समय ब्राह्मणों ने आश्रम-व्यवस्था का विकास किया। महावीर ने अपनी शिक्षा प्राकृत में दी

<u>संघ</u>

- महावीर तथा बुध दोनों का ही मानना था कि घर का त्याग करने पर ही सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। ऐसे लोगों के लिए उन्होंने **संघ नामक संगठन** बनाया जहाँ घर का त्याग करने वाले लोग एक साथ रह सके। संघ में रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं के लिए बनाए गए नियम **विनयपिटक नामक ग्रंथ** में मिलते हैं।

SACHIN ACADEMY 9555697782

एक साम्राज्य (An Empire)

- हम जिन शेरों के चित्र रुपयों-पैसों पर देखते हैं उनका एक लंबा इतिहास
- है। उन्हें पत्थरों को काट कर बनाया गया और फिर उन्हें **सारनाथ** में एक विशाल स्तंभ पर स्थापित किया गया था।
- **अशोक** जिस साम्राज्य पर शासन करते थे उसकी स्थापना उनके दादा **चन्द्रगुप्त मौर्य** ने लगभग 2300 साल पहले की थी। **चाणक्य या कौटिल्य** नाम के एक बुद्धिमान व्यक्ति ने **चन्द्रगुप्त** की सहायता की थी

❖ **वंश** जब एक ही परिवार के कई सदस्य एक के बाद एक राजा बनते हैं तो उन्हें एक ही **वंश** का कहा जाता है।

मौर्य वंश

- मौर्य वंश में तीन महत्वपूर्ण राजा हुए - **चन्द्रगुप्त**, उसका बेटा **बिन्दुसार** और बिन्दुसार का पुत्र **अशोक**
- **मेगस्थनीश**, **चन्द्रगुप्त** के दरबार में पश्चिम-एशिया के यूनानी राजा **सेल्यूकस निकेटर** का राजदूत **(ambassador)** था।

मौर्य साम्राज्य

- मौर्य साम्राज्य के उभरने से थोड़ा पहले लगभग 2400 वर्ष पहले, चीन में सम्राटों ने **चीन की दीवार** का निर्माण शुरू किया। इसे बनाने का उद्देश्य उत्तरी सीमा की पशुपालक लोगों से रक्षा करना था। अगले 2000 वर्षों तक इस दीवार का निर्माण कार्य चलता रहा, क्योंकि साम्राज्य की सीमाएँ बदलती रहीं। यह दीवार लगभग 6400 किलोमीटर लंबी है हर 100-200 मीटर की दूरी पर इसपर निगरानी के लिए बुर्ज बने हुए हैं।

अशोक

SACHIN ACADEMY 9955697782

➢ अशोक मौर्य वंश के सबसे प्रसिद्ध शासक थे। वह ऐसे पहले शासक थे जिन्होंने अभिलेखों द्वारा जनता तक अपने संदेश पहुँचाने की कोशिश की। अशोक के ज्यादातर अभिलेख **प्राकृत** भाषा और **ब्राह्मी लिपि** में हैं।

- **धम्म** संस्कृत शब्द धर्म का प्राकृत रूप है ।
- **कलिंग** तटवर्ती उड़ीसा का प्राचीन नाम है
- **अशोक बुध** के उपदेशों से भी प्रेरित हुए थे।
- **अशोक ने धम्म** के विचारों को प्रसारित करने के लिए सीरिया, मिस्र, ग्रीस तथा श्रीलंका में भी दूत भेजे।

गाँवों में रहने वाले लोग

➢ तमिल क्षेत्र में बड़े भूस्वामियों को **वेल्लला**, **साधरण हलवाहों** को **उणवार** और भूमिहीन मजदूर दास **कडैसियार** और **अदिमाई** कहलाते थे।

➢ गाँव का प्राधन व्यक्ति **ग्राम-भोजक** कहलाता था। अक्सर एक ही परिवार के लोग इस पद पर कई पीढ़ियों तक बने रहते थे। यानी कि यह पद आनुवंशिक था। ग्राम-भोजकों के अलावा अन्य स्वतंत्र कृषक भी होते थे जिन्हें **गृहपति** कहते थे

- **जातक** वो कहानियाँ हैं, जो आम लोगों में प्रचलित थीं। बौद्ध भिक्खुओं ने इनका संकलन किया। जातक में प्राचीन शहरों के बारे में वहाँ गए नाविकों तथा यात्रियों के विवरणों द्वारा भी पता चलता है।

- **आहत सिक्के** सामान्यतःआयताकार और कभी-कभी वर्गाकार या गोल होते थे। ये या तो धातु की चादर को काटकर या धातु के चपटे गोलिकाओं से बनाये जाते थे।इन सिक्कों पर कुछ लिखा हुआ नहीं था, बल्कि इन पर कुछ चिन्ह ठप्पे से बनाये जाते थे। इसीलिए ये **आहत सिक्के** कहलाए। ये सिक्के उपमहाद्वीप के

SACHIN ACADEMY 9955697782

लगभग अधिकांश हिस्सों में पाए जाते हैं और ईसा की आरंभिक सदियों तक ये प्रचलन में रहे है।

सिक्कें (Coins)

चाँदी या सोने के सिक्कों पर विभिन्न आकृतियों को आहत कर बनाए जाने के कारण इन्हें आहत सिक्का कहा जाता था।

- **मथुरा** एक धार्मिक केंद्र भी रहा है। यहाँ बौद्ध विहार और जैन मंदिर हैं। यह कृष्णा भक्ति का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
- **मथुरा** के अभिलेख में सुनारों, लोहारों, बुनकरों, टोकरी बुननेवालों, माला बनाने वालों और इत्र बनाने वालों के उल्लेख मिलते हैं।

अरिकामेडु

लगभग 2200 से 1900 साल पहले **अरिकामेडु** एक पत्तन था, यहाँ दूर-दूर से आए जहाजों से सामान उतारे जाते थे। यहाँ भूमध्य-सागरीय क्षेत्र के **एंफोरा** जैसे पात्र मिले हैं। साथ ही यहाँ '**एरेटाइन**' जैसे मुहर लगे लाल चमकदार बर्तन भी मिले हैं। इन्हें इटली के एक शहर के नाम पर '**एरेटाइन**' पात्र के नाम से जाना जाता है।

रोम

रोम एक बहुत बड़े साम्राज्य की राजधनी था। यह यूरोप, उत्तरी अफ्रीका का तथा पश्चिमी एशिया तक फैला साम्राज्य था। इसके सबसे महत्वपूर्ण शासकों में से एक **ऑगस्टस** ने करीब 2000 साल पहले शासन किया था। उसने कहा था कि रोम ईंटों का शहर था,

व्यापार और व्यापारी (Trade and Trader)

दक्षिण भारत सोना, मसाले (spices), खास तौर पर काली मिर्च (pepper) तथा कीमती पत्थरों के लिए प्रसिद्ध था। काली मिर्च की रोमन साम्राज्य में इतनी माँग थी कि इसे '**काले सोने** (black gold)' के नाम से बुलाते थे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- संगम कविताओं में **मुवेन्दार** की चर्चा मिलती है। यह एक तमिल शब्द है, जिसका अर्थ **तीन मुखिया** है।
- **सातवाहनों** का सबसे प्रमुख राजा गौतमी पुत्र श्री सातकर्णी था।

रेशम मार्ग (Silk Route)

- रेशम बनाने की तकनीक का आविष्कार सबसे पहले चीन में करीब 7000 साल पहले हुआ जिस रास्ते से ये लोग यात्रा करते थे वह **रेशम मार्ग (सिल्क रूट)** के नाम से प्रसिद्ध हो गया। सिल्क रूट पर नियंत्राण रखने वाले शासकों में सबसे प्रसिद्ध **कुषाण** थे।
- **पेशावर** और **मथुरा** इनके दो मुख्य शक्तिशाली केंद्र थे। **तक्षशिला** भी इनके ही राज्य का हिस्सा था।

- इलाहाबाद का पुराना नाम उज्जैन था।
- पटना का पुराना नाम पाटलिपुत्र था। ये गुप्त शासन के महत्वपूर्ण केंद्र थे

वंशावलियाँ (Genealogies)

चन्द्रगुप्त गुप्तवंश के पहले शासक थे, जिन्होंने **महाराजाधिराज** जैसी बड़ी उपाधि धारण की। **समुद्रगुप्त** ने भी यह उपाधि धारण की। कवि कालिदास और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट उनके दरबार में थे।

हर्षवर्धन तथा हर्षचरित

राजा हर्षवर्धन जिन्होंने करीब 1400 साल पहले शासन किया। उनके दरबारी कवि बाणभट्ट ने संस्कृत में उनकी जीवनी **हर्षचरित** लिखी है।
चीनी तीर्थयात्री श्वैन त्सांग काफी समय के लिए हर्ष के दरबार में रहे थे।

पल्लव, चालुक्य और पुलकेशिन द्वितीय

SACHIN ACADEMY 9955697782

पल्लवों का राज्य उनकी राजधनी **काँचीपुरम** के आस-पास के क्षेत्रों से लेकर **कावेरी नदी** के डेल्टा तक फैला था, जबकि चालुक्यों का राज्य **कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों** के बीच स्थित था। चालुक्यों की राजधनी **ऐहोल** थी। यह एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था। पुलकेशिन द्वितीय सबसे प्रसिद्ध चालुक्य राजा थे। उनके बारे में दरबारी कवि **रविकीर्ति** द्वारा रचित प्रशस्ति से पता चलता है।

- **प्रशासन** की प्राथमिक इकाई गाँव होते थे।
- **कालिदास** अपने नाटकों में राज-दरबार के जीवन के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। उनका सबसे प्रसिद्ध नाटक **अभिज्ञान शांकुतलम** है।

- **अरब** में रहने वाले अन्य लोगों में **बेदुइन** थे, जो **घुमक्कड़** कबीले **(pastoral tribes)** होते थे।

धातु विज्ञान (Metallurgy)

प्राचीन भारतीय धातु वैज्ञानिकों ने विश्व धातु विज्ञान के क्षेत्र में प्रमुख योगदान दिया है। पुरातात्विक खुदाई ने यह दर्शाया है कि **हड़प्पावासी** कुशल **शिल्पी** **(craftsmen)** थे और उन्हें तांबे के **धातु कर्म** (धतुशोधन) **(copper metallurgy)** की जानकारी थी। उन्होंने तांबे और टिन को मिलाकर **कांसा** भी बनाया था। जहाँ हड़प्पावासी कांस्य युग से जुड़े थे वहीं उनके उत्तराधिकारी लौह युग से संबंध थे। भारत अत्यंत विकसित किस्म के लोहे का निर्माण करता था खोटा लोहा, पिटवा लोहा, ढलवा लोहा।

- **स्तूप** का शाब्दिक अर्थ टीला होता है

अजंता

यह वह जगह है, जहाँ के पहाड़ों में सेकड़ो सालों के दौरान कई गुफाएँ खोदी गईं। इनमें से ज्यादातर बौद्ध भिक्षुओं के लिए बनाए गए विहार थे। गुफाओं के अंदर अँधेरा होने की वजह से, अधिकांश चित्र मशालों की रोशनी में बनाए गए थे। इनमें से कुछ को चित्रों

SACHIN ACADEMY 9955697782

द्वारा सजाया गया था। इन चित्रों के रंग 1500 साल बाद भी चमकदार हैं। ये रंग **पौधें तथा खनिजों** से बनाए गए थे। इन महान कृतियों को बनाने वाले कलाकार अज्ञात हैं।

- **करीब 1800** साल पहले एक प्रसिद्ध तमिल महाकाव्य **सिलप्पदिकारम** की रचना **इलांगो** नामक कवि ने की।

- **तमिल महाकाव्य**, **मणिमेखलई** को करीब 1400 साल पहले सत्तनार द्वारा लिखा गया।
- **कालिदास** संस्कृत में लिखते थे।

पुराण

- पुराण का शब्दिक अर्थ है प्राचीन या पुराण पुराणों में विष्णु, शिव, दुर्गा या पार्वती जैसे देवी-देवताओं से जुड़ी कहानियाँ हैं। अधिकतर पुराण सरल संस्कृत श्लोक में लिखे गए हैं, जिससे सब उन्हें सुन और समझ सके। स्त्रियाँ तथा शूद्र जिन्हें वेद पढ़ने की अनुमति नहीं थी वे भी इसे सुन सकते थे
- पुराणों और महाभारत दोनों को ही **व्यास नाम के ऋषि** ने संकलित किया था। महाभारत में ही भगवद् गीता भी हैं।

- **रामायण** के लेखक वाल्मीकि माने जाते हैं।

SACHIN ACADEMY 9956697782

आर्यभट्ट

गणितज्ञ तथा खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने संस्कृत में **आर्यभट्टीयम** नामक पुस्तक लिखी। उन्होंने वृत्त की परिधि को मापने की भी विधि ढूँढ़ निकाली

आयुर्वेद

आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की एक विख्यात पद्धति है जो प्राचीन भारत में विकसित हुई। प्राचीन भारत में आयुर्वेद के दो प्रसिद्ध चिकित्सक थे **चरक** (प्रथम - द्वितीय शताब्दी

ईस्वी) और सुश्रुत (चौथी शताब्दी ईस्वी) चरक द्वारा रचित **चरकसंहिता** औषध्शिास्त्र की एक उल्लेखनीय पुस्तक है

- **कागज का आविष्कार** करीब 1900 साल पहले **काई लून** नाम के व्यक्ति ने **चीन** में किया। कागज बनाने की तकनीक को सदियों तक गुप्त रखा गया। करीब 1400 साल पहले यह कोरिया तक पहुँची।

शब्दावली (Terminologies)

- 'हिंदुस्तान' शब्द आज हम इसे आधुनिक राष्ट्र राज्य '**भारत**' के अर्थ में लेते हैं। लेकिन **तेरहवीं सदी** में जब **फ़ारसी** के इतिहासकार **मिन्हाज-ए-सिराज** ने हिंदुस्तान शब्द का प्रयोग किया था तो उसका आशय **पंजाब**, **हरियाणा** और **गंगा-यमुना** के बीच में स्थित इलाकों से था। उसने इस शब्द का राजनीतिक अर्थ में उन इलाकों के लिए इस्तेमाल किया जो दिल्ली के सुलतान के अधिकार क्षेत्र में आते थे।
- सल्तनत के प्रसार के साथ-साथ इस शब्द के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र भी बढ़ते गए, लेकिन हिंदुस्तान शब्द में दक्षिण भारत का समावेश कभी नहीं हुआ। इसके विपरीत, सोलहवीं सदी के आंरभ में बाबर ने हिंदुस्तान शब्द का प्रयोग इस उपमहाद्वीप के भूगोल, पशु-पक्षियों और यहाँ के निवासियों की संस्कृति का वर्णन करने के लिए किया

अभिलेखागार (Archive)

ऐसा स्थान जहाँ दस्तावेज और **पांडुलिपियों** **(Manuscripts)** को संग्रहित किया जाता है। आज सभी राष्ट्रीय और राज्य सरकारों के अभिलेखागार होते हैं जहाँ वे अपने तमाम पुराने सरकारी अभिलेख और लेन-देन के ब्यौरों का रिकॉर्ड रखते हैं।

- **प्रतिलिपियाँ** बनाते हुए लिपिक छोटे-मोटे फेर -बदल करते चलते थे
- **पर्यावास** **(Habitat)** इसका तात्पर्य किसी भी क्षेत्र के पर्यावरण और वहाँ के रहने वालों की सामाजिक और आर्थिक जीवन शैली से है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

जाति पंचायत

अपने सदस्यों के व्यवहार का नियंत्रण करने के लिए जातियाँ स्वयं अपने-अपने नियम बनाती थीं। इन नियमों का पालन जाति के बड़े-बुजुर्गों की एक सभा करवाती थी जिसे कुछ इलाकों में **'जाति पंचायत'** कहा जाता था।

भाषा तथा क्षेत्र (Language and region)

- सन् 1318 में कवि **अमीर खुसरो** ने इस बात पर गौर किया था कि इस देश के हर क्षेत्र की एक अलग भाषा है : सिंधी, लाहौरी, काश्मीरी, द्वारसमुद्री (दक्षिण कर्नाटक में), तेलंगानी (आंध्र प्रदेश में), गूजरी (गुजरात में), मअबारी (तमिलनाडु में), गौड़ी (बंगाल में)...अवधी (पूर्वी उत्तर प्रदेश में) और हिंदवी (दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र में)।" अमीर खुसरो ने बताया कि इन भाषाओं के विपरीत एक भाषा **संस्कृत** भी है जो किसी विशेष क्षेत्र की भाषा नहीं है। यह एक प्राचीन भाषा है "जिसे केवल ब्राह्मण जानते हैं, आम जनता नहीं।"
- संस्कृत ग्रंथों के ज्ञान के कारण समाज में ब्राह्मणों का बड़ा आदर होता था। इनके संरक्षक थे, नए-नए शासक जो स्वयं प्रतिष्ठा की चाह में थे। इन संरक्षकों का समर्थन होने के कारण समाज में इनका दबदबा और भी बढ़ जाता था।

  - **संरक्षक** कोई प्रभावशाली, धनी व्यक्ति जो किसी कलाकार, शिल्पकार विद्वान या अभिजात जैसे किसी अन्य व्यक्ति को मदद या सहारा दे।
  - **उन्नीसवीं सदी** के मध्य में अंग्रेज इतिहासकारों ने भारत के इतिहास को तीन युगों में बाँटा था: 'हिंदू', 'मुसलिम' और 'ब्रिटिश'।

कुरआन शरीफ

- कुरआन शरीफ का संदेश भारत में सबसे पहले सातवीं सदी में व्यापारियों और आप्रवासियों के जरिये पहुँचा। मुसलमान, कुरआन शरीफ को अपना धर्मग्रंथ मानते हैं, केवल एक ईश्वर अल्लाह की सत्ता को स्वीकार करते हैं जिसका प्रेम, करुणा और

SACHIN ACADEMY 9955697782

उदारता अपने में आस्था रखने वाले हर व्यक्ति को गले लगाता है चाहे उस व्यक्ति की सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ भी रही हो।

नए राजवंशों का उदय (The Emergence of New Dynasties)

सातवीं सदी आते-आते उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में बड़े भूस्वामी और योद्धा-सरदार अस्तित्व में आ चुके थे। राजा लोग प्रायः उन्हें अपने **मातहत (subordinates)** या **सामंत** के रूप में मान्यता देते थे। सामंत अपने-आप को **महासामंत**, **महामंडलेश्वर** (पूरे मंडल का महान स्वामी) आदि घोषित कर देते थे।

- **कदंब मयूरशर्मण और गुर्जर-प्रतिहार** हरिचंद्र ब्राह्मण थे, जिन्होंने अपने परंपरागत पेशे को छोड़कर शस्त्र को अपना लिया और क्रमशः कर्नाटक और राजस्थान में अपने राज्य सफलतापूर्वक स्थापित किए।
- **एलोरा की गुफा** का भितिचित्र, जिसमें विष्णु को **नरसिंह** अर्थात पुरुष-सिंह के रूप में दिखलाया गया है। यह भितिचित्र **राष्ट्रकूट** काल की कृति है।
- **महाराजाधिराज** राजाओं के राजा को कहा जाता था और **त्रिभुवन-चक्रवर्तिन** तीन भुवनों का स्वामी होता था।

- **तमिलनाडु में** शासन करनेवाले **चोल वंश** के अभिलेखों में विभिन्न किस्म के करों के लिए 400 से ज्यादा सूचक शब्द मिलते हैं। सबसे अधिक उल्लिखित कर हैं **वेट्टी**, जो नकद की बजाए जबरन श्रम के रूप में लिया जाता था।

SACHIN ACADEMY 9956697782

प्रशस्तियाँ और भूमि-अनुदान

प्रशस्तियों में ऐसे ब्यौरे होते हैं, जो शब्दशः सत्य नहीं भी हो सकते। लेकिन ये प्रशस्तियाँ हमें बताती हैं कि शासक खुद को कैसा दर्शाना चाहते थे। कई शासकों ने प्रशस्तियों में अपनी उपलब्धियों का बखान किया है। संस्कृत में लिखी गई, ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में पाई गई एक प्रशस्ति में **प्रतिहार नरेश**, **नागभट्ट** ' के कामों का वर्णन मिलता है।

राजा लोग प्रायः ब्राह्मणों को भूमि अनुदान से पुरस्कृत करते थे। ये **ताम्र पत्रों** पर अभिलिखित होते थे, जो भूमि पाने वाले को दिए जाते थे।

- **बारहवीं शताब्दी** में एक बृहत् संस्कृत काव्य भी रचा गया, जिसमें कश्मीर पर शासन करने वाले राजाओं का इतिहास दर्ज है। इसे कल्हण नामक एक रचनाकार द्वारा रचा गया।
- **शासकों** ने बड़े मंदिरों का निर्माण करवा कर भी अपनी सत्ता और संसाधनों का प्रदर्शन करने का प्रयास किया। इसलिए जब वे एक-दूसरे के राज्यों पर आक्रमण करते थे, तो मंदिरों को भी अपना निशाना बनाते थे।
- **अफगानिस्तान के गज़नी** का सुलतान महमूद, ऐसे शासकों में से सबसे प्रसिद्द है उसने गुजरात के **सोमनाथ** के मंदिर को लुटा
- **उसने अल-बेरूनी** नामक एक विद्वान को इस उपमहाद्वीप का लेखा-जोखा लिखने का काम सौंपा। अरबी में लिखी गई उसकी कृति, किताब **अल-हिन्द**, आज भी इतिहासकारों के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

चाहमान

- चाहमान, जो बाद में चैहान के रूप में जाने गए। वे दिल्ली और अजमेर के आस-पास के क्षेत्र पर शासन करते थे।
- चाहमानों का सबसे प्रसिद्द शासक था **पृथ्वीराज तृतीय** जिसने सुलतान **मुहम्मद गोरी** जो अफगान शासक था 1191 में हराया, लेकिन दूसरे ही साल 1192 में उसके हाथों हार गया।

चोल शासक

- **राजराज प्रथम**, को सबसे शक्तिशाली चोल शासक माना जाता है, राजराज के पुत्र का नाम **राजेंद्र प्रथम** था उसने गंगा घाटी, श्रीलंका तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों पर हमला किया। इन अभियानों के लिए उसने एक जलसेना भी बनाई।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- राजराज और राजेंद्र प्रथम द्वारा बनवाए गए **तंजावूर** और **गंगईकोंडचोलपुरम** के बड़े मंदिर स्थापत्य और मूर्तिकला की दृष्टि से एक चमत्कार हैं।
    - **जलद्वार** पारंपरिक रूप से एक लकड़ी या धातु बाधा है, जो आमतौर पर पानी के स्तर को नियंत्रित और नदियों और नहरों में दर प्रवाह को संचालित करता है।
    - **किसानों की बस्तियाँ**, जो '**उर**' कहलाती थीं, सिंचित खेती के साथ बहुत समृध्द हो गई थीं। इस तरह के गाँवों के समूह को '**नाडु**' कहा जाता था।

अभिलेख और लिखित सामग्री

उत्तरमेरुर अभिलेख के अनुसार सभा की सदस्यता:

सभा की सदस्यता के लिए इच्छुक लोगों को ऐसी भूमि का स्वामी होना चाहिए, जहाँ से **भू-राजस्व** वसूला जाता है। उनके पास अपना घर होना चाहिए। उनकी उम्र 35 से 70 के बीच होनी चाहिए। उन्हें **वेदों का ज्ञान** होना चाहिए। उन्हें प्रशासनिक मामलों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए और ईमानदार होना चाहिए। यदि कोई पिछले तीन सालों में किसी समिति का सदस्य रहा है तो वह किसी और समिति का सदस्य नहीं बन सकता। जिसने अपने या अपने संबंधियों के खाते जमा नहीं कराए हैं, वह चुनाव नहीं लड़ सकता।

- **तोमरों और चौहानों** के राज्यकाल में ही दिल्ली वाणिज्य का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया। यहाँ **देहलीवाल** कहे जाने वाले सिक्के भी ढाले जाते थे जो काफ़ी प्रचलन में थे।

दिल्ली के शासक

तोमर	→	**आरंभिक बारहवीं शताब्दी-1165**
अनंगपाल	→	**1130-1145**
चैहान	→	**1165-1192**

SACHIN ACADEMY 9955697782

पृथ्वीराज चैहान	→	1175-1192
प्रारंभिक तुर्की शासक	→	1206-1290
कुतुबुद्दीन ऐबक	→	1206-1210
शमसुद्दीन इल्तुतमिश	→	1210-1236
रजिया	→	1236-1240
ग़्यासुद्दीन बलबन	→	1266-1287
ख़लजी वंश	→	1290-1320
जलालुद्दीन ख़लजी	→	1290-1296
अलाउद्दीन ख़लजी	→	1296-1316
तुग़लक़ वंश	→	1320-1414
ग्यासुद्दीन तुग़लक़	→	1320-1324
मुहम्मद तुग़लक़	→	1324-1351
फिरोज शाह तुग़लक़	→	1351-1388
सैयद वंश	→	1414-1451
खिज़्र ख़ान	→	1414-1421
लोदी वंश	→	1451-1526
बहलोल लोदी	→	1451-1489

SACHIN ACADEMY 9955697782

न्याय-चक्र

- तेरहवीं सदी के इतिहासकार **फख्र -ए मुदब्बिर** ने लिखा थाः
- राजा का काम सैनिकों के बिना नहीं चल सकता। सैनिक वेतन के बिना नहीं जी सकते। वेतन आता है किसानों से एकत्रित किए गए राजस्व से। मगर किसान भी

राजस्व तभी चुका सकेंगे, जब वे खुशहाल और प्रसन्न हों। ऐसा तभी हो सकता है, जब राजा न्याय और ईमानदार प्रशासन को बढ़ावा दे।

रज़िया

- सन् 1236 में सुलतान **इल्तुतमिश** की बेटी रज़िया सिंहासन पर बैठी। उस युग के इतिहासकार **मिन्हाज-ए-सिराज** ने स्वीकार किया है कि वह अपने सभी भाइयों से अधिक योग्य और सक्षम थी, लेकिन फिर भी वह एक रानी को शासक के रूप में मान्यता नहीं दे पा रहा था। दरबारी जन भी उसके स्वतंत्र रूप से शासन करने की कोशिशों से प्रसन्न नहीं थे। सन् 1240 में उसे सिंहासन से हटा दिया गया।
- **रजिया** ने अपने **अभिलेखों** और सिक्कों पर अंकित करवाया कि वह सुलतान इल्तुतमिश की बेटी थी।
- आधुनिक आंध्र प्रदेश के वारंगल क्षेत्र में किसी समय **काकतीय वंश** का राज्य था। उस वंश की रानी **रुद्रम्मा देवी** (1262-1289) के व्यवहार से रज़िया का व्यवहार बिलकुल विपरीत था। रुद्रम्मा देवी ने अपने अभिलेखों में अपना नाम पुरुषों जैसा लिखवाकर अपने पुरुष होने का भ्रम पैदा किया था। एक और महिला शासक थी- कश्मीर की रानी **दिद्दा** (980-1003)। उनका नाम **'दीदी'** (बड़ी बहन) से निकला है।

- **गैरिसनों** - रक्षक सैनिकों की टुकड़ियों को कहा जाता था।
- **गैरिसन शहर** - एक किलेबंद बसाव होता था जहाँ सैनिक रहते थे।
- **भीतरी प्रदेश** - किसी शहर या बंदरगाह के आस-पास के इलाके को कहते थे जो उस शहर के लिए वस्तुओं और सेवाओं की पूर्ति करता था।

SACHIN ACADEMY 9955697782

दिल्ली सल्तनत का विस्तार

खिलजी और तुगलक वंश

- **अलाउद्दीन ख़िलजी** के शासनकाल में दक्षिण भारत को लक्ष्य करके सैनिक अभियान शुरू हुए और ये अभियान **मुहम्मद तुग़लक** के समय में अपनी चरम सीमा पर पहुँचे।
- मुहम्मद तुग़लक़ के राज्यकाल के अंत तक इस उपमहाद्वीप का एक विशाल क्षेत्र इसके युद्ध-अभियान के अंतर्गत आ चुका था।
- दिल्ली के आरंभिक सुलतान, विशेषकर **इल्तुतमिश**, सामंतों और ज़मींदारों के स्थान पर अपने विशेष गुलामों को सूबेदार नियुक्त करना अधिक पसंद करते थे। इन गुलामों को फ़ारसी में **बंदगाँ** कहा जाता है तथा इन्हें सैनिक सेवा के लिए खरीदा जाता था। उन्हें राज्य के कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण राजनीतिक पदों पर काम करने के लिए बड़ी सावधानी से प्रशिक्षित किया जाता था।
- फारसी तवारीख के लेखकों ने '**निचले खानदान**' के लोगों को ऊँचे पदों पर बैठाने के लिए दिल्ली के सुलतानों की आलोचना की है।
- **अलाउद्दीन खलजी** के शासनकाल में **भू-राजस्व (land revenue)** के निर्धारण और वसूली के कार्य को राज्य अपने नियंत्रण में ले आया। स्थानीय सामंतों से कर लगाने का अधिकार छीन लिया गया, बल्कि स्वयं उन्हें भी कर चुकाने को बाध्य किया गया। सुलतान के प्रशासकों ने ज़मीन की पैमाइश की और इसका हिसाब बड़ी सावधानी से रखा।

<u>उस समय तीन तरह के कर थे :</u>

(1) कृषि पर, जिसे खराज कहा जाता था और जो किसान की उपज का लगभग पचास प्रतिशत होता था

(2) मवेशियों पर

(3) घरों पर।

- **इब्न बतूता** चैदहवीं सदी में अफ्रीकी देश **मोरक्को** से भारत आया था।
- **बारहवीं सदी** के आखिरी दशक में बनी **कुव्वत अल-इस्लाम मसजिद** तथा उसकी मीनारें। यह जामा मसजिद दिल्ली के सुलतानों द्वारा बनाए गए सबसे पहले शहर में स्थित है। इतिहास में इस शहर को **देहली-ए कुना** (पुराना शहर) कहा गया है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

इस मसजिद का इल्तुतमिश और अलाउद्दीन ख़लजी ने और विस्तार किया। मीनार तीन सुलतानों-कुत्बउद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश और फ़िरोज़ शाह तुग़लक द्वारा बनवाई गई थी।

चंगेज़ ख़ान के नेतृत्व में **मंगोलों** ने 1219 में उत्तर-पूर्वी ईरान में ट्रांसऑक्ससियाना (आधुनिक उज़बेकिस्तान) पर हमला किया और इसके तुरंत बाद ही दिल्ली सल्तनत को उनका आक्रमण झेलना पड़ा। अलाउद्दीन खलजी और मुहम्मद तुग़लक़ के शासनकालों के आरंभ में दिल्ली पर मंगोलों के आक्रमण बढ़ गए। इससे मज़बूर होकर दोनों ही सुलतानों को एक विशाल स्थानीय सेना खड़ी करनी पड़ी।

मंगोलो के आक्रमण का सामना करने के अलाउद्दीन खिलजी द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण कदम

- अलाउद्दीन ख़लजी ने अपने सैनिकों के लिए **सीरी नामक** एक नया **गैरिसन** शहर बनाया।
- अलाउद्दीन ने सैनिकों को इक्ता के स्थान पर नकद वेतन देना तय किया।
- सैनिकों का पेट भरने की समस्या को दूर करने के लिए किसानों की पैदावार का 50 प्रतिशत हिस्सा कर के तौर पर तय कर दिया गया।
- अलाउद्दीन के प्रशासनिक कदम काफी सफल रहे और इतिहासकारों ने **कीमतों में कमी** और **बाजार में वस्तुओं की कुशलता** से आपूर्ति के लिए उसके शासनकाल की बहुत प्रशंसा की है।
- मंगोल आक्रमणों के खतरे का भी उसने सपफलतापूर्वक सामना किया।

मंगोलो के आक्रमण का सामना करने के मुहम्मद तुगलक द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण कदम

- नया गैरिसन शहर बनाने के स्थान पर दिल्ली के चार शहरों में से सबसे पुराने शहर **देहली-ए कुहना** को निवासियों से खाली करवा कर वहाँ सैनिक छावनी बना दी गई।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- सेना को खिलाने के लिए उसी इलाके से खाद्यान्न इकट्ठा किया गया। लेकिन सैनिकों की विशाल संख्या की जरूरते पूरी करने के लिए सुलतान ने अतिरिक्त कर भी लगाए।
- मुहम्मद तुग़लक़ भी अपने सैनिकों को नकद वेतन देता था। लेकिन कीमतों पर नियंत्रण करने की जगह उसने '**टोकन**' (सांवेफतिक) मुद्रा चलाई। ये सिक्के धातु के बने होते थे लेकिन सोने-चाँदी के न होकर सस्ती धातु के।
- मुहम्मद तुग़लक़ के द्वारा उठाए गए प्रशासनिक कदम बेहद असफल रहे। कश्मीर पर उसका आक्रमण पूरी तरह विफल रहा था।
- सल्तनत के इतिहास में पहली बार दिल्ली के किसी सुलतान ने मंगोल इलाके को फतह करने के अभियान की योजना बनाई थी। जहाँ अलाउद्दीन ख़लजी का बल प्रतिरक्षा पर था, वहाँ मुहम्मद तुग़लक़ के द्वारा उठाए गए कदम मंगोलों के विरुद्ध सैनिक आक्रमण की योजना का हिस्सा थे।

शेरशाह सूरी

शेरशाह सूरी(1540-1545) ने बिहार में अपने चाचा के एक छोटे-से इलाके के प्रबंधक के रूप में काम शुरू किया था और आगे चलकर उसने मुग़ल सम्राट **हुमायूँ** तक को चुनौती दी और परास्त किया। शेरशाह ने दिल्ली पर अधिकार करके स्वयं अपना राजवंश स्थापित किया।

'तीन श्रेणियाँ', 'ईश्वरी शांति', नाइट और धर्मयुद्ध

- तीन श्रेणियों का विचार सबसे पहले ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में फ्रांस में सूत्रबद्ध किया गया। इसके अनुसार समाज को तीन वर्गों में विभाजित किया गया- प्रार्थना करने वाला वर्ग, युद्ध करने वाला वर्ग और खेती करने वाला वर्ग। तीन वर्गों में समाज के इस विभाजन को **ईसाई धर्म** का समर्थन भी प्राप्त था।
- इसी विभाजन से योद्धाओं का एक नया समूह भी उभरा। इन योद्धाओं को **'नाइट'** कहा जाता था। नाइटों से अपेक्षा की जाती थी कि वे धर्म और ईश्वर की सेवा में समर्पित योद्धा रहें। कोशिश यह रहती थी कि इन योद्धाओं को आपसी लड़ाई-भिड़ाई

SACHIN ACADEMY 9955697782

से विमुख करके उन मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध करने भेज दिया जाए, जिन्होंने **यरुशलम** शहर पर कब्जा कर रखा था। इस प्रयत्न के परिणामस्वरूप सैनिक अभियानों की एक श्रृंखला चली, जिसे **'क्रूसेड'** (धर्मयुद्ध) कहा गया।

मुग़ल साम्रज्य

मुग़ल दो महान शासक वंशों के वंशज थे। माता की ओर से वे मंगोल शासक **चंगेज़ खान** के उत्तराधिकारी थे। पिता की ओर से वे ईरान, इराक एवं वर्तमान तुर्की के शासक **तैमूर** के वंशज थे। परंतु मुग़ल अपने को **मुग़ल या मंगोल** कहलवाना पसंद नहीं करते थे। ऐसा इसलिए था, क्योंकि चंगेज़ ख़ान से जुड़ी स्मृतियाँ सैंकड़ों व्यक्तियों के नरसंहार से संबंधित थीं। दूसरी तरफ़, मुग़ल, तैमूर के वंशज होने पर गर्व का अनुभव करते थे। क्योंकि उनके इस महान पूर्वज ने 1398 में दिल्ली पर कब्जा कर लिया था।

- **मुग़ल राजत्व** का दावा जन्मसिद्द अधिकार के रूप में करते थे।

मुग़ल सैन्य अभियान

- मुग़ल शासक **बाबर** की उम्र केवल बारह वर्ष की थी जब मंगोलों की दूसरी शाखा, **उज़बेगों** के आक्रमण के कारण उसे अपनी पैतृक गद्दी छोड़नी पड़ी। अनेक वर्षों तक भटकने के बाद उसने 1504 में **काबुल** पर कब्जा कर लिया। उसने 1526 में दिल्ली के सुलतान **इब्राहिम लोदी** को पानीपत में हराया और दिल्ली और आगरा को अपने कब्जे में कर लिया।
- सोलहवीं शताब्दी के युद्धों में **तोप** और **गोलाबारी** का पहली बार इस्तेमाल हुआ। **बाबर** ने इनका पानीपत की पहली लड़ाई में प्रभावी ढंग से प्रयोग किया।
- युद्ध में प्रयोग होने वाले बारूद की तकनीक भारत में 14वीं शताब्दी में लायी गयी। आग्नेयास्त्रों के लिए इसका प्रयोग सबसे पहले **गुजरात**, **मालवा** और **दक्कन** जैसे प्रदेशों में हुआ एवं आरंभिक 16वीं सदी में बाबर द्वारा इसका प्रयोग किया गया था।

मुगल सम्राट

प्रमुख अभियान और घटनाएँ

SACHIN ACADEMY 9956697782

बाबर 1526 - 1530

- **बाबर** ने 1526 में पानीपत के मैदान में **इब्राहिम लोदी** एवं उसके अफ़गान समर्थकों को हराया।
- 1527 में खानवा में **राणा सांगा**, **राजपूत** राजाओं और उनके समर्थकों को हराया।
- 1528 में चंदेरी में राजपूतों को हराया।
- अपनी मृत्यु से पहले दिल्ली और आगरा में मुग़ल नियंत्रण स्थापित किया।

हुमायूँ 1530-1540 एवं 1555-1556

- हुमायूँ ने अपने पिता की वसीयत के अनुसार जायदाद का बँटवारा किया। प्रत्येक भाई को एक एक प्रांत मिला। उसके भाई **मिर्ज़ा कामरान** की महत्त्वाकाँक्षाओं के कारण हुमायूँ अपने अफ़ग़ान प्रतिद्वंद्वियों के सामने फीका पड़ गया। शेर खान ने हुमायूँ को दो बार हराया-1539 में **चौसा** में और 1540 में **कन्नौज** में। इन पराजयों ने उसे **ईरान** की ओर भागने को बाध्य किया।
- ईरान में हुमायूँ ने सफ़ाविद शाह की मदद ली। उसने 1555 में दिल्ली पर पुनः कब्जा कर लिया परंतु उससे अगले वर्ष इस इमारत में एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गयी।

अकबर 1556-1605

- अकबर 13 वर्ष की अल्पायु में सम्राट बना। 1585-1605 के मध्य अकबर के साम्राज्य का विस्तार हुआ। उत्तर-पश्चिम में अभियान चलाए गए। सफ़ाविदों को हराकर **कांधार** पर कब्जा किया गया और **कश्मीर** को भी जोड़ लिया गया। **मिर्ज़ा हाकिम** की मृत्यु के पश्चात् **काबुल** को भी उसने अपने राज्य में मिला लिया।
- 1570 में अकबर जब **फतेहपुर सीकरी** में था, तो उसने उलेमा, ब्राह्मणों, जेसुइट पादरियों (जो रोमन कैथोलिक थे) और जरदुश्त धर्म के अनुयायियों के साथ धर्म के मामलों पर चर्चा शुरू की। ये चर्चाएँ **इबादतखाना** में हुईं।
- इस विचार-विमर्श से अकबर की समझ बनी कि जो विद्वान **धार्मिक** रीति और **मतांधता** पर बल देते हैं, वे अकसर कट्टर होते हैं। उनकी शिक्षाएँ प्रजा के बीच

SACHIN ACADEMY 9955697782

विभाजन और असामंजस्य पैदा करती हैं। ये अनुभव अकबर को **सुलह-ए-कुल** या '**सर्वत्र शांति**' के विचार की ओर ले गए।

- **मतांधता** ऐसी व्याख्या या कथन होता था जिसे अधिकारपूर्ण कहकर यह आशा की जाए कि उस पर बिना कोई प्रश्न उठाए उसे स्वीकार कर लिया जाएगा।
- **अकबर** द्वारा निर्मित **आगरा किले** के निर्माण हेतु 2,000 पत्थर काटने वालों, 2,000 सीमेंट व चूना बनाने वालों तथा 8,000 मजदूरों की आवश्यकता पड़ी।

जहाँगीर 1605-1627

- जहाँगीर ने अकबर के सैन्य अभियानों को आगे बढ़ाया। मेवाड़ के सिसोदिया शासक अमर सिंह ने मुग़लों की सेवा स्वीकार की। इसके बाद सिक्खों, अहोमों और अहमदनगर के खिलाफ अभियान चलाए गए, जो पूर्णतः सफल नहीं हुए। जहाँगीर के शासन के अंतिम वर्षों में **राजकुमार खुर्रम**, जो बाद में सम्राट **शाहजहाँ** कहलाया, ने विद्रोह किया।
- **मेहरुन्निसा** ने 1611 में जहाँगीर से विवाह किया और उसे **नूरजहाँ** का खिताब मिला। नूरजहाँ हमेशा जहाँगीर के प्रति अत्यधिक वफ़ादार रही।

शाहजहाँ 1627-1658

- दक्कन में शाहजहाँ के अभियान जारी रहे।1657-58 में शाहजहाँ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार को लेकर झगड़ा शुरू हो गया। इसमें **औरंगजेब** की विजय हुई और **दारा शिकोह** समेत उसके तीनों भाइयों को मौत के घाट उतार दिया गया। **शाहजहाँ** को उसकी शेष जिदगी के लिए **आगरा** में कैद कर दिया गया।

औरंगजेब 1658-1707

- 1663 में उत्तर-पूर्व में **अहोमों** की पराजय हुई परंतु उन्होंने 1680 में पुनः विद्रोह कर दिया। उत्तर-पश्चिम में **यूसफजई** और **सिक्खों** के विरुद्ध अभियानों को अस्थायी सफलता मिली।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- मराठा सरदार शिवाजी के विरुद्ध मुग़ल अभियान प्रारंभ में सफल रहे। परंतु औरंगजेब ने शिवाजी का अपमान किया। और **शिवाजी** आगरा स्थित मुग़ल कैदखाने से भाग निकले। उन्होंने अपने को स्वतंत्र शासक घोषित करने के पश्चात् मुगलों के विरुद्ध पुनः अभियान चलाए। राजकुमार अकबर ने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह किया जिसमें उसे मराठों और दक्कन की सल्तनत का सहयोग मिला। अकबर के विद्रोह के पश्चात् औरंगजेब ने दक्कन के शासकों के विरुद्ध सेनाएँ भेजी। 1685 में **बीजापुर** और 1687 में **गोलकुंडा** को मुग़लों ने अपने राज्य में मिला लिया। औरंगजेब को उत्तर भारत में **सिक्खों**, **जाटों** और **सतनामियों**, उत्तर-पूर्व में **अहोमों** और दक्कन में **मराठों** के विद्रोहों का सामना करना पड़ा। उसकी मृत्यु के पश्चात् उत्तराधिकार के लिए युद्ध शुरू हो गया।

उत्तराधिकार की मुग़ल परम्पराएं

मुग़ल **ज्येष्ठाधिकार (primogeniture)** के नियम में विश्वास नहीं करते थे जिसमें ज्येष्ठ पुत्र अपने पिता के राज्य का उत्तराधिकारी होता था। इसके विपरीत, उत्तराधिकार में वे **सहदायाद** की मुग़ल और तैमूर वंशों की प्रथा को अपनाते थे जिसमें उत्तराधिकार का विभाजन समस्त पुत्रों में कर दिया जाता था।

SACHIN ACADEMY 9955697782

मनसबदार

'मनसबदार' शब्द का प्रयोग ऐसे व्यक्तियों के लिए होता था, जिन्हें कोई **मनसब** यानी कोई सरकारी हैसियत अथवा पद मिलता था। यह मुग़लों द्वारा चलाई गई श्रेणी व्यवस्था थी, जिसके जरिए
(1) पद; (2) वेतन; एवं (3) सैन्य उत्तरदायित्व, निर्धारित किए जाते थे।
मनसबदार अपना वेतन राजस्व एकत्रित करने वाली भूमि के रूप में पाते थे, जिन्हें **जागीर** कहते थे और जो तकरीबन **'इक्ताओं'** के समान थीं।

जात की श्रेणियाँ

5,000 जात वाले अभिजातों का दर्जा 1,000 जात वाले अभिजातों से ऊँचा था। अकबर के शासन काल में 29 ऐसे मनसबदार थे जो 5,000 जात की पदवी के थे। औरंगजेब के शासनकाल तक ऐसे मनसबदारों की संख्या 79 हो गई।

जब्त और ज़मीदार

- मुग़लों की आमदनी का प्रमुख साधन किसानों की उपज से मिलने वाला राजस्व था। अधिकतर स्थानों पर किसान ग्रामीण **कुलीनों** यानी कि मुखिया या स्थानीय सरदारों के माध्यम से राजस्व देते थे। समस्त मध्यस्थों के लिए, चाहे वे स्थानीय ग्राम के मुखिया हो या फिर शक्तिशाली सरदार हों, मुग़ल एक ही शब्द- **ज़मीदार** -का प्रयोग करते थे।
- अकबर के राजस्वमंत्री **टोडरमल** ने दस साल (1570-1580) की कालावधि के लिए कृषि की पैदावार, कीमतों और कृषि भूमि का सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण किया। इन आँकड़ों के आधार पर, प्रत्येक फ़सल पर नकद के रूप में कर (राजस्व) निश्चित कर दिया गया। प्रत्येक सूबे (प्रांत) को राजस्व मंडलों में बाँटा गया और प्रत्येक की हर फ़सल के लिए राजस्व दर की अलग सूची बनायी गई। राजस्व प्राप्त करने की इस व्यवस्था को **'ज़ब्त'** कहा जाता था।

अकबर नामा और आइने-अकबरी

- अकबर ने अपने करीबी मित्र और दरबारी **अबुल फ़जल** को आदेश दिया कि वह उसके शासनकाल का इतिहास लिखे। अबुल फ़जल ने यह इतिहास तीन जिल्दों में लिखा और इसका शीर्षक है **अकबरनामा।** पहली जिल्द में अकबर के पूर्वजों का बयान है और दूसरी जिल्द में अकबर के शासनकाल की घटनाओं का विवरण देती है। तीसरी जिल्द **आइने-अकबरी** है। इसमें अकबर के प्रशासन, घराने, सेना, राजस्व और साम्राज्य के भूगोल का ब्यौरा मिलता है। इसमें समकालीन भारत के लोगों की परंपराओं और संस्कृतियों का भी विस्तृत वर्णन है। आइने-अकबरी का सब से रोचक

SACHIN ACADEMY 9355697782

आयाम है, विविध प्रकार की चीजों-फ़सलों, पैदावार, कीमतों, मजदूरी और राजस्व का सांख्यिकीय विवरण।

- प्रशासन के मुख्य अभिलक्षण अकबर ने निर्धारित किए थे और इनका विस्तृत वर्णन **अबुल फ़जल** की **अकबरनामा**, विशेषकर **आइने-अकबरी** में मिलता है। अबुल फ़जल के अनुसार साम्राज्य कई प्रांतों में बँटा हुआ था, जिन्हें **'सूबा'** कहा जाता था। सूबों के प्रशासक **'सूबेदार'** कहलाते थे, जो राजनैतिक तथा सैनिक, दोनों प्रकार के कार्यों का निर्वाह करते थे।
- प्रत्येक प्रांत में एक वित्तीय अधिकारी भी होता था जो '**दीवान**' कहलाता था।

सुलह-ए-कुल

- अकबर की सुलह-ए-कुल की नीति का उनके पुत्र जहाँगीर ने इस प्रकार वर्णन किया है: ईश्वरीय अनुकंपा के विस्तृत आँचल में सभी वर्गों और सभी धर्मों के अनुयायियों की एक जगह है। इसलिए उसके विशाल साम्राज्य में, जिसकी चारों ओर की सीमाएँ केवल समुद्र से ही निर्धारित होती थी विरोधी धर्मों के अनुयायियों और तरह-तरह के अच्छे-बुरे विचारों के लिए जगह थी। यहाँ असहिष्णुता का मार्ग बंद था। यहाँ सुन्नी और शिया एक ही मसजिद में इकट्ठे होते थे और ईसाई और यहूदी एक ही गिरजे में प्रार्थना करते थे। उसने सुसंगत तरीके से **'सार्विक शांति'** (**सलह-ए-कल**) के सिद्धांत का पालन किया।

SACHIN ACADEMY 9955697782

कुतुबमीनार

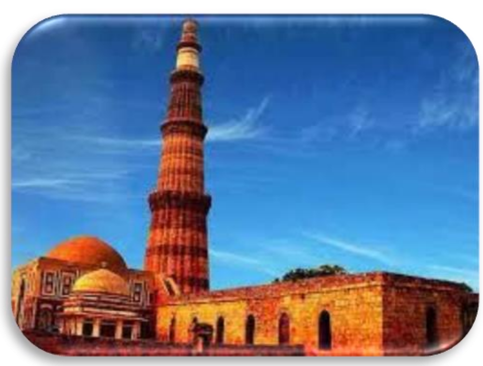

- कुतुबमीनार पाँच मंजिली इमारत है। **अभिलेखों** की पट्टियां इसके पहले छज्जे के नीचे हैं। इस इमारत की पहली मंजिल का निर्माण **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने लगभग 1199 में करवाया था। तथा शेष मंजिलों का निर्माण 1229 के आस-पास **इल्तुतमिश** द्वारा करवाया गया। कई वर्षों में यह इमारत आँधी-तूफ़ान तथा भूकंप की वजह से क्षतिग्रस्त हो गई थी। **अलाउद्दीन खलजी**, **मुहम्मद तुग़लक़**, **फ़िरोज़ शाह तुगलक** तथा **इब्राहिम लोदी** ने इसकी मरम्मत करवाई।

- **राजस्थान के बूंदी** में स्थित **रानीजी की बावड़ी**, उन पचास बावड़ियों में सबसे बड़ी थी जिसका निर्माण पानी की आवश्यकता की पूर्ति के लिए किया गया। अपनी स्थापत्य सुन्दरता के लिए विख्यात इस बावड़ी का निर्माण 1699 ईसवी में **रानी नाथावत** जी ने, जो बूंदी के राजा अनिरुद्ध सिंह की रानी थी, किया था।

- **शिव की स्तुति** में बनाए गए **कंदरिया महादेव मंदिर** का निर्माण चंदेल राजवंश के **राजा धंगदेव** द्वारा 999 में किया गया था।
- **खजुराहो समूह** में राजकीय मदिर सम्मिलित थे जहाँ सामान्य जनमानस को जाने की अनुमति नहीं थी। ये मंदिर सुपरिष्कृत उत्कीर्णित मूर्तियों से अलंकृत थे।

अभियांत्रिकी कौशल तथा निर्माण कार्य

तंजावूर के राजराजेश्वर मंदिर

- तंजावूर के **राजराजेश्वर मंदिर** का शिखर, उस समय के मंदिरों में सबसे ऊँचा था। शिखर के शीर्ष पर **90 टन का पत्थर** ले जाने के लिए वास्तुकारों ने मंदिर के शीर्ष तक पहुँचने के लिए 4 किलोमीटर का चढ़ाईदार रास्ता बनवाया। ताकि चढ़ाई बहुत खड़ी न हो उसके बाद रोलरों द्वारा भारी पत्थरों को इस रास्ते से ऊपर ले जाया गया।
- मंदिर के पास के एक गाँव को **चारूपल्लम** कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - चढ़ाईदार रास्ते का गाँव।
- एक अभिलेख से इस बात का संकेत मिलता है कि इस मंदिर का निर्माण **राजा राजदेव** ने अपने देवता **राजराजेश्वरम** की उपासना हेतु किया था।
- **चोल राजाओं** की राजधानी **तंजावूर** थी। कावेरी नदी तंजावूर नगर के पास बहती है। **तंजावूर** का निकटवर्ती नगर **उरैयूर** है तंजावूर एक मंदिर नगर का भी उदाहरण है। मंदिर नगर नगरीकरण का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रतिरूप प्रस्तुत करते हैं। नगरीकरण नगरों के विकास की प्रक्रिया है।

SACHIN ACADEMY 9956097782

<u>मंदिरों, मसजिदों और हौजों का निर्माण</u>

- मुसलमान सुलतान तथा बादशाह स्वयं को भगवान के अवतार होने का दावा तो नहीं करते थे किंतु फ़ारसी दरबारी इतिहासों में **सुलतान का वर्णन 'अल्लाह की परछाई'** के रूप में हुआ है। दिल्ली की एक मसजिद के अभिलेख से पता चलता है कि अल्लाह ने **अलाउद्दीन** को शासक इसलिए चुना था, क्योंकि उसमें अतीत के **महान विधिकर्ताओं मूसा और सुलेमान** की विशिष्टताएँ मौजूद थीं। सबसे महान विधिकर्ता और वास्तुकार अल्लाह स्वयं था। उसने अव्यवस्था को दूर करके विश्व का सृजन किया तथा एक व्यवस्था और संतुलन कायम किया।

- सुलतान **इल्तुतमिश** ने **देहली-ए-कुहना** के एकदम निकट एक विशाल तालाब का निर्माण करके व्यापक सम्मान प्राप्त किया। इस विशाल जलाशय को **हौज़-ए-सुल्तानी** अथवा **'राजा का तालाब'** कहा जाता था।

  - **फ़ारसी शब्द, आबाद** और आबादी 'आब' शब्द से निकले हैं जिसका अर्थ है पानी। आबाद शब्द उस जगह के लिए इस्तेमाल होता हैं, जहाँ बसावट हो। इसका एक अन्य अर्थ खुशहाली भी है। आबादी का अर्थ जनसंख्या एवं समृद्धि दोनों ही है।

- राजा, मंदिरों का निर्माण अपनी **शक्ति**, **धन-संपदा** और **ईश्वर के प्रति निष्ठा** के प्रदर्शन हेतु करते थे। ऐसे में यह बात आश्चर्यजनक नहीं लगती है कि जब उन्होंने एक दूसरे के राज्यों पर आक्रमण किया, तो उन्होंने प्रायः ऐसी इमारतों पर निशाना साधा।
- नवीं शताब्दी के आरंभ में जब **पांड्यन राजा श्रीमर श्रीवल्लभ** ने श्रीलंका पर आक्रमण कर राजा सेन प्रथम (831-851) को पराजित किया था, उसके विषय में बौद्ध भिक्षु व इतिहासकार **धम्मकित्ति** ने लिखा है कि, "सारी बहुमूल्य चीजें वह ले गया... रत्न महल में रखी **स्वर्ण की बनी बुद्ध की मूर्ति**... और विभिन्न मठों में रखी सोने की प्रतिमाओं - इन सभी को उसने ज़ब्त कर लिया।"

SACHIN ACADEMY 9955697782

- अगले **सिंहली शासक सेन द्वितीय** ने अपने सेनापति को, **पांड्यों की राजधानी मदुरई** पर आक्रमण करने का आदेश दिया। बौद्ध इतिहासकार ने लिखा है कि इस अभियान में बुद्ध की स्वर्ण मूर्ति को ढूंढ निकालने तथा वापस लाने हेतु महत्त्वपूर्ण प्रयास किए गए।

- ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में **चोल राजा राजेंद्र प्रथम** ने अपनी राजधानी में शिव मंदिर का निर्माण करवाया था।उसने पराजित शासकों से ज़ब्त की गई उत्कृष्ट प्रतिमाओं से इसे भर दिया। इनमे निम्न चीजें सम्मिलित थीं: चालुक्यों से प्राप्त एक सूर्य पीठिका, एक गणेश मूर्ति तथा दुर्गा की कई मूत्तियाँ, पूर्वी चालुक्यों से प्राप्त एक नंदी मूर्ति, उड़ीसा के कलिंगों से प्राप्त भैरव (शिव का एक रूप) तथा भैरवी की एक प्रतिमा तथा बंगाल के पालों से प्राप्त काली की मूर्ति।
- मंदिर के कर्ता-धर्ता मंदिर के धन को व्यापार एवं साहूकारी में लगाते थे। समय के साथ, बड़ी संख्या में पुरोहित-पुजारी, कामगार, शिल्पी, व्यापारी आदि मंदिर तथा उसके दर्शनार्थियों एवं तीर्थयात्रियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मंदिर के आस-पास बसते गए। इस प्रकार **मंदिर नगरों** का विकास हुआ। जैसे-मध्य प्रदेश में **भिल्लस्वामिन (भीलसा या विदिशा)** और गुजरात में **सोमनाथ।** कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण मंदिर नगर-तमिलनाडु में **कांचीपुरम** तथा **मदुरै** और आंध्र प्रदेश में **तिरुपति** हैं।

- **तीर्थस्थल** भी धीरे-धीरे नगरों के रूप में विकसित हो गए। **वृंदावन** (उत्तर प्रदेश) और **तिरुवन्नमलाई** (तमिलनाडु) ऐसे नगरों के दो उदाहरण हैं। **अजमेर** (राजस्थान), बारहवीं शताब्दी में चौहान राजाओं की राजधानी था और आगे चलकर मुग़लों के शासन में वह **'सूबा'** मुख्यालय बन गया। यह नगर धार्मिक सह-अस्तित्व का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। सुप्रसिद्ध **सूफी संत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती** यहाँ बारहवीं शताब्दी में बस गए थे। अजमेर के पास ही **पुष्कर सरोवर** है, जहाँ प्राचीनकाल से ही तीर्थयात्री आते रहे हैं।

बाग़, मकबरे तथा किले

- **मुग़लों** के अधीन वास्तुकला और अधिक जटिल हो गई। बाबर, हुमायूँ, अकबर,

SACHIN ACADEMY 9956697782

- जहाँगीर और विशेष रूप से शाहजहाँ, साहित्य, कला और **वास्तुकला** में व्यक्तिगत रुचि लेते थे। अपनी आत्मकथा में बाबर ने **औपचारिक बागों** की योजनाओं और उनके बनाने में अपनी रुचि का वर्णन किया है।
- **हुमायूँ** के मकबरे का निर्माण **लाल बलुआ पत्थर** से हुआ था तथा इसके किनारे **सफेद संगमरमर** से बने थे।
- **शाहजहाँ** बादशाह के सिंहासन के पीछे **पितरा-दूरा** के जड़ाऊ काम की एक श्रृंखला बनाई गई थी, जिसमें पौराणिक **यूनानी देवता आर्फियस** को **वीणा** बजाते हुए चित्रित किया गया था। ऐसा माना जाता था कि आर्फियस का संगीत आक्रामक जानवरों को भी शांत कर सकता है और वे शांतिपूर्वक एक-दूसरे के साथ रहने लगते हैं।
- शासन के आरंभिक वर्षों में शाहजहाँ की राजधानी **आगरा** थी।
- **शाहजहां** ने आगरा का **ताजमहल** का निर्माण कराया जिसका निर्माण कार्य 1643 में पूरा हुआ

- **पितरा-दूरा** - उत्कीर्णित संगमरमर अथवा बलुआ पत्थर पर रंगीन, ठोस पत्थरों को दबाकर बनाए गए सुंदर तथा अलंकृत नमूने।

- **अकबर की राजधानी फतेहपुर सीकरी** थी। फतेहपुर सीकरी की कई इमारतों पर **गुजरात व मालवा** की वास्तुकलात्मक शैलियों का प्रभाव दिखाई देता है।

- **जोधाबाई महल** फतेहपुर सीकरी में है । ये गुजरात क्षेत्र की वास्तुकलात्मक परंपराओं से प्रभावित हैं।

चर्च

बारहवीं शताब्दी से **फ्रांस** में आरंभिक भवनों की तुलना में अधिक ऊँचे व हलके चर्चों के निर्माण के प्रयास शुरू हुए। वास्तुकला की यह शैली **'गोथिक'** नाम से जानी जाती है। इस शैली की विशिष्टताएँ हैं-नुकीले ऊँचे मेहराब, रंगीन काँच का प्रयोग, जिसमें प्राय: **बाइबिल**

SACHIN ACADEMY 9955697782

से लिए गए दृश्यों का चित्रण है तथा उड़ते हुए पुश्ते। दूर से ही दिखने वाली ऊँची मीनारें और **घंटी वाले बुर्ज** बाद में चर्च से जुड़े।

काँसा (Bronze), घंटा-धातु और 'लुप्तमोम' (lost wax) तकनीक

- काँसा एक मिश्रधातु होती है, जो **ताँबे और राँगे (टिन)** के मेल से बनती है। घंटा-धातु में राँगे का अनुपात किसी भी अन्य किस्म के काँसे से अधिक होता है। यह घंटे जैसी ध्वनि उत्पन्न करती है। **चोलकालीन** कांस्य मर्तियाँ **'लुप्तमोम'** तकनीक से बनाई जाती थीं।

व्यापारियों का संघ

- व्यापारियों को अनेक राज्यों तथा जंगलों से होकर गुजरना पड़ता था। इसलिए वे आमतौर पर काफिले बनाकर एक साथ यात्रा करते थे और अपने हितों की रक्षा के लिए **व्यापार-संघ (गिल्ड)** बनाते थे।
- दक्षिण भारत में आठवीं शताब्दी और परवर्ती काल में अनेक ऐसे संघ थे। उनमें सबसे प्रसिद्ध **'मणिग्रामम्'** और **'नानादेशी'** थे।
- **चेट्टियार** और **मारवाड़ी ओसवाल** जैसे समुदाय आगे चलकर देश के **प्रधान व्यापारी** समूह बन गए। गुजराती व्यापारियों में हिंदू बनिया और मुस्लिम बोहरा दोनों समुदाय शमिल थे।
- पश्चिमी तट के नगरों में अरबी, फारसी, चीनी, यहूदी और सीरियाई ईसाई बस गए थे। लाल सागर के बंदरगाहों में बेचे जाने वाले भारतीय मसाले और कपड़े इतालवी व्यापारियों द्वारा खरीदे जाते थे और वहाँ से वे उन्हें आगे यूरोपीय बाजारों में पहुँचाते थे। उनसे व्यापार में बहुत लाभ होता था। उष्णकटिबंधीय जलवायु में उगाए जाने वाले मसाले (कालीमिर्च, दालचीनी, जायफल, सोंठ आदि) यूरोपीय व्यंजनों के महत्त्वपूर्ण अंग बन गए थे
- **काबुल** और **कांधार** सुप्रसिद्ध **रेशम मार्ग** से जुड़े हुए थे। साथ ही घोड़ों का व्यापार भी मुख्य रूप से इसी मार्ग से होता था।

SACHIN ACADEMY 9955697782

नगरों में शिल्प (Crafts in Towns)

बीदर के शिल्पकार ताँबे तथा चाँदी में जड़ाई के काम के लिए इतने अधिक प्रसिद्ध थे कि इस शिल्प का नाम ही **'बीदरी'** पड़ गया।

सालियार या **कैक्कोलार** जैसे बुनकर भी समृद्धिशाली समुदाय बन गए थे और वे मंदिरों को भारी दान-दक्षिणा दिया करते थे।

हम्पी

- **हम्पी** नगर, **कृष्णा** और **तुंगभद्रा नदियों** की घाटी में स्थित है। यह नगर **1336** में स्थापित **विजयनगर** साम्राज्य का केंद्र स्थल था। हम्पी के शानदार खंडहरों से पता चलता है कि उस शहर की किलेबंदी उच्च कोटि की थी। किले की दीवारों के निर्माण में कहीं भी गारे-चूने जैसे किसी भी जोड़ने वाले मसाले का प्रयोग नहीं किया गया था और **शिलाखंडों** को आपस में फँसाकर गूंथा गया था।

- अपने शासन काल में विजयनगर के शासकों ने **जलाशयों** एवं **नहरों** के निर्माण में काफी रुचि ली। **मालदेवी नदी** के ऊपर 1.37 किमी. लम्बे मिट्टी के बाँध वाले **अनंतराज सागर जलाशय** का निर्माण हुआ। **कृष्णदेव राय** ने दो पहाड़ियों के बीच एक विशाल प्रस्तर बांध का निर्माण विजयनगर के निकट एक विशाल झील के निर्माण के लिए किया जहाँ से जल को जलसंतु और नहरों द्वारा बगीचों और खेतों तक सिंचाई के लिए पहुँचाया जाता था।
- 1565 में दक्कनी सुल्तानों- गोलकुंडा, बीजापुर, अहमदनगर, बरार और बीदर के शासकों के हाथों विजयनगर की पराजय के बाद हम्पी का विनाश हो गया।

सूरत

- **सूरत** ओरमुज़ की खाड़ी से होकर पश्चिमी एशिया के साथ व्यापार करने के लिए मुख्य द्वार था। सूरत को **मक्का का प्रस्थान द्वार** भी कहा जाता था, क्योंकि बहुत-से हजयात्री, जहाज़ से यहीं से रवाना होते थे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- सूरत एक सर्वदेशीय नगर था, जहाँ सभी जातियों और धर्मों के लोग रहते थे। सत्रहवीं शताब्दी में वहाँ **पुर्तगालियों**, **डचों** और **अंग्रेजों** के कारखाने एवं मालगोदाम थे। अंग्रेज़ इतिहासकार **ओविंगटन** ने **1689** में सूरत बंदरगाह का वर्णन करते हुए लिखा है कि किसी भी एक वक्त पर भिन्न-भिन्न देशों के औसतन एक सौ जहाज़ इस बंदरगाह पर लंगर डाले खड़े देखे जा सकते थे।
- सूरत के वस्त्र अपने **सुनहरे गोटा-किनारियों (जरी)** के लिए प्रसिद्ध थे और उनके लिए पश्चिम एशिया, अफ्रीका और यूरोप में बाजार उपलब्ध थे।
- सूरत से जारी की गई **हुंडियों** (एक ऐसा दस्तावेज़, जिसमें एक व्यक्ति द्वारा जमा कराई गई रकम दर्ज रहती है) को दूर-दूर तक मिस्र में काहिरा, इराक में बसरा और बेल्जियम में एंटवर्प के बाजारों में मान्यता प्राप्त थी।
- **1668** में **अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी** ने सूरत में अपना मुख्यालय स्थापित कर लिया था। आज सूरत एक महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र है।

❖ **वाणिज्य केंद्र** एक ऐसा स्थान जहाँ विभिन्न उत्पादन केंद्रों से आने वाला माल खरीदा और बेचा जाता है।

मसूलीपट्टनम

- **मसूलीपट्टनम** या **मछलीपट्टनम** नगर **कृष्णा नदी** के डेल्टा पर स्थित है। यह **आंध्र तट** का सबसे महत्त्वपूर्ण पत्तन बन गया था। मसूलीपट्टनम का किला, **हॉलैंडवासियों** ने बनाया था।
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के एक गुमाश्ते **विलियम मेथवल्ड** ने 1620 ई. में **मसूलीपट्टनम** का वर्णन किया था कि यह **गोलकुंडा** का मुख्य पत्तन है, जहाँ परमपूज्य ईस्ट इंडिया कंपनी अपना एजेंट रखती है। पहले यह एक गरीब मछुआरा-नगर था
- गोलकुंडा के कुत्बशाही शासकों ने कपड़ों, मसालों और अन्य चीजों की बिक्री पर शाही एकाधिकार लागू किया जिससे कि वहाँ का व्यापार पूरी तरह ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों में न चला जाए।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- जब कंपनी के व्यापारी, बंबई (वर्तमान मुंबई) कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) और मद्रास (वर्तमान चेन्नई) चले गए, तब मसूलीपट्टनम अपने व्यापार और समृद्धि दोनों ही खो बैठा और अठारहवीं शताब्दी के दौरान उसका अध:पतन हो गया।

नए नगर और व्यापारी

अठारहवीं शताब्दी में **बंबई**, **कलकत्ता** और **मद्रास** नगरों का उदय हुआ, जो आज प्रमुख **महानगर** हैं। शिल्प और वाणिज्य में बड़े-बड़े परिवर्तन आए, जब **बुनकर** जैसे कारीगर तथा सौदागर यूरोपीय कंपनियों द्वारा इन नए नगरों में स्थापित **'ब्लैक टाउन्स'** में स्थानांतरित हो गए। 'ब्लैक' यानी देसी व्यापारियों और शिल्पकारों को इन 'ब्लैक टाउन्स' में सीमित कर दिया गया, जबकि गोरे शासकों ने मद्रास में **फ़ोर्ट सेंट जॉर्ज** और कलकत्ता में **फ़ोर्ट सेंट विलियम** की शानदार कोठियों में अपने आवास बनाए।

वास्को-डि-गामा और क्रिस्टोफ़र कोलंबस

- पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय नाविकों द्वारा समुद्री मार्ग खोजने के अभूतपूर्व कार्य किए गए। उनमें से अनेक नाविक भारतीय उपमहाद्वीप तक पहुँचने का मार्ग खोजने और मसाले प्राप्त करने की इच्छा से प्रेरित थे।
- पुर्तगाली नाविक **वास्को-डि-गामा** अटलांटिक महासागर के साथ-साथ यात्रा करते हुए **केप ऑफ गुड होप** से निकलकर और हिंद महासागर को पार करके भारत पहुँचा। उसे अपनी पहली यात्रा को पूरा करने में एक वर्ष से भी अधिक समय लगा। वह 1498 में **कालीकट** पहुँचा और अगले वर्ष पुर्तगाल की राजधानी **लिस्बन** लौट गया। इस समुद्री यात्रा के दौरान उसके चार में से दो जहाज नष्ट हो गए और 170 यात्रियों में से केवल 54 ही जीवित बचे। इन प्रत्यक्ष खतरों के बावजूद जो मार्ग खोले या खोजे गए, वे अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुए और उसके बाद तो अंग्रेज, हॉलैंडवासी और फ्रांसीसी नाविकों ने भी उसका अनुकरण करना प्रारंभ कर दिया।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- भारत पहुँचने के लिए समुद्री मार्गों की खोज का एक अन्य सुपरिणाम निकला, जिसकी किसी को आशा नहीं थी। एक इटलीवासी **क्रिस्टोफर कोलंबस** ने भारत पहुँचने का मार्ग खोजने के लिए **अटलांटिक महासागर** को पार करके पश्चिम की ओर यात्रा करने का निश्चय किया। उसका सोचना था कि चूंकि पृथ्वी गोल है, इसलिए वह पश्चिम की ओर से भी भारत पहुँच सकता है। वह 1492 में वेस्टइंडीज के तट पर पहुँचा (वेस्टइंडीज का नाम इसी भ्रांति के कारण पड़ा)। उसके पीछे स्पेन और पुर्तगाल के नाविक और विजेता भी वहाँ आते रहे और उन्होंने मध्य और दक्षिणी अमेरिका के बड़े-बड़े भागों को अपने कब्जे में कर लिया और अकसर उन प्रदेशों की पहले वाली बस्तियों को नष्ट कर दिया।

जनजातियां (TRIBES)

- समकालीन इतिहासकारों और मुसाफिरों ने जनजातियों के बारे में बहुत कम जानकारी दी है। कुछ अपवादों को छोड़ दें, तो जनजातीय लोग भी **लिखित दस्तावेज** नहीं रखते थे। लेकिन समृध्द रीति-रिवाजों और वाचिक/मौखिक
- परंपराओं का वे संरक्षण करते थे। ये परंपराएँ हर नयी पीढ़ी को विरासत में मिलती थीं। आज के इतिहासकार जनजातियों का इतिहास लिखने के लिए इन **वाचिक परंपराओं** को इस्तेमाल करने लगे हैं।
- जनजातीय लोग भारत के लगभग हर क्षेत्र में पाए जाते थे। किसी भी एक जनजाति का इलाका और प्रभाव समय के साथ-साथ बदलता रहता था। कुछ शक्तिशाली जनजातियों का बड़े इलाको पर नियंत्रण था।
- **पंजाब** में **खोखर जनजाति** तेरहवीं और चौदहवीं सदी के दौरान बहुत प्रभावशाली थी। यहाँ बाद में **गक्खर लोग** ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हो गए। उनके मुखिया, **कमाल खान गक्खर** को बादशाह अकबर ने मनसबदार बनाया था।
- उत्तर-पश्चिम में एक और विशाल एवं शक्तिशाली जनजाति थी- **बलोच।** ये लोग अलग-अलग मुखियों वाले कई छोटे-छोटे कुलों में बँटे हुए थे। पश्चिमी हिमालय में **गडड़ी गड़रियों** की जनजाति रहती थी। उपमहाद्वीप के सुदूर उत्तर-पूर्वी भाग पर भी **नागा**, **अहोम** और कई दूसरी जनजातियों का पूरी तरह प्रभुत्व था।

SACHIN ACADEMY 9956697782

- बिहार और झारखंड के कई इलाकों में बारहवीं सदी तक चेर **सरदारशाहियों** का उदय हो चुका था। बादशाह अकबर के प्रसिद्ध सेनापति **राजा मान सिंह** ने **1591** में **चेर** लोगों पर हमला किया और उन्हें परास्त किया। मुग़ल सेनाओं ने चेर लोगों के कई किलों पर कब्जा किया। इस क्षेत्र में रहने वाली महत्त्वपूर्ण जनजातियों में **मुंडा** और **संताल** थे, यद्यपि ये उड़ीसा और बंगाल में भी रहते थे।
- कर्नाटक और महाराष्ट्र की पहाड़ियाँ में **कोली**, **बेराद** तथा कई दूसरी जनजातियों के निवासस्थान थे। कोली लोग गुजरात के कई इलाकों में भी रहते थे।
- **भीलों** की बड़ी जनजाति पश्चिमी और मध्य भारत में फैली हुई थी।
- मौजूदा छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में **गोंड** लोग बड़ी तादाद में फैले हुए थे।

खानाबदोश (Nomads) और भ्रमणशील समूह (Traveling group)

खानाबदोश घुमंतू लोग होते हैं। खानाबदोश चरवाहे अपने जानवरों के साथ दूर-दूर तक घूमते थे। उनका जीवन दूध और अन्य पशुचारी उत्पादों पर निर्भर था। वे खेतिहर गृहस्थों से अनाज, कपड़े, बर्तन और ऐसी ही चीजों के लिए ऊन, घी इत्यादि का **विनिमय** भी करते थे। उनमें से कई पशुचारी होते हैं जो अपनी रेवड़ और पशुवृंद के साथ एक चरागाह से दूसरे **चरागाह** घूमते रहते हैं।

बंजारे

- **बंजारा** लोग सबसे महत्त्वपूर्ण व्यापारी-खानाबदोश थे। उनका कारवाँ **'टांडा'** कहलाता था। **सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी** बंजारों का ही इस्तेमाल नगर के बाज़ारों तक **अनाज की ढुलाई** के लिए करते थे।
- सत्रहवीं सदी के आरंभ में भारत आने वाले एक अंग्रेज व्यापारी, **पीटर मंडी**, ने बंजारों का वर्णन किया: सुबह हमारी मुलाकात बंजारों की एक **टांडा** से हुई जिसमें **14,000**

SACHIN ACADEMY 9955697...

बैल थे। सारे पशु गेहूँ और चावल जैसे अनाजों से लदे हुए थे... ये बंजारे लोग अपनी पूरी घर-गृहस्थी-बीवी और बच्चे अपने साथ लेकर चलते हैं। एक टांडा में कई परिवार होते हैं।

गोंड

- गोंड लोग, **गोंडवाना** नामक विशाल **वनप्रदेश** में रहते थे। वे **स्थानांतरीय कृषि** **(shifting cultivation)** अर्थात् जगह बदल-बदल कर खेती करते थे। विशाल गोंड जनजाति कई छोटे-छोटे कुलों में भी बँटी हुई थी। प्रत्येक कुल का अपना राजा या राय होता था। जिस समय दिल्ली के सुलतानों की ताकत घट रही थी, उसी समय कुछ बड़े गोंड राज्य छोटे गोंड सरदारों पर हावी होने लगे थे।
- अकबर के शासनकाल के एक इतिहास **अकबरनामा** में उल्लिखित है कि **गढ़ कटंगा के गोंड राज्य** में **70,000** गाँव थे। गढ़ कटंगा के गोंड राजा **अमन दास** ने **संग्राम शाह** की उपाधि धारण की। उसके पुत्र दलपत ने महोबा के चंदेल राजपूत राजा सालबाहन की पुत्री **राजकुमारी दुर्गावती** से विवाह किया।
- दलपत की मृत्यु कम उम्र में ही हो गई। रानी दुर्गावती बहुत योग्य थी और उसने अपने पाँच साल के पुत्र बीर नारायण के नाम पर शासन की कमान सँभाली। उसके समय में राज्य का और अधिक विस्तार हुआ। 1565 में आसिफ़ खान के नेतृत्व में मुग़ल सेनाओं ने गढ़ कटंगा पर हमला किया। रानी दुर्गावती ने इसका जम कर सामना किया। उसकी हार हुई और उसने समर्पण करने की बजाय मर जाना बेहतर समझा। उसका पुत्र भी तुरंत बाद लड़ता हुआ मारा गया।

अहोम

- अहोम लोग मौजूदा **म्यांमार** से आकर तेरहवीं सदी में **ब्रह्मपुत्र घाटी** में आकर बस गए थे । उन्होंने **भुइयाँ** (**भूस्वामी**) लोगों की पुरानी राजनीतिक व्यवस्था का दमन करके नए राज्य की स्थापना की। **1660** तक आते-आते वे उच्चस्तरीय **बारूद और तोपों** का निर्माण करने में सक्षम हो गए थे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- अहोम लोगों को दक्षिण-पश्चिम से कई आक्रमणों का सामना करना पड़ा। **1662** में **मीर जुमला** के नेतृत्व में मुग़लों ने अहोम राज्य पर हमला किया। इसमें अहोम लोगों की पराजय हुई।
- अहोम राज्य, **बेगार** पर निर्भर था। राज्य के लिए जिन लोगों से जबरन काम लिया जाता था, वे **'पाइक'** कहलाते थे।
- अहोम समाज, **कुलों** में विभाजित था, जिन्हें **'खेल'** कहा जाता था। एक खेल के नियंत्रण में प्रायः **कई गाँव** होते थे। किसान को अपने ग्राम समुदाय के द्वारा ज़मीन दी जाती थी। समुदाय की सहमति के बगैर राजा तक इसे वापस नहीं ले सकता था।

मंगोल

- इतिहास में सबसे प्रसिद्ध **पशुचारी** और **शिकारी-संग्राहक** जनजाति **मंगोलों** की थी। वे मध्य एशिया के **घास के मैदानों** (**स्टेपी**) और थोड़ा उत्तर की ओर के **वन प्रांतों** में बसे हुए थे। **1206** में **चंगेज़ ख़ान** ने मंगोल और **तुर्की जनजातियों** में एकता पैदा करके उन्हें एक शक्तिशाली सैन्य बल में बदल डाला।
- अपनी मृत्यु के समय (1227) वह एक सुविस्तृत प्रदेश का शासक था। उसके उत्तराधिकारियों ने एक विशाल साम्राज्य खड़ा किया। अलग-अलग समय में इसके अंतर्गत **रूस**, **पूर्वी यूरोप** और **चीन** तथा **मध्य-पूर्व** का खासा बड़ा हिस्सा शामिल था। मंगोलों के पास सुसंगठित सैन्य एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ थी। ये विभिन्न जातीय और धार्मिक समूहों के समर्थन पर आधारित थीं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

चेर और मलयालम भाषा का विकास

- **महोदयपुरम** का चेर राज्य प्रायद्वीप के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में, जो आज के **केरल** राज्य का एक हिस्सा है, नौवीं शताब्दी में स्थापित किया गया था। संभवतः **मलयालम भाषा** इस इलाके में बोली जाती थी। शासकों ने मलयालम भाषा एवं लिपि का प्रयोग अपने **अभिलेखों** में किया। वस्तुतः इस भाषा का प्रयोग उपमहाद्वीप के सरकारी अभिलेखों में किसी क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग के सबसे पहले उदाहरणों में से एक है।

- चौदहवीं शताब्दी का एक ग्रंथ **लीला तिलकम**, जो व्याकरण तथा काव्यशास्त्र विषयक है **'मणिप्रवालम'** शैली में लिखा गया था। मणिप्रवालम का शाब्दिक अर्थ है-**हीरा और मूंगा**, जो यहाँ दो भाषाओं-संस्कृत तथा क्षेत्रीय भाषा-के साथ-साथ प्रयोग की ओर संकेत करता है।

शासक और धर्मिक परंपराए (Rulers and Religious traditions)

- बारहवीं शताब्दी में **गंग वंश** के एक अत्यंत प्रतापी राजा **अनंतवर्मन** ने पुरी में **पुरुषोत्तम जगन्नाथ** (जगन्नाथ का शाब्दिक अर्थ है, दुनिया का मालिक जो विष्णु का पर्यायवाची है)। के लिए एक मंदिर बनवाने का निश्चय किया। जगन्नाथ मूलतः एक स्थानीय देवता थे, जिन्हें आगे चलकर **विष्णु** का रूप मान लिया गया।
- उसके बाद 1230 में राजा **अनंगभीम तृतीय** ने अपना राज्य पुरुषोत्तम जगन्नाथ को अर्पित कर दिया और स्वयं को जगन्नाथ का **'प्रतिनियुक्त'** घोषित किया।

राजपूत और शूरवीरता की परंपराए

- ब्रिटिश लोग उस क्षेत्र को जहाँ आज का अधिकाँश **राजस्थान** स्थित है, **राजपूताना** कहते थे। इससे ये समझा जाता है की इस क्षेत्र में अधिकाँश लोग राजपूत थे। राजस्थान में राजपूतों के अलावा अन्य लोग भी रहते हैं। तथापि, अकसर यह माना जाता है कि राजपूतों ने राजस्थान को एक विशिष्ट संस्कृति प्रदान की।
- लगभग आठवीं शताब्दी से आज के राजस्थान के अधिकांश भाग पर विभिन्न परिवारों के राजपूत राजाओं का शासन रहा। **पृथ्वीराज** एक ऐसा ही शासक था। ये शासक ऐसे शूरवीरों के आदर्शों को अपने हृदय में संजोए रखते थे, जिन्होंने रणक्षेत्र में बहादुरी से लड़ते हुए अकसर मृत्यु का वरण किया, मगर पीठ नहीं दिखाई।

'कत्थक'

'कत्थक' शब्द **'कथा'** शब्द से निकला है, जिसका प्रयोग संस्कृत तथा अन्य भाषाओं में कहानी के लिए किया जाता है। कत्थक मूल रूप से **उत्तर भारत के मंदिरों** में कथा यानी

SACHIN ACADEMY 9555697782

कहानी सुनाने वालों की एक **जाति** थी। ये **कथाकार** अपने हाव-भाव तथा संगीत से अपने **कथावाचन** को अलंकृत किया करते थे। **पंद्रहवीं** तथा **सोलहवीं शताब्दियों** में **भक्ति आंदोलन** के प्रसार के साथ कत्थक एक विशिष्ट **नृत्य शैली** का रूप धारण करने लगा। **राधा-कृष्ण** के **पौराणिक आख्यान** (कहानियाँ) लोक नाट्य के रूप में प्रस्तुत किए जाते थे, जिन्हें **'रासलीला'** कहा जाता था। रासलीला में लोक नृत्य के साथ कत्थक कथाकार के मूल हाव-भाव भी जुड़े होते थे। आगे चलकर यह दो परंपराओं अर्थात् **'घरानों'** में फूला-फला : **राजस्थान** (जयपुर) के राजदरबारों में और **लखनऊ** में। अवध के अंतिम नवाब **वाजिदअली शाह** के संरक्षण में यह एक प्रमुख कला-रूप में उभरा।

नृत्य-रूप, जिन्हें शास्त्रीय माना जाता है

भरतनाट्यम् → **तमिलनाडु**
कथाकली → **केरल**
ओडिसी → **उड़ीसा**
कुचिपुड़ी → **आंध्रप्रदेश**
मणिपुरी → **मणिपुर**

लघुचित्र (Miniatures)

- लघुचित्र छोटे आकार के चित्र होते हैं, जिन्हें आमतौर पर **जल रंगों** से **कपड़े** या **कागज़** पर चित्रित किया जाता है। प्राचीनतम लघुचित्र, **तालपत्रों** (palm leaves) अथवा **लकड़ी की तख्तियों** पर चित्रित किए गए थे। इनमें से सर्वाधिक सुंदर चित्र, जो पश्चिम भारत में पाए गए **जैन ग्रंथों** को सचित्र बनाने के लिए प्रयोग किए गए थे। मुग़ल बादशाह **अकबर**, **जहाँगीर** और **शाहजहाँ** ने अत्यंत कुशल चित्रकारों को **संरक्षण** प्रदान किया था।

SACHIN ACADEMY 9955697782

➢ सत्रहवीं शताब्दी के बाद वाले वर्षों में आधुनिक **हिमाचल प्रदेश** के इर्द-गिर्द हिमालय की **तलहटी** के इलाके में **लघुचित्रकला** की एक **साहसपूर्ण** एवं **भावप्रवण शैली** का विकास हो गया, जिसे **'बसोहली'** शैली कहा जाता है। यहाँ जो सबसे लोकप्रिय पुस्तक चित्रित की गई वह थी-**भानुदत्त की रसमंजरी**।

❖ **पीर** फ़ारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है आध्यात्मिक मार्गदर्शक

❖ **जीववाद** का अर्थ यह मानना होता है कि पेड़-पौधों, जड़ वस्तुओं और प्राकृतिक घटनाओं में भी जीवात्मा है।

मछली भोजन के रूप में

मछली पकड़ना **बंगाल** के लोगो का प्रमुख धंधा रहा है और बंगाली साहित्य में मछली का स्थान-स्थान पर उल्लेख मिलता है। **मंदिरों और बौद्ध विहारों** की दीवारों पर जो **मिट्टी की पट्टियाँ** लगी हैं, उनमें भी मछलियों को साफ़ करते हुए और टोकरियों में भर कर बाज़ार ले जाते हुए दर्शाया गया है।ब्राह्मणों को **सामिष भोजन** करने की अनुमति नहीं थी, लेकिन स्थानीय आहार में मछली की लोकप्रियता को देखते हुए ब्राह्मण धर्म के विशेषज्ञों ने **बंगाली ब्राह्मणों** के लिए इस निषेध में ढील दे दी। **बृहद्धर्म पुराण**, जो बंगाल में रचित तेरहवीं शताब्दी का संस्कृत ग्रंथ हैं, ने स्थानीय ब्राह्मणों को कुछ खास किस्मों की मछली खाने की अनुमति दे दी।

मुग़ल साम्राज्य का पतन

नादिरशाह ने **1739** में दिल्ली पर आक्रमण किया और संपूर्ण नगर को लूट कर वह बड़ी भारी मात्रा में धन-दौलत ले गया। वह **तख्ते ताउस यानी मयूर सिंहासन** को भी लूटकर अपने साथ ले गया। नादिरशाह के आक्रमण के बाद अफ़गान शासक **अहमदशाह अब्दाली** के आक्रमणों का तांता लगा रहा। उसने **1748** से **1761** के बीच पाँच बार उत्तरी भारत पर आक्रमण किया और लूटपाट मचाई।
अठारहवीं शताब्दी के दौरान **मुग़ल साम्राज्य** धीरे-धीरे कई स्वतंत्र क्षेत्रीय राज्यों में बिखर गया।

SACHIN ACADEMY 9955697782

नए राज्यों का उदय (Rise of new states)

मोटे तौर पर अठारहवीं शताब्दी के राज्यों को तीन परस्परव्यापी समूहों में बाँटा जा सकता है-

(1) **अवध**, **बंगाल** व **हैदराबाद** जैसे वे राज्य जो पहले **मुग़ल प्रांत** थे।

(2) ऐसे राज्य जो मुग़लों के पुराने शासनकाल में वतन जागीरों के रूप में काफ़ी स्वतंत्र थे। इनमें कई **राजपूत प्रदेश** भी शामिल थे।

(3) तीसरी श्रेणी में **मराठों**, **सिक्खों** तथा **जाटों** के राज्य आते हैं। ये विभिन्न आकार के थे और इन्होंने कड़े और लंबे सशस्त्र संघर्ष के बाद मुग़लों से स्वतंत्रता छीनकर ली थी।

पुराने मुग़ल प्रांतों से जिन 'उत्तराधिकारी राज्यों का उद्‌भव हुआ, उनमें से तीन राज्य प्रमुख थे : अवध, बंगाल और हैदराबाद। ये तीनों ही राज्य उच्च मुग़ल अभिजातों द्‌वारा स्थापित किए गए थे। इन तीनों राज्यों के संस्थापक **सआदत ख़ान (अवध)**, **मुर्शीद कुली ख़ान (बंगाल)** और **आसफजाह (हैदराबाद)** ऐसे व्यक्ति थे, जिनका मुग़ल दरबार में ऊँचा स्थान था।

हैदराबाद

- निजाम-उल-मुल्क **आसफ जाह** (1724-1748), जिसने हैदराबाद राज्य की स्थापना की थी; मुग़ल बादशाह **फर्रुखसियर** के दरबार का एक अत्यंत शक्तिशाली सदस्य था।
- हैदराबाद के **निजाम** के निजी सैनिकों का एक वर्णन जो सन 1790 में किया गया इस प्रकार था
- निजाम के पास 400 हाथियों की सवारी है। उसके आस-पास कई हजार घुड़सवार रहते हैं। इन अत्यंत कुशल और अति सुन्दर सजे हुए सवारों का सांकेतिक वेतन 100 रु. से ज्यादा है

अवध

- **बुरहान-उल-मुल्क सआदत ख़ान** को 1722 में अवध का **सूबेदार** नियुक्त किया गया था। मुग़ल साम्राज्य का विघटन होने पर जो राज्य बने, उनमें यह राज्य सर्वाधिक

SACHIN ACADEMY 9956697782

महत्त्वपूर्ण राज्यों में से एक था। अवध एक **समृद्धिशाली प्रदेश** था, जो **गंगा नदी** के उपजाऊ मैदान में फैला हुआ था और उत्तरी भारत तथा बंगाल के बीच व्यापार का मुख्य मार्ग उसी में से होकर गुजरता था।

बंगाल

- **मुर्शीद कुली ख़ान** बंगाल के **नायब** थे, यानी कि प्रांत के सूबेदार के प्रतिनियुक्त थे। मुर्शीद कुली ख़ान औपचारिक रूप से सूबेदार कभी नहीं बना। उसने बहुत जल्द सूबेदार के पद से जुड़ी हुई सत्ता अपने हाथ में ली ली।
- राज्य और साहूकारों के बीच हैदराबाद तथा अवध में जो घनिष्ठ संबंध था, वह **अलीवर्दी ख़ान** के शासन काल (1740-1756) में बंगाल में भी स्पष्ट दिखाई दिया। उसके शासन काल में **जगत सेठ** का साहूकार घराना अत्यंत समृद्धिशाली हो गया।

राजपूत

- **अम्बर** और **जोधपुर** के **राजपूत राजघरानों** ने **गुजरात** और **मालवा** के लाभदायक सूबों की सूबेदारी का दावा किया। जोधपुर के **राजा अजीत सिंह** को गुजरात की सूबेदारी और अम्बर के **सवाई राजा जयसिंह** को मालवा की सूबेदारी मिल गई। **बादशाह जहांदार शाह** ने **1713** में इन राजाओं के इन पदों का नवीकरण कर दिया।
- जोधपुर राजघराने ने **नागौर** को जीत लिया और अपने राज्य में मिला लिया। दूसरी ओर **अम्बर** ने भी **बूंदी** के बड़े-बड़े हिस्सों पर अपना कब्जा कर लिया। सवाई राजा जयसिंह ने **जयपुर** में अपनी नई **राजधानी** स्थापित की और उसे **1722** में **आगरा** की सूबेदारी दे दी गई। **1740** के दशक से **राजस्थान** में **मराठों** के अभियानों ने इन **रजवाड़ों** पर भारी दबाव डालना शुरू कर दिया, जिससे उनका अपना विस्तार आगे होने से रुक गया।
- अम्बर के शासक सवाई जयसिंह ने दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, मथुरा और वाराणसी में पांच **खगोलीय वेधशालाओं** का निर्माण किया। **जंतर मंतर** के नाम से विख्यात इन वेधशालाओं में **खगोलीय पिंडों** के अध्ययन हेतु कई उपकरण है।

SACHIN ACADEMY

1732 के एक फारसी वृत्तांत में राजा जयसिंह का वर्णन :

राजा जयसिंह अपनी सत्ता की चरम सीमा पर थे। बारह वर्ष के लिए वे आगरा के सूबेदार रहे और पाँच या छह वर्ष के लिए मालवा के। उनके पास विशाल सेना, तोपखाना तथा भारी मात्रा में धन-संपदा थी। उनका प्रभाव दिल्ली से लेकर नर्मदा के तट तक फैला हुआ था।

- **कई राजपूत शासकों** ने मुगलों का अधिराजत्व स्वीकार किया था लेकिन **मेवाड़** एकमात्र ऐसा राजपूत राज्य था जिसने मुग़ल सत्ता को चुनौती दी थी। **राणा प्रताप** (**1572**) में **उदयपुर** तथा **मेवाड़** के बड़े क्षेत्र पर नियंत्रण के साथ मेवाड़ की राजगद्दी पर आसीन हुए। राणा प्रताप के पास मुग़ल अधिराजत्व को स्वीकार करने के लिए कई दूतों को भेजा गया लेकिन वे अपने निर्णय पर दृढ़ रहे।

सिक्ख

- **गुरु गोबिंद सिंह** ने **1699** में **खालसा पंथ** की स्थापना से पूर्व और उसके पश्चात् राजपूत व मुग़ल शासकों के खिलाफ़ कई लड़ाइयाँ लड़ीं। **1708** में गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु के बाद बंदा बहादुर के नेतृत्व में **'खालसा'** ने मुग़ल सत्ता के खिलाफ़ विद्रोह किए। उन्होंने **बाबा गुरु नानक** और **गुरु गोबिंद सिंह** के नामों वाले **सिक्के गढ़कर** अपने शासन को सार्वभौम बताया। **सतलुज और यमुना** नदियों के बीच के क्षेत्र में उन्होंने अपने प्रशासन की स्थापना की। **1715** में **बंदा बहादुर** को बंदी बना लिया गया और 1716 में मार दिया गया।
- अठारहवीं शताब्दी में सिक्खों ने अपने-आपको पहले **'जत्थों'** में, और बाद में **'मिस्लों'** में संगठित किया। इन जत्थों और मिस्लों की संयुक्त सेनाएँ **'दल खालसा'** कहलाती थीं।
- दल खालसा की बैठकों में वे सामूहिक निर्णय लिए जाते थे, जिन्हें **गुरमत्ता** (**गुरु के प्रस्ताव**) कहा जाता था। सिक्खों ने **राखी व्यवस्था** स्थापित की
- **महाराजा रणजीत सिंह** ने विभिन्न सिक्ख समूहों में फिर से एकता कायम करके **1799** में **लाहौर** को अपनी **राजधानी** बनाया।

SACHIN ACADEMY 9956697782

मराठा

- मराठा राज्य एक अन्य शक्तिशाली क्षेत्रीय राज्य था। **17वीं** सदी के अंत तक **दक्कन** में **शिवाजी** के नेतृत्व में एक शक्तिशाली राज्य के उदय की शुरुआत हुई, जिससे अंततः एक मराठा राज्य की स्थापना हुई। शिवाजी का जन्म **1630** में **शाहजी** और **जीजाबाई** से हुआ। अपनी माता और अभिभावक **दादा कोंडदेव** के मार्ग निर्देशन में शिवाजी कम उम्र में ही विजयपथ पर निकल पड़े। **जावली** पर कब्जे ने उन्हें मवाला पठारों का अविवादित मुखिया बना दिया जिसने उनके क्षेत्र-विस्तार का पथ प्रशस्त किया। **बीजापुर** और मुगलों के खिलाफ उनके कारनामों ने उन्हें विख्यात व्यक्तित्व बना दिया। वे अपने विरोधियों के खिलाफ प्रायः **गुरिल्ला युद्धकला** का प्रयोग करते थे। **चौथ** और **सरदेशमुखी** पर आधारित राजस्व संग्रह प्रणाली की सहायता से उन्होंने एक मजबूत मराठा राज्य की नींव रखी।
- **शिवाजी (1627-1680)** ने शक्तिशाली योद्धा परिवारों (देशमुखों) की सहायता से एक स्थायी राज्य की स्थापना की। अत्यंत गतिशील **कृषक-पशुचारक** (**कुनबी**) मराठों की सेना के मुख्य आधार बन गए।
- शिवाजी ने प्रायद्वीप में मुगलों को चुनौती देने के लिए इस सैन्य-बल का प्रयोग किया। शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् , मराठा राज्य में प्रभावी शक्ति, चितपावन ब्राह्मणों के एक परिवार के हाथ में रही, जो शिवाजी के उत्तराधिकारियों के शासनकाल में **'पेशवा'** (**प्रधानमंत्री**) के रूप में अपनी सेवाएं देते रहे।
- **1720** के दशक में मालवा में मराठा अभियानों ने उस क्षेत्र में स्थित शहरों के विकास व समद्धि को कोई हानि नहीं पहुँचाई। **उज्जैन सिंधिया** के संरक्षण में और **इंदौर होल्कर** के आश्रय में फलता-फूलता रहा। ये शहर हर तरह से बड़े और समृद्धिशाली थे और वे महत्त्वपूर्ण **वाणिज्यिक** और **सांस्कृतिक केंद्रों** के रूप में कार्य कर रहे थे। मराठों द्वारा नियंत्रित इलाकों में व्यापार के नए मार्ग खुले। **चंदेरी** के क्षेत्र में उत्पादित **रेशमी वस्त्रों** को मराठों की राजधानी पुणे में नया बाजार मिला।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **बाज़ी राव प्रथम**, जो **बाजीराव बल्लाल** के नाम से भी जाने जाते हैं, **पेशवा बालाजी विश्वनाथ** के पुत्र थे। वह एक महान मराठा सेनापति थे। उन्हें **विंध्य** के पार मराठा राज्य के विस्तार का श्रेय प्राप्त है तथा वे **मालवा**, **बुंदेलखंड**, **गुजरात** और **पुर्तगालियों** के खिलाफ **सैन्य अभियानों** के लिए भी जाने जाते हैं।

- **चौथ कर** जमींदारों द्वारा वसूले जाने वाले भू-राजस्व का 25 प्रतिशत। दक्कन में इनको मराठा वसूलते थे।
- **सरदेशमुखी कर** दक्कन में मुख्य राजस्व संग्रहकर्ता को दिए जाने वाले भू-राजस्व का 9-10 प्रतिशत हिस्सा।

जाट

- जाटों ने सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में अपनी सत्ता सुदृढ़ की। अपने नेता **चूड़ामन** के नेतृत्व में उन्होंने दिल्ली के पश्चिम में स्थित क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण कर लिया। **1680** के दशक तक आते-आते उनका प्रभुत्व दिल्ली और आगरा के दो शाही शहरों के बीच के क्षेत्र पर होना शुरू हो गया।
- **जाट**, **समृद्ध कृषक** थे और उनके प्रभुत्व-क्षेत्र में **पानीपत** तथा **बल्लभगढ़** जैसे शहर महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बन गए। **सूरजमल** के राज में **भरतपुर** शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा।
- **भरतपुर का किला** काफ़ी हद तक पारंपरिक शैली में बनाया गया, वहीं दीग में जाटों ने अम्बर और आगरा की शैलियों का समन्वय करते हुए एक विशाल **बाग-महल** बनवाया। शाही वास्तुकला से जिन रूपों को पहली बार शाहजहाँ के युग में जोड़ा गया था, **दीग** की इमारतें उन्हीं रूपों के नमूने पर बनाई गई थीं।

- जाटों की शक्ति सूरज मल के समय पराकाष्ठा पर पहुँची, जिन्होंने 1756-1763 के दौरान भरतपुर जाट राज्य को (आधुनिक राजस्थान में) संगठित किया। सूरज मल के राजनैतिक नियंत्रण में, जो क्षेत्र शामिल थे उसमें आधुनिक पूर्वी **राजस्थान**, **दक्षिणी हरियाणा**, **पश्चिमी उत्तर प्रदेश** और **दिल्ली** शामिल थे। सूरज मल ने कई किले और

SACHIN ACADEMY 9955697782

महल बनवाए जिनमें भरतपुर का प्रसिद्द **लोहागढ़ का किला** इस क्षेत्र में बने सबसे मजबूत किलों में से एक था।

फ्रांसीसी क्रांति (1789-1794) (The French Revolution)

- अठारहवीं शताब्दी में भारत की विभिन्न राज्य व्यवस्थाओं में जनसाधारण को अपनी-अपनी सरकारों के कार्यों में हिस्सा लेने का अधिकार नहीं था। ऐसी स्थिति पश्चिमी दुनिया में अठारहवीं शताब्दी के आखिरी दशकों तक बनी हुई थी। **अमरीकी** (**1776-1781**) और **फ्रांसीसी क्रांतियों** ने इस स्थिति को और साथ-साथ **अभिजात वर्ग** के **सामजिक** व **राजनीतिक** प्राधिकारों को चुनौती दी।
- फ्रांसीसी क्रांति के दौरान **मध्य वर्गों**, **किसानों** और **शिल्पकारों** ने पादरी गण और अभिजातों के विशेषाधिकारों के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी। उनका मानना था कि समाज में किसी भी समूह के **जन्मसिद्ध् प्राधिकार** नहीं होने चाहिए, बल्कि लोगों की **सामाजिक स्थिति** योग्यता पर निर्भर करनी चाहिए। फ्रांसीसी क्रांति के दार्शनिकों ने यह सुझाया कि सभी के लिए **समान कानून** और **समान अवसर** होने चाहिए। उनका यह भी कहना था कि सरकार की सत्ता लोगों से बननी चाहिए और जनता को सरकार के कार्यों में भूमिका अदा करने का अधिकार होना चाहिए। फ्रांसीसी और अमरीकी क्रांतियों जैसे आंदोलनों ने धीरे-धीरे प्रजाओं को नागरिकों में बदल डाला।

भारतीय इतिहास (Indian history)

- 1817 में स्कॉटलैंड के अर्थशास्त्री और राजनीतिक दार्शनिक **जेम्स मिल** ने तीन विशाल खंडों में **ए हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया** (ब्रिटिश भारत का इतिहास) नामक एक किताब लिखी। इस किताब में उन्होंने भारत के इतिहास को **हिंदू**, **मुसलिम** और **ब्रिटिश**, इन तीन काल खंडों में बाँटा था।

- इतिहासकार भारतीय इतिहास को आमतौर पर '**प्राचीन**', '**मध्यकालीन**', तथा '**आधुनिक**' काल में बाँटकर देखते हैं। इस विभाजन की भी अपनी **समस्याएँ** हैं। इतिहास को इन खंडों में बाँटने की यह समझ भी **पश्चिम** से आई है।
- पश्चिम में आधुनिक काल को **विज्ञान**, **तर्क**, **लोकतंत्र**, **मुक्ति** और **समानता** जैसी आधुनिकता की ताकतों के विकास का युग माना जाता है। उनके लिए मध्यकालीन समाज वे समाज थे जहाँ आधुनिक समाज की ये विशेषताएँ नहीं थीं।

औपनिवेशीकरण (colonisation)

ब्रिटिश शासन के कारण भारत में यहाँ की मूल्य-मान्यताओं और पसंद-नापसंद, रीति-रिवाज व तौर-तरीकों में बदलाव आए। जब **एक देश** पर **दूसरे देश** के **दबदबे** से इस तरह के **राजनीतिक**, **आर्थिक**, **सामाजिक** और **सांस्कृतिक** बदलाव आते हैं तो इस प्रकिया को **औपनिवेशीकरण** कहा जाता है।

सर्वेक्षण

उन्नीसवीं सदी की शुरुआत तक पूरे देश का **नक्शा** तैयार करने के लिए बड़े-बड़े सर्वेक्षण किए जाने लगे थे। गांवों में राजस्व सर्वेक्षण किए गए। इन सर्वेक्षणों में **धरती की सतह**, **मिट्टी की गुणवत्ता**, वहाँ मिलने वाले **पेड़-पौधों** और **जीव-जंतुओं** तथा **स्थानीय इतिहासों** व **फसलों** का पता लगाया जाता था।

- **रॉबर्ट क्लाइव** ने **रेनेल** को हिंदुस्तान के **नक़्शे** तैयार करने का काम सौंपा था।

उन्नीसवीं सदी के आखिर से हर दस साल में **जनगणना** भी की जाने लगी। जनगणना के जरिये भारत के सभी प्रांतों में रहने वाले लोगों की संख्या, उनकी जाति, इलाके और व्यवसाय के बारे में जानकारियाँ इकट्ठा की जाती थीं। इसके अलावा **वानस्पतिक सर्वेक्षण**, **प्राणि वैज्ञानिक सर्वेक्षण**, **पुरातात्वीय सर्वेक्षण**, **मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण**, **वन सर्वेक्षण** आदि कई दूसरे सर्वेक्षण भी किए जाते थे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

पूर्व में ईस्ट इंडिया कंपनी का आना

- सन् **1600** में ईस्ट इंडिया कंपनी ने इंग्लैंड की **महारानी एलिजाबेथ प्रथम** से **चार्टर** अर्थात इजाजतनामा हासिल कर लिया जिससे कंपनी को पूरब से व्यापार करने का एकाधिकार मिल गया।इस इजाजतनामे का मतलब यह था कि इंग्लैंड की कोई और व्यापारिक कंपनी इस इलाके में ईस्ट इंडिया कंपनी से होड़ नहीं कर सकती थी। इस चार्टर के सहारे कंपनी समुद्र पार जाकर नए इलाकों को खंगाल सकती थी, वहाँ से सस्ती कीमत पर चीजें खरीद कर उन्हें यूरोप में ऊँची कीमत पर बेच सकती थी।
- पहली इंग्लिश फैक्टरी 1651 में **हुगली नदी** के किनारे शुरू हुई। कंपनी के व्यापारी यहीं से अपना काम चलाते थे। इन व्यापारियों को उस जमाने में "**फैक्टर**" कहा जाता था।
- **1696** तक कंपनी ने मुगल अफ़सरों को रिश्वत देकर तीन गाँवों की ज़मींदारी भी खरीद ली। इनमें से एक गाँव **कालीकाता** था जो बाद में **कलकत्ता** बना। अब इसे **कोलकाता** कहा जाता है। कंपनी ने मुगल सम्राट **औरंगजेब** को इस बात के लिए भी तैयार कर लिया कि वह कंपनी को **बिना शुल्क चुकाए** व्यापार करने का फरमान जारी कर दे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

व्यापार से युद्धों तक

अठारहवीं सदी की शुरुआत में कंपनी और बंगाल के नवाबों का टकराव काफी बढ़ गया था। **मुर्शिद कुली खान** के बाद **अली वर्दी खान** और उसके बाद **सिराजुद्दौला बंगाल** के नवाब बने। ये सभी शक्तिशाली शासक थे। उन्होंने कंपनी को रियायतें देने से मना कर दिया।

प्लासी का युद्ध

- 1756 में **अली वर्दी खान** की मृत्यु के बाद **सिराजुद्दौला** बंगाल के नवाब बने। कंपनी को सिराजुद्दौला की ताकत से काफी भय था। सिराजदद्दौला की जगह कंपनी एक ऐसा **कठपुतली नवाब** चाहती थी जो उसे व्यापारिक रियायतें और अन्य सुविधाएँ आसानी से देने में आनाकानी न करे। कंपनी ने प्रयास किया कि सिराजुद्दौला के

प्रतिद्वंद्वियों में से किसी को नवाब बना दिया जाए। कंपनी को कामयाबी नहीं मिली। जवाब में सिराजद्दौला ने हुक्म दिया कि कंपनी उनके राज्य के **राजनीतिक मामलों** में टाँग अड़ाना बंद कर दे, किलेबंदी रोके और बाकायदा राजस्व चुकाए। जब दोनों पक्ष पीछे हटने को तैयार नहीं हुए तो अपने **30,000 सिपाहियों** के साथ नवाब ने **कासिम बाजार** में स्थित **इंग्लिश फैक्टरी** पर हमला बोल दिया। नवाब की फौजों ने कंपनी के अफसरों को गिरफ्तार कर लिया, गोदाम पर ताला डाल दिया, अंग्रेजों के हथियार छीन लिए और अंग्रेज़ जहाजों को घेरे में ले लिया। इसके बाद नवाब ने कंपनी के **कलकत्ता** स्थित किले पर कब्जे के लिए उधर का रुख किया।

- कलकत्ता के हाथ से निकल जाने की खबर सुनने पर **मद्रास** में तैनात कंपनी के अफसरों ने भी **रॉबर्ट क्लाइव** के **नेतृत्व** में सेनाओं को रवाना कर दिया। इस सेना को **नौसैनिक बेड़े** की मदद भी मिल रही थी। इसके बाद नवाब के साथ लंबे समय तक सौदेबाजी चली। आखिरकार **1757** में रॉबर्ट क्लाइव ने प्लासी के मैदान में सिराजुद्दौला के ख़िलाफ़ कंपनी की सेना का नेतृत्व किया। नवाब सिराजुद्दौला की हार का एक बड़ा कारण उसके सेनापतियों में से एक सेनापति **मीर जाफ़र** की कारगुजारियाँ भी थीं। मीर जाफ़र की टुकड़ियों ने इस युद्ध में हिस्सा नहीं लिया। रॉबर्ट क्लाइव ने यह कहकर उसे अपने साथ मिला लिया था कि सिराजुद्दौला को हटा कर मीर जाफ़र को नवाब बना दिया जाएगा।
- प्लासी की जंग इसलिए महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि भारत में यह कंपनी की पहली बड़ी जीत थी। प्लासी की जंग के बाद सिराजुद्दौला को मार दिया गया और मीर जाफर नवाब बना।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **प्लासी** का नाम **पलाशी** था जिसे अंग्रेजों ने बिगाड़ कर **प्लासी** कर दिया था। इस जगह को पलाशी यहाँ पाए जाने वाले **पलाश के फूलों** के कारण कहा जाता था। पलाश के खूबसूरत लाल फूलों से गुलाल बनाया जाता है जिसका होली पर इस्तेमाल होता है।
- **पुर्तगालियों ने भारत** के पश्चिमी तट पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी थी। वे **गोवा** में अपना ठिकाना बना चुके थे। पुर्तगाल के खोजी यात्री **वास्को द गामा** ने

ही **1498** में पहली बार भारत तक पहुँचने के इस **समुद्री मार्ग** का पता लगाया था।

प्लासी के युद्ध के बाद

- 1765 में जब मीर जाफ़र की मृत्यु हुई तब तक कंपनी के इरादे बदल चुके थे। कठपुतली नवाबों के साथ अपने खराब अनुभवों को देखते हुए **रॉबर्ट क्लाइव** ने ऐलान किया कि अब "**हमें खुद ही नवाब बनना पड़ेगा**।"
- आखिरकार 1765 में मुगल सम्राट ने कंपनी को ही बंगाल प्रांत का **दीवान** नियुक्त कर दिया। दीवानी मिलने के कारण कंपनी को बंगाल के विशाल राजस्व संसाधनों पर नियंत्रण मिल गया था।
- **रॉबर्ट क्लाइव** को **1772** में **ब्रिटिश संसद** मे **भ्रष्टाचार** के आरोपों पर अपनी सफ़ाई देनी पड़ी। सरकार को उसकी अकूत संपत्ति के स्रोत संदेहास्पद लग रहे थे। उसे भ्रष्टाचार आरोपों से बरी तो कर दिया गया लेकिन **1774** में उसने **आत्महत्या** कर ली।

- कंपनी के बहुत सारे अफसरों की सबसे बड़ी इच्छा बस यही थी कि वे भारत में ठीक-ठाक पैसा कमाएँ और ब्रिटेन लौटकर आराम की जिंदगी बसर करें। जो जीते जी धन-दौलत लेकर वापस लौट गए उन्होंने वहाँ आलीशान जीवन जिया। उन्हें वहाँ के लोग "**नबॉब**" कहते थे। यह भारतीय शब्द **'नवाब'** का ही अंग्रेजी संस्करण बन गया था। उन्हें लोग अकसर नए अमीरों और सामाजिक हैसियत में रातों-रात ऊपर आने वाले लोगों के रूप में देखते थे। नाटकों और कार्टून में उनका **मजाक** उड़ाया जाता था।

कंपनी का फैलता शासन

- **बक्सर की लड़ाई** (1764) के बाद कंपनी ने भारतीय रियासतों में **रेजिडेंट** तैनात कर दिये। ये कंपनी के राजनीतिक या व्यावसायिक प्रतिनिधि होते थे। उनका काम कंपनी के हितों की रक्षा करना और उन्हें आगे बढ़ाना था।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- रजिडेंट के माध्यम से कंपनी के अधिकारी भारतीय राज्यों के भीतरी मामलों में भी दखल देने लगे थे। कई बार कंपनी ने रियासतों पर "**सहायक संधि**" भी थोप दी। जो रियासत इस बंदोबस्त को मान लेती थी उसे अपनी **स्वतंत्र सेनाएँ** रखने का अधिकार नहीं रहता था। उसे कंपनी की तरफ से **सुरक्षा मिलती** थी और "**सहायक सेना**" के रखरखाव के लिए वह कंपनी को **पैसा देती** थी। अगर भारतीय शासक रकम अदा करने में चूक जाते थे तो जुर्माने के तौर पर उनका इलाका कंपनी अपने **कब्जे** में ले लेती थी।

टीपू सुल्तान

- **हैदर अली** (शासन काल 1761 से 1782) और उनके विख्यात पत्र **टीप सुल्तान** (शासन काल 1782 से 1799) जैसे शक्तिशाली शासकों के नेतृत्व में मैसूर काफी ताकतवर हो चुका था। **मालाबार तट** पर होने वाला व्यापार मैसूर रियासत के नियंत्रण में था जहाँ से कंपनी **काली मिर्च** और **इलायची** ख़रीदती थी। **1785** में टीपू सुल्तान ने अपनी रियासत में पड़ने वाले बंदरगाहों से चंदन की लकड़ी, काली मिर्च और इलायची का निर्यात रोक दिया। सुल्तान ने स्थानीय सौदागरों को भी कंपनी के साथ कारोबार करने से रोक दिया था। टीपू सुल्तान ने भारत में रहने वाले **फ्रांसीसी व्यापारियों** से घनिष्ठ संबंध विकसित किए और उनकी मदद से अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया।

- कंपनी की फौजों को हैदर अली और टीपू सुल्तान ने कई बार युद्ध में हराया था। लेकिन 1792 में **मराठों**, **हैदराबाद के निज़ाम** और कंपनी की संयुक्त फौजों के हमले के बाद टीपू सुल्तान को अंग्रेजों से संधि करनी पड़ी। इस **संधि** के तहत उनके दो बेटों को अंग्रेजों ने बंधक के रूप में अपने पास रख लिया।

➢ मैसूर के साथ अंग्रेज़ों की चार बार जंग हुई (1767-69, 1780-84, 1790-92 और 1799)। **श्रीरंगपट्म** की आखिरी जंग में कंपनी को सफलता मिली। अपनी राजधानी की रक्षा करते हुए टीपू सुल्तान मारे गए और मैसूर का राजकाज पुराने **वोडियार राजवंश** के हाथों में सौंप दिया गया। इसके साथ ही मैसूर पर भी **सहायक संधि** थोप दी गई।

मराठो से लड़ाई

➢ **1761** में **पानीपत** की तीसरी लड़ाई में हार के बाद दिल्ली से देश का शासन चलाने का मराठों का सपना चूर-चूर हो गया। उन्हें कई राज्यों में बाँट दिया गया। इन राज्यों की बागडोर **सिंधिया**, **होलकर**, **गायकवाड** और **भोंसले** जैसे अलग-अलग **राजवंशों** के हाथों में थी। ये सारे सरदार एक **पेशवा** (सर्वोच्च मंत्री) के अंतर्गत एक **कन्फेडरेसी** (**राज्यमण्डल**) के सदस्य थे। पेशवा इस राज्यमण्डल का सैनिक और प्रशासकीय प्रमुख होता था और पुणे में रहता था। **महादज़ी सिंधिया** और **नाना फड़नीस** अठारहवीं सदी के आखिर के दो प्रसिद्ध मराठा योद्धा और राजनीतिज्ञ थे।

सर्वोच्चता (paramountcy)

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813 से 1823 तक गवर्नर-जनरल) के नेतृत्व में "**सर्वोच्चता**" की एक नयी नीति -शरू की गई। कंपनी का दावा था कि उसकी सत्ता सर्वोच्च है इसलिए वह भारतीय राज्यों से ऊपर है। अपने हितों की रक्षा के लिए वह भारतीय रियासतों का अधिग्रहण करने या उनको अधिग्रहण की धमकी देने का अधिकार अपने पास मानती थी।

विलय नीति (The Doctrine of Lapse)

➢ **लॉर्ड डलहौज़ी** के शासन काल में चली। लॉर्ड डलहौज़ी ने एक नयी नीति अपनाई जिसे **विलय नीति** का नाम दिया गया। यह सिद्धांत इस तर्क पर आधारित था कि अगर किसी शासक की मृत्यु हो जाती है और उसका कोई पुरुष वारिस नहीं है तो उसकी **रियासत हड़प** कर ली जाएगी यानी कंपनी के भूभाग का हिस्सा बन जाएगी। इस सिद्धांत के आधार पर एक के बाद एक कई रियासतें - **सतारा** (1848), **संबलपुर**

SACHIN ACADEMY 9956697782

(1850), **उदयपुर** (1852), **नागपुर** (1853) और **झाँसी** (1854) - अंग्रेजों के हाथ में चली गईं।

- आखिरकार 1856 में कंपनी ने **अवध** को भी अपने नियंत्रण में ले लिया। इस बार अंग्रेजों ने एक नया तर्क दिया। उन्होंने कहा कि वे अवध की जनता को नवाब के "**कुशासन**" से आज़ाद कराने के लिए "**कर्तव्य से बँधे**" हुए हैं इसलिए वे अवध पर कब्जा करने को मजबूर हैं! अपने प्रिय नवाब को जिस तरह से गद्दी से हटाया गया, उसे देखकर लोगों में गुस्सा भड़क उठा और अवध के लोग भी 1857 के महान विद्रोह में शामिल हो गए।

नए शासन की स्थापना

- ब्रिटिश इलाके मोटे तौर पर **प्रशासकीय इकाइयों** में बँटे हुए थे जिन्हें **प्रेज़िडेंसी** कहा जाता था। उस समय तीन प्रेज़िडेंसी थीं - **बंगाल**, **मद्रास** और **बम्बई।** हरेक का शासन **गवर्नर** के पास होता था। सबसे ऊपर **गवर्नर-जनरल** होता था। **वॉरेन हेस्टिंग्स** ने कई प्रशासकीय सुधार किए। न्याय के क्षेत्र में उसके सुधार ख़ासतौर से उल्लेखनीय थे।
- 1772 से एक नयी न्याय व्यवस्था स्थापित की गई। इस व्यवस्था में प्रावधान किया गया कि हर जिले में दो अदालतें होंगी - **फ़ौजदारी अदालत** और **दीवानी अदालत।** दीवानी अदालतों के मुखिया यूरोपीय **जिला कलेक्टर** होते थे। **मौलवी और हिंदू पंडित** उनके लिए भारतीय कानूनों की व्याख्या करते थे। फ़ौजदारी अदालतें अभी भी काज़ी और मुफ्ती के ही अंतर्गत थीं लेकिन वे भी कलेक्टर की निगरानी में काम करते थे।
- जब **वॉरेन हेस्टिंग्स** 1785 में इंग्लैंड लौटा तो **ऐडमंड बर्क** ने उस पर बंगाल का शासन सही ढंग से न चलाने का आरोप जड़ दिया। इस आरोप के चलते हेस्टिंग्स पर ब्रिटिश संसद में **महाभियोग** का मुकदमा चलाया गया जो सा**त साल** चला।

- **काज़ी** - एक न्यायाधीश को कहते थे।
- **मुफ्ती** - मुसलिम समुदाय का एक न्यायविद जो कानूनों की व्याख्या करता है। काजी इसी व्याख्या के आधार पर फ़ैसले सुनाता है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- ❖ **महाभियोग (Impeachment)** - जब इंग्लैंड के हाउस ऑफ कॉमंस में किसी व्यक्ति के ख़िलाफ़ दुराचरण का आरोप लगाया जाता है तो हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स (संसद का ऊपरी सदन) में उस व्यक्ति के ख़िलाफ़ मुकदमा चलता है। इसे **महाभियोग** कहा जाता है।
- ❖ **अंग्रेज़** अपनी सेना को **सिपॉय** (जो भारतीय शब्द 'सिपाही' से ही बना है) आर्मी कहते थे।
- ❖ **धर्मशास्त्र** - संस्कृत की ऐसी कृतियाँ जिनमें सामाजिक तौर-तरीकों और आचरण के । सिद्धांतों की व्याख्या की जाती है। ये धर्मशास्त्र ईसा पूर्व 500 वर्ष से भी पहले लिखे गए थे।
- ❖ **मस्केट** पैदल सिपाहियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली एक भारी बंदूक को कहते थे।
- ❖ **मैचलॉक** - शुरुआती दौर की बंदूक जिसमें बारूद को माचिस से चिंगारी दी जाती थी।

रेग्युलेटिंग ऐक्ट (Regulating Act)

- ➢ 1773 के रेग्युलेटिंग ऐक्ट के तहत एक नए **सर्वोच्च न्यायालय** की स्थापना की गई। इसके अलावा कलकत्ता में **अपीलीय अदालत** - **सदर निजामत अदालत**- की भी स्थापना की गई।
- ➢ भारतीय जिले में **कलेक्टर** सबसे बड़ा ओहदा होता था। उसका मुख्य काम **लगान** और **कर** इकट्ठा करना तथा न्यायाधीशों, पुलिस अधिकारियों व दारोगा की सहायता से जिले में कानून-व्यवस्था बनाए रखना होता था।

ईस्ट इंडिया कंपनी का औपनिवेशिक शक्ति बनना

- ➢ ईस्ट इंडिया कंपनी एक व्यापारिक कंपनी से बढ़ते-बढ़ते एक भौगोलिक **औपनिवेशिक** शक्ति बन गई। उन्नीसवीं सदी की शरुआत में नयी **भाप तकनीक** के आने से यह

SACHIN ACADEMY 9956977782

प्रक्रिया और तेज हुई। तब तक **समुद्र मार्ग** से भारत पहुँचने में 6-8 माह का समय लग जाता था। भाप से चलने वाले **जहाजों** ने यह यात्रा तीन हफ्तों में समेट दी।

- **1857** तक भारतीय उपमहाद्वीप के **63 प्रतिशत** भूभाग और **78 प्रतिशत** आबादी पर कंपनी का सीधा शासन स्थापित हो चुका था ।

दक्षिण अफ्रीका में दास व्यापार

डच व्यापारी सत्रहवीं सदी में दक्षिण अफ्रीका पहुँचे। जल्द ही दास व्यापार शुरू हो गया। लोगों को बंधक बनाकर जंजीरों में बाँधकर दास बाजारों में बेचा जाने लगा। **1834** में **दास प्रथा** के अन्त के समय अफ्रीका के दक्षिणी सिरे पर स्थित केप में निजी स्वामित्व में दासों की संख्या 36,774 थी।

कंपनी का दीवान बनना

- 12 अगस्त 1765 को मुग़ल बादशाह ने ईस्ट इंडिया कंपनी को **बंगाल का दीवान** तैनात किया।
- दीवान के तौर पर कंपनी अपने नियंत्रण वाले भूभाग के आर्थिक मामलों की **मुख्य शासक** बन गई थी।

कंपनी की आमदनी

- 1865 से पहले कंपनी **ब्रिटेन** से **सोने** और **चाँदी** का **आयात** करती थी और इन चीजों के बदले सामान खरीदती थी। अब बंगाल में इकट्ठा होने वाले पैसे से ही निर्यात के लिए चीजें खरीदी जा सकती थीं।
- जल्दी ही यह ज़ाहिर हो गया कि **बंगाल की अर्थव्यवस्था** एक गहरे संकट में फँसती जा रही है। कारीगर गाँव छोड़कर भाग रहे थे क्योंकि उन्हें बहुत कम कीमत पर अपनी चीजें कंपनी को जबरन बेचनी पड़ती थीं। किसान अपना **लगान** नहीं चुका पा रहे थे। कारीगरों का उत्पादन गिर रहा था और खेती चौपट होने की दिशा में बढ़ रही

SACHIN ACADEMY 9955697782

थी। **1770** में पड़े **अकाल** के कारण बंगाल में **एक करोड़ लोगों की मौत** हो गई थी। इस अकाल में लगभग **एक तिहाई आबादी** समाप्त हो गई।

स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement)

- **कंपनी** ने **1793** में **स्थायी बंदोबस्त** लागू किया। इस बंदोबस्त की शर्तों के हिसाब से राजाओं और तालुकदारों को ज़मींदारों के रूप में मान्यता दी गई। उन्हें किसानों से **लगान** वसूलने और कंपनी को **राजस्व** चुकाने का जिम्मा सौंपा गया। उनकी ओर से चुकाई जाने वाली राशि **स्थायी रूप** से तय कर दी गई थी। इसका मतलब यह था कि भविष्य में कभी भी उसमें इजाफा नहीं किया जाना था।
- कंपनी ने जो राजस्व तय किया था वह इतना ज्यादा था कि उसको चुकाने में ज़मींदारों को भारी परेशानी हो रही थी। जो ज़मींदार राजस्व चुकाने में विफल हो जाता था उसकी **ज़मींदारी छीन ली जाती** थी। बहुत सारी ज़मींदारियों को कंपनी बाकायदा **नीलाम** कर चुकी थी।

एक नई व्यवस्था

- **होल्ट मैकेंजी** अंग्रेज़ ने एक नयी व्यवस्था तैयार की जिसे **1822** में लागु किया गया। उसके आदेश पर कलेक्टरों ने गाँव-गाँव का दौरा किया, ज़मीन की जाँच की, खेतों को मापा और विभिन्न समूहों के रीति-रिवाजों को दर्ज किया।
- गाँव के एक-एक खेत के अनुमानित राजस्व को जोड़कर हर गाँव या **ग्राम समूह** (**महाल**) से वसूल होने वाले राजस्व का हिसाब लगाया जाता था। इस राजस्व को स्थायी रूप से तय नहीं किया गया बल्कि उसमें समय-समय पर संशोधनों की गुंजाइश रखी गई। राजस्व इकट्ठा करने और उसे कंपनी को अदा करने का जिम्मा ज़मीदार की बजाय गांव के मुखिया को सौंप दिया गया। इस व्यवस्था को **महालवारी बंदोबस्त** का नाम दिया गया।

मुनरो व्यवस्था

SACHIN ACADEMY 9956697782

- ब्रिटिश नियंत्रण वाले दक्षिण भारतीय इलाकों में भी स्थायी बंदोबस्त की जगह नयी व्यवस्था अपनाने का प्रयास किया जाने लगा। वहाँ जो नयी व्यवस्था विकसित हुई उसे **रैयतवार** (या **रैयतवारी**) का नाम दिया गया।
- **टॉमस मुनरो** ने इस व्यवस्था को विकसित किया और धीरे-धीरे परे दक्षिणी भारत पर यही व्यवस्था लागू कर दी गई। और मुनरो को लगता था कि दक्षिण में परंपरागत ज़मींदार नहीं थे। इसलिए उनका तर्क यह था कि उन्हें सीधे **किसानों** (**रैयतों**) से ही बंदोबस्त करना चाहिए जो पीढियों से ज़मीन पर खेती करते आ रहे हैं। राजस्व आकलन से पहले उनके खेतों का सावधानीपूर्वक और अलग से सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। मुनरो का मानना था कि अंग्रेजों को पिता की भाँति किसानों की रक्षा करनी चाहिए।

यूरोप के लिए फसल

अठाहरवीं सदी के आखिर तक कंपनी ने **अफ़ीम** और **नील** की खेती पर पूरा ज़ोर लगा दिया था। इसके बाद लगभग 150 साल तक अंग्रेज़ देश के विभिन्न भागों में किसी न किसी फसल के लिए किसानों को मजबूर करते रहे : बंगाल में पटसन, असम में चाय, **संयुक्त प्रांत** (**वर्तमान उत्तर प्रदेश**) में गन्ना, पंजाब में गेहूँ, महाराष्ट्र व पंजाब में कपास, मद्रास में चावल।

SACHIN ACADEMY 9955697782

भारतीय नील (Indian indigo)

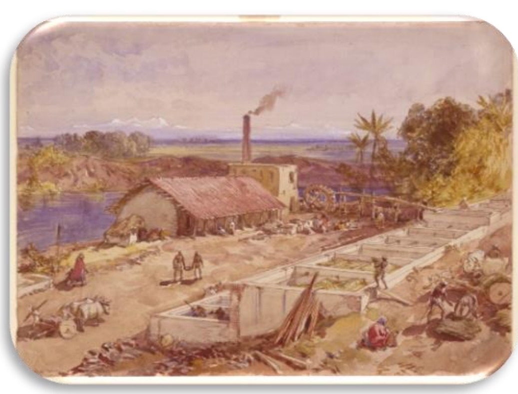

- नील का पौधा मुख्य रूप से **उष्णकटिबंधीय (tropics)** इलाकों में ही उगता है। **तेरहवीं सदी** तक **इटली**, **फ्रांस** और **ब्रिटेन** के कपडा उत्पादक कपड़े की रँगाई के लिए भारतीय नील का इस्तेमाल कर रहे थे।
- **अठारहवीं शताब्दी** के आखिर तक भारतीय नील की माँग और बढ़ गई। ब्रिटेन में **औद्योगीकरण** का युग

शुरू हो चुका था और उसके **कपास** उत्पादन में भारी इज़ाफ़ा हुआ।

- अठाहरवीं सदी के आखिरी दशकों से ही **बंगाल** में नील की खेती तेजी से फैलने लगी थी। बंगाल में पैदा होने वाला **नील** दुनिया के बाज़ारों पर छा गया था। **1788** में ब्रिटेन द्वारा आयात किए गए नील में भारतीय नील का हिस्सा केवल लगभग 30 प्रतिशत था। **1810** में **ब्रिटेन** द्वारा आयात किए गए नील में भारतीय नील का हिस्सा 95 प्रतिशत हो चुका था।
- कंपनी के बहुत सारे अधिकारियों ने नील के अपने कारोबार पर ध्यान देने के लिए अपनी नौकरियाँ छोड़ दीं। भारी मुनाफ़े की उम्मीद में स्कॉटलैंड और इंग्लैंड के बहुत सारे लोग भारत आए और उन्होंने नील के **बाग़ान** लगा लिए। जिनके पास नील की पैदावार के लिए पैसा नहीं था उन्हें कंपनी और नए-नए बैंक कर्जा देने को तैयार रहते थे।

नील की खेती के तरीके

- नील की खेती के दो मुख्य तरीके थे - **निज** और **रैयती।** निज खेती की व्यवस्था में बाग़ान मालिक खुद अपनी जमीन में नील का उत्पादन करते थे। या तो वह जमीन खरीद लेते थे या दूसरे ज़मींदारों से जमीन भाड़े पर ले लेते थे और मज़दूरों को काम पर लगाकर नील की खेती करवाते थे।

- **रैयती व्यवस्था** के तहत बागान मालिक **रैयतों** के साथ एक **अनुबंध** (सट्टा) करते थे। कई बार वे गाँव के मुखियाओं को भी रैयतों की तरफ से समझौता करने के लिए बाध्य कर देते थे। जो अनुबंध पर दस्तखत कर देते थे उन्हें नील उगाने के लिए कम ब्याज दर पर बाग़ान मालिकों से नक़द कर्जा मिल जाता था। कर्जा लेने वाले रैयत को अपनी कम से कम **25 प्रतिशत ज़मीन** पर नील की खेती करनी होती थी। **बागान मालिक** बीज और उपकरण मुहैया कराते थे जबकि मिट्टी को तैयार करने बीज बोने और फ़सल की देखभाल करने का जिम्मा **काश्तकारों** के ऊपर रहता था। जब कटाई के बाद फ़सल बाग़ान मालिक को सौंप दी जाती थी तो रैयत को नया कर्जा मिल जाता था।

SACHIN ACADEMY 9955697782

फ्रांसीसी बागान

अठाहरवीं सदी में फ्रांसीसी बागान मालिकों ने **कैरीबियाई द्वीप समूह** में स्थित फ्रांसीसी उपनिवेश **सेंट डॉमिंग्यू** में नील और चीनी का उत्पादन शुरू किया। इन बागानों में काम करने वाले **अफ्रीकी गुलाम 1791** में बगावत पर उतर आए। उन्होंने बागान जला दिए और अपने धनी मालिकों को मार डाला। 1792 में फ्रांस ने अपने उपनिवेशों में दास प्रथा समाप्त कर दी। इन घटनाओं की वजह से कैरीबियाई द्वीपों में नील की खेती ठप्प हो गई।

- **बागान** - एक विशाल खेत जिस पर बागान मालिक बहुत सारे लोगों से जबरन काम करवाता था। कॉफ़ी, गन्ना, तंबाकू, चाय और कपास आदि के विषय में बागानों का जिक्र किया जाता है।

SACHIN ACADEMY 9555697782

जनजातीय समूह (Tribal Groups)

खोंड समुदाय

उड़ीसा के जंगलों में रहने वाला **खोंड समुदाय** के लोग टोलियाँ बना कर शिकार पर निकलते थे और जो हाथ लगता था उसे आपस में बाँट लेते थे। वे जंगलों से मिले **फल** और **जड़ें** खाते थे। खाना पकाने के लिए वे **साल** और **महुआ** के **बीजों** का तेल इस्तेमाल करते थे। इलाज के लिए वे बहुत सारी जंगली जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल करते थे और जंगलों से इकट्ठा हुई चीजों को स्थानीय बाजारों में बेच देते थे। जब भी स्थानीय बुनकरों और चमड़ा कारीगरों को कपड़े व चमड़े की रँगाई के लिए **कसम** और **पलाश के फूलों** की ज़रूरत होती थी तो वे खोंड समुदाय के लोगों से ही कहते थे।

बैगा समुदाय

मध्य भारत के बैगा - औरों के लिए काम करने से कतराते थे। बैगा खुद को **जंगल की संतान** मानते थे जो केवल जंगल की उपज पर ही जिंदा रह सकती है। मज़दूरी करना

बैगाओं के लिए अपमान की बात थी।

ब्रिटिश शासन के दौरान आदिवासी समूहों का जीवन

- अंग्रेज़ अपने शासन के लिए आमदनी का नियमित स्रोत भी चाहते थे। फलस्वरूप उन्होंने ज़मीन के बारे में कुछ नियम लागू कर दिए। उन्होंने ज़मीन को मापकर प्रत्येक व्यक्ति का हिस्सा तय कर दिया। उन्होंने यह भी तय कर दिया कि किसे कितना **लगान** देना होगा। कुछ किसानों को **भूस्वामी** और दूसरों को **पट्टेदार** घोषित किया गया।
- **पट्टेदार** अपने **भूस्वामियों** का भाड़ा चुकाते थे और भूस्वामी सरकार को **लगान** देते थे।
- **उन्नीसवीं** और **बीसवीं शताब्दियों** के दौरान देश के विभिन्न भागों में **जनजातीय समूहों** ने बदलते कानूनों, अपने व्यवहार पर लगी पाबंदियों, नए करों और व्यापारियों व महाजनों द्वारा किए जा रहे शोषण के खिलाफ़ कई बार बग़ावत की। 1831-32 में **कोल आदिवासियों** ने और 1855 में **संथालों** ने बगावत कर दी थी। मध्य भारत में **बस्तर विद्रोह** 1910 में हुआ और 1940 में महाराष्ट्र में **वर्ली विद्रोह** हुआ। **बिरसा** जिस आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे वह भी इसी तरह का विद्रोह था।

वन कानून (Forest laws)

औपनिवेशिक अधिकारियों ने तय किया कि **झूम काश्तकारों** को जंगल में जमीन के छोटे टुकड़े दिए जाएँगे और उन्हें वहाँ खेती करने की भी छूट होगी बशर्ते गाँवों में रहने वालों को वन विभाग के लिए मज़दूरी करनी होगी और जंगलों की देखभाल करनी होगी। इस तरह, बहुत सारे इलाकों में वन विभाग ने सस्ते श्रम की आपूर्ति सनिश्चित करने के लिए वन गाँव बसा दिए।

व्यापार की समस्या

अठारहवीं सदी में **भारतीय रेशम** की यूरोपीय बाजारों में भारी माँग थी। भारतीय रेशम की

SACHIN ACADEMY 9955697782

अच्छी गुणवत्ता सबको आकर्षित करती थी और भारत का निर्यात तेजी से बढ़ रहा था। जैसे-जैसे बाज़ार फैला ईस्ट इंडिया कंपनी के अफसर इस माँग को पूरा करने के लिए रेशम उत्पादन पर ज़ोर देने लगे। वर्तमान झारखण्ड में स्थित हज़ारीबाग के आस-पास रहने वाले संथाल रेशम के कीड़े पालते थे।

नवाबो के हाथ से जाती सत्ता

- अठारहवीं सदी के मध्य से ही राजाओं और नवाबों की ताकत छिनने लगी थी।
- **1849** में **गवर्नर जनरल डलहौज़ी** ने ऐलान किया कि **बहादुर शाह ज़फ़र** की मृत्यु के बाद बादशाह के परिवार को लाल किले से निकाल कर उसे दिल्ली में कहीं और बसाया जाएगा।
- **1856** में **गवर्नर-जनरल कैनिंग** ने फ़ैसला किया कि बहादुर शाह ज़फ़र **आखिरी मुग़ल बादशाह** होंगे। उनकी मृत्यु के बाद उनके किसी भी वंशज को बादशाह नहीं माना जाएगा। उन्हें केवल राजकुमारों के रूप में मान्यता दी जाएगी।

सिपाहियों का समुद्र पार न करना

- उस ज़माने में बहुत सारे लोग समुद्र पार नहीं जाना चाहते थे। उन्हें लगता था कि **समुद्र यात्रा** से उनका **धर्म** और **जाति** भ्रष्ट हो जाएँगे। जब 1824 में सिपाहियों को कंपनी की ओर से लड़ने के लिए समुद्र के रास्ते **बर्मा** जाने का आदेश मिला तो उन्होंने इस हुक्म को मानने से इनकार कर दिया। उन्हें जमीन के रास्ते से जाने में ऐतराज नहीं था। सरकार का हुक्म न मानने के कारण उन्हें सख्त सज़ा दी गई। क्योंकि यह मुद्दा अभी खत्म नहीं हुआ था इसलिए 1856 में कंपनी को एक नया कानून बनाना पड़ा। इस कानून में साफ़ कहा गया था कि अगर कोई व्यक्ति कंपनी की सेना में नौकरी करेगा तो ज़रूरत पड़ने पर उसे समद्र पार भी जाना पड सकता है।

सुधारों पर प्रतिक्रिया

SACHIN ACADEMY 9956697782

➢ अंग्रेजों को लगता था कि भारतीय समाज को सुधारना जरूरी है। **सती प्रथा** को रोकने और **विधवा विवाह** को बढ़ावा देने के लिए कानून बनाए गए। अंग्रेजी भाषा की शिक्षा को जमकर प्रोत्साहन दिया गया। 1830 के बाद कंपनी ने **ईसाई मिशनरियों** को खुलकर काम करने और यहाँ तक कि ज़मीन व संपत्ति जुटाने की भी छूट दे दी।

➢ **1850** में एक नया कानून बनाया गया जिससे ईसाई धर्म को अपनाना और आसान हो गया। इस कानून में प्रावधान किया गया था कि अगर कोई भारतीय व्यक्ति ईसाई धर्म अपनाता है तो भी पुरखों की संपत्ति पर उसका अधिकार पहले जैसा ही रहेगा। बहुत सारे भारतीयों को यकीन हो गया था कि अंग्रेज़ उनका धर्म, उनके सामाजिक रीति-रिवाज और परंपरागत जीवनशैली को नष्ट कर रहे हैं।

सैनिक विद्रोह जब जनविद्रोह बन गया (1857)

➢ **मेरठ** से **दिल्ली** तक 29 मार्च 1857 को युवा सिपाही **मंगल पांडे** को **बैरकपुर** में अपने अफ़सरों पर हमला करने के आरोप में फाँसी पर लटका दिया गया। चंद दिन बाद मेरठ में तैनात कुछ सिपाहियों ने नए कारतूसों के साथ फ़ौजी अभ्यास करने से इनकार कर दिया। सिपाहियों को लगता था कि उन **कारतूसों** पर **गाय** और **सूअर की चर्बी** का लेप चढ़ाया गया था। 85 सिपाहियों को नौकरी से निकाल दिया गया। उन्हें अपने अफ़सरों का हुक्म न मानने के आरोप में 10-10 साल की सजा दी गई। यह 9 मई 1857 की बात है।

➢ 10 मई को सिपाहियों ने मेरठ की जेल पर धावा बोलकर वहाँ बंद सिपाहियों को आज़ाद करा लिया। उन्होंने अंग्रेज़ अफ़सरों पर हमला करके उन्हें मार गिराया। उन्होंने बंदूक और हथियार कब्जे में ले लिए और अंग्रेजों की इमारतों व संपत्तियों को आग के हवाले कर दिया। उन्होंने **फ़िरंगियों** के खिलाफ युद्ध का ऐलान कर दिया। सिपाही पूरे देश में अंग्रेज़ों के शासन को खत्म करने पर आमादा थे।

➢ **मेरठ** के कुछ सिपाहियों की एक टोली 10 मई की रात को घोड़ों पर सवार होकर मुँह अँधेरे ही **दिल्ली** पहुंच गई। जैसे ही उनके आने की ख़बर फैली, दिल्ली में तैनात

SACHIN ACADEMY 9956

टुकड़ियों ने भी बगावत कर दी। यहाँ भी अंग्रेज़ अफसर मारे गए। देशी सिपाहियों ने हथियार व गोला बारूद कब्जे में ले लिया और इमारतों को आग लगा दी। विजयी सिपाही **लाल किले** की दीवारों के आसपास जमा हो गए। वे बादशाह से मिलना चाहते थे। बादशाह अंग्रेजों की भारी ताकत से दो-दो हाथ करने को तैयार नहीं थे लेकिन सिपाही भी अड़े रहे। आखिरकार वे जबरन महल में घुस गए और उन्होंने **बहादुर शाह ज़फ़र** को अपना **नेता** घोषित कर दिया।

- बादशाह को सिपाहियों की यह माँग माननी पडी। उन्होंने देश भर के मुखियाओं और शासकों को चिट्ठी लिखकर अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए भारतीय राज्यों का **एक संघ** बनाने का आह्वान किया। बहादुर शाह के इस एकमात्र कदम के गहरे परिणाम सामने आए।
- एक के बाद एक, हर **रेजिमेंट** में सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया और वे **दिल्ली**, **कानपुर** व **लखनऊ** जैसे मुख्य बिंदुओं पर दूसरी टुकड़ियों का साथ देने को निकल पड़े।
- **पेशवा बाजीराव** के दत्तक पुत्र **नाना साहेब** कानपुर के पास रहते थे। उन्होंने सेना इकट्ठा की और ब्रिटिश सैनिकों को शहर से खदेड़ दिया। उन्होंने खुद को **पेशवा** घोषित कर दिया। उन्होंने ऐलान किया कि वह बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र के तहत गवर्नर हैं। लखनऊ की गद्दी से हटा दिए गए **नवाब वाजिद अली शाह** के बेटे **बिरजिस कद्र** को नया नवाब घोषित कर दिया गया।
- बिरजिस कद्र ने भी बहादुर शाह जफर को अपना बादशाह मान लिया। उनकी **माँ बेगम हजरत महल** ने अंग्रेजों के खिलाफ़ विद्रोहों को बढ़ावा देने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। **झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई** भी विद्रोही सिपाहियों के साथ जा मिलीं। उन्होंने **नाना साहेब** के सेनापति **तात्या टोपे** के साथ मिलकर अंग्रेजों को भारी चुनौती दी। मध्यप्रदेश के **मांडला क्षेत्र** में, राजगढ़ की **रानी अवन्ति बाई लोधी** ने 4,000 सौनिकों की फौज तैयार की और अंग्रेजों के खिलाफ उसका नेतृत्व किया क्योंकि ब्रिटिश शासन ने उनके राज्य के प्रशासन पर नियंत्रण कर लिया था।

कंपनी का पलटवार

SACHIN ACADEMY 9956907782

- इस उथल-पुथल के बावजूद अंग्रेजों ने हिम्मत नहीं छोड़ी। कंपनी ने अपनी पूरी ताकत लगाकर विद्रोह को कुचलने का फैसला लिया। उन्होंने इंग्लैंड से और फ़ौजी मँगवाए, विद्रोहियों को जल्दी सजा देने के लिए नए कानून बनाए और विद्रोह के मुख्य केंद्रों पर धावा बोल दिया। **सितंबर 1857** में **दिल्ली** दोबारा अंग्रेजों के कब्जे में आ गई। अंतिम **मुगल बादशाह बहादुर शाह** ज़फ़र पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें **आजीवन कारावास** की सजा दी गई। उनके बेटों को उनकी आँखों के सामने गोली मार दी गई। बहादुर शाह और उनकी पत्नी बेगम जीनत महल को अक्तूबर **1858** में **रंगून** जेल में भेज दिया गया। इसी जेल में नवंबर **1862** में बहादर शाह ज़फ़र ने अंतिम सांस ली।
- अंग्रेजो ने 1859 के आखिर तक देश पर दोबारा नियंत्रण पा लिया था
- **ब्रिटिश संसद** ने **1858** में एक **नया कानून** पारित किया और ईस्ट इंडिया कंपनी के सारे अधिकार ब्रिटिश साम्राज्य के हाथ में सौंप दिए।

SACHIN ACADEMY 9955697782

कपड़ा और लोहा व इस्पात उद्योग (Textile, Iron and Steel industries)

- भारत के पश्चिमी तट पर **गुजरात** स्थित **सूरत** हिंद महासागर के रास्ते होने वाले व्यापार के सबसे महत्त्वपूर्ण बंदरगाहों में से एक था। डच और ब्रिटिश व्यापारिक जहाज़ सत्रहवीं सदी की शुरुआत से ही इस बंदरगाह का इस्तेमाल करने लगे थे। अठारहवीं सदी में इस बंदरगाह का महत्त्व गिरने लगा।
- **सूती कपड़े** के मशीनी उत्पादन ने उन्नीसवीं सदी में ब्रिटेन को दुनिया का सबसे प्रमुख **औद्योगिक राष्ट्र** बना दिया था। 1850 के दशक से जब ब्रिटेन का लोहा और इस्पात उद्योग भी पनपने लगा तो ब्रिटेन "**दुनिया का कारखाना**" (World factory) कहलाने लगा।
- ब्रिटेन के औद्योगीकरण और भारत पर ब्रिटिश विजय और उपनिवेशीकरण में गहरा संबंध था।

कपड़ा उद्योग (Textile industry)

- 1750 के आस-पास भारत पूरी दुनिया में कपड़ा उत्पादन के क्षेत्र में औरों से कोसों आगे था। भारतीय कपड़े लंबे समय से अपनी **गुणवत्ता** और **बारीक कारीगरी** के लिए दुनिया भर में मशहूर थे। दक्षिण-पूर्वी एशिया (जावा, सुमात्रा और पेनांग) तथा पश्चिमी एवं मध्य एशिया में इन कपड़ों का भारी व्यापार था।
- यूरोप के व्यापारियों ने भारत से आया बारीक सूती कपड़ा सबसे पहले मौजूदा **ईराक** के **मोसुल** शहर में अरब के व्यापारियों के पास देखा था। इसी आधार पर वे बारीक बुनाई वाले सभी कपड़ों को "**मस्लिन**" (**मलमल**) कहने लगे। जल्दी ही यह शब्द खुब प्रचलित हो गया। मसालों की तलाश में जब पहली बार पुर्तगाली भारत आए तो उन्होंने दक्षिण-पश्चिमी भारत में केरल के तट पर **कालीकट** में डेरा डाला। यहाँ से वे मसालों के साथ-साथ सूती कपड़ा भी लेते गए। कालीकट से निकले शब्द को "**कैलिको**" कहने लगे। बाद में हर तरह के सूती कपड़े को कैलिको ही कहा जाने लगा।

यूरोपीय बाजारों में भारतीय कपड़ा

- अठारहवीं सदी की शुरुआत तक आते-आते भारतीय कपड़े की लोकप्रियता से बेचैन इंग्लैंड के **ऊन व रेशम निर्माता** भारतीय कपड़ों के आयात का विरोध करने लगे थे। इसी दबाव के कारण 1720 में ब्रिटिश सरकार ने इंग्लैंड में छापेदार सूती कपड़े – **छींट** – के इस्तेमाल पर पाबंदी लगाने के लिए एक कानून पारित कर दिया। संयोगवश, इस कानून को भी **कैलिको अधिनियम (Act)** ही कहा जाता था।
- 1764 में **जॉन के** ने **स्पिनिंग जैनी** का आविष्कार किया जिससे परंपरागत तकलियों की उत्पादकता काफी बढ़ गई। 1786 में **रिचर्ड आर्कराइट** ने **वाष्प इंजन का आविष्कार** किया जिसने सूती कपड़े की बुनाई को क्रान्तिकारी रूप से बदल दिया।
    - **पटोला बुनाई** सूरत, अहमदाबाद और पाटन में होती थी। **इंडोनेशिया** में इस बुनाई का भारी बाज़ार था और वहाँ यह स्थानीय बनाई परंपरा का हिस्सा बन गई थी।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **स्पिनिंग जैनी** - एक ऐसी मशीन जिससे एक कामगार एक साथ कई तकलियों पर काम कर सकता था। जब पहिया घूमता था तो सारी तकलियाँ घूमने लगती थीं।

बुनकर (weavers)

- बुनकर आमतौर पर बुनाई का काम करने वाले समुदायों के ही कारीगर होते थे। वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसी हुनर को आगे बढ़ाते थे। बंगाल के **तांती**, उत्तर भारत के **जुलाहे** या **मोमिन**, दक्षिण भारत के **साले** व **कैकोल्लार** तथा **देवांग** समुदाय बुनकरी के लिए प्रसिद्ध थे।
- रंगीन कपड़ा बनाने के लिए **रँगरेज़** इस धागे को रंग देते थे। छपाईदार कपड़ा बनाने के लिए बुनकरों को **चिप्पीगर** नामक माहिर कारीगरों की ज़रूरत होती थी जो ठप्पे से छपाई करते थे।

भारतीय कपड़े का पतन

- इंग्लैंड में बने सूती कपड़े ने उन्नीसवीं सदी की शुरुआत तक भारतीय कपड़े को **अफ्रीका**, **अमरीका** और **यूरोप** के परंपरागत बाज़ारों से बाहर कर दिया था। इसकी वजह से हमारे यहाँ के हज़ारों **बुनकर** बेरोज़गार हो गए। सबसे बुरी मार **बंगाल** के **बुनकरों** पर पड़ी।
- **1830** के दशक तक भारतीय बाज़ार ब्रिटेन में बने सूती कपड़े से पट गए। दरअसल, 1880 के दशक तक स्थिति यह हो गई थी कि भारत के लोग जितना सूती कपड़ा पहनते थे उसमें से **दो तिहाई** ब्रिटेन का बना होता था। इससे न केवल बुनकरों बल्कि सूत कातने वालों की भी हालत खराब होती गई। जो लाखों ग्रामीण महिलाएँ सूत कातकर ही अपनी आजीविका चला रही थीं वे बेरोज़गार हो गई।
- **राष्ट्रीय आंदोलन** के दौरान **महात्मा गांधी** ने भी लोगों से आह्वान किया कि वे आयातित कपडे का बहिष्कार करें और हाथ से कते सूत और हाथ से बुने कपड़े ही पहनें। इस तरह **खादी राष्ट्रवाद** का प्रतीक बनती चली गई। **चरखा** भारत की पहचान

SACHIN ACADEMY 9955697782

बन गया और 1931 में उसे भारतीय राष्टीय कांग्रेस के तिरंगे झंडे की बीच वाली पटटी में जगह दी गई।

सूती कपड़ा मिलों का उदय

- भारत में पहली सूती कपडा मिल **1854** में बम्बई में स्थापित हुई। यह **कताई मिल** थी।
- भारत में औद्योगिक सूती वस्त्रोत्पादन की पहली बडी लहर प्रथम विश्व युद्ध के समय दिखाई दी जब ब्रिटेन से आने वाले कपड़े की मात्रा में काफी कमी आ गई थी और सैनिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए भारतीय कारखानों से कपडे का उत्पादन बढ़ाने की माँग की जाने लगी।

लोहा व इस्पात उदयोग (Iron And Steel Industry)

- **रझारा पहाड़ियाँ** दुनिया के सबसे बेहतरीन **लौह अयस्क** भंडारों में से एक थीं।
- **अगरिया** जैसे कई समुदाय लोहा बनाने में माहिर थे। अगरिया समुदाय के लोगों ने लौह अयस्क का एक और स्रोत ढूँढने में मदद दी जहाँ से बाद में **भिलाई स्टील संयंत्र** को अयस्क की आपूर्ति की गई।
- कुछ साल बाद **सुबर्णरेखा नदी** के तट पर बहुत सारा जंगल साफ करके फैक्ट्री और एक औद्योगिक शहर बसाने के लिए जगह बनाई गई। इस शहर को **जमशेदपुर** का नाम दिया गया। इस स्थान पर लौह अयस्क भंडारों के निकट ही पानी भी उपलब्ध था। यहाँ **टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी** (**टिस्को**) की स्थापना हुई जिसमें 1912 से स्टील का उत्पादन होने लगा।

टीपू सुल्तान की तलवार और वुट्ज़ स्टील

- टीपू सुल्तान की तलवार की धार इतनी सख्त और पैनी थी कि वह दुश्मन के **लौह-कवच** को भी आसानी से चीर सकती थी। इस तलवार में यह गुण **कार्बन** की अधिक मात्रा वाली **वुटज़ नामक स्टील** से पैदा हुआ था जो पूरे **दक्षिण भारत** में बनाया जाता

SACHIN ACADEMY 9555697782

था। इस वुट्ज़ स्टील की तलवारें बहुत पैनी और लहरदार होती थीं। इनकी यह बनावट लोहे में गडे कार्बन के बेहद सक्ष्म कणों से पैदा होती थी।

प्राच्यवाद की परंपरा (Tradition Of Orientalism)

- सन् 1783 में **विलियम जोन्स** नाम के एक सज्जन कलकत्ता आए। उन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा स्थापित किए गए सुप्रीम कोर्ट में जनियर जज के पद पर तैनात किया गया था। कानन का माहिर होने के साथ-साथ जोन्स एक **भाषाविद** भी थे।
- जोन्स ने **एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल** का गठन किया और **एशियाटिक रिसर्च** नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया।
- **जोन्स** और **कोलबुक** भारत के प्रति एक खास तरह का रवैया रखते थे। वे भारत और पश्चिम, दोनों की प्राचीन संस्कृतियों के प्रति गहरा आदर भाव रखते थे। उनका मानना था कि हिंदुओं और मुसलमानों के असली विचारों व कानूनों को इन्हीं रचनाओं के ज़रिए समझा जा सकता है और इन रचनाओं के पुनः अध्ययन से ही भारत के भावी विकास का आधार पैदा हो सकता है।
- इस प्रक्रिया में अंग्रेज़ भारतीय संस्कृति के अभिभावक और मालिक, दोनों की भूमिकाएँ निभा रहे थे।
- **हेस्टिंग्स** तथा अन्य प्राच्यवादी भारतीय विद्वानों से विभिन्न भारतीय भाषाएँ सीखना चाहते थे जिन्हें वह कई बार केवल बोलियाँ समझते और **'वर्नाकुलर'** का नाम देते थे।
- हेस्टिंग्स ने पहल करके **कलकत्ता मदरसे** की स्थापना की और उनका विश्वास था कि यहाँ के प्राचीन रीति-रिवाज़ और यहाँ की ज्ञान संपदा ही भारत में ब्रिटिश शासन के आधार होने चाहिए।

- **प्राच्यवादी (Orientalist)** - एशिया की भाषा और संस्कृति का गहन ज्ञान रखने वाले लोग।
- **मुंशी** - ऐसा व्यक्ति जो फारसी पढ़ना, लिखना और पढ़ाना जानता
- **वर्नाकुलर** - यह शब्द आमतौर पर मानक भाषा से अलग किसी स्थानीय भाषा या बोली के लिए इस्तेमाल किया जाता है। भारत जैसे औपनिवेशिक देशों में अंग्रेज़

SACHIN ACADEMY 9555697782

रोजमर्रा इस्तेमाल की स्थानीय भाषाओं और साम्राज्यवादी शासकों की भाषा अंग्रेजी के बीच फर्क को चिह्नित करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल करते थे।

व्यवसाय के लिए शिक्षा

- 1854 में ईस्ट इंडिया कंपनी के लंदन स्थित कोर्ट **ऑफ डायरेक्टर्स** ने भारतीय गवर्नर जनरल को शिक्षा के विषय में एक नोट भेजा। कंपनी के नियंत्रक मंडल के अध्यक्ष **चार्ल्स वुड** के नाम से जारी किए गए इस संदेश को **वुड का नीतिपत्र** (**वुड्स डिस्पैच**) के नाम से जाना जाता है। इस दस्तावेज़ में भारत में लागू की जाने वाली शिक्षा नीति की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए एक बार फिर दोहराया गया है कि प्राच्यवादी ज्ञान के स्थान पर यूरोपीय शिक्षा को अपनाने से कितने व्यावहारिक लाभ प्राप्त होंगे।
- वुड के नीतिपत्र में यह तर्क भी दिया गया था कि यूरोपीय शिक्षा से भारतीयों के **नैतिक चरित्र (Moral character)** का उत्थान होगा। इससे वे ज़्यादा सत्यवादी और ईमानदार बन जाएंगे और फलस्वरूप कंपनी के पास भरोसेमंद कर्मचारियों की कमी नहीं रहेगी।
- 1857 में जब मेरठ और दिल्ली में सिपाही विद्रोह कर रहे थे उसी समय **कलकत्ता**, **मद्रास** और **बम्बई विश्वविद्यालयों** की स्थापना की जा रही थी। स्कूली शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के प्रयास भी किए गए।

विलियम एडम की रिपोर्ट

- 1830 के दशक में शिक्षा का तरीका काफी लचीला था। बच्चों की फीस निश्चित नहीं थी। छपी हुई किताबें नहीं होती थी। सालाना इम्तेहान और नियमित समय-सारणी जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी।
- बच्चों की फीस उनके माँ-बाप की आमदनी से तय होती थी : अमीरों को ज्यादा और गरीबों को कम फीस देनी पड़ती थी। शिक्षा मौखिक होती थी और क्या पढ़ाना है यह बात विद्यार्थियों की ज़रूरतों को देखते हुए गुरु ही तय करते थे। विद्यार्थियों को अलग कक्षाओं में नहीं बिठाया जाता था। सभी एक जगह एक साथ बैठते थे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- फसलों की कटाई के समय कक्षाएँ बंद हो जाती थीं क्योंकि उस समय गाँव के बच्चे प्रायः खेतों में काम करने चले जाते थे। कटाई और अनाज निकल जाने के बाद पाठशाला दोबारा शुरू हो जाती थी।

अरविंदों घोष

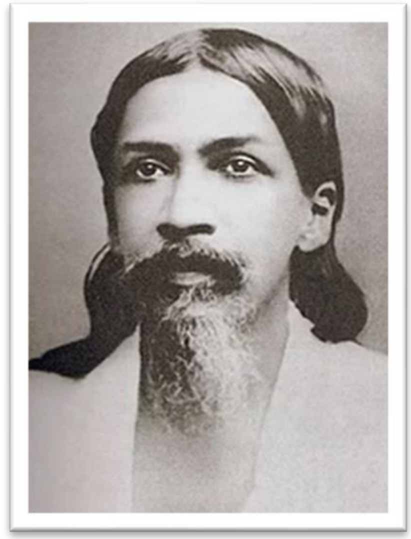

- अरविंदों घोष ने 15 जनवरी 1908 को बॉम्बे (मुंबई) में अपने एक सम्भाषण में राष्ट्रीय शिक्षा पर बोलते हुए कहा कि इसका लक्ष्य छात्रों में राष्ट्रीयता का भाव जागृत करना है। इसके लिए अपने पूर्वजों के साहसिक कार्यों पर गहराई से चिंतन करना आवश्यक होगा। शिक्षा को **मातृ-भाषा** **(Mother toungue)** में होना चाहिए ताकि यह अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंच सके। अरविंदो ने इस बात पर भी बल | दिया कि यद्यपि छात्रों को अपने मूल के साथ जुड़े रहना चाहिए, फिर भी
- उनको आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों तथा लोकप्रिय शासन व्यवस्था के संदर्भ में पश्चिमी देशों के अनुभव का भी भरपूर लाभ उठाना चाहिए। इसके अतिरिक्त छात्रों को कोई **हस्तकला** **(Handicraft)** भी सीखनी चाहिए ताकि वे स्कूल छोड़ने पर यथा संभव रोजगार पा सकें।

SACHIN ACADEMY 9955697782

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी की दृढ़ मान्यता थी कि शिक्षा केवल भारतीय भाषाओं में ही दी जानी चाहिए। उनके मुताबिक, अंग्रेज़ी में दी जा रही शिक्षा भारतीयों को **अपाहिज** बना देती है, उसने उन्हें अपने सामाजिक परिवेश से काट दिया है और उन्हें "**अपनी ही भूमि पर अजनबी**" बना दिया है। उनकी राय में, विदेशी भाषा बोलने वाले, स्थानीय संस्कृति से घृणा करने वाले अंग्रेज़ी शिक्षित भारतीय अपनी जनता से जुड़ने के तौर-तरीके भूल चुके थे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

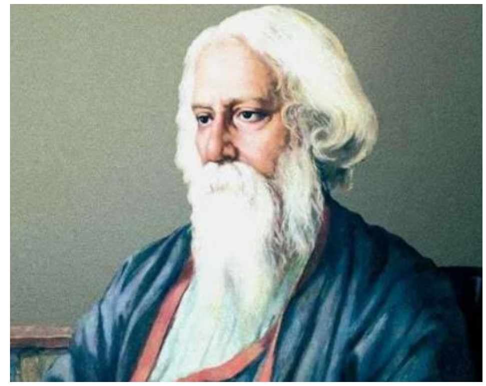

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने "**शांतिनिकेतन**" संस्था की स्थापना 1901 में की थी।

टैगोर का मानना था कि सृजनात्मक शिक्षा को केवल प्राकृतिक परिवेश में ही प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसीलिए उन्होंने कलकत्ता से 100 किलोमीटर दूर एक ग्रामीण परिवेश में अपना स्कूल खोलने का फैसला लिया। उन्हें यह जगह निर्मल शांति से भरी (शांतिनिकेतन) दिखाई दी जहाँ प्रकृति के साथ जीते हुए बच्चे अपनी स्वाभाविक सृजनात्मक मेधा को और विकसित कर सकते थे।

राजा राममोहन रॉय

- राजा राममोहन रॉय ने कलकत्ता में **ब्रह्मो सभा** के नाम से एक सुधारवादी संगठन बनाया था (जिसे बाद में **ब्रह्मो समाज** के नाम से जाना गया)।
- राममोहन रॉय इस बात से काफी दुखी थे कि विधवा औरतों को अपनी ज़िदंगी में भारी कष्टों का सामना करना पड़ता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने **सती प्रथा** के खिलाफ़ मुहिम छेड़ी थी।
- राममोहन रॉय **संस्कृत**, **फ़ारसी** तथा अन्य कई भारतीय एवं यूरोपीय भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे। उन्होंने अपने लेखन के ज़रिए यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि प्राचीन ग्रंथों में विधवाओं को जलाने की अनुमति कहीं नहीं दी गई है।
- **1829** में सती प्रथा पर पाबंदी लगा दी गई।

स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती ने **1875** में **आर्य समाज** की स्थापना की थी। आर्य समाज ने हिंदू धर्म को सुधारने का प्रयास किया था।

SACHIN ACADEMY 9955697782

इन्होने विधवा विवाह का भी समर्थन किया।

महिलाएं, जाति एवं सुधार

- दो सौ साल पहले हालात बहुत भिन्न थे। ज़्यादातर बच्चों की शादी बहुत कम उम्र में ही कर दी जाती थी। हिंदू व मुसलमान, दोनों धर्मों के पुरुष एक से ज्यादा पत्नियाँ रख सकते थे। देश के कुछ भागों में विधवाओं से ये उम्मीद की जाती थी कि वे अपने पति की **चिता** के साथ ही **जिंदा जल जाएँ**। इस तरह स्वेच्छा से या जबरदस्ती मार दी गई महिलाओं को "**सती**" कहकर महिमामंडित किया जाता था। 'सती' शब्द का अर्थ ही **सदाचारी महिला** (Virtuous woman) था। संपत्ति पर भी महिलाओं के अधिकार बहुत सीमित थे। शिक्षा तक महिलाओं की प्रायः कोई पहुँच नहीं थी। देश के बहत सारे भागों में लोगों का विश्वास था कि अगर औरत पढी-लिखी होगी तो वह जल्दी **विधवा** (widow) हो जाएगी।
- समाज में सिर्फ स्त्रियों और पुरुषों के बीच ही फर्क नहीं था। ज्यादातर इलाकों में लोग जातियों में भी बँटे हुए थे। **ब्राह्मण** और **क्षत्रिय** खुद को "**ऊँची जाति**" का मानते थे। इसके बाद व्यापार और महाजनी आदि से जुड़ी जातियों (जिन्हें प्रायः **वैश्य** कहा जाता था) का स्थान आता था। फिर **काश्तकार**, **बुनकर** व **कुम्हार** जैसे **दस्तकार** आते थे (जिन्हें **शूद्र** कहा जाता था)। इस श्रेणीक्रम की सबसे निचली पायदान पर ऐसी जातियाँ थीं जो गाँवों-शहरों को साफ-सुथरा रखती थीं या ऐसे काम धंधे करती थीं जिन्हें ऊँची जातियों के लोग "**दूषित कार्य**" मानते थे यानी ऐसे काम जिनकी वजह से उनकी जाति 'भ्रष्ट' हो जाती थी। ऊँची जातियाँ निचले पायदान पर खडी इन जातियों के लोगों को "**अछूत**" मानती थीं। इन लोगों को मंदिरों में प्रवेश करने, सवर्ण जातियों के इस्तेमाल वाले कुओं से पानी निकालने या ऊँची जातियों के अधिपत्य वाले घाट-तालाबों पर नहाने की छूट नहीं होती थी। उन्हें निम्न दर्जे का मनुष्य माना जाता था।

SACHIN ACADEMY 9955697782

महिलाएं एवं शिक्षा (Women and Education)

- कलकत्ता में विद्यासागर और बम्बई में बहुत सारे अन्य सुधारकों ने लड़कियों के लिए स्कूल खोले।
- उन्नीसवीं सदी में पढ़ने-लिखने वाली ज्यादातर महिलाओं को उनके उदार विचारों वाले पिता या पति की देखरेख में घर पर ही पढ़ाया जाता रहा। कई महिलाओं ने बिना किसी की मदद लिए खुद ही पढ़ना-लिखना सीखा।
- उन्नीसवीं सदी के आखिरी हिस्से में **आर्य समाज** द्वारा पंजाब में और **ज्योतिराव फुले** द्वारा **महाराष्ट्र** में लड़कियों के लिए स्कूल खोले गए।
- उत्तर भारत के कुलीन मुसलिम परिवारों की महिलाएँ अरबी में कुरान शरीफ पढ़ना सीखने लगीं। उन्हें घर पर ही पढ़ाने के लिए शिक्षिकाएँ रखी जाती थीं। इस स्थिति को देखते हुए **मुमताज़ अली** जैसे कुछ सुधारकों ने कुरान शरीफ की आयतों का हवाला देकर कहा कि महिलाओं को भी शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए। उन्नीसवीं सदी के आख़िर से ही उर्दू में **उपन्यासों (Novels)** का सिलसिला शुरू हुआ।
- इन उपन्यासों में महिलाओं को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता था कि वे धर्म और घरेलू साज-सँभाल के बारे में पढ़ें।
- भोपाल की बेगमों ने अलीगढ़ में लड़कियों के लिए प्राथमिक स्कूल खोला। **बेगम रुकैया सखावत हुसैन** भी इस दौर की एक प्रभावशाली महिला थीं जिन्होंने कलकत्ता और पटना में मुसलिम लड़कियों के लिए स्कूल खोले। वह रूढ़िवादी विचारों की कटु आलोचक थीं और उनका मानना था कि प्रत्येक धर्म के धार्मिक नेताओं ने औरतों को निचले दर्जे में रखा है।
- **1880** के दशक तक आते-आते भारतीय महिलाएँ विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेने लगी थीं। बहुत सारी महिलाएँ लिखने लगीं और उन्होंने समाज में महिलाओं की स्थिति पर अपने आलोचनात्मक विचार प्रकाशित किए। पूना में घर पर ही रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाली **ताराबाई शिंदे** ने **स्त्रीपुरुषतुलना** नाम से एक किताब प्रकाशित की जिसमें पुरुषों और महिलाओं के बीच मौजूद सामाजिक फर्कों की आलोचना की गई थी।
- संस्कृत की महान **विद्वान पंडिता रमाबाई** का मानना था कि हिंदू धर्म महिलाओं का दमन करता है। उन्होंने ऊँची जातियों की हिंदू महिलाओं की दुर्दशा पर एक किताब

भी लिखी थी। उन्होंने पूना में एक **विधवागृह (Widow house)** की स्थापना की जहाँ ससुराल वालों के हाथों अत्याचार झेल रही महिलाओं को पनाह दी जाती थी। वहाँ महिलाओं को ऐसी चीजें सिखाई जाती थीं जिनके सहारे वे अपनी रोजी-रोटी चला सकें।

बाल विवाह (Child Marriage)

1929 में बाल विवाह निषेध अधिनियम पारित किया गया। इस कानून के अनुसार 18 साल से कम उम्र के लड़के और 16 साल से कम उम्र की लड़की की शादी नहीं की जा सकती। बाद में यह उम्र बढाकर क्रमश: 21 साल व 18 साल कर दी गई।

जाति और समाज सुधार (Caste And Social Reform)

- जाति उन्मूलन के लिए काम करने के लिए बम्बई में **1840** में **परमहंस मंडली** का गठन किया गया।
- मौजूदा आंध्र प्रदेश में **मदिगा** एक महत्वपूर्ण "अछूत" जाति रही है। वे पशुओं के शवों को साफ करने, चमडा तैयार करने और चप्पल-जूतियाँ सीने में माहिर थे।
- अछूत माने जाने वाले महार समुदाय के बहुत सारे लोगों को **महार रेजीमेंट** में नौकरी मिल गई। दलित आंदोलन के नेता **बी.आर. अम्बेडकर** के पिता एक सैनिक स्कूल में ही पढ़ाते थे।
- बम्बई प्रेजीडेंसी में 1829 में भी अछूतों को सरकारी स्कूलों में घुसने नहीं दिया जाता था। जब उन्होंने इस अधिकार के लिए सख्ती से आवाज़ उठाई तो उन्हें कक्षा के बाहर बरामदे में बैठकर सबक सुनने की इजाजत दे दी गई ताकि वे कमरे को "**दूषित**" न कर सकें जहाँ ऊँची जाति के लड़कों को पढ़ाया जाता था।
- **दुबला मजदुर** सवर्ण ज़मींदारों के पास मज़दूरी करते थे। वे उनके खेत सँभालते थे और जमींदार के घर-आँगन में तमाम छोटे-बड़े काम करते थे।

SACHIN ACADEMY 9555697782

समानता और न्याय की मांग (Demands For Equality And Justice)

मध्य भारत में **सतनामी आंदोलन** की शुरुआत **घासीदास** ने की, जिन्होंने चमड़े का काम करने वालों को संगठित किया और उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए आंदोलन छेड़ दिया। पूर्वी बंगाल में **हरिदास ठाकुर** के **मतुआ पंथ** ने **चांडाल काश्तकारों** के बीच काम किया। हरिदास ने जाति व्यवस्था को सही ठहराने वाले **ब्राह्मणवादी ग्रंथों** पर सवाल उठाया। जिसे आज केरल कहा जाता है, वहाँ **ऐझावा जाति** के **श्री नारायण गुरु** ने अपने लोगों के बीच एकता का आदर्श रखा। उन्होंने जातिगत भिन्नता के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव करने का विरोध किया। उनके अनुसार सारी मानवता की एक ही जाति है। उनका एक महत्वपूर्ण कथन था- **'ओरु जाति**, **ओरु मतम**, **ओरु दैवम मनुष्यानु**' (**मानवता की एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर**)।

गुलामगीरी

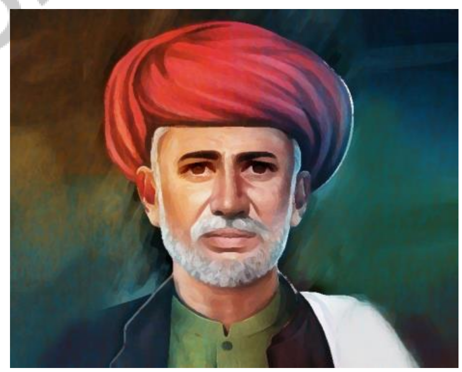

- "निम्न जाति" नेताओं में **ज्योतिराव फुले** सबसे मुखर नेताओं में से थे। **1827** में जन्मे ज्योतिराव फुले ने ईसाई प्रचारकों द्वारा खोले गए स्कूलों में शिक्षा पाई थी। उन्होंने जाति आधारित समाज में फैले अन्याय के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने ब्राह्मणों के इस दावे पर खुलकर हमला बोला कि **आर्य** होने के कारण वे औरों से श्रेष्ठ हैं। फुले का तर्क था कि **आर्य** विदेशी थे, जो **उपमहाद्वीप (Subcontinent)** के बाहर से आए थे और उन्होंने इस मिट्टी के असली वारिसों – आर्यों के आने से पहले यहाँ रह रहे मूल निवासियों - को हराकर उन्हें गुलाम बना लिया था। जब आर्यों ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया तो वे पराजित जनता को नीच, निम्न जाति वाला मानने लगे। फुले के अनुसार, "ऊँची" जातियों का उनकी ज़मीन और सत्ता पर कोई अधिकार नहीं है : यह धरती यहाँ के देशी लोगों की, कथित निम्न जाति के लोगों की है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- फुले ने दावा किया कि आर्यों के शासन से पहले यहाँ **स्वर्ण युग** था। तब योद्धा-किसान ज़मीन जोतते थे और मराठा देहात पर न्यायसंगत और निष्पक्ष तरीके से शासन करते थे। उन्होंने सुझाव दिया कि **शूद्रों** (**श्रमिक जातियाँ**) और **अतिशूद्रों** (**अछूत**) को जातीय भेदभाव खत्म करने के लिए संगठित होना चाहिए। फुले द्वारा स्थापित किए गए **सत्यशोधक समाज** नामक संगठन ने जातीय समानता के समर्थन में मुहिम चलाई।
- 1873 में फुले ने **गुलामगीरी** (गुलामी) नामक एक किताब लिखी। इससे लगभग दस साल पहले **अमेरिकी** गृह युद्ध हो चुका था जिसके फलस्वरूप अमरीका में **दास प्रथा** खत्म कर दी गई थी। फुले ने अपनी पुस्तक उन सभी अमरीकियों को समर्पित की जिन्होंने गुलामों को मुक्ति दिलाने के लिए संघर्ष किया था। इस तरह उन्होंने भारत की "निम्न" जातियों और अमरीका के **काले गुलामों** की दुर्दशा को एक-दूसरे से जोड़ दिया।

SACHIN ACADEMY 9956097782

गैर-ब्राह्मण आंदोलन

- बीसवीं सदी के आरंभ में गैर-ब्राह्मण आंदोलन शुरू हुआ। यह प्रयास उन गैर-ब्राह्मण जातियों का था जिन्हें शिक्षा, धन और प्रभाव हासिल हो चुका था। उनका तर्क था कि ब्राह्मण तो उत्तर से आए उन आर्य आक्रमणकारियों के वंशज हैं जिन्होंने यहाँ के मूल निवासियों – **देशी द्रविड नस्लों** – को हराकर दक्षिणी भूभाग पर विजय हासिल की थी। उन्होंने सत्ता पर ब्राह्मणवादी दावे को भी चुनौती दी।
- **पेरियार** के नाम से प्रसिद्ध **ई.वी. रामास्वामी नायकर** एक मध्यवर्गीय परिवार में पले-बढ़े थे। अपने प्रारंभिक जीवन में वे संन्यासी थे और उन्होंने संस्कृत शास्त्रों का गंभीरता से अध्ययन किया था।
- उन्होंने **स्वाभिमान आंदोलन** शुरू किया। उनका कहना था कि मूल तमिल और द्रविड संस्कृति के असली वाहक अछुत ही हैं जिन्हें ब्राह्मणों ने अपने अधीन कर लिया है। उनका मानना था कि सभी धार्मिक नेता और मुखिया सामाजिक विभाजनों और असमानता को ईश्वरप्रदत्त मानते हैं इसलिए सामाजिक समानता के लिए सभी धर्मों से अछूतों को खुद मुक्ति पानी होगी।

➢ पेरियार हिंदू वेद पुराणों के कट्टर आलोचक थे। खासतौर से मनु द्वारा रचित संहिता, भगवदगीता और रामायण के वे कटु आलोचक थे। उनका कहना था कि ब्राह्मणों ने निचली जातियों पर अपनी सत्ता तथा महिलाओं पर पुरुषों का प्रभुत्व स्थापित करने के लिए इन पुस्तकों का सहारा लिया है।

ब्रह्मो समाज

ब्रह्मो समाज की स्थापना **1830** में की गई थी। यह संस्था सभी प्रकार की **मूर्ति पूजा** और बलि के विरुद्ध थी और इसके अनुयायी **उपनिषदों** में विश्वास रखते थे। इसके सदस्यों को अन्य धार्मिक प्रथाओं या परंपराओं की आलोचना करने का अधिकार नहीं था। ब्रह्मो समाज ने विभिन्न धर्मों के आदर्शों - खास तौर से हिंदुत्व और ईसाई धर्म - के विचारों की आलोचनात्मक व्याख्या करते हुए उनके नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं पर प्रकाश डाला। **केशव चंद्र सेन** ब्रह्मो समाज के मुख्य नेताओं में से एक थे।

डेरोजियो एवं यंग बंगाल

1820 के दशक में **हेनरी लुई विवियन डेरोजियो** हिंदू कॉलेज, कलकत्ता में अध्यापक थे। उन्होंने अपने विद्यार्थियों को आमूल परिवर्तनकारी विचारों से अवगत कराया और उन्हें तमाम तरह की सत्ता पर सवाल खड़ा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके द्वारा शुरू की गई **यंग बंगाल मूवमेंट** में उनके विद्यार्थियों ने परंपराओं और रीति-रिवाजों पर उँगली उठाई. महिलाओं के लिए शिक्षा की माँग की और सोच व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए अभियान चलाया।

रामकृष्ण मिशन और विवेकानंद

रामकृष्ण मिशन का नाम **स्वामी विवेकानंद** के **गुरु रामकृष्ण परमहंस** के नाम पर रखा गया था। यह मिशन समाज सेवा और निस्वार्थ श्रम के जरिए मुक्ति के लक्ष्य पर जोर देता था स्वामी विवेकानंद (1863-1902) जिनका मूल नाम **नरेंद्रनाथ दत्त** था, उन्होंने श्री रामकृष्ण की सरल शिक्षाओं को अपने प्रतिभाशाली संतुलित आधुनिक विचारधारा से जोड़

SACHIN ACADEMY 9956697782

कर संपूर्ण विश्व में प्रसारित किया। **1893** में **शिकागो** में विश्व धर्म संसद में उन्हें सुनने के बाद न्यूयॉर्क हेराल्ड ने विवरण दिया कि, "ऐसे विद्वान राष्ट्र में धर्म प्रचारकों को भेजना कितना मूर्खतापूर्ण है"। वास्तव में, स्वामी विवेकानंद आधुनिक समय के पहले भारतीय थे जिन्होंने विश्वव्यापी स्तर पर **वेदांत दर्शन** के आध्यात्मिक गौरव को पुनर्स्थापित किया लेकिन उनका उद्देश्य केवल धर्म की व्याख्या करना नहीं था। अपने देशवासियों की निर्धनता और दुर्दशा से उन्हें अतिशय दुःख हुआ। उनका यह दुढ विश्वास था कि कोई भी सधार तभी सफल हो सकता है जब जनसमूह की दशा उन्नत हो। अत: भारत के लोगों को उन्होंने 'रसोईघर के धर्म' की संकीर्ण चारदीवारी से बाहर निकलने और राष्ट्र की सेवा में एक जुट होने का आह्वान किया।

प्रार्थना समाज

1867 में बम्बई में स्थापित प्रार्थना समाज ने जातीय बंधनों को खत्म करने और बाल विवाह के उन्मूलन के लिए प्रयास किया। प्रार्थना समाज ने महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित किया और विधवा विवाह पर लगी पाबंदी के खिलाफ आवाज उठाई। उसकी धार्मिक बैठकों में हिंदू, बौद्ध और ईसाई ग्रंथों पर विचार-विमर्श किया जाता था।

वेद समाज

मद्रास (चेन्नई) में 1864 में वेद समाज की स्थापना हुई। वेद समाज ब्रह्मो समाज से प्रेरित था। वेद समाज ने जातीय भेदभाव को समाप्त करने और विधवा विवाह तथा महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए काम किया। इसके सदस्य एक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते थे। उन्होंने रूढ़िवादी **(Conservative)** हिंदुत्व के अंधविश्वासों और अनुष्ठानों **(Rituals)** की सख्त निदा की।

अलीगढ़ आंदोलन

सैय्यद अहमद खाँ द्वारा 1875 में अलीगढ़ में खोले गए **मोहम्मदन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज** को ही बाद में **अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय** के नाम से जाना गया। यहाँ

SACHIN ACADEMY 9955697782

मुसलमानों को पश्चिमी विज्ञान के साथ-साथ विभिन्न विषयों की आधुनिक शिक्षा दी जाती थी। अलीगढ़ आंदोलन का शैक्षणिक सुधारों के क्षेत्र में गहरा प्रभाव रहा है।

सिंह सभा आंदोलन

सिखों के सुधारवादी संगठन के रूप में सिंह सभाओं की स्थापना **1873** में अमृतसर से शुरू हुई थी। बाद में 1879 में लाहौर में भी सिंह सभा का गठन किया गया। इन सभाओं ने सिख धर्म को अंधविश्वासों, जातीय भेदभाव और ऐसे आचरण जिसे वे गैर-सिख समझती थीं, से मुक्त कराने का प्रयास किया। उन्होंने सिखों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जिसमें अकसर आधुनिक ज्ञान के साथ-साथ सिख धर्म के सिद्धांतों को भी पढाया जाता था।

खालसा कॉलेज, **अमृतसर।** 1892 में सिख सभा आदोलन के नेताओं द्वारा स्थापित किया गया।

राष्ट्रवाद का उदय (The Emergence of Nationalism)

- भारत का मतलब है यहाँ की जनता - भारत, यहाँ रहने वाले किसी भी वर्ग, रंग, जाति, पंथ, भाषा या जेंडर वाले तमाम लोगों का घर है। यह देश और इसके सारे संसाधन और इसकी सारी व्यवस्था उन सभी के लिए है। इस जवाब के साथ ये अहसास भी सामने आया कि अंग्रेज भारत के संसाधनों व यहाँ के लोगों की जिंदगी पर कब्जा जमाए हुए हैं और जब तक यह नियंत्रण खत्म नहीं होता भारत यहाँ के लोगों का, भारतीयों का नहीं हो सकता।
- **1870** और **1880** के दशकों में बने **राजनीतिक संगठनों** में यह चेतना और गहरी हो चुकी थी। इनमें से ज्यादतर संगठनों की बागडोर वकील आदि अंग्रेजी शिक्षित पेशेवरों के हाथों में थी। पूना सार्वजनिक सभा, इंडियन एसोसिएशन, मद्रास महाजन सभा, बॉम्बे रेजीडेंसी एसोसिएशन और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आदि इस तरह के प्रमुख संगठन थे।

SACHIN ACADEMY 9955697782

➢ **सम्प्रभुता (Sovereignty)** एक आधुनिक विचार और राष्ट्रवाद का बुनियादी तत्व होता है। ये संगठन इस धारणा से चलते थे कि भारतीय जनता को अपने मामलों के बारे में फैसले लेने की आजादी होनी चाहिए।

➢ 1870 और 1880 के दशकों में **ब्रिटिश शासन** के प्रति असंतोष और ज्यादा गहरा हुआ। 1878 में आर्म्स एक्ट पारित किया गया जिसके जरिए भारतीयों द्वारा अपने पास हथियार रखने का अधिकार छीन लिया गया। उसी साल वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट भी पारित किया गया जिससे सरकार की आलोचना करने वालों को चुप कराया जा सके। इस कानून में प्रावधान था कि अगर किसी अखबार में कोई '**आपत्तिजनक**' चीज छपती है तो सरकार उसकी प्रिंटिंग प्रेस सहित सारी सम्पत्ति को जब्त कर सकती है। 1883 में सरकार ने **इल्बर्ट बिल** लागू करने का प्रयास किया। इसको लेकर काफी हंगामा हुआ। इस विधेयक में प्रावधान किया गया था कि भारतीय न्यायाधीश भी ब्रिटिश या यूरोपीय व्यक्तियों पर मुकदमे चला सकते हैं ताकि भारत में काम करने वाले अंग्रेज और भारतीय न्यायाधीशों के बीच समानता स्थापित की जा सके। जब अंग्रेजों के विरोध की वजह से सरकार ने यह विधेयक वापस ले लिया तो भारतीयों ने इस बात का काफी विरोध किया। इस घटना से भारत में अंग्रेजों के असली रवैये का पता चलता था।

➢ 1885 में देश भर के **72 प्रतिनिधियों (representatives)** ने बम्बई में सभा करके **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना** का फैसला लिया। संगठन के प्रारम्भिक नेता – **दादा भाई नौरोजी**, **फिरोजशाह मेहता**, **बदरूद्दीन तैयब जी**, **डब्ल्यू. सी. बैनर्जी**, **सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी**, **रोमेशचन्द्र दत्त**, **एस. सुब्रमण्यम अय्यर** एवं अन्य – प्रायः बम्बई और कलकत्ता के ही थे। नौरोजी व्यवसायी और प्रचारक थे। वे लंदन में रहते थे और कुछ समय के लिए ब्रिटिश संसद के सदस्य भी रहे। उन्होंने युवा राष्ट्रवादियों का मार्गदर्शन किया। सेवानिवृत्त ब्रिटिश अफसर **ए.ओ.यूम** ने भी विभिन्न क्षेत्रों के भारतीयों को निकट लाने में अहम भूमिका अदा की।

➢ भारतीयों की माँग थी कि न्यायपालिका (Judiciary) को कार्यपालिका से अलग किया जाए, आर्म्स एक्ट को निरस्त किया जाए और अभिव्यक्ति व बोलने की स्वतंत्रता दी जाए।

SACHIN ACADEMY 9555697782

- 1890 के दशक तक बहुत सारे लोग कांग्रेस के राजनीतिक तौर-तरीकों पर सवाल खड़ा करने लगे थे। बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र में बिपिनचंद्र पाल. बाल गंगाधार तिलक और लाला लाजपत राय जैसे नेता ज़्यादा आमूल परिवर्तनवादी उद्देश्य और पद्धतियों के अनुरूप काम करने लगे थे। उन्होंने "**निवेदन की राजनीति**" के लिए **नरमपंथियों (Moderates)** की आलोचना की और आत्मनिर्भरता तथा रचनात्मक कामों के महत्त्व पर जोर दिया। उनका कहना था कि लोगों को सरकार के "नेक" इरादों पर नहीं बल्कि अपनी ताकत पर भरोसा करना चाहिए लोगों को स्वराज के लिए लड़ना चाहिए। तिलक ने नारा दिया - "**स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा**!"

बंगाल का विभाजन (Partition Of Bengal)

- **1905** में **वायसराय कर्जन** ने बंगाल का विभाजन कर दिया। उस वक्त बंगाल ब्रिटिश भारत का सबसे बड़ा प्रांत था। बिहार और उड़ीसा के कुछ भाग भी उस समय बंगाल का हिस्सा थे।
- बंगाल के विभाजन से देश भर में गुस्से की लहर फैल गई। मध्यमार्गी और **आमूल परिवर्तनवादी**, कांग्रेस के सभी धड़ों ने इसका विरोध किया। विशाल जनसभाओं का आयोजन किया गया और जुलूस निकाले गए। जनप्रतिरोध के नए-नए रास्ते ढूँढ़े गए। इससे जो संघर्ष उपजा उसे **स्वदेशी आंदोलन** के नाम से जाना जाता है। यह आंदोलन बंगाल में सबसे ताकतवर था
- **आंध्र** के डेल्टा इलाकों में इसे **वंदेमातरम् आंदोलन** के नाम से जाना जाता था।
- स्वदेशी आंदोलन ने ब्रिटिश शासन का विरोध किया और स्वयं सहायता, स्वदेशी उद्यमों, राष्ट्रीय शिक्षा और भारतीय भाषा के उपयोग को बढ़ावा दिया। स्वराज के लिए आमूल परिवर्तनवादी ने जनता को लामबंद करने और ब्रिटिश संस्थानों व वस्तुओं के बहिष्कार पर जोर दिया। कुछ लोग ब्रिटिश शासन को उखाड फेंकने के लिए "**क्रांतिकारी हिंसा**" के समर्थक थे।

SACHIN ACADEMY 9956997782

ऑल इंडिया मुसलिम लीग

1906 में मुसलमान ज़मींदारों और नवाबों के एक समूह ने **ढाका** में **ऑल इंडिया मुसलिम लीग** का गठन किया। लीग ने बंगाल विभाजन का समर्थन किया। लीग की माँग थी कि मुसलमानों के लिए अलग **निर्वाचिका** **(Electoral)** की व्यवस्था की जाए। 1909 में सरकार ने यह माँग मान ली। अब परिषदों में कुछ सीटें मुसलमान उम्मीदवारों के लिए आरक्षित कर दी गईं जिन्हें मुसलिम मतदाताओं द्वारा ही चुनकर भेजा जाना था। इससे राजनेताओं में अपने धार्मिक समुदाय के लोगों को अपना राजनीतिक समर्थक बनाने का लालच पैदा हो गया।

कांग्रेस में फूट

1907 में कांग्रेस टूट गई। संगठन टूटने के बाद कांग्रेस पर मध्यमार्गी का दबदबा बन गया जबकि तिलक के अनुयायी बाहर से काम करने लगे। दिसंबर 1915 में दोनों खेमों में एक बार फिर एकता स्थापित हुई। अगले साल कांग्रेस और मुसलिम लीग के बीच ऐतिहासिक **लखनऊ समझौते** पर दस्तखत हुए और दोनों संगठनों ने देश में प्रातिनिधिक सरकार के गठन के लिए मिलकर काम करने का फैसला लिया।

- **1917 में रूस में क्रांति** हुई। इस घटना के चलते किसानों और मज़दूरों के संघर्षों का समाचार तथा समाजवादी विचार बड़े पैमाने पर फैलने लगे थे जिससे भारतीय राष्ट्रवादियों को नई प्रेरणा मिलने लगी।

महात्मा गांधी

- गांधीजी 46 वर्ष की उम्र में 1915 में **दक्षिण अफ्रीका** से भारत लौटे थे। वे वहाँ पर **नस्लभेदी** **(Racist)** पाबंदियों के खिलाफ अहिंसक आंदोलन चला रहे थे और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी अच्छी मान्यता थी और लोग उनका आदर करते थे। दक्षिण अफ्रीकी

SACHIN ACADEMY 9956697782

आंदोलनों की वजह से उन्हें हिंदू , मुसलमान, पारसी और ईसाई: गुजराती, तमिल और उत्तर भारतीय; उच्च वर्गीय व्यापारी, वकील और मज़दूर, सब तरह के भारतीयों से मिलने-जुलने का मौका मिल चुका था।

- उनके शुरुआती प्रयास चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद के स्थानीय आंदोलनों के रूप में सामने आए। 1918 में अहमदाबाद में उन्होंने मिल मजदूरों की हड़ताल का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।

रॉलट सत्याग्रह

1919 में गांधीजी ने अंग्रेजों द्वारा हाल ही में पारित किए गए रॉलट कानून के खिलाफ **सत्याग्रह** का आह्वान किया। यह कानून अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे मूलभूत अधिकारों पर अंकुश लगाने और पुलिस को और ज्यादा अधिकार देने के लिए लागू किया गया था। महात्मा गांधी, मोहम्मद अली जिन्ना तथा अन्य नेताओं का मानना था कि सरकार के पास लोगों की बुनियादी स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने इस कानून को "**शैतान की करतूत**" और **निरंकुशवादी** **(Autocratic)** बताया। गांधीजी ने लोगों से आह्वान किया कि इस कानून का विरोध करने के लिए 6 अप्रैल 1919 को अहिंसक विरोध दिवस के रूप में, "**अपमान व याचना**" दिवस के रूप में मनाया जाए। **रॉलट सत्याग्रह** ब्रिटिश सरकार के खिलाफ पहला **अखिल भारतीय** संघर्ष था। **बैसाखी** (13 अप्रैल) के दिन अमृतसर में **जनरल डायर** द्वारा **जलियाँवाला बाग** में किया गया हत्याकांड इसी दमन का हिस्सा था। इस जनसंहार पर **रवीन्द्रनाथ टैगोर** ने अपनी पीड़ा और गुस्सा जताते हुए **नाइटहुड** की उपाधि वापस लौटा दी।

- **नाइटहुड** - ब्रिटिश राजा/रानी की तरफ से किसी व्यक्ति की अप्रतिम व्यक्तिगत सफलताओं या जनसेवा के लिए दी जाने वाली उपाधि।

खिलाफ़त आंदोलन और अहसयोग आंदोलन

1920 में अंग्रेज़ों ने तुर्की के सुल्तान (खलीफा) पर बहुत सख्त संधि थोप दी थी। जलियाँवाला बाग हत्याकांड की तरह इस घटना पर भी भारत के लोगों में भारी गुस्सा

SACHIN ACADEMY 9955697782

था। भारतीय मुसलमान यह भी चाहते थे कि पुराने **ऑटोमन साम्राज्य** में स्थित पवित्र मुसलिम स्थानों पर खलीफा का नियंत्रण बना रहना चाहिए। खिलाफत आंदोलन के नेता मोहम्मद अली और शौकत अली अब एक सर्वव्यापी असहयोग आंदोलन शुरू करना चाहते थे। गांधीजी ने उनके आह्वान का समर्थन किया और कांग्रेस से आग्रह किया कि वह पंजाब में हुए अत्याचारों (जलियाँवाला हत्याकांड) और खिलाफत के मामले में हुए अत्याचार के विरुद्ध मिल कर अभियान चलाएँ और स्वराज की माँग करें।

1922-1929 की घटनाएँ

महात्मा गांधी हिंसक आंदोलनों के विरुद्ध थे। इसी कारण फरवरी 1922 में जब किसानों की एक भीड़ ने **चौरी-चौरा** पुलिस थाने पर हमला कर उसे जला दिया तो गांधीजी ने अचानक **अहसयोग आंदोलन** वापस ले लिया। उस दिन 22 पुलिस वाले मारे गये। किसान इसलिए बेकाबू हो गए थे क्योंकि पुलिस ने उनके शांतिपूर्ण जुलूस पर गोली चला दी थी।

दांडी मार्च

- 1930 में गांधीजी ने ऐलान किया कि वह **नमक कानून** तोड़ने के लिए यात्रा निकालेंगे। उस समय नमक के उत्पादन और बिक्री पर सरकार का एकाधिकार होता था। महात्मा गांधी और अन्य राष्ट्रवादियों का कहना था कि नमक पर टैक्स वसूलना पाप है क्योंकि यह हमारे भोजन का एक बुनियादी हिस्सा होता है। नमक सत्याग्रह ने स्वतंत्रता की व्यापक चाह को लोगों की एक खास शिकायत सभी से जोड़ दिया था और इस तरह अमीरों और गरीबों के बीच मतभेद पैदा नहीं होने दिया।
- गांधीजी और उनके अनुयायी **साबरमती** से 240 किलोमीटर दर स्थित **दांडी तट** पैदल चलकर गए और वहाँ उन्होंने तट पर बिखरा नमक इकट्ठा करते हुए नमक कानून का सार्वजनिक रूप से उल्लंघन किया।
- 1920 के दशक की शुरुआत से ही **राष्ट्रीय आंदोलन** **(National Movement)** में सक्रिय **सरोजिनी नायडू** दांडी यात्रा के मुख्य नेताओं में से एक थीं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर पहुँचने वाली वह पहली महिला थीं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

भारत छोड़ो

महात्मा गांधी ने दूसरे विश्व युद्ध के बाद भारतीय जनता से आह्वान किया कि वे "**करो या मरो**" के सिद्धांत पर चलते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध अहिंसक ढंग से संघर्ष करें।

मौलाना आज़ाद

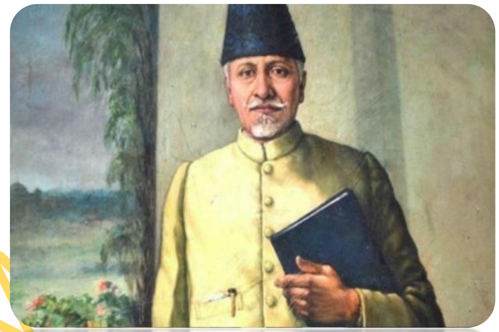

मौलाना आज़ाद का जन्म मक्का में हुआ था। उनके पिता बंगाली और माँ अरब मूल की थीं। बहुत सारी भाषाओं के जानकार आज़ाद इस्लाम के विद्वान और **वहादते-दीन** यानी सभी धर्मों की बुनियादी एकता के हिमायती थे। गांधीवादी आंदोलनों में हमेशा सक्रिय रहने वाले और **हिंदू-मुसलिम एकता** के पक्के हिमायती थे। उन्होंने जिन्ना के **दो-राष्ट्र सिद्धांत** **(Two-nation theory)** का विरोध किया था।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

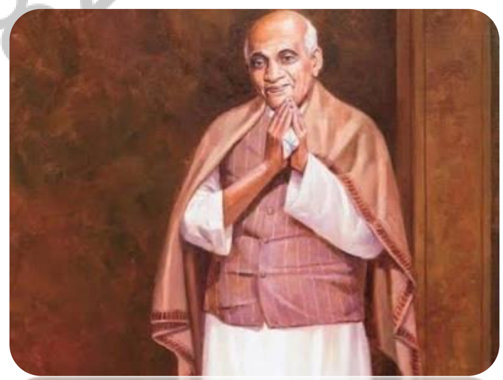

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने **1945-47** के दौरान आज़ादी के लिए चली वार्ताओं में एक अहम भूमिका अदा की थी। पटेल **नादियाड**, **गुजरात** के एक गरीब किसान-व्यवसायी परिवार से थे। 1918 के बाद स्वतंत्रता आंदोलन की अगली कतार में रहने वाले पटेल 1931 में कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे।

साइमन कमीशन

1927 में इंग्लैंड में बैठी ब्रिटिश सरकार ने **लॉर्ड साइमन** की अगुवाई में एक आयोग भारत भेजा। इस आयोग को भारत के राजनीतिक भविष्य का फैसला करना था। इस आयोग में कोई भारतीय प्रतिनिधि नहीं था। इस फैसले की वजह से भारत में भारी असंतोष पैदा हुआ। सभी राजनीतिक संगठनों ने भी आयोग के बहिष्कार का फैसला

SACHIN ACADEMY 9953697782

लिया। जब कमीशन के सदस्य भारत पहुँचे तो प्रदर्शनों के साथ उनका स्वागत किया गया। प्रदर्शनकारियों का नारा था, "**साइमन वापस जाओ**"।

पूर्ण स्वराज

जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में 1929 में **पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव** पारित किया गया। इस प्रस्ताव के आधार पर 26 जनवरी 1930 को पूरे देश में "**स्वतंत्रता दिवस**" मनाया गया।

क्रांतिकारी राष्ट्रवादी (Revolutionary Nationalist)

- **भगत सिंह**, **चंद्रशेखर आजाद**, **सुखदेव** और उनके जैसे अन्य क्रांतिकारी राष्ट्रवादी
- औपनिवेशिक शासन तथा अमीर शोषक वर्गों से लड़ने के लिए मज़दूरों और किसानों की क्रांति चाहते थे। इस काम को पूरा करने के लिए उन्होंने 1928 में दिल्ली स्थित **फिरोजशाह कोटला** में **हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन** (एचएसआरए) की स्थापना की थी। 17 दिसंबर, 1928 को भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद एवं राजगुरु ने लाला लाजपत राय पर लाठीचार्ज करने वाले **सांडर्स** नामक पुलिस अफसर की हत्या की थी। इसी लाठीचार्ज के कारण बाद में लाजपत राय की मृत्यु हो गई थी।
- अपने साथी **राष्ट्रवादी बी.के. दत्त** के साथ **भगत सिंह** ने **8 अप्रैल 1929** को केन्द्रीय विधान परिषद में बम फेंका था। क्रांतिकारियों ने अपने पर्चे में कहा था कि उनका मकसद किसी की जान लेना नहीं बल्कि "**बहरों को सुनाना है**" तथा विदेशी सरकार को उसके द्वारा किए जा रहे भयानक शोषण से अवगत कराना है। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को 23 मार्च, 1931 को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। उस समय भगत सिंह की आयु सिर्फ 23 साल थी।

प्रांतीय स्वायत्तता (Provincial Autonomy)

भारतीय जनता के साझा संघर्षों के चलते आखिरकार 1935 के गवर्मेंट ऑफ इंडिया एक्ट में प्रांतीय स्वायत्तता का प्रावधान किया गया। सरकार ने ऐलान किया कि 1937 में

SACHIN ACADEMY 9956697782

प्रांतीय विधायिकाओं के लिए चुनाव कराए जाएँगे। इन चुनावों के परिणाम आने पर 11 में से 7 प्रांतों में कांग्रेस की सरकार बनी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद

अगस्त 1947 में जब भारत आज़ाद हुआ तो तकरीबन **500 रियासतें** राजाओं या नवाबों के शासन में चल रही थीं।

नए संविधान की रचना (A Constitution is Written)

- हमारे संविधान की एक खासियत यह थी कि उसमें सार्वभौमिक वयस्क **मताधिकार** (universal adult franchise) का प्रावधान किया गया था। इसका मतलब यह था कि 21 साल से ज़्यादा उम्र के सभी भारतीयों को प्रांतीय और राष्ट्रीय चुनावों में वोट देने का अधिकार था। यह एक क्रांतिकारी कदम था। इससे पहले कभी भी भारतीयों को खुद अपने नेता चुनने का अधिकार नहीं मिला था। **ब्रिटेन** और **अमरीका** जैसे अन्य देशों की जनता को यह अधिकार टुकड़ों-टुकड़ों में ही दिया गया था। वहाँ सबसे पहले **संपन्न पुरुषों** को वोट देने का अधिकार मिला। इसके बाद **शिक्षित पुरुषों** को भी मताधिकार दिया गया। **मज़दूर पुरुषों** को काफी लंबे संघर्ष के बाद यह अधिकार मिला। **महिलाओं को** सबसे अंत में मताधिकार दिया गया।
- संविधान की दूसरी विशेषता यह थी कि उसमें तमाम जातियों, धर्मों या किसी भी तरह की पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले सभी नागरिकों को कानून की नज़र में समान माना गया। भारत के कुछ लोग चाहते थे कि भारत की राजनीतिक व्यवस्था हिंदू आदर्शों पर आधारित हो और भारत को एक हिंदू देश घोषित किया जाए। अपनी बात के समर्थन में उन्होंने पाकिस्तान का उदाहरण दिया जिसका गठन ही एक खास समुदाय – मुसलमानों – के हितों की रक्षा के लिए किया गया था। परंतु भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का स्पष्ट मत था कि भारत "हिंदू पाकिस्तान" नहीं बन सकता और न ही बनना चाहिए।
- **डॉ. बी.आर. अंबेडकर** संविधान सभा की **प्रारूप समिति** के अध्यक्ष थे जिनके नेतृत्व में दस्तावेज़ को अंतिम रूप दिया गया था। संविधान सभा के सामने अपने आखिरी

SACHIN ACADEMY 9958697782

भाषण में डॉ. अंबेडकर ने कहा कि राजनीतिक लोकतंत्र के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक लोकतंत्र भी ज़रूरी है।

राज्यों का गठन

1920 के दशक में स्वतंत्रता संघर्ष की मुख्य पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने आश्वासन दिया था कि जैसे ही देश आज़ाद हो जाएगा, प्रत्येक बड़े भाषायी समूह का अपना अलग प्रांत होगा। आजादी मिलने के बाद कांग्रेस ने इस आश्वासन को पूरा करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया। क्योंकि भारत धर्म के आधार पर बँट चुका था।

- **1 अक्तूबर 1953** को आंध्र के रूप में एक नए राज्य का गठन हुआ, जो बाद में आंध्र प्रदेश बना।
- **1960 में बम्बई प्रांत** को मराठी और गुजराती भाषी, दो अलग राज्यों में बाँट दिया गया।
- **1966 में पंजाब** का विभाजन हुआ और हरियाणा को अलग राज्य के रूप में मान्यता दी गई।

विकास की योजनाएँ (Planning for Development)

- 1950 में सरकार ने आर्थिक विकास के लिए नीतियाँ बनाने और उनको लागू करने के लिए एक **'योजना आयोग'** (Planning Commission) का गठन किया। इस बारे में ज़्यादातर सहमति थी कि भारत "**मिश्रित अर्थव्यवस्था**" (mixed economy) के रास्ते पर चलेगा। यहाँ राज्य और निजी क्षेत्र, दोनों ही उत्पादन बढ़ाने और रोज़गार पैदा करने में महत्त्वपूर्ण और परस्पर पूरक भूमिका अदा करेंगे। किस क्षेत्र की क्या भूमिका होगी – अर्थात कौन से उद्योग सरकार द्वारा और कौन से उद्योग बाजार द्वारा यानी निजी उद्योगपतियों द्वारा लगाए जाएँगे, विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों के बीच किस तरह का संतुलन बनाया जायेगा इन सबको परिभाषित करना योजना आयोग का काम था।

SACHIN ACADEMY 9956977782

- **1956 में दूसरी पंचवर्षीय योजना** तैयार की गई। इस योजना में **इस्पात** (Steel) जैसे भारी उद्योगों और विशाल बाँध परियोजनाओं आदि पर सबसे ज़्यादा जोर दिया गया। ये काम सरकारी नियंत्रण के अंतर्गत रखे गए।

- **भिलाई स्थित इस्पात कारखाने** की स्थापना 1959 में तत्कालीन **सोवियत संघ** की सहायता से की गई थी। छत्तीसगढ़ के पिछड़े ग्रामीण इलाके में स्थित यह कारखाना आधुनिक भारत के विकास का एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक बन गया था।

श्रीलंका और सिंहला भाषा

1956 में, जिस समय भारत में भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किया जा रहा था, उसी समय **श्रीलंका** (**तत्कालीन नाम सीलोन**) की संसद ने एक कानून पारित करके **सिंहला भाषा** को देश की राजभाषा का दर्जा दे दिया। इस कानून के जरिए सिंहला भाषा को सभी सरकारी स्कूल-कॉलेजों, सरकारी परीक्षाओं और अदालतों की भाषा बना दिया गया। श्रीलंका के उत्तर में रहने वाले **तमिलभाषी अल्पसंख्यकों** ने इस नए कानून का विरोध किया। एक तमिल सांसद ने कहा कि "जब आप मुझसे मेरी भाषा छीन लेते हैं तो आप मेरा सब कुछ मुझसे छीन लेते हैं।" एक और नेता ने चेतावनी दी, "आप **सीलोन** को बाँटना चाहते हैं। निश्चित रहिए। मैं आश्वासन देता हूँ कि (आपको) एक विभाजित सीलोन ही मिलेगा।" सिंहला भाषी एक विपक्षी सदस्य ने कहा था कि अगर सरकार अपना रुख नहीं बदलती है और इस कानून पर अड़ी रहती है तो "इस छोटे से देश में से दो टूटे-फूटे रक्तरंजित देश भी पैदा हो सकते हैं।"

SACHIN ACADEMY 9955697782

सामाजिक एवं

राजनितिक जीवन

Social And Political Life

ACADEMY
782

ग्रामीण स्वशासन

गाँवों में सार्वजनिक सुविधाओं का प्रबंध करने के लिए ही ग्रामीण स्वशासन होता है। इन सार्वजनिक सुविधाओं को उपलब्ध कराने व अन्य समस्याओं का निराकरण करने के लिए पंचायत व्यवस्था बनाई गई है।

ग्राम पंचायत व्यवस्था

पंचायत व्यवस्था तीन स्तरों पर कार्य करती है

1. ग्राम पंचायत **2. क्षेत्र पंचायत** **3. जिला पंचायत**

ग्राम पंचायत समिति का सदस्य होने के लिए योग्यता

1) ग्राम पंचायत समिति का सदस्य होने के लिए व्यक्ति को उस गाँव का निवासी तथा भारत का नागरिक होना आवश्यक है।
2) उसकी उम्र कम से कम 21 वर्ष की हो।
3) वह पागल या दिवालिया न हो।
4) वह किसी न्यायालय द्वारा कोई सजा न पाया हो।

SACHIN ACADEMY 9955697782

जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि

1. ग्राम प्रधान 2. उप प्रधान 3. ग्राम पंचायत 4. समिति के सदस्य

सरकार द्वारा नियुक्त कर्मचारी

1 ग्राम पंचायत अधिकारी (सेक्रेटरी) 2 ग्राम विकास अधिकारी
3 लेखपाल 4 बेसिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता
5 नलकूप चालक 6 प्रधानाध्यापक 7 शिक्षक

ग्राम पंचायत के कार्य

- ग्राम पंचायत यह देखती है कि गाँव की जनता प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के द्वारा स्वास्थ्य की सुविधा प्राप्त कर रही है या नहीं। यह बच्चों की शिक्षा के लिए विद्यालय की निगरानी करती है।

- गाँव की गलियों में खड़न्जा बिछवाने, सड़क बनवाने, पानी की निकासी के लिए नाली बनवाने, बिजली, पीने के पानी इत्यादि की व्यवस्था तथा जन्म और मृत्यु का ब्यौरा तैयार करने की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत की होती है।

- गाँव की सार्वजनिक सम्पत्ति का रख-रखाव एवं इनके खरीदने तथा नीलामी का कार्य ग्राम पंचायत द्वारा ही होता है। पंचायत अपनी आमदनी तथा खर्च का हिसाब-किताब रखती है। वर्ष में दो बार ग्राम पंचायत की बैठक होती हैं।

अन्य महत्वपूर्ण बिंदु

- कम से कम 1000 की आबादी पर एक ग्राम पंचायत होती है। जिन गाँवों की आबादी 1000 से कम है वहाँ पास के अन्य छोटे-छोटे गाँवों को मिलाकर एक ग्राम पंचायत बनाई जाती है।
- पंचायत समिति के सदस्यों की संख्या 09 से 15 तक हो सकती है।
- ग्राम प्रधान ग्राम शिक्षा समिति का अध्यक्ष होता है। निःशुल्क पाठ्य पुस्तक-वितरण तथा विद्यालय में दोपहर के भोजन (मिड डे मील) की व्यवस्था उसकी देख-रेख में होती है।
- ग्राम पंचायत अधिकारी, ग्राम पंचायत का सचिव होता है, उसे सेक्रेटरी भी कहा जाता है। वह जनता द्वारा चुना नहीं जाता बल्कि सरकार द्वारा नियुक्त कर्मचारी होता है।

SACHIN ACADEMY 9953697782

क्षेत्र पंचायत

इसे 'ब्लॉक आफिस' या 'ब्लॉक का दफ्तर' भी कहते हैं। क्षेत्र पंचायत सदस्यों को B.D.C मेम्बर भी कहते हैं। विकासखण्ड के सभी गाँवों के प्रधान और क्षेत्र पंचायत सदस्यों को मिलाकर क्षेत्र पंचायत बनती है ।

क्षेत्र पंचायत समितियाँ

(1) क्षेत्र की निर्माण समिति

(2) क्षेत्र की जल समिति

(3) क्षेत्र की शिक्षा समिति

- हर एक समिति के सदस्यों की संख्या 10 से 15 तक हो सकती है।
- क्षेत्र पंचायत के सदस्य की उम्र कम से कम 21 वर्ष की होती है ।

जिला पंचायत

- विकेन्द्रीकृत पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत जिस तरह हर गाँव में ग्राम पंचायत व हर विकासखण्ड में एक क्षेत्र पंचायत काम करती है, उसी तरह उत्तर प्रदेश के हर जिले) जनपद (में जिला पंचायत काम करती है।
- जिले की सभी क्षेत्र पंचायतों को मिलाकर जिला पंचायत बनती है। जिला पंचायत के सदस्य क्षेत्र पंचायत के सभी प्रमुख जिला पंचायतों के सदस्य होते हैं। जिले के सांसद व विधायक भी जिला पंचायत के सदस्य होते हैं।
- जिला पंचायत के सदस्य अपने बीच में से एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष चुनते हैं। जिले का मुख्य विकास अधिकारी) C.D.O) जिला पंचायत का सचिव होता है।

चुनाव की प्रक्रिया

- जिला पंचायत के सदस्य भी पाँच साल के लिये चुने जाते हैं।
- 21 वर्ष से कम उम्र का व्यक्ति जिला पंचायत का सदस्य नहीं बन सकता।
- जिला पंचायत की एक बैठक तीन महीने में जरूर होनी चाहिए, ऐसा नियम है।
- विकासखण्ड का काम-काज देखने के लिए जिला पंचायत अपने सदस्यों की छोटी-छोटी समितियाँ बनाती है। जैसे शिक्षा समिति, सिंचाई व्यवस्था समिति, पशु-पालन समिति, भूमि विकास समिति आदि।

नगरीय स्वशासन

- बहुत छोटे नगरों में नगर पंचायत उससे कुछ बड़े नगरों में नगरपालिका परिषद् तथा बहुत बड़े नगरों में नगर निगम होते हैं। यह सरकारी नियम है कि जिस शहर या कस्बे की आबादी 5 हजार से एक लाख के बीच होती है वहाँ नगर पंचायत बन सकती है

SACHIN ACADEMY 9956697782

- पाँच हजार से एक लाख तक की जनसंख्या वाले शहर में नगर पंचायत बनती है। एक नगर पंचायत में सदस्यों की संख्या 10 से 24 तक होती है।
- एक लाख से पाँच लाख तक की जनसंख्या वाले शहर में नगरपालिका परिषद् बनती है। नगरपालिका परिषद् में सदस्यों की संख्या 25 से 55 तक होती है।
- 5 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहर में नगर निगम बनता है। नगर निगम में सदस्यों की संख्या 60 से 110 तक होती है।
- राज्य सरकार नगर पालिका परिषद् या नगर निगम को भंग कर सकती है।
- नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् और नगर निगम के कुछ नियम कानून हैं। ये नियम कानून राज्य की सरकार बनाती है।
- नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् या नगर निगम 5 वर्षों के लिए बनाई जाती है।
- प्रत्येक नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् या नगर निगम में कम से कम एक तिहाई महिला सदस्य और कुछ अनुसूचित जाति के सदस्य होते हैं ।
- नगर निगम का एक अध्यक्ष होता है जो महापौर या मेयर कहलाता है। महापौर जनता द्वारा चुना जाता है।
- हर नगरपालिका परिषद् का एक मुख्य कार्यपालिका अधिकारी होता है और हर नगर निगम का एक आयुक्त। मुख्य कार्यपालिका अधिकारी और आयुक्त जनता द्वारा नहीं चुने जाते, सरकार द्वारा नियुक्त किए जाते हैं।
- यदि किसी वजह से नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद् या नगर निगम भंग कर दी जाए तो सरकार द्वारा नियुक्त किया गया प्रशासक उसका काम सँभालता है।

वार्ड :- नगर पंचायत, नगर पालिका परिषद् अथवा नगर निगम के सदस्यों के चुनाव के लिए नगर क्षेत्र को खण्डों या भागों में विभाजित कर दिया जाता है, इस खण्ड या भाग को वार्ड कहते हैं

SACHIN ACADEMY 9956697782

जिला प्रशासन

- **अधिकारी व कर्मचारी : -** यह जनप्रतिनिधियों की तरह जनता द्वारा निश्चित समय के लिए नहीं चुने जाते हैं बल्कि ये विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं एवं चयन प्रक्रिया द्वारा चयनित किए जाते हैं। ये 60 वर्ष की आयु तक अपने पद पर कार्यरत रहते हैं।
- राज्य सरकार द्वारा बनाए गए नियम-कानून और योजनाओं को जिलाधीश, तहसीलदार और लेखपाल जिले में लागू करते हैं। वे राज्य सरकार द्वारा दिए गए आदेशों का पालन करते हैं। वे स्वयं कोई नियम-कानून या नीति नहीं बदल सकते हैं, न ही कोई नया कानून या योजना बना सकते हैं।

जिला प्रशासन के कार्य

1. जिले में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखना।
2. भूमि व्यवस्था
3. नागरिक सुविधा व सभी को विकास के समान अवसर देना।

भारत की विदेश नीति

किसी भी देश की विदेश नीति का उद्देश्य अपने देश के हितों की रक्षा करना है। सबसे पहले वह अपने पडोसी देशों की ओर देखता है और उनके साथ मित्रता एवं सहयोग का भाव रखना चाहता है इससे वह विश्व के सभी देशों की स्थिति को जानने का प्रयास करता है। उसी के आधार पर अपनी विदेश नीति निश्चित करता है।

गुट निरपेक्षता) Non Alignment)

भारत ने शांतिपूर्ण एवं स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने का निश्चय किया। शांतिपूर्ण और स्वतंत्रता की यह विदेश नीति ही गुट निरपेक्षता की नीति में बदल गई।

गुट निरपेक्षता का अर्थ है कि भारत न तो किसी गुट में शामिल होगा और न किसी देश के साथ सैनिक संधियाँ करेगा।

SACHIN ACADEMY 9955697782

पंचशील सिद्धान्त

देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं०जवाहर लाल नेहरू किसी भी राष्ट्र के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप करने के विरुद्ध थे। उनके इन्हीं विचारों से 1954 में पाँच सिद्धान्त बनाए गए जिन्हें पंचशील के नाम से जाना जाता है। ये हमारी विदेश नीति के आधार हैं।

ये सिद्धान्त इस प्रकार हैं

- एक दूसरे की राज्य की सीमा एवं उनकी प्रभुसत्ता का सम्मान किया जाए।
- एक दूसरे के भू-भाग पर आक्रमण न किया जाए।
- एक दूसरे के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप न किया जाए।
- समानता और पारस्परिक लाभ को ध्यान में रखा जाए।
- शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना का पालन किया जाए।

निःशस्त्रीकरण की नीति

विश्व में शांति बनाए रखने के लिए हमारे देश ने निःशस्त्रीकरण) शस्त्रों को कम करना (की नीति का समर्थन किया। शस्त्रों की होड़ में युद्ध की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। भारत का विचार है कि यदि शस्त्र एवं सेना में अधिक व्यय न किया जाए तो विश्व में तनाव कम होगा। इसके अतिरिक्त निःशस्त्रीकरण से जितने धन की बचत होगी उसका उपयोग जनकल्याण के कार्यों में हो सकेगा।

- भारत की विदेश नीति गुट निरपेक्षता, पंचशील, निःशस्त्रीकरण की नीति का समर्थन करती है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

वैश्विक समुदाय एंव भारत

विश्वयुद्ध

- पहला विश्वयुद्ध सन् 1914 में प्रारम्भ हुआ था जो सन् 1918 तक चला। इसमें भाग लेने
- वाले देश थे -एक तरफ आस्ट्रिया, हंगरी, जर्मनी, टर्की तथा दूसरी तरफ सर्बिया, इंग्लैण्ड,
- फ्रांस, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका।

- जर्मनी द्वारा 1 सितंबर, 1939को पोलैंड पर आक्रमण के दो दिन बाद ब्रिटेन और फ्राँस ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। इस घटना ने द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत कर दी। इस युद्ध में भाग लेने वाले देशों में एक ओर इंग्लैण्ड, फ्रांस और रूस तथा दूसरी ओर जर्मनी, जापान और इटली थे।

संयुक्त राष्ट्र संघ

- संसार के अनेक देशों की बर्बादी देखकर यह अनुभव किया गया कि भविष्य में ऐसे युद्ध न हो। संसार में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए विभिन्न राष्ट्रों ने अमेरिका के सेन फ्रान्सिस्को नगर में 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की ।
- दक्षिण सूडान को 193वें देश के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ में सम्मिलित किया गया।
- शुरू में इस संघ में केवल 51 राष्ट्र सदस्य थे । जिसमें भारत भी शामिल था। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ में 193 सदस्य हैं।
- संयुक्त राष्ट्र संघ ने 10 दिसम्बर, 1948 को मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की इसलिए प्रत्येक वर्ष 10 दिसम्बर को 'मानवाधिकार दिवस' (Human Rights Day) मनाया जाता है।

SACHIN ACADEMY
9955697782

संयुक्त राष्ट्र संघ के अंग

संयुक्त राष्ट्र संघ के छ :अंग हैं

- महासभा
- सुरक्षा परिषद्
- आर्थिक एवं सामाजिक परिषद्
- न्याय परिषद्
- अंतरराष्ट्रीय न्यायालय
- सचिवालय

1. महासभा (General Assembly)

- संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य महासभा के सदस्य होते हैं। प्रत्येक राष्ट्र सदस्य महासभा में अधिक से अधिक पाँच प्रतिनिधि भेज सकता है किन्तु मतदान के समय एक राष्ट्र एक ही मत दे सकता है।
- महासभा में छ :भाषाओं में कार्य किया जाता है। ये भाषाएँ हैं - अंग्रेजी, चीनी स्पेनिश, रूसी, अरबी, फ्रेंच
- हमारे देश की श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित महासभा की अध्यक्ष रह चुकी हैं।

2. सुरक्षा परिषद

- सुरक्षा परिषद में 15 सदस्य होते हैं। इनमें से 5 देश स्थाई सदस्य हैं। स्थाई सदस्य राष्ट्र है - 1. चीन, 2. फ्रांस, 3. रूस, 4. संयुक्त राज्य अमेरिका, 5. ब्रिटेन

- शेष 10 अस्थाई सदस्य केवल 2 वर्षों के लिए महासभा से चुने जाते हैं।

3. आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (Economic And Social Council)

इसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान करना है। इसका उद्देश्य यह भी है कि जाति, भाषा, या धर्म के आधार पर कोई भेदभाव न किया जाए। मानव अधिकार के प्रति विश्व का सम्मान हो।

4. न्याय परिषद् (Trusteeship Council)

विश्व युद्ध के बाद ग्यारह ऐसे राज्य थे जिन पर दूसरे देश का शासन था। इस न्यास परिषद् का उद्देश्य ऐसे ग्यारह राज्यों को स्वतंत्र कराने में सहायता देना था जिसमें वह सफल भी हुआ।

5. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (International Court of Justice)

- इस न्यायालय में 15 न्यायाधीश होते हैं जो नौ वर्ष के लिए चुने जाते हैं। यह नीदरलैण्ड के 'हेग' नामक नगर में स्थित है।
- अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में भारतीय न्यायशास्त्री श्री बी.एन.राउ, श्री नगेन्द्र सिंह एवं श्री R.S पाठक रह चुके हैं। वर्तमान में श्री दलबीर भंडारी न्यायाधीश हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

6. सचिवालय (Secretariat)

- ये संयुक्त राष्ट्र का दैनिक कार्य करता है। इसका सर्वोच्च अधिकारी महासचिव कहलाता है जिसे सुरक्षा परिषद की सहमति से महासभा 5 वर्ष के लिए चुनती है। वर्तमान में इसके महासचिव पुर्तगाल के एंटोनियो गुटेरेस हैं।

भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ से मिला सहयोग

- खाद्य और कृषि संगठन (FAO) ने भारत के तराई प्रदेश को कृषि योग्य बनाने में सहायता की। राजस्थान के भूमि-क्षरण को रोकने का प्रयास कर रहा है।
- यनेस्को (UNESCO) शिक्षा के प्रसार में सहायता कर रही है।
- विश्व बैंक (World Bank) ने हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के लिए ऋण दिए हैं। जैसे-शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सड़क।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य को उन्नत करने में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने अत्यधिक कार्य किया है। मलेरिया, पोलियो उन्मूलन विश्व स्वास्थ्य संगठन की देन है।
- यूनीसेफ (UNICEF) बच्चों और महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण के लिए कार्य करती है।
- यूनीफेम (UNIFEM) महिला सशक्तीकरण एवं लैंगिक समानता को प्रोत्साहन के लिए वित्तीय एवं तकनीकी सहायता देने का कार्य करती है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

दक्षेस (सार्क)

1985 में दक्षिण एशिया के सात देशों से मिलकर दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) बना। इनका स्थायी कार्यालय काठमाण्डू में है। नवम्बर, 2005 में अफगानिस्तान दक्षेस में सम्मिलित हुआ। अप्रैल 2007 में इसे पूर्ण सदस्य का दर्जा मिला जिससे वर्तमान में दक्षेस की सदस्य संख्या आठ हो गई है।

दक्षेस के आठ देश

नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका, मालदीव ,अफगानिस्तान

दक्षिणपूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान)

आसियान की स्थापना 1967 में हुई। वर्तमान में इसकी सदस्य संख्या 10 है। आसियान तेजी से बढ़ता हुआ एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन है। भारत इस संगठन का औपचारिक सदस्य नहीं है,

समानता (Equality)

- 'समानता', लोकतंत्र की मुख्य विशेषता हैं। भारत जैसे एक लोकतंत्रीय देश में सब वयस्कों को मत देने का अधिकार है चाहे उनका धर्म कोई भी हो, शिक्षा का स्तर या जाति कुछ भी हो, वे गरीब हों या अमीर। इसे, **सार्वभौमिक वयस्क** मताधिकार (Universal adult franchise) कहा जाता हैं।
- शासन ने संविधान द्वारा मान्य किए गए समानता के अधिकार को **दो तरह** से लागू किया है। - पहला, कानून के द्वारा और दूसरा, सरकार की योजनाओं व कार्यक्रमों द्वारा सुविधाहीन समाजों की मदद करके।

मध्यहन भोजन की व्यवस्था (Mid-day meal arrangement)

मध्यहन भोजन की व्यवस्था। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सभी सरकारी प्राथमिक स्कूलों के बच्चों को **दोपहर** का भोजन स्कूल द्वारा दिया जाता है। यह योजना भारत में सर्वप्रथम **तमिलनाडु** राज्य में प्रारंभ की गई और 2001 में उच्चतम न्यायालय ने सभी राज्य सरकारों को इसे अपने स्कूलों में छह माह के अंदर आरंभ करने के निर्देश दिए।

बी.आर. अंबेडकर

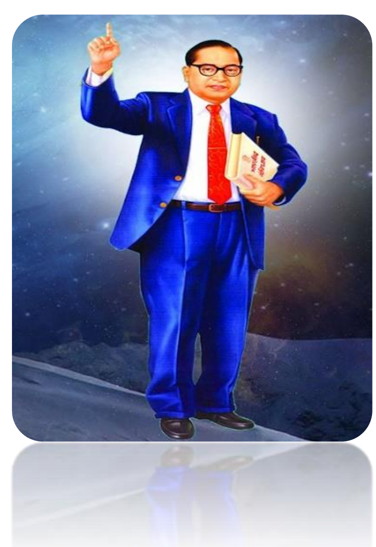

- बी.आर. अंबेडकर अपने आत्मसम्मान को दाँव पर लगा कर जीवित रहना अशोभनीय है। **आत्मसम्मान** (self respect) जीवन का सबसे जरूरी हिस्सा है। इसके बिना व्यक्ति नगण्य है। आत्मसम्मान के साथ जीवन बिताने के लिए व्यक्ति को कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करनी होती है।
- केवल कठिन और निरंतर संघर्ष से ही व्यक्ति बल, विश्वास और मान्यता प्राप्त कर सकता है मनुष्ये नाशवान है। हर

SACHIN ACADEMY 9955697782

व्यक्ति को किसी-न-किसी दिन मरना है, परंतु व्यक्ति को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह अपने **जीवन का बलिदान**, **आत्मसम्मान** के **उच्च आदर्शों** को विकसित करने और अपने मानव जीवन को बेहतर बनाने में करेगा। किसी साहसी व्यक्ति के लिए आत्मसम्मान रहित जीवन जीने से अधिक अशोभनीय और कुछ नहीं है।

➢ दलित

दलित वह शब्द है जो नीची कही जाने वाली जाति के लोग अपनी पहचान के रूप में इस्तेमाल करते हैं। वे इस शब्द को **'अछूत'** से ज्यादा पसंद करते हैं। दलित का मतलब है जिन्हें 'दबाया गया', 'कुचला गया'। दलितों के अनुसार यह शब्द दर्शाता है कि कैसे **सामाजिक पूर्वाग्रहों (Social prejudices)** और भेदभाव ने दलित लोगों को 'दबाकर रखा है'। सरकार ऐसे लोगों को **'अनुसूचित जाति' (scheduled caste)** के वर्ग में रखती है।

- ➢ जाति के आधर पर कक्षा में किसी बच्चे को दूसरे बच्चों से अलग बैठाना भेदभाव का एक रूप है।
- ➢ **डा. भीम राव अंबेडकर** को भारतीय संविधन के पिता एवं दलितों के सबसे बड़े नेता के रूप में जाना जाता है। डा. अंबेडकर ने दलित समुदाय के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी थी। **उनका महार जाति** में जन्म हुआ था जो अछूत मानी जाती थी। महार लोग गरीब होते थे, उनके पास जमीन नहीं होती थी और उनके बच्चों को वही काम करना पड़ता था जो वे खुद करते थे। उन्हें गाँव के बाहर रहना पड़ता था और गाँव के अंदर आने की इजाजत नहीं थी। उन्होंने धर्म परिवर्तन करके **बौद्ध धर्म** को अपनाया। उनका मानना था कि दलितों को जाति प्रथा के खिलाफ अवश्य लड़ना चाहिए।

SACHIN ACADEMY 9953697782

ओमप्रकाश वाल्मीकि

ओमप्रकाश वाल्मीकि (1950-2013) एक प्रसिद्ध दलित लेखक हैं। अपनी आत्मकथा **जूठन** में वे लिखते हैं- स्कूल में दूसरों से दूर बैठना पड़ता था, वह भी जमीन पर। अपने बैठने की जगह तक आते-आते चटाई छोटी पड़ जाती थी। कभी-कभी तो एकदम पीछे दरवाजे के पास बैठना पड़ता था जहाँ से बोर्ड पर लिखे अक्षर धुंधले दिखते थे। कभी-कभी

बिना कारण पिटाई भी कर देते थे। इस प्रकार के वयवहारो के कारण ओमप्रकाश के पिता ने स्कूल मास्टर से कहा

मास्टर हो...इसलिए जा रहा हूँ...पर इतना याद रखिए मास्टर...

यो...यहीं पढ़ेगा...इसी मदरसे में। और यो ही नहीं, इसके बाद और भी आवेंगे पढ़ने कू

रोज़ा पार्क्स (Rosa Parks)

रोशा पार्क्स, एक **अफ़्रीकी -अमेरिकन** औरत, जिनकी एक विद्रोही प्रतिक्रिया ने अमेरिकी इतिहास की दिशा बदल दी। 1 दिसंबर 1955 को दिन भर काम करके थक जाने के बाद बस में उन्होंने अपनी सीट एक गोरे व्यक्ति को देने से मना कर दिया। उस दिन उनके इंकार से अफ़्रीकी -अमेरिकनों के साथ असमानता को लेकर एक विशाल आंदोलन प्रारंभ हो गया, जो नागरिक अधिकार आंदोलन (**सिविल राइट्स मूवमेंट**) कहलाया। 1964 के नागरिक अधिकार अधिनियम ने नस्ल, धर्म और राष्ट्रीय मूल के आधार पर भदे भाव का निषेध कर दिया।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 15 के अंश (Excerpt from Article 15 of the Indian Constitution)

धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध-

(1) राज्य, किसी नागरिक के सिर्फ केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्मस्थान या इनमें से किसी के आधार पर कोई विभेद **(Discrimination)** नहीं करेगा।

(2) कोई नागरिक केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग जन्मस्थान या इनमें से किसी के आधार पर -

(क) दुकानों, सार्वजनिक भोजनालयों, होटलों और सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों में प्रवेश या

(ख) पूर्णतः या भागतः **(partly)** **राज्य-निधि** **(State funds)** से पोषित या साधारण जनता के प्रयोग के लिए समर्पित कुओं, तालाबों, स्नानघाटों, सड़कों और सार्वजनिक समागम के

SACHIN ACADEMY 9955697782

स्थानों के उपयोग, के संबंध में किसी भी निर्योग्यता, दायित्व, निर्बंधन या शर्त के अधीन नहीं होगा।

- **संसद हमारे लोकतंत्र** का आधार स्तंभ है और हम अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से उसमें प्रतिनिधित्व पाते हैं।
- **पूरे देश के लिए कानून** संसद में बनाए जाते हैं।
- **संचारणीय बीमारियाँ (Communicable diseases) पानी** के द्वारा एक से दूसरे को लगती हैं। इन बीमारियों में से 21% जलजनित (Waterborne) होती हैं। जैसे-हैजा, पेट के कीड़े और हैपेटाइटिस

स्वास्थ्य सेवाएँ (Healthcare)

सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ (Public health services)

- संसार भर में भारत में **सर्वाधिक** चिकित्सा महाविद्यालय हैं और यहाँ सबसे अधिक डॉक्टर तैयार किए जाते हैं। लगभग हर वर्ष 15000 नए डॉक्टर योग्यता प्राप्त करते हैं।
- भारत विश्व का दवाइयाँ निर्मित करने वाला **तीसरा बड़ा देश** है और यहाँ से भारी मात्रा में दवाइयों का निर्यात होता है।
- हमारे देश में स्वास्थ्य की स्थिति कितनी खराब है। सकारात्मक विकास के बाद भी हम जनता को उचित स्वास्थ्य सेवाएँ देने में असमर्थ हैं। यह **विरोधाभासजनक** (paradox) स्थिति है।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ स्वास्थ्य केन्द्रो व अस्पतालों की एक शृंखला है। जो सरकार द्वारा चलाई जाती है। ये केंद्र व अस्पताल आपस में जुड़े हुए हैं। स्वास्थ्य सेवाओं का अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य है बीमारियों जैसे टी.बी., मलेरिया, पीलिया, दस्त लगना, हैजा, चिकनगुनिया, आदि को फैलने से रोकना।

निजी स्वास्थ्य सेवाएँ (Private health facilities)

SACHIN ACADEMY 9955697782

हमारे देश में कई तरह की निजी स्वास्थ्य सेवाएँ पाई जाती हैं। बड़ी संख्या में डॉक्टर अपने निजी दवाखाने चलाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी (आर.एम.पी.) मिल जाते हैं। शहरी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में डॉक्टर हैं जिनमें से बहुत-से विशेषज्ञ की सेवाएँ प्रदान करते हैं। निजी रूप से चलाए जा रहे अस्पताल व **नर्सिंग होम** भी हैं। काफी संख्या में प्रयोगशालाएँ **(laboratories)** हैं, जो परीक्षण करती हैं व विशिष्ट सुविधाएँ उपलब्ध कराती हैं, जैसे- **एक्सरे, अल्ट्रासाउंड**, आदि। ऐसी दुकानें भी हैं, जहाँ से हम दवाइयाँ खरीद सकते हैं।

केरल का अनुभव

1996 में केरल सरकार ने राज्य में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए। राज्य के पूरे बजट का 40 प्रतिशत पंचायतों को दे दिया गया। इससे पंचायतें अपनी आवश्यकताओं को यूजनाबद्ध कर उनकी पूर्ति कर सकती थीं।

कोस्टारिका

कोस्टारिका को मध्य अमेरिका का सबसे स्वस्थ देश माना जाता है। इसका मुख्य कारण उसके संविधान में निहित है। कई वर्षों पहले कोस्टारिका ने एक बहुत महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया था कि वे देश में **सेना नहीं रखेंगे।** इससे उन्हें सेना पर व्यय किए जाने वाले धन को लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य आधारभूत जरूरतो पर खर्च करने में मदद मिली। कोस्टारिका की सरकार मानती है कि देश के विकास के लिए देश का स्वस्थ होना शरूरी है

- **भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् (The Medical Council of India's)** का आयुर्विज्ञान नैतिक संहिता कहता है जहां तक संभव हो, प्रत्येक चिकित्सक को औषधें के **जेनेरिक नाम** ही उपचार पर्ची में लिखने चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि यह युक्तियुक्त और उपयुक्त रूप में हों।
- **जेनेरिक नाम दवाइयों** के रसायनिक नाम **(chemical names)**। वे दवाइयों में प्रयुक्त सामग्रियों की पहचान करने में मदद करते हैं। वे विश्व स्तर पर मान्यता

SACHIN ACADEMY 9955697782

प्राप्त हैं। उदाहरण के लिए, एसिटाइल सालिसैलिक एसिड एस्पिरिन का जेनेरिक नाम है।

कर (tax)

सरकार कर से प्राप्त धन का उपयोग विभिन्न प्रकार की **सार्वजनिक सेवाओं (Public services)** को मुहैया करवाने में खर्च करती है, जिससे सभी नागरिकों को फायदा होता है। प्रतिरक्षा, पुलिस, न्यायिक व्यवस्था, राजमार्ग इत्यादि कुछ सेवाओं से सभी नागरिकों को लाभ होता है। अन्यथा, इन सेवाओं की व्यवस्था स्वयं नागरिक नहीं कर सकते। करों से ही कुछ **विकासात्मक (Developmental)** कार्यक्रम एवं सेवाएँ उपलब्ध होती है जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक कल्याण, व्यवसायिक प्रशिक्षण इत्यादि, जिनसे जरूरतमंद नागरिकों को लाभ मिलते हैं। करों से प्राप्त धन का उपयोग कुछ प्राकृतिक **आपदाओं (Disasters)** जैसे बाढ़, भूकम्प, सुनामी आदि मामलों में राहत एवं पुर्नवास के लिए भी किया जाता है। **अन्तरिक्ष**, **परमाणु एवं प्रक्षेपास्त्रों (Missiles)** से सम्बंधित कार्यक्रमों को भी करों के द्वारा प्राप्त राजस्व से ही चलाया जाता है।

विधानसभा (Legislative Assembly)

विधानसभा के सदस्य को 'विधायक' **(एम.एल.ए)** कहा जाता है। एम.एल.ए. **'मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव असेंबली'** का संक्षिप्त रूप

हिमाचल प्रदेश की विधानसभा में विधायकों के 68 निर्वाचन क्षेत्र हैं।

- **राज्य का प्रमुख 'राज्यपाल' (Governor)** कहलाता है। उसकी नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए की जाती है कि राज्य सरकार संविधान के नियमों-अधिनियमों के अनुसार अपना कामकाज चलाए।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **चुनाव के बाद राज्य** का राज्यपाल मुख्यमंत्राी और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है।कई बार सत्ताधारी दल किसी एक पार्टी का न होकर कई पार्टियों से मिलकर बनता है। इसे **गठबंधन** **(coalition)** सरकार कहते हैं

विधानसभा ऐसा स्थान होता है जहाँ सभी विधायक, चाहे वे **सत्ताधारी दल** **(ruling party)** के हों अथवा **विरोधी दल** **(opposition)** के, विभिन्न विषयों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होते हैं। विधानसभा की बहसों में विधायक अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं, संबंधित विषय पर प्रश्न पूछ सकते हैं या सुझाव दे सकते हैं इसके बाद मंत्री प्रश्नों के उत्तर देते हैं और सदन को आशवस्त करते हैं कि जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। **मुख्यमंत्री तथा अन्य मंत्रियों** को निर्णय लेने होते हैं हालाँकि जो भी निर्णय लिए जाते हैं, उन्हें विधानसभा के सदस्यों द्वारा अनुमोदित किया जाना होता है।

लोकतंत्र में विधानसभा सदस्य, मंत्रियों व मुख्यमंत्री से प्रश्न पूछ सकते हैं

'सरकार' (Government)

सामान्य भाषा में 'सरकार' शब्द से तात्पर्य शासन के विभिन्न विभागों और मंत्रियों से होता है, जो उनके प्रभारी हैं। इन सबका सामूहिक प्रमुख 'मुख्यमंत्री' होता है। सही मायने में तो यही सरकार का कार्यकारी हिस्सा यानी **कार्यपालिका** **(executive part)** कहलाता है। दूसरी तरफ सारे विधायक, जो विधानसभा में एकत्र होते हैं, **विधायिका** **(Legislature)** कहलाते हैं।

- **निर्वाचन क्षेत्र (Constituency) इसका तात्पर्य** एक निश्चित क्षेत्र से है, जहाँ रहने वाले सब मतदाता अपना प्रतिनिधि (Representative) चुनते हैं। उदाहरण के लिए, यह कोई पंचायत का वार्ड या वह क्षेत्र हो सकता है, जो **विधानसभा सदस्य** चुनता है।
- **सामोआ द्वीप प्रशांत महासागर** के दक्षिण में स्थित छोटे-छोटे द्वीपों के समूह का ही एक भाग है।
- **हरियाणा व तमिलनाडु की** महिलाएँ जिनका सर्वेक्षण किया गया- घर के अंदर व बाहर दोनों जगह काम करती हैं। इसे प्रायः महिलाओं के काम के **दोहरे बोझ** के रूप में जाना जाता है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

❖ **पूरे देश के कई गाँवों में शासन** ने आँगनवाड़ियाँ और बालवाड़ियाँ खोली हैं। शासन ने एक कानून बनाया है, जिसके तहत यदि किसी संस्था में महिला कर्मचारियों की संख्या 30 से अधिक है, तो उसे वैधनिक रूप से **बालवाड़ी (क्रेश)** की सुविध देनी होगी।

महिलाओ के कार्य

- भारत में **83.6 प्रतिशत** महिलाएँ खेतों में काम करती हैं। उनके काम में पोधो रोपना, खरपतवार निकालना, फसल काटना और कुटाई करना शामिल हैं।
- **रेल का इंजन** आदमी चलाते हैं। पर झारखंड के एक गरीब आदिवासी परिवार की 27 वर्षीय महिला **लक्ष्मी लाकरा** ने इस धरा का रुख बदल दिया है। उत्तरी रेलवे की वह पहली महिला इंजन चालक है।
- **रमाबाई** (1858-1922) महिला-शिक्षा की ये योद्धा स्वयं कभी स्कूल नहीं गईं, पर अपने माता-पिता से उन्होंने पढ़ना-लिखना सीख लिया। उन्हें **पंडिता की उपाधि (title)** दी गई, क्योंकि वे संस्कृत पढ़ना-लिखना जानती थीं जो उस समय की औरतों के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। औरतों को तब यह ज्ञान अर्जित करने की अनुमति नहीं थी। उन्होंने 1898 में, पुणे के पास **खेड़गाँव** में एक मिशन स्थापित किया, जहाँ विधवा स्त्रियों और गरीब औरतों को पढ़ने-लिखने तथा स्वतंत्र होने की शिक्षा दी जाती थी। उन्हें लकड़ी से चीजें बनाने, छापाखाना चलाने जैसी कुशलताये भी सिखाई जाती थीं जो वर्तमान में भी लड़कियों को कम ही सिखाई जाती हैं।
- **राससुंदरी देवी** (1800-1890) दो सौ वर्ष पूर्व पश्चिमी बंगाल में पैदा हुई थीं। साठ वर्ष की अवस्था में उन्होंने बांग्ला भाषा में अपनी आत्मकथा लिखी। उनकी पुस्तक **आमार जीबोन** किसी भारतीय महिला द्वारा लिखित पहली आत्मकथा **(Autobiography)** है। राससुंदरी देवी एक धनवान जमींदार परिवार की गृहिणी थीं। उस समय लोगों का विश्वास था कि यदि लड़की लिखती-पढ़ती है, तो वह पति के लिए दुर्भाग्य लाती है और विध्वा हो जाती है। इसके बावजूद उन्होंने अपनी शादी के बहुत समय बाद स्वयं ही छुप-छुपकर लिखना-पढ़ना सीखा

SACHIN ACADEMY 9955697782

रुकैया सखावत हुसैन और लेडीलैंड का उनका सपना

रुकैया सखावत हुसैन अंग्रेजी भाषा के कौशल का अभ्यास करने के लिए उन्होंने एक उल्लेखनीय कहानी लिखी, जिसका शीर्षक था **सुल्ताना का सव्पन** कहानी में सुल्ताना नामक एक स्त्री की कल्पना की गई थी, जो लेडीलैंड नाम की एक जगह पहुँचती है। **लेडीलैंड** ऐसा स्थान था, जहाँ पर स्त्रिायों को पढ़ने, काम करने और आविष्कार करने की स्वतंत्राता थी रुकैया सखावत हुसैन उस समय स्त्रिायों के हवाई जहाज और कारें चलाने का सव्पन देख रहीं थीं, जब लड़कियों को स्कूल तक जाने की अनुमति नहीं थी।

- **सन् 2006 में एक कानून** बना है, जिससे घर के अंदर शारीरिक और मानसिक हिंसा को भोग रही औरतों को **कानूनी सुरक्षा** दी जा सके।

महिला आंदोलन

- न्याय के अन्य मुद्‌दों व औरतों के साथ **बंधुत्व व्यक्त** करना (Showing Solidarity) भी महिला आंदोलन का ही हिस्सा है।
- हर साल 14 अगस्त को वाघा में भारत-पाकिस्तान की सीमा पर हजारो लोग इकट्‌ठा होते हैं और एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। **8 मार्च**, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को दुनियाभर की औरतें अपने संघर्षों को तजा करने और जश्न मनाने के लिए इकट्‌ठी होती हैं।
- महिलाओं द्‌वारा मताधिकार के लिए किए गए संघर्ष ने प्रथम विश्व युद्‌ध के दौरान और मजबूती पकड़ी। इस आंदोलन को महिला मताधिकार आंदोलन कहते हैं और अंग्रेजी में इसे '**सफ्रेज** मूवमेंट' कहते हैं। 'सफ्रेज' का मतलब होता है **वोट देने का अधिकार।**
- **अमरीका** में औरतों को वोट देने का अधिकार **1920 में मिला**, जबकि **इंग्लैंड** की औरतों को यह अधिकार कुछ सालों बाद 1928 में मिला।

SACHIN ACADEMY 9955697782

मीडिया

- मीडिया अंग्रेजी के **'मीडियम'** शब्द का बहुवचन है और इसका तात्पर्य उन विभिन्न तरीकों से है, जिनके द्वारा हम समाज में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। मीडियम का अर्थ है, **माध्यम**। क्योंकि मीडिया का संदर्भ संचार माध्यमों से है, इसीलिए हर चीज, जैसे - फोन पर बात करने से लेकर टी.वी. पर शाम के समाचार सुनने तक को मीडिया कहा जा सकता है।
- 1940 के दशक में **इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर** के आ जाने से पत्राकारिता की दुनिया में एक बड़ा बदलाव आया।
- **यंत्र (televisor),** टेलीविजन का प्रारंभिक रूप था। इसका आविष्कार जॉन एल बैर्ड ने किया इस यंत्र के द्वारा उन्होंने **रॉयल इंस्टीट्यूट** के समक्ष अपने आविष्कार का प्रदर्शन किया था।
- यदि लोग चाहें, तो इन समाचारों के आधार पर कार्रवाई भी कर सकते हैं। ऐसा वे संबंधित मंत्री को पत्र लिखकर, **सार्वजनिक विरोध (Public protest)** आयोजित करके, हस्ताक्षर अभियान आदि चलाकर सरकार से पुनः उसके कार्यक्रम पर विचार करने का आग्रह करके कर सकते हैं।
- संचार माध्यम स्वतंत्र नहीं हैं। इसके मुख्यतः दो कारण हैं। पहला कारण है सरकार का उन पर नियंत्रण। जब सरकार, समाचार के किसी अंश, फिल्म के किसी दृश्य या गीत की किसी अभिव्यक्ति को जनसमुदाय तक पहुँचने से प्रतिबंधित करती है तो इसे **सेंसरशिप** कहा जाता है। भारत के इतिहास में ऐसे समय भी आए है जब सरकार ने संचार माध्यमों के ऊपर सेंसर लगाया। इसमें सबसे बुरा समय 1975-77 तक, आपातकाल **(Emergency)** का था। समाचारपत्र संतुलित विवरण देने में असपफल रहते हैं। इसके कारण बहुत जटिल हैं। संचार माध्यमों के विषय में शोध् करने वाले लोगों का कहना है कि ऐसा इसीलिए है, क्योंकि संचार माध्यमों पर व्यापारिक प्रतिष्ठानों का नियंत्राण हैं। यदि कभी सरकार चाहे, तो संचार माध्यम को किसी घटना की खबर छापने से रोक सकती है। इसे **सेंसरशिप** कहा जाता है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- सरकार व निजी संस्थाएँ ऐसे विज्ञापन भी बनाती हैं, जिनसे समाज में किसी बड़े संदेश का प्रसारण हो सके । ये **सामाजिक विज्ञापन (Social advertising)** कहलाते है

व्यापारी (Trader)

लोग, जो वस्तु के उत्पादक और वस्तु के उपभोक्ता के बीच में होते हैं, उन्हें व्यापारी कहा जाता है। पहले **थोक व्यापारी** (Wholesaler) बड़ी मात्रा या संख्या में सामान खरीद लेता है। जैसे - सब्जियों का थोक व्यापारी कुछ किलो सब्जी नहीं खरीदता है बल्कि वह बड़ी मात्रा में 25 से 100 किलो तक सब्जिया खरीद लेता है। इन्हें वह दूसरे व्यापारियों को बेचता है। यहाँ खरीदने वाले और बेचने वाले दोनों व्यापारी होते हैं। व्यापारियों की लंबी शृंखला का वह अंतिम व्यापारी जो अंततः वस्तुएँ उपभोक्ता को बेचता है, **खुदरा या फुटकर** व्यापारी **(retailer)** कहलाता है। यह वही दुकानदार होता है, जो आपको पड़ोस की दुकानों, साप्ताहिक बाजार या फिर शॉपिंग कॉम्पलेक्स में सामान बेचता मिलता है।

- **कुरनूल** (आंध्र प्रदेश) में है
- **तमिलनाडु में सप्ताह** में दो बार लगने वाला इरोड का कपड़ा बाजार संसार के विशाल बाजारों में से एक है

SACHIN ACADEMY 9955697782

बुनकर (Weaver)

1. बुनकर जो व्यापारियों के ऑर्डर के अनुसार कपड़ा बनाकर लाते हैं। ये व्यापारी देश व विदेश के वस्त्र निर्माताओं और **निर्यातकों (Exporters)** को उनके ऑर्डर के अनुसार कपड़ा उपलब्ध कराते हैं। ये सूत खरीदते हैं और बुनकरों को निर्देश देते हैं कि किस प्रकार का कपड़ा तैयार किया जाना है।

2. कपड़ा बुनने वाले बुनकर आस-पास के गाँवों में रहते हैं। वे इन व्यापारियों से सूत (Yarn) ले आते हैं। बुनाई करने के करघे रखने के लिए उन्होंने अपने घरों के पास ही व्यवस्था कर रखी है। बुनकर अपने परिवार के साथ करघों पर कई घंटों तक काम करते

हैं। बुनाई की अधिकतर ऐसी इकाइयों में 2 से लेकर 8 करघे तक होते हैं, जिन पर **सूत से कपड़ा** बुनकर तैयार किया जाता है। तरह-तरह की साड़ियाँ, तौलिए, शर्टिंग, औरतों की पोशाकों के कपड़े और चादरें इन करघों पर बनाई जाती हैं।

3. बुनकर तैयार किए हुए कपड़े को शहर में व्यापारी के पास ले आते हैं। व्यापारी यह हिसाब रखता है कि उन्हें कितना सूत दिया गया था और बुने हुए कपड़े का **भुगतान (payment)** उन्हें कर देता है।

'दादन व्यवस्था (Putting-out system)

व्यापारी और बुनकरों के बीच की यह व्यवस्था **'दादन व्यवस्था** का एक उदाहरण है, जहाँ व्यापारी कच्चा माल देता है और उसे तैयार माल प्राप्त होता है। भारत के अनेक क्षेत्रों में कपड़ा बुनाई के उद्योग में यह व्यवस्था प्रचलित है।

व्यवसायी या व्यापारियों की स्थिति बीच की है। बुनकरों की तुलना में उनकी कमाई अधिक हुई है, लेकिन निर्यातक की कमाई से बहुत कम है।कि दादन व्यवस्था में व्यापारी, बुनकरों को बहुत कम पैसा देते हैं

- **जिनिंग मिल वह फैक्टरी जहाँ रूई** के गोलों से बीज अलग किए जाते हैं। यहाँ पर रूई **(cotton)** को दबाकर गट्ठर भी बनाए जाते हैं, जो धागा बनाने के लिए भेज दिए जाते हैं।
- **इम्पेक्स गारमेंट फैक्टरी में** 70 कामगार हैं। उनमें से अधिकांश महिलाएँ हैं। इनमें से अधिकतर कामगारों को अस्थाई रूप से काम पर लगाया गया है।
- **भारत में यह एक वास्तविकता है** कि जो गरीब हैं, सामान्यतः दलित, आदिवासी और मुस्लिम समुदाय के हैं और इनमें से भी विषेशते महिलाएँ हैं।
- **2011 की जनगणना (Census)** के आँकड़े बताते हैं कि हमारी जनसंख्या में 48.5 प्रतिशत महिलाएँ हैं, 14.2 प्रतिशत मुसलमान हैं, 16.6 प्रतिशत दलित हैं और 8.6 प्रतिशत आदिवासी हैं

SACHIN ACADEMY 9955697782

‘तवा मत्स्य संघ’

- मध्य प्रदेश का ‘तवा मत्स्य संघ’ एक उदाहरण है, जहाँ लोग अपने अधिकार के लिए साथ खड़े हुए।‘ तवा मत्स्य संघ **मछुआरों की सहकारी समितियों** का एक संघ है और **सतपुड़ा** के जंगलों से विस्थापित **(displaced)** लोगों के अधिकारों के लिए लड़ रहा है। **छिंदवाड़ा** जिले की **महादेव पहाड़ियों** से निकलने वाली तवा नदी, **होशंगाबाद** में नर्मदा से मिलने के लिए बैतूल होती हुई आती है। तवा पर एक बाँध का निर्माण 1958 में आरंभ हुआ और 1978 में पूरा हुआ। जंगल के बड़े हिस्से के साथ ही बहुत-सी कृषि भूमि भी बाँध में डूब गई, जिससे जंगल के निवासी अपना सब कुछ खो बैठे। इनमें से कुछ **विस्थापितों** ने बाँध के आस-पास रहकर थोड़ी-बहुत खेती के अलावा मछली पकड़ने का व्यवसाय आरंभ किया। यह सब करके भी वे बहुत थोड़ा-सा कमा पाते थे।
- 1994 में सरकार ने तवा बाँध के क्षेत्र में मछली पकड़ने का काम निजी ठेकेदारों को सौंप दिया। इन ठेकेदारों ने स्थानीय लोगों को काम से अलग कर दिया और बाहरी क्षेत्र से सस्ते श्रमिकों को ले आए। ठेकेदारों ने गुंडे बुलाकर गाँव वालों को धमकियाँ देना भी आरंभ कर दिया, क्योंकि लोग वहाँ से हटने को तैयार नहीं थे। गाँव वालों ने एकजुट होकर तय किया कि अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ने और संगठन बनाकर सामने खड़े होने का वक्त आ गया है। इस तरह ‘तवा मत्स्य संघ’ नाम के संगठन को बनाया गया।
- **नवगठित** ‘तवा मत्स्य संघ’ **(टी.एम.एस)** ने सरकार से माँग की कि लोगों के जीवन निर्वाह के लिए बाँध में मछलियाँ पकड़ने के काम को जारी रखने की अनुमति दी जाए। यह माँग करते हुए **‘चक्का जाम** शुरू किया गया। उनके प्रतिरोध को देखकर सरकार ने पूरे मामले की समीक्षा के लिए एक समिति गठित की। समिति ने गाँव वालों के जीवन यापन के लिए उनको मछली पकड़ने का अधिकार देने की अनुशंसा की। 1996 में मध्य प्रदेश सरकार ने तय किया कि तवा बाँध के जलाशय से मछली पकड़ने का अधिकार यहाँ के विस्थापितों को ही दिया जाएगा। दो महीने बाद सरकार ने तवा मत्स्य संघ को बाँध में मछली पकड़ने के लिए पाँच वर्ष का **पट्टा (lease)** देना स्वीकार कर लिया। और इस तरह 2 जनवरी 1997 को तवा क्षेत्र के 33 गाँवों के लोगों के लिए ‘नया साल’ सही अर्थों में आरंभ हुआ।

SACHIN ACADEMY 9955697782

बाँध (Dam)

- नदी पर बाँध ऐसी जगह पर बनाया जाता है जहाँ बहुत मात्रा में पानी इकट्ठा किया जा सके। ऐसा करने से एक जलाशय बन जाता है और जैसे-जैसे उसमें पानी भरता है, जमीन का एक बड़ा क्षेत्र उसमें डूब जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नदी पर बनाए गए बाँध की दीवार ऊँची होती है और उससे रुका हुआ पानी एक बड़े इलाके में फैल जाता है। उत्तराखंड में टिहरी बाँध के बनने से कई इलाके डूब गए इस बाँध के कारण पुराना टिहरी शहर और 100 गाँव जिनमें से कुछ पूरी तरह और कुछ आंशिक रूप में पानी के नीचे समा गए। लगभग एक लाख लोग विस्थापित हो गए।
- **कर्नाटक** के **कृष्णाराजासागर** बाँध में भरा हुआ पानी कई जिलों में सिंचाई के काम आता है। इस पानी से बेंगलूरु शहर की ज़रूरतें भी पूरी होती हैं। तमिलनाडु के मेटूर बाँध में भरे हुए इसी नदी के पानी से राज्य के डेल्टा क्षेत्र में सिंचाई होती है। इन दोनों राज्यों के बीच **कावेरी नदी** के पानी को लेकर विवाद चल रहा है पिछले तीस सालों से दो राज्यों के बीच विवाद का मुद्दा रहने के बावजूद कावेरी शांत भाव से बहती रहती है कर्नाटक का कृष्णाराजासागर बाँध कावेरी नदी के **ऊपरी छोर (Upper end)** पर है और **तमिलनाडु** का **मेटूर** बाँध नदी के **निचले छोर (Lower end)** पर।

- **समता का मूल्य** लोकतंत्र के केंद्र में है।
- **2001 में लखनऊ** में 1500 से ज्यादा लोग महिलाओं के खिलाफ हिंसा का विरोध करने के लिए एक जन-सुनवाई में इकट्ठे हुए। इसमें प्रतिष्ठित महिलाओं की एक ज्यूरी बनाई गई और उन्होंने न्यायाधीशों की भूमिका निभाते हुए महिलाओं के खिलाफ हिंसा के 15 से ज्यादा प्रकरणों की सुनवाई की। लोगों की इस ज्यूरी ने इस सच्चाई को उभारने में मदद की कि कानून व्यवस्था में हिंसा के खिलाफ न्याय की माँग करने वाली महिलाओं को कितना कम सहयोग मिल पाता है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

लद्दाख

लद्दाख जम्मू और कश्मीर के पूर्वी हिस्से में पहाड़ियों में बसा एक रेगिस्तानी इलाका है। यहाँ पर बहुत ही कम खेती संभव है, क्योंकि इस क्षेत्र में बारिश बिल्कुल नहीं होती और यह इलाका हर वर्ष काफी लंबे समय तक बर्फ से ढँका रहता है। यहाँ के लोग एक खास किस्म की बकरी पालते हैं जिससे **पश्मीना** ऊन मिलता है। यह ऊन कीमती है, इसीलिए पश्मीना शाल बड़ी महँगी होती है। लद्दाख के रास्ते ही **बौद्ध धर्म** तिब्बत पहुँचा। लद्दाख को **छोटा तिब्बत** भी कहते हैं।

केरल

केरल भारत के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में बसा हुआ राज्य है। यह एक तरफ समुद्र से घिरा हुआ है और दूसरी तरफ पहाड़ियों से। इन पहाड़ियों पर विविध् प्रकार के मसाले जैसे **कालीमिर्च** **(pepper)**, **लौंग** **(cloves)**, **इलायची** **(cardamoms)** आदि उगाए जाते हैं। इन मसालों के कारण यह क्षेत्र व्यापारियों के लिए बहुत ही आकर्षक बना। सबसे पहले अरबी एवं यहूदी व्यापारी केरल आए। ऐसा माना जाता है कि **ईसा मसीह** के धर्मदूत **संत थॉमस** लगभग दो हजार साल पहले यहाँ आए। भारत में ईसाई धर्म लाने का श्रेय उन्हीं को जाता है।

- **जवाहरलाल नेहरू ने अपनी किताब भारत की खोज** में लिखा कि भारतीय एकता कोई बाहर से थोपी हुई चीज नहीं है, बल्कि यह बहुत ही गहरी है जिसके अंदर अलग-अलग तरह के विश्वास और प्रथाओं को स्वीकार करने की भावना है। इसमें विविध्ता को पहचाना और प्रोत्साहित किया जाता है। यह नेहरू ही थे

SACHIN ACADEMY
9956971

जिन्होंने भारत की विविध्ता का वर्णन करते हुए 'अनेकता में एकता'का विचार हमें दिया।

- **रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित हमारा राष्ट्रगान** भी भारतीय एकता की ही एक अभिव्यक्ति है।

- **संसार में आठ मुख्य धर्म** हैं। भारत में उन आठों धर्मो के अनुयायी यानी मानने वाले रहते हैं। यहाँ सोलह **सौ से ज्यादा भाषाएँ** बोली जाती हैं जो लोगों की मातृभाषाएँ हैं।
- **जिन बच्चो को पहले 'विकलांग'** **(disabled)** कहा जाता था। इस शब्द को बदलकर आज उनके लिए जो शब्द प्रयोग किए जाते हैं वे हैं - '**ख़ास जरूरतो** वाले बच्चे' **(Children with special needs)**।
- **जब हम सभी लोगों** को एक ही छवि में बाँध देते हैं या उनके बारे में पक्की धरणा बना लेते हैं, तो उसे **रूढ़िबद्ध (stereotypes)** धरणा कहते हैं।
- **राजतंत्रीय सरकार (Monarchy) उसे कहते है** जिसमे राजा या रानी के पास निर्णय लेने और सरकार चलने की शक्ति होती है।
- **1931 में यंग इंडिया पत्रिका** में लिखते हुए गांधी जी ने कहा था, "मैं यह विचार सहन नहीं कर सकता कि जिस आदमी के पास संपत्ति है वह वोट दे सकता है, लेकिन वह आदमी जिसके पास चरित्र है पर संपत्ति या शिक्षा नहीं, वह वोट नहीं दे सकता या जो दिनभर अपना पसीना बहाकर ईमानदारी से काम करता है वह वोट नहीं दे सकता क्योंकि उसने गरीब आदमी होने का गुनाह किया है...।"

<u>ग्राम पंचायत</u>

- एक ग्राम पंचायत कई वार्डों (छोटे क्षेत्रों) में बँटी हुई होती है। प्रत्येक वार्ड अपना एक प्रतिनिधि चुनता है जो **वार्ड पंच** के नाम से जाना जाता है। इसके साथ पंचायत क्षेत्र के लोग मिलकर **सरपंच** को चुनते हैं, जो पंचायत का मुखिया होता है। वार्ड पंच और सरपंच मिलकर ग्राम पंचायत का गठन **पाँच साल** के लिए करते हैं। ग्राम पंचायत का

SACHIN ACADEMY 9955697782

एक सचिव (Secretary) होता है जो ग्राम सभा का भी सचिव होता है। सचिव का चुनाव नहीं होता, उसकी सरकार द्वारा नियुक्ति की जाती है। सचिव का काम है ग्राम सभा एवं ग्राम पंचायत की बैठक बुलाना और जो भी चर्चा एवं निर्णय हुए हों उनका रिकॉर्ड रखना।

- ग्राम पंचायत पूरे गाँव के हित में निष्पक्ष रूप से काम कर सके इसमें ग्राम सभा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- ग्राम सभा की बैठक में ग्राम पंचायत अपनी योजनाएँ लोगों के सामने रखती है। ग्राम सभा पंचायत को मनमाने ढंग से काम करने से रोक सकती है। साथ ही, पैसों का दुरुपयोग एवं कोई गलत काम न हो, इसकी निगरानी भी करती है।

ग्राम पंचायत के काम

- सड़कों, नालियों, स्कूलों, भवनों, पानी के स्रोतों और अन्य सार्वजनिक उपयोग के भवनों का निर्माण और **रख-रखाव**
- स्थानीय **कर** (Tax) **लगाना** और इकट्ठा करना
- गाँव के लोगों को रोजगार देने संबंधी सरकारी **योजनाएं लागू** करना

ग्राम पंचायत की आमदनी के स्रोत

- घरों एवं बाज़ारों पर लगाए जाने वाले **कर** से मिलने वाली राशि
- विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा चलायी गई **योजनाओं की राशि** जो जनपद एवं जिला पंचायत द्वारा आती है।
- समुदाय के काम के लिए मिलने वाले **दान**

ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत **लोकतांत्रिक सरकार** (Democratic government) **का पहला स्तर** है। ग्राम पंचायत ग्राम सभा के प्रति जवाबदेह होती है क्योंकि ग्राम सभा के लोग ही उसको चुनते हैं। पंचायती राज व्यवस्था में लोगों की भागीदारी दो और स्तरों पर होती है। ग्राम पंचायत के बाद दूसरा स्तर **विकासखंड** का होता है। इसे जनपद पंचायत या **पंचायत समिति** कहते हैं। एक पंचायत समिति में कई ग्राम पंचायतें होती हैं। पंचायत

SACHIN ACADEMY 9955697782

समिति के ऊपर के जिला पंचायत या जिला परिषद होती है। यह तीसरा स्तर होता है। जिला परिषद एक जिले के स्तर पर विकास की योजनाएँ बनाती है।

पटवारी

जमीन को नापना और उसका **रिकॉर्ड रखना** पटवारी का मुख्य काम होता है। अलग-अलग राज्यों में इसको अलग-अलग नाम से जाना जाता है कहीं पटवारी, कहीं **लेखपाल**, कहीं कर्मचारी, कहीं ग्रामीण अधिकारी तो कहीं **कानूनगो** कहते हैं। पटवारियों के पास खेत नापने के अलग-अलग तरीके होते हैं। कई जगहों पर वह एक लंबी लोहे की जंजीर का इस्तेमाल करते हैं। इसे **जरीब** कहते हैं।

- **नगर निगम का काम यह सुनिश्चित** करना होता है कि शहर में बीमारियाँ न फैलें। यह स्कूल स्थापित करता है और उन्हें चलाता है। शहर में दवाखाने और अस्पताल चलाता है।
- **1994 में सूरत शहर में भयंकर प्लेग** (plague) फैला था।सूरत भारत के सबसे गंदे शहरों में एक था। प्लेग **हवा के जरिये** फैलता है। जिन लोगों को प्लेग हो जाए उन्हें दूसरों से अलग रखना पड़ता है। सूरत में उस साल बहुत से लोगों ने अपनी जान गँवाई। प्लेग के डर ने यह अनिवार्य कर दिया कि नगर निगम मुस्तैदी से काम करे। सारे शहर की अच्छी तरह से साफ़- सफाई हुई। अब सूरत का चंडीगढ़ के बाद भारत के सबसे साफ शहरों में **दूसरा स्थान** है।

तमिलनाडु

तमिलनाडु में समुद्र तट के पास एक गाँव है **कलपट्टु।** गाँव छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ है। सिंचित जमीन पर मुख्यतः **धान** की खेती होती है। ज्यादातर परिवार खेती के द्वारा अपनी आजीविका कमाते हैं। यहाँ आम और नारियल के काफी बाग हैं। कपास, गन्ना और केला भी उगाया जाता है। खेतिहर मजदूर ऐसे सभी परिवार अपनी कमाई के लिए दूसरों के खेतों पर निर्भर रहते हैं। इनमें से कई भूमिहीन होते हैं और बहुत से के पास जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े होते हैं।

- **चिजामी यह नागालैंड** के फेक जिले मे एक गाँव है यहाँ के रहने वाले लोग चखेसंग समुदाय के हैं। वे 'सीढ़ीनुमा'खेती करते हैं।
- **'कैटामरैन' मछुआरों** की एक खास तरह की छोटी नाव होती है।

नेपाल में लोकतंत्र (Democracy in Nepal)

नेपाल एक **राजतंत्र** **(Monarchy)** था। वहाँ राजा का शासन था। 1990 में बना नेपाल का पिछला संविधान इस सिद्धांत पर आधारित था कि शासन की सर्वोच्च सत्ता राजा के पास रहेगी। नेपाल के लोग कई दशक से लोकतंत्र की स्थापना के लिए जनआंदोलन करते चले आ रहे थे। इसी संघर्ष के फलस्वरूप 2006 में आखिरकार उन्हें राजा की सत्ता को खत्म करने में कामयाबी मिल गई। नेपाल के लोग लोकतंत्र के रास्ते पर चलना चाहते थे और इसके लिए उन्हें एक नया संविधान चाहिए था। वे पिछले संविधान को इसलिए नहीं अपनाना चाहते थे क्योंकि उसमें वे आदर्श नहीं थे जो वे नेपाल के लिए चाहते थे और जिनके लिए वे लड़ते रहे थे। **अप्रैल** 2006 में राजा को तृतीय संसद बहाल करके राजनीतिक दलों को सरकार बनाने का मौका देना पड़ा। 2008 में, राजतंत्र को खत्म करने के बाद नेपाल लोकतंत्र बन गया। नेपाल के लोगों ने 2015 में अपने देश के लिए एक नया संविधान अपनाया है।

- **अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों** की निरंकुशता **(Autocracy)** या दबदबे पर प्रतिबंध लगाना भी संविधान का महत्त्वपूर्ण कार्य है। यह दबदबा एक समुदाय द्वारा दूसरे समुदाय के ऊपर भी हो सकता है जिसे **अंतर-सामुदायिक** (**inter community**) वर्चस्व कहते हैं, या फिर एक ही समुदाय के भीतर कुछ लोग दूसरों को दबा सकते हैं, जिसे **अंतःसामुदायिक** (**intra community**) वर्चस्व कहते हैं

SACHIN ACADEMY 9955697782

भारत का संविधान (The Constitution of India)

- भारत में संविधान का गठन कैसे किया जाए यह काम किसी एक आदमी के वश का नहीं था। इसमें लगभग 300 लोगों ने योगदान दिया जो **1946 में** गठित की गई संविधान सभा के सदस्य थे। भावी संविधान के निर्माण वेफ लिए अगले तीन साल तक संविधान सभा की बैठके होती रहीं।
- बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर को भारतीय **संविधान का जनक (Father of constitution)** कहा जाता है। डॉ. भीम राव अम्बेडकर का विश्वास था कि संविधान सभा में उनकी हिस्सेदारी से अनुसूचित जातियों को संविधान के प्रारूप में कुछ सुरक्षात्मक व्यवस्था मिली है

अनुच्छेद 17 (Article 17)

संविधान के अनुच्छेद 17 के अनुसार **अस्पृश्यता या छुआछूत (Untouchability)** का उन्मूलन किया जा चुका है। इसका मतलब यह है कि अब कोई भी व्यक्ति दलितों को पढ़ने, मंदिरों में जाने और सार्वजनिक सुविधाओं का इस्तेमाल करने से नहीं रोक सकता। इसका मतलब यह भी है कि छुआछूत गलत है और लोकतांत्रिक सरकार इस तरह के आचरण को बर्दाश्त नहीं करेगी। लिहाजा अब अस्पृश्यता एक **दंडनीय अपराध** है।

अनुच्छेद 15 (Article 15)

अनुच्छेद 15 में कहा गया है कि भारत के किसी भी नागरिक के साथ धर्म, नस्ल, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएग

अनुच्छेद 21 (Article 21)

- संविधन के अनुच्छेद 21 की व्याख्या करने के बाद यह कहा था कि जीवन के अधिकार में भोजन का अधिकार भी शामिल होता है। इसीलिए अदालत ने राज्य को आदेश दिया कि वह दोपहर के भोजन की योजना **(मिड-डे मील)** सहित सभी लोगों को भोजन मुहैया कराने के लिए आवश्यक कदम उठाए।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- अनुच्छेद 21 द्वारा दिए गए जीवन के अधिकार का दायरा बहुत व्यापक है। 'जीवन' का मतलब केवल **जैविक अस्तित्व** **(Biological existence)** बनाए रखने से कहीं ज्यादा होता है। इसका मतलब केवल यह नहीं है कि कानून के द्वारा तय की गई प्रक्रिया जैसे मृत्युदंड देने और उसे लागू करने के अलावा और किसी तरिके से किसी की जान नहीं ली जा सकती। जीवन के अधिकार का यह एक आयाम है। इस अधिकार का इतना ही महत्त्वपूर्ण पहलू **आजीविका का अधिकार** (Right to livelihood) भी है क्योंकि कोई भी व्यक्ति जीने के साधनो यानी आजीविका के बिना जीवित नहीं रह सकता।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत **पानी के अधिकार** को जीवन के अधिकार का हिस्सा माना गया है।
- उच्च न्यायालयो और सर्वोच्च न्यायालय ने कई मुकदमों में यह कहा है कि सुरक्षित पेयजल का अधिकार भी **मौलिक अधिकारों** **(Fundamental Rights)** में से एक है। 2007 में आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने पानी में गंदगी के सवाल पर महबूब नगर जिले के एक किसान द्वारा लिखे गए पत्र के आधार पर चली सुनवाई में इस बात को फिर दोहराया है।
- **सुभाष कुमार बनाम बिहार राज्य** (1991) के मुकदमे में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि जीवन का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार है और इसमें प्रदूषण-मुक्त हवा और पानी का अधिकार भी शामिल है। यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह प्रदूषण पर अंकुश लगाने, नदियों को साफ रखने और जो दोषी हैं उन पर भारी जुर्माना लगाने के लिए कानून और प्रक्रियाएँ तय करे।
- गाड़ियों से उत्सर्जित धुआं पर्यावरणीय प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत हैं। 1998 के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने अपने कई फैसलों में यह आदेश दिया कि दिल्ली में डीजल से चलने वाले सभी सार्वजनिक वाहन कम्प्रेस्ड नेचुरल गैस **(सी.एन.जी.) ईंधन** का इस्तेमाल करें। इन प्रयासों से दिल्ली जैसे शहरों के वायु प्रदूषण में काफी गिरावट आई है। लेकिन **सेंटर फॉर साइंस ऐण्ड एनवायरनमेंट** (नयी दिल्ली) की एक तजा रिपोर्ट में कहा गया है कि हवा में विषैले पदार्थों का स्तर काफी ऊँचा है। ये विषैले पदार्थ पेट्रोल की बजाय डीजल से चलने वाली बसों/कारों के कारण पैदा हो रहे हैं।

SACHIN ACADEMY 9955697782

अनुच्छेद 22 (Article 22)

- संविधान के अनुच्छेद 22 के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को एक वकील के जरिये अपना बचाव करने का मौलिक अधिकार प्राप्त है।
- संविधान के अनुच्छेद 22 और फौजदारी कानून में प्रत्येक गिरफ्तार व्यक्ति को निम्नलिखित मौलिक अधिकार दिए गए हैं-
- गिरफ्तारी के समय उसे यह जानने का अधिकार है कि गिरफ्तारी किस कारण से की जा रही है।
- गिरफ्तारी **के 24 घंटों के भीतर मजिस्ट्रेट** के सामने पेश होने का अधिकार
- गिरफ्तारी के दौरान या हिरासत में किसी भी तरह के दुर्व्यवहार या यातना से बचने का अधिकार
- पुलिस हिरासत में दिए गए इकबालिया बयान को आरोपी के खिलाफ सबूत के तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।
- 15 साल से कम उम्र के बालक और किसी भी महिला को केवल सवाल पूछने के लिए थाने में नहीं बुलाया जा सकता
- सर्वोच्च न्यायालय ने किसी भी व्यक्ति की गिरफ्तारी, हिरासत और पूछताछ के बारे में पुलिस एवं अन्य संस्थाओं के लिए कुछ खास **शर्त और प्रतिक्रियाएं** तय की हुई हैं। इन नियमों को **डी. के. बसु दिशानिर्देश** कहा जाता है। इनमें से कुछ दिशानिर्देश इस प्रकार हैं-
- गिरफ्तारी या जाँच करने वाले पुलिस अधिकारी की पोशाक पर उसकी पहचान, नामपटी तथा पद स्पष्ट व सटीक रूप से अंकित होना चाहिए।
- गिरफ्तारी के समय अरेस्ट ममो के रूप में गिरफ्तारी सम्बन्धी पूरी जानकारी का कागज तैयार किया जाए। उसमे गिरफ्तारी के समय व तारीख का उल्लेख होना चाहिए। उसके सत्यापन के लिए कम से कम एक गवाह होना चाहिए। वह गिरफ्तार सदस्य के परिवार का व्यक्ति भी हो सकता है। **अरेस्ट मेमो** पर गिरफ्तार होने वाले व्यक्ति के दस्तखत होने चाहिए।
- गिरफ्तार किए गए, हिरासत में रखे गए या जिससे पूछताछ की जा रही है, ऐसे व्यक्ति को अपने किसी सम्बन्धी या **दोस्त** या **शुभचिंतक** को जानकारी देने का अधिकार होता है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

- जब गिरफ़्तार व्यक्ति का दोस्त या सम्बन्धी उस जिले से बाहर रहता हो तो गिरफ़्तारी के 8-12 घंटे के भीतर उसे गिरफ़्तारी के समय, स्थान और हिरासत की जगह के बारे में जानकारी भेज दी जानी चाहिए।

अनुच्छेद 39-ए (Article 39A)

संविधन के अनुच्छेद 39-ए में ऐसे नागरिकों को वकील मुहैया कराने की जिम्मेदारी राज्य के ऊपर सौंपी गई है जो गरीबी या किसी और वजह से वकील नहीं रख सकते।

आदिवासी (Tribal)

- भारत की लगभग **8 प्रतिशत** आबादी आदिवासियों की है। आदिवासियों को **जनजाति** भी कहा जाता है। सरकारी दस्तावेजों में आदिवासियों के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। आदिवासी समुदायों की एक सरकारी सूची भी बनाई गई है। अनुसूचित जनजातियों को कई बार अनुसूचित जातियों के साथ मिलाकर भी देखा जाता है।
- उन्नीसवीं सदी में बहुत सारे आदिवासियों ने **ईसाई धर्म** अपनाया जो आधुनिक आदिवासी इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण धर्म बन गया।
- आदिवासियों में **संथाली** बोलने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है। उनकी अपनी पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं। इंटरनेट पर भी उनकी पत्रिकाएँ मौजूद हैं।
- औपनिवेशिक शासन से पहले आदिवासी समुदाय शिकार और चीजे बीनकर आजीविका चलाते थे। वे **स्थानांतरित खेती** (shifting cultivation) के साथ-साथ लंबे समय तक एक स्थान पर भी खेती करते थे।

- झारखंड और आसपास के इलाकों के आदिवासी 1830 के दशक से ही बहुत बड़ी संख्या में भारत और दुनिया के अन्य इलाकों **मॉरेसिस, कैरिबियन** और यहाँ तक कि ऑस्ट्रेलिया में जाते रहे हैं। भारत का चाय उद्योग असम में उनके श्रम के बूते ही अपने पैरों पर खड़ा हो पाया है। आज अकेले **असम में 70 लाख** आदिवासी हैं। इस विस्थापन की कहानी भीषण कठिनाइयों, यातना, विरह और मौत की कहानी रही है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- उन्नीसवीं सदी में ही इन पलायन के कारण 5 लाख आदिवासी मौत के मँहु में जा चुके थे।
- उड़ीसा के **कालाहाँडी** जिले में स्थित न्यामगिरी पहाड़ी यह **डोंगरिया कोंड** नामक आदिवासी समुदाय का इलाका है। **न्यामगिरी** इस समुदाय का पवित्र पर्वत है। एक बड़ी एल्यूमीनियम कंपनी यहाँ खान और शोधक संयंत्र (Purifier plant) लगाना चाहती है। यह योजना इस आदिवासी समुदाय को विस्थापित कर देगी। इस समुदाय के लोगों ने इस प्रस्तावित योजना का जमकर विरोध किया है। पर्यावरणवादी भी उनका समर्थन कर रहे हैं। सर्वोच्च न्यायालय में कंपनी के खिलाफ मुकदमा भी चल रहा है।

- आदिवासी लगभग 10,000 **तरह के पौधों** का इस्तेमाल करते हैं। उनमें से लगभग 8,000 **प्रजातियाँ** **(species)** दवाइयों के तौर पर 325 प्रजातियाँ कीटनाशकों **(pesticides)** के तौर पर 425 प्रजातियाँ गोंद **(gums)**, रेशिन **(resins)** और डाई के तौर पर और 550 प्रजातियाँ रेशों **(fibres)** के लिए इस्तेमाल की जाती हैं। इनमें से 3500 प्रजातियाँ भोजन के रूप में इस्तेमाल होती हैं। जब आदिवासी समुदाय वन भूमि पर अपना अधिकार खो देते हैं तो यह सारी ज्ञान संपदा भी खत्म हो जाती है।
- भारत में 104 राष्ट्रीय पार्क (40,501 वर्ग किलोमीटर) और 543 वन्य जीव अभयारण्य (1,18,918 वर्ग किलोमीटर) हैं। ये ऐसे इलाके हैं जहाँ मूल रूप से आदिवासी रहा करते थे। अब उन्हें वहाँ से उजाड़ दिया गया है। अगर वे इन जंगलों में रहने की कोशिश करते हैं तो उन्हें **घुसपैठिया** **(encroachers)** कहा जाता है।
- आदिवासी कार्यकर्ता **सी.के जानू** का आरोप है कि आदिवासियों के संवैधानिक कानूनों का उल्लंघन करने वालों में विभिन्न प्रदेशों की सरकारें भी पीछे नहीं हैं। यही सरकारें हैं जो लकड़ी व्यापारी, पेपर मिल आदि के नाम पर गैर-आदिवासी घुसपैठियों को जनजातीय जमीनों का दोहन करने और आदिवासियों को उनके परंपरागत जंगलों से उजाड़ने की छूट देती हैं। इसके अलावा जंगलों को **आरक्षित या अभयारण्य** (sanctuary) घोषित करके भी लोगों को वहाँ से बेदखल किया जा रहा है। जानू का यह भी कहना है कि जो आदिवासी पहले ही बेदखल हो चुके हैं और जो अब वापस

SACHIN ACADEMY 9955697782

नहीं लौट सकते, उन्हें भी मुआवजा दिया जाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि सरकार ऐसी योजनाएँ बनाए जिनके सहारे वे नए स्थानो पर रह सके आरै काम कर सके । जब सरकार आदिवासियों से छीनी गई जमीन पर **औद्योगिक या अन्य परियोजनाओं** के निर्माण के लिए बे हिसाब पैसा खर्च कर सकती है तो इन विस्थापितों को पुनर्वास देने के लिए मामूली सा खर्चा करने में क्यों हिचकिचाती है।

- केंद्र सरकार ने हाल ही में अनुसूचित जनजाति एवं अन्य परंपरागत वनवासी **(वन अधिकार मान्यता) अधिनियम,** 2006 पारित किया है। इस कानून की प्रस्तावना में कहा गया है कि यह कानून जमीन और संसाधनों पर वन्य समुदायों के अधिकारों को मान्यता न देने के कारण उनके साथ हुए
- ऐतिहासिक अन्याय को दूर करने के लिए पारित किया गया है। इस कानून में वन्य समुदायों को घर के आस-पास जमीन, खेती और चराई योग्य जमीन और गैर-लकड़ी वन उत्पादों पर उनके अधिकार को मान्यता दी गई है। इस कानून में यह भी कहा गया है कि वन एवं **जैव-विविधता** (Biodiversity) संरक्षण भी वनवासियों के अधिकारों में आता है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

संघवाद (Federalism)

संघवाद इसका मतलब है देश में एक से ज्यादा स्तर की सरकारों का होना। हमारे देश में राज्य स्तर पर भी सरकारें हैं और केंद्र स्तर पर भी। पंचायती राज व्यवस्था शासन का तीसरा स्तर है

- **जब संविधान सभा** ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के सिद्धान्त को स्वीकृति दी तो सभा के सदस्य ए. के. अय्यर ने कहा था कि यह कदम आम आदमी और लोकतांत्रिक शासन की सफलता में गहरी आस्था का **द्योतक और इस विश्वास** पर आधारित है कि वयस्क मताधिकार के जरिये लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना ज्ञानोदय लाएगी। आम आदमी के कुशलक्षेम, जीवन स्तर, सुविधा और बेहतर जीवन स्थिति को प्रोत्साहन देगी

- ❖ **1934 में भारतीय** राष्ट्रीय कांग्रेस ने संविधान सभा के गठन की माँग को पहली बार अपनी अधिकृत नीति में शामिल किया।
- ❖ **दिसंबर** 1946 में संविधान सभा का गठन किया गया।

संसदीय शासन पद्धति

संसदीय शासन पद्धति में सरकार के सभी स्तरों पर प्रतिनिधियों का चुनाव लोग खुद करते हैं.

शक्तियों का बँटवारा

शक्तियों का बँटवारा- संविधान के अनुसार सरकार के तीन अंग हैं **विधायिका** (Legislature), **कार्यपालिका** (Executive) **और न्यायपालिका** (Judiciary) । विधायिका में हमारे निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं। कार्यपालिका ऐसे लोगों का समूह है जो कानूनों को लागू करने और शासन चलाने का काम देखते हैं। न्यायालयों की व्यवस्था को न्यायपालिका कहा जाता है।

मौलिक अधिकार (Fundamental Rights)

मौलिक अधिकारों वाला खंड भारतीय संविधान की '**अंतरात्मा**' (Conscience) भी कहलाता है। डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि इनका **दोहरा उद्देश्य** है पहला, हरेक नागरिक ऐसी स्थिति में हो कि वह उन अधिकारों के लिए दावेदारी कर सके और दूसरा, ये अधिकार हर उस सत्ता और संस्था के लिए **बाध्यकारी** (Compulsive) हों जिसे कानून बनाने का अधिकार दिया गया है।मौलिक अधिकारों के अलावा हमारे संविधान में एक खंड **नीति निर्देशक तत्त्वों** (Directive Principles) का भी है। संविधान सभा के सदस्यों ने यह खंड इसलिए जोड़ा था ताकि और ज्यादा सामाजिक व आर्थिक सुधार लाए जा सके ।

मौलिक कर्तव्य (Fundamental Duty)

मौलिक कर्तव्यों को 1976 में संविधान में जोड़ा गया, हर माता-पिता या संरक्षक 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के अपने बच्चों या अपने पाल्य को शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करे। यह कर्तव्य 2002

SACHIN ACADEMY 9953697782

में संविधान में जोड़ा गया। वर्तमान में मौलिक कर्तव्यों की संख्या 11 है।

धर्मनिरपेक्षता (Secularism)

- धर्मनिरपेक्ष राज्य वह होता है जिसमें राज्य अधिकृत रूप से किसी भी धर्म को राजकीय धर्म के रूप में बढ़ावा नहीं देता भारतीय संविधान में कहा गया है कि भारतीय राज्य **धर्मनिरपेक्ष** (Secular) रहेगा। हमारे संविधान के अनुसार, केवल धर्मनिरपेक्ष राज्य ही अपने उद्देश्यों को साकार करते हुए निम्नलिखित बातों का खयाल रख सकता है कि-
- कोई एक धार्मिक समुदाय किसी दूसरे धर्मिक समुदाय को न दबाए
- कुछ लोग अपने ही धर्म के अन्य सदस्यों को न दबाएँ और
- राज्य न तो किसी खास धर्म को **थोपेगा** और न ही लोगों की धार्मिक स्वतंत्राता **छीनेगा।** भारतीय राज्य की बागडोर न तो किसी एक धर्मिक समूह के हाथों में है और न ही राज्य किसी एक धर्म को समर्थन देता है।
- धार्मिक वर्चस्व को रोकने के लिए भारतीय धर्मनिरपेक्षता का दूसरा तरीका है **अहस्तक्षेप की नीति** (Laissez faire policy)**।** इसका मतलब है कि सभी धर्मों की भावनाओं का सम्मान करने और धार्मिक क्रियाकलापों में दखल न देने के लिए, राज्य के खास धार्मिक समुदायों को कुछ विशेष छूट देता है।कि विधायिका किसी भी धर्म को **राजकीय धर्म** (State religion) घोषित नहीं कर सकती, न ही **विधायिका** (Legislature) किसी एक धर्म को ज्यादा प्राथमिकता दे सकती है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

- 24 **जनवरी** 1950 को संविधान सभा के विभिन्न सदस्य अपनी आखिरी बैठक संविधान सभा के **अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद** थे।
- **फरवरी** 2004 **में फ्रांस** में एक कानून बनाया गया। इस कानून में प्रावधन किया गया कि कोई भी विद्यार्थी इस्लामी बुरका, यहूदी टोपी या बड़े-बड़े ईसाई क्रॉस जैसे धार्मिक अथवा राजनीतिक चिन्हो या प्रतीकों को धारण करके स्कूल में नहीं आएगा। फ्रांस में रहने वाले उन आप्रवासियों ने इस कानून का काफी विरोध किया। वे मुख्यतया अल्जीरिया, **ट्यूनीशिया और मोरक्को** आदि उन देशों से आए थे जो पहले

फ्रांस के उपनिवेश थे। 1960 के दशक में फ्रांस में मजदूरो की कमी हो गई थी। उस समय इन आप्रवासियों को फ्रांस आकर काम करने के लिए वीजा यानी प्रवेश पत्र दिए गए थे। इन आप्रवासियों की बेटियाँ स्कूल में अकसर सिर पर रूमाल बाँधकर जाती हैं। लेकिन इस नए कानून के लागू होने के बाद उन्हें सिर पर रूमाल बाँधने के कारण स्कूलो से निकाल दिया गया है।

❖ **भारत 15 अगस्त 1947** को आजाद हुआ।

❖ **1885 में ही भारतीय** राष्ट्रीय कांग्रेस ने माँग की कि विधायिका में निर्वाचित सदस्य होने चाहिए और उन्हें बजट पर चर्चा करने एवं प्रश्न पूछने का अधिकार मिलना चाहिए। 1909 में बने **गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट** ने कुछ हद तक निर्वाचित प्रतिनिधित्व की व्यवस्था को मंजूरी दे दी।

❖ **2004 के आम** चुनावों में पहली बार पूरे देश में ई.वी.एम. का इस्तेमाल किया गया था। इस चुनाव में ई.वी.एम. के इस्तेमाल से लगभग 150000 पेड़ों की रक्षा हुई क्योंकि मतपत्रों की छपाई के लिए इन पेड़ों को काट कर 8,000 टन कागज बनाना पड़ता।

❖ **प्रतिनिधि सहमति** का विचार लोकतंत्र का प्रस्थानबिंदु होता है। सहमति का मतलब है चाह, स्वीकृति और लोगों की हिस्सेदारी।

SACHIN ACADEMY 9955697782

हमारा संविधान

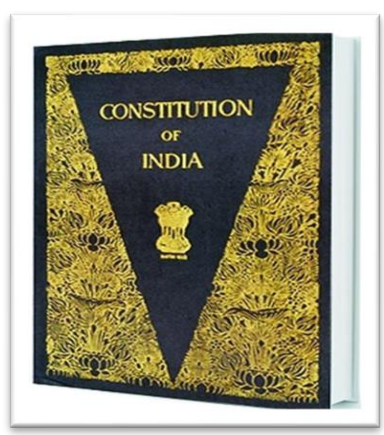

➢ सन् 1946 में एक संविधान सभा बनाई गई। इसमें 389 लोग थे जो भारत के हर प्रान्त से आए थे। कुछ लोग जिनके नाम थे

सरोजनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, मौलाना अबुल कलाम आजाद, जवाहरलाल नेहरू, एच.वी .कामथ ।

- डॉ .राजेन्द्र प्रसाद इस सभा के अध्यक्ष थे । संविधान सभा की एक प्रारूप समिति भी बनी जिसने संविधान लिखने का काम किया। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर इस समिति के अध्यक्ष थे। 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू होने के बाद ही अपने देश में लोगों द्वारा चुनी गई सरकार का शासन शुरू हुआ, इसीलिए हर साल 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है।
- डॉ० भीमरॉव अम्बेडकर ने लन्दन में गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था। उन्होंने दलितों के लिए अलग से निर्वाचन की माँग की जिसके फलस्वरूप विधान मण्डलों में दलितों के स्थान आरक्षित कर दिए गए।
- भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा एवं लिखित संविधान है। इसमें आवश्यकता पड़ने पर संशोधन एवं परिवर्तन किया जा सकता है। मूल संविधान में कुल 22 भाग 395 अनुच्छेद व 8 अनुसूचियाँ थीं। वर्तमान में अनुसूचियों की संख्या बढ़कर 12 हो गई है।
- भारत का राष्ट्राध्यक्ष वंशानुगत न होकर निर्वाचित होता है इसलिए भारत को गणराज्य कहा गया है।
- 10 दिसम्बर, 1948 को संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की। पूरा विश्व 10 दिसम्बर को मानवाधिकार दिवस के रूप में मनाता है। भारत में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए 1993 में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन किया गया।

मौलिक अधिकार (Fundamental Rights)

मौलिक अधिकार के रूप में हमारे संविधान में छ :अधिकार दिए गए हैं जो इस प्रकार हैं-

1. समानता का अधिकार

- संविधान के अनुसार भारतीय नागरिकों के साथ समान रूप से व्यवहार किया जाएगा। किसी भी व्यक्ति को उसके जन्म स्थान, स्त्री या पुरुष, विशेष जाति या किसी धर्म के

SACHIN ACADEMY 9956697827

होने के आधार पर, सार्वजनिक जगहों जैसे- दुकानों, होटलों या सिनेमाघरों में जाने से रोका नहीं जा सकता है।

- इसी प्रकार सरकारी नौकरी में सभी को समान अवसर प्रदान किया गया है छुआ छूत- को अपराध घोषित किया गया है। सेना अथवा विद्या संबंधी उपाधि (अस्पृश्यता)

2. स्वतंत्रता का अधिकार

- भारत के सभी नागरिकों को विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।
- शांतिपूर्वक सम्मेलन करने की स्वतंत्रता।
- समिति या यूनियन बनाकर अपने अधिकारों के लिए लड़ने की स्वतंत्रता ।
- कहीं भी आने-जाने, रहने एवं बसने की स्वतंत्रता ।
- अपनी इच्छा के अनुसार रोजगार करने की स्वतंत्रता ।
- दोषसिद्धि से संरक्षण, जीवन जीने की एवं निजी स्वतंत्रत -।

शिक्षा का अधिकार- वर्ष 2002 में संविधान के 86वें संशोधन द्वारा अनुच्छेद 21ए में शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार में जोड़ दिया गया है जिसके अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराना सरकार का कर्तव्य है।
इस अधिकार को प्रभावी बनाने के लिए संसद द्वारा निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 (आर.टी.ई. 2009) पारित किया गया है।

SACHIN ACADEMY 9955697782

3. शोषण के विरुद्ध अधिकार

- शोषण के विरुद्ध अधिकारके अंतर्गत किसी भी व्यक्ति को तय नियत से कम मजदूरी या खराब परिस्थितियों में जबरदस्ती काम करने को मजबूर नहीं किया जा सकता।
- 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से मजदूरी नहीं करायी जा सकती है।
- बँधुआ मजदूरी पर रोक क्योंकि इस प्रथा में मजदूर के इस मौलिक अधिकार का हनन होता है

4. धर्म की स्वतन्त्रता का अधिकार

- भारत में सभी को अपने धर्म का पालन करने की स्वतन्त्रता है। किसी को भी व्यक्तिगत रूप से अपने रीति-रिवाजों का पालन करने से नहीं रोका जा सकता है। सभी को अपने धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करने की स्वतन्त्रता है।

5. संस्कृति एवं शिक्षा का अधिकार

- भारत के प्रत्येक नागरिक को अपनी भाषा, लिपि और संस्कृति को सुरक्षित रखने का अधिकार है।
- जिस धर्म या समाज के लोग कम संख्या में हैं उन्हें भी कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हैं। उन्हें अपने समाज में शैक्षिक संस्थाएँ खोलने का और अपनी भाषा एवं संस्कृति को आगे बढ़ाने का अधिकार है।

6. सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- कहीं पर यदि मौलिक अधिकारों का हनन हो रहा हो तो सीधे उच्चतम या उच्च न्यायालय में मुकदमा करने का अधिकार भी एक मौलिक अधिकार है।

मौलिकाधिकार पर रोक :- देश में बाहरी आक्रमण, युद्ध अथवा सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में आपातकाल लागू किया जा सकता है। आपातकाल के दौरान राष्ट्रहित में नागरिकों के कुछ मूल अधिकार स्थगित भी किए जा सकते हैं।

सूचना का अधिकार अधिनियम :- 2 मई 2005 में सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 संसद में पारित किया, जिसे 15 जून 2005 को राष्ट्रपति की अनुमति मिली और अन्ततः 12 अक्टूबर 2005 को यह कानून जम्मू-कश्मीर को छोड़कर पूरे देश में लागू किया गया। इसी के साथ सूचना की स्वतंत्रता विधेयक 2002 को निरस्त कर दिया गया।

मौलिक कर्तव्य (Fundamental Duty)

SACHIN ACADEMY 9956097782

मौलिक कर्तव्यों को 1976 में संविधान में जोड़ा गया, हर माता-पिता या संरक्षक 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के अपने बच्चों या अपने पाल्य को शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करे। यह कर्तव्य 2002 में संविधान में जोड़ा गया। वर्तमान में मौलिक कर्तव्यों की संख्या 11 है।

केंद्रीय व राज्य शासन व्यवस्था

संविधान में विषयों की सूचियां (Lists of subjects in the constitution)

संविधान में विभिन्न विषयों को **तीन सूचियों** में बाँट दिया गया - **केंद्रीय सूची** (Union List), **राज्य सूची** (State List) और **समवर्ती सूची** (Concurrent List)।

केंद्रीय सूची :- इस सूची के विषयों पर विधि (कानून) बनाने का अधिकार संसद को प्राप्त है, जिनमें से कुछ प्रमुख विषय हैं - रेल, जल परिवहन, हवाई जहाज, राष्ट्रीय राजगार्ग, बैंक, विदेशी मामले, स्मारक, रक्षा, संचार साधन, डाक एवं तार आदि ।

राज्य सूची :- इस सूची में शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे विषय लिए गए जिनकी ज़िम्मेदारी मुख्य रूप से राज्य सरकारों के ऊपर थी।

समवर्ती सूची :- इस सूची में वन एवं कृषि आदि ऐसे विषयों को रखा गया जिनके बारे में केंद्र और राज्य सरकारें, दोनों संयुक्त रूप से फैसला ले सकते थे।

SACHIN ACADEMY 9956697782

सरकार के अंग

	केन्द्र	राज्य	कार्य
1 व्यवस्थापिका	संसद	विधानमंडल	कानून बनाना
2 कार्यपालिका	केन्द्रीय मंत्रिपरिषद	राज्य मंत्रिपरिषद्	कानून लागू करना
3 न्यायपालिका	उच्चतम न्यायालय	उच्च न्यायालय	कानून का पालन कराना

संसद (Parliament)

संघ (केन्द्र) की व्यवस्थापिका को संसद कहते हैं। संसद का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है- देश के लिए कानून का निर्माण करना। भारतीय संसद, राष्ट्रपति और दो सदनों लोकसभा और राज्य सभा से मिलकर बनती है।

लोकसभा

- लोकसभा संसद का 'निम्न सदन' हैं। हर चुनाव क्षेत्र से एक सदस्य चुनकर लोक सभा में आते हैं। लोक सभा की अधिकतम संख्या 552 हो सकती जिनमे राज्यों के मतदाताओं द्वारा निर्वाचित 530 सदस्य। केन्द्र शासित क्षेत्रों के मतदाताओं द्वारा निर्वाचित 20 सदस्य।
- 1952 से लेकर 2020 के बीच, भारत सरकार की सलाह पर भारत के राष्ट्रपति, आंग्ल भारतीय समुदाय के-2 अतिरिक्त सदस्यों को मनोनीत कर सकते थे, जिसे 104वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2019 द्वारा, जनवरी 2020 में समाप्त कर दिया गया था। आज लोकसभा में कुल सीटों की संख्या 550 है।

SACHIN ACADEMY

योग्यताएँ

- भारत का नागरिक हो व मतदाता सूची में उसका नाम हो।
- 25 साल या उससे अधिक आयु हो।
- किसी सरकारी लाभ के पद पर न हो
- पागल या दिवालिया न हो

लोकसभा का कार्यकाल

- लोक सभा के सदस्य 5 वर्ष के लिए चुने जाते हैं लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर राष्ट्रपति इसके पहले भी लोक सभा को भंग कर सकता है।

अधिवेशन

- लोकसभा के अधिवेशन साल में दो बार अवश्य होने चाहिए। दोनों अधिवेशनों के बीच छः महीने से अधिक का अन्तर नहीं होना चाहिए।

राज्य सभा

राज्य सभा संसद का उच्च सदन है। इसके सदस्यों की संख्या अधिक से अधिक 250 हो सकती है। इनमें से 12 सदस्यों को राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किया जाता है।

चूँकि इनका चुनाव सीधे जनता द्वारा नहीं होता है इसलिए इस प्रकार के चुनाव को 'अप्रत्यक्ष चुनाव' कहते हैं। राज्य सभा का सदस्य वही व्यक्ति हो सकता है जिसकी आयु 30 वर्ष या उससे अधिक हो। शेष योग्यताएँ वही होती हैं जो लोकसभा के सदस्यों के लिए निश्चित की गई हैं। परन्तु कोई व्यक्ति एक ही समय में संसद के दोनों सदनों का सदस्य नहीं हो सकता।

SACHIN ACADEMY 9956977782

सदस्यों का कार्यकाल

- राज्य सभा के सदस्यों का कार्यकाल छः वर्ष है। इसके एक तिहाई सदस्य हर दो वर्ष बाद अवकाश ग्रहण करते हैं और उनके स्थान पर नये सदस्य चुनकर आते हैं।
- इस प्रकार राज्यसभा कभी भंग नहीं होती है। इसीलिए इसे 'स्थायी सदन' कहा जाता है।

राज्यसभा के पदाधिकारी

- भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है। यह राज्यसभा की कार्यवाही का संचालन करता है जब सभापति उपस्थित नहीं रहता तब उसके स्थान पर उपसभापति कार्य करता है।

अधिवेशन (बैठक)

- राज्यसभा का वर्ष में दो बार अधिवेशन) बैठक (होना आवश्यक है। एक बैठक और दूसरी बैठक के बीच छ :माह से अधिक का अन्तर नहीं होना चाहिए।

कानून निर्माण की प्रक्रिया

जिस विषय पर कानून बनाना होता है उसका एक प्रस्ताव तैयार किया जाता है, उसे विधेयक कहते हैं। राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद विधेयक कानून बन जाता है।

साधारण विधेयक

- साधारण विधेयक लोकसभा या राज्यसभा में से किसी में भी पहले पेश किया जाता है। इस विधेयक को कोई भी मंत्री पेश कर सकता है। साधारण विधेयक तीन चरणों में पारित होता है जिसे तीन वाचन कहते हैं।

धन विधेयक

- धन से सम्बन्ध रखने वाले विधेयक लोकसभा में ही प्रस्तुत किये जा सकते हैं। राज्यसभा में उन पर केवल चर्चा की जाती है। राज्यसभा केवल 14 दिन के लिए धन विधेयक अपने पास रख सकती है।
- कोई वित्त विधेयक धन विधेयक है या नहीं, इसका निर्धारण लोकसभा स्पीकर (अध्यक्ष) द्वारा किया जाता है।

SACHIN ACADEMY 9956977782

भारत का राष्ट्रपति

संघ की कार्यपालिका का प्रधान राष्ट्रपति होता है। वह भारत का प्रथम नागरिक होता है। वह भारत की तीनों सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति होता है। समस्त कार्यपालिका शक्तियाँ राष्ट्रपति को प्राप्त हैं, परन्तु वास्तविक शक्तियाँ प्रधानमंत्री एवं उसकी मंत्रिपरिषद् में निहित होती हैं।
राष्ट्रपति देश का औपचारिक प्रधान होता है ।

राष्ट्रपति का चुनाव

- राष्ट्रपति का चुनाव एक निर्वाचक मण्डल के द्वारा किया जाता है, जिसमें संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य। राज्यों की विधानसभाओं तथा दिल्ली एवं पुदुच्चेरी संघ राज्य क्षेत्र की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य सम्मिलित होते हैं।

राष्ट्रपति का कार्यकाल

- राष्ट्रपति का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है लेकिन राष्ट्रपति की मृत्यु होने, त्यागपत्र देने पर पद रिक्त हो सकता है। वह अपना त्यागपत्र उपराष्ट्रपति को देता है।
- इसके अतिरिक्त यदि राष्ट्रपति संविधान के प्रावधानों का उल्लंघन करे तो उसे संसद द्वारा महाभियोग की प्रक्रिया से हटाया जा सकता है। उसे हटाने का प्रस्ताव संसद के किसी भी सदन में रखा जा सकता है।

राष्ट्रपति पद के लिए योग्यताएँ

- वह भारत का नागरिक हो।
- 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।
- वह किसी लाभ के पद पर न हो।
- लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने की योग्यता रखता हो।

नियुक्ति संबंधी शक्तियाँ

- राष्ट्रपति प्रधानमंत्री को नियुक्त करता है।
- प्रधानमंत्री की सलाह पर अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है तथा उनके विभागों का बँटवारा करता है।
- राष्ट्रपति राज्यपालों, उच्चतम व उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है।
- निर्वाचन आयोग के मुख्य निर्वाचन आयुक्त एवं अन्य आयुक्तों, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की नियुक्ति भी राष्ट्रपति करता है।
- राष्ट्रपति मृत्युदण्ड, अन्य दण्ड प्राप्त व्यक्तियों को क्षमा कर सकता है या दण्ड को कुछ समय के लिए स्थगित एवं परिवर्तित कर सकता है।

राष्ट्रपति की आपातकालीन शक्तियाँ

- युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में) राष्ट्रीय आपात (लगा सकता है।
- राज्यों में संवैधानिक तंत्र विफल होने पर) राष्ट्रपति शासन (लगा सकता है।
- वित्तीय संकट के समय) वित्तीय आपात (लगा सकता है।

SACHIN ACADEMY 9953697782

भारत का उपराष्ट्रपति

भारत का उपराष्ट्रपति पाँच वर्ष के लिए चुना जाता है। उपराष्ट्रपति को लोकसभा और राज्यसभा के सभी सदस्य मिलकर चुनते हैं। उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है। राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में उपराष्ट्रपति उसके स्थान पर कार्य करता है।

उपराष्ट्रपति स्वेच्छा से अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को दे सकता है अथवा राज्यसभा के प्रस्ताव पर लोकसभा की सहमति से हटाया जा सकता है।

उपराष्ट्रपति पद के लिए योग्यताएँ

- वह भारत का नागरिक हो।
- 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।
- वह किसी लाभ के पद पर न हो।
- राज्यसभा का सदस्य बनने की योग्यता रखता हो।

SACHIN ACADEMY 9955697782

प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद्

- प्रधानमंत्री के सुझाव पर राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद् के सदस्यों की नियुक्ति करता है। प्रधानमंत्री किसी मंत्री को हटाने अथवा नए मंत्री बनाने की राष्ट्रपति से संस्तुति करता है। सभी मंत्रियों का लोकसभा या राज्यसभा का सदस्य होना जरूरी है, नहीं तो उसे छ :महीने के अन्दर ही संसद के सदस्य के रूप में निर्वाचित होना पड़ता है।

- मंत्रिपरिषद् के कार्यों पर संसद नियंत्रण करती है। यदि मंत्रिपरिषद् और प्रधानमंत्री ठीक से काम न करें तो उन्हें लोकसभा द्वारा हटाया जा सकता है। इन्हें हटाने के लिए लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पेश किया जा सकता है।

न्यायालय

सर्वोच्च न्यायालय

- यह देश का सर्वोच्च अपीलीय न्यायालय है जो नई दिल्ली में स्थित है। इसके निर्णय देश के सभी न्यायालय को

मानने होते हैं।

- भारत में सर्वोच्च न्यायालय अपील का अन्तिम न्यायालय है। भारत का उच्चतम न्यायालय नागरिकों के मूल अधिकारों का संरक्षक है।
- यदि संसद कोई ऐसा कानून बनाती है जो संविधान के प्रावधानों के विरुद्ध हैं तो उच्चतम न्यायालय उस कानून को असंवैधानिक घोषित करके रद्द कर सकता है।
- सर्वोच्च न्यायालय भारतीय संविधान का संरक्षक व उसके प्रावधानों की व्याख्या करता है।

न्यायाधीशों की योग्यताएँ

- भारत का नागरिक हो।
- वह किसी उच्च न्यायालय में कम से कम 5 वर्ष तक न्यायाधीश के पद पर कार्य कर चुका हो। या उच्च न्यायालय में दस वर्ष तक वकालत कर चुका हो। या भारत के राष्ट्रपति की दृष्टि में कानून का विशेष ज्ञाता हो।

कार्यकाल

- प्रत्येक न्यायाधीश 65 वर्ष की आयु तक अपने पद पर कार्य कर सकता है।

उच्च न्यायालय

उच्च न्यायालय राज्य में शीर्ष न्यायालय होता है। भारत में कुल 24 उच्च न्यायालय हैं।
उत्तर प्रदेश का उच्च न्यायालय इलाहाबाद में स्थित है।

कार्यकाल

- प्रत्येक न्यायाधीश 62 वर्ष की आयु तक अपने पद पर कार्य कर सकता है।

कार्य

- मौलिक अधिकारों की रक्षा करना।
- अधीनस्थ न्यायालयों से आए विवादों पर कानून के अनुसार फैसले देना।
- जनहित याचिकाओं पर फैसले सुनाना।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- अधीनस्थ न्यायालयों का निरीक्षण और पर्यवेक्षण करना।

जिला न्यायालय

जिला न्यायालय हर जिले में होता है जो दीवानी और फौजदारी मामलों की सुनवाई करता है। जिला न्यायालय उस राज्य के उच्च न्यायालय के अधीनस्थ होता है। जिला न्यायाधीश की नियुक्ति उस राज्य के राज्यपाल द्वारा की जाती है।

लोक अदालत

वे विषय और क्षेत्र जिनमे लोक अदालतें विवाद सुलझाती हैं -

वाहन दुर्घटना मुकदमा, पेंशन संबंधी मुकदमे, समझौते योग्य फौजदारी मुकदमा
बिजली, गृहकर, गृहऋण, उद्योगों और बैंको से संबंधित मुकदमे
भूमि अधिग्रहण संबंधी मुकदमे, विवाह/पारिवारिक मुकदमे, उपभोक्ता संबंधी मुकदमे

SACHIN ACADEMY 9955697782

अन्य महत्वपूर्ण बिंदु

- **फौजदारी मामले :-** ऐसा अपराध है जो मारपीट से संबंधित है। मारपीट, चोरी, डकैती, मिलावट करना, रिश्वत लेना, खतरनाक दवाएं बनाना -ये सब फौजदारी मामले हैं।
- **दीवानी मामले :-** जमीन-जायदाद के झगड़े या मज़दूर-मालिक के बीच मज़दूरी के झगड़े, किसी के बीच पैसे के लेन-देन या व्यापार आदि के झगड़े होते हैं तो दीवानी मामले दर्ज कराए जाते हैं।
- परिवार न्यायालय अधिनियम 1984 के तहत विभिन्न राज्यों में परिवार न्यायालयों का गठन हुआ।
- उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 के तहत हर भारतीय उपभोक्ता को संरक्षण दिया जाता है।

- 1980 के दशक में सर्वोच्च न्यायालय ने जनहित याचिका व्यवस्था लागू की। इसको प्रारम्भ करने का श्रेय जस्टिस P.N भगवती को जाता है।
- स्वतंत्र न्यायपालिका लोकतंत्र का तीसरा महत्वपूर्ण आधार है।"

- वही व्यक्ति विधान सभा का चुनाव लड़ सकता है, जो 25 वर्ष या उससे अधिक आयु का हो विधानसभा के सदस्यों को विधायक या M.L.A कहा जाता है।
- उत्तर प्रदेश विधान सभा द्विसदनीय विधान मण्डल का निचला सदन है। इसमें 403 निर्वाचित सदस्य तथा राज्यपाल द्वारा मनोनीत एक आंग्ल भारतीय सदस्य होते हैं।
- उत्तर प्रदेश विधान परिषद् में 100 सदस्य होते हैं। इसमें 38 सदस्य विधानसभा द्वारा, 36 सदस्य स्थानीय संस्थाओं द्वारा, 8 शिक्षकों द्वारा तथा 8 स्नातकों द्वारा निर्वाचित होते हैं। 10 सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- विधान परिषद् के सदस्य अपने बीच में से ही एक सभापति और एक उप सभापति चुनते हैं।
- उत्तर प्रदेश का विधानसभा भवन लखनऊ में स्थित है।

गठबंधन (Coalition)

इसका मतलब समूहों या दलों के तात्कालिक गठजोड़ से होता है गठबंधन शब्द का इस्तेमाल चुनावों के बाद किसी भी दल को बहुमत न मिलने की स्थिति में बनने वाले गठजोड़ के लिए किया गया है।

- **केंद्रीय सचिवालय (Central secretariat)** की दो मुख्य इमारतें हैं। इनमें से एक का नाम **साउथ ब्लॉक** और दूसरी का नाम **नॉर्थ ब्लॉक** है। इनका निर्माण 1930 के दशक में किया गया था।

SACHIN ACADEMY 9956097782

रॉलेट एक्ट

- रॉलेट एक्ट अंग्रेजो के मनमानेपन का एक और उदाहरण था। इस कानून के जरिये ब्रिटिश सरकार बिना मुकदमा चलाए लोगों को कारावास में डाल सकती थी। महात्मा गाँधी सहित सभी भारतीय राष्ट्रवादी नेता रॉलेट एक्ट के सख्त खिलाफ थे।
- भारतीय विरोध के बावजूद **10 मार्च 1919** से रॉलेट एक्ट को लागू कर दिया गया। पंजाब में इस कानून का भारी पैमाने पर विरोध होता रहा।
- इसी क्रम में 10 अप्रैल को **डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू** को गिरफ्तार कर लिया गया। इन नेताओं की गिरफ्तारियों के विरोध में 13 अप्रैल को अमृतसर के **जलियाँवाला बाग** में एक सभा का आयोजन किया गया। जिस समय यह सभा चल रही थी उसी समय **जनरल डायर** ब्रिटिश फौजी टुकड़ियों के साथ बाग में दाखिल हुआ। उसने बाहर निकलने का रास्ता बंद करके बिना चेतावनी दिए लोगों पर अंधाधुंध गोलियाँ चलवा दीं।
- इस हत्याकांड में कई सौ लोग मारे गए और असंख्य जख्मी हुए। मरने और घायल होने वालों में बहुत सारी औरतें और बच्चे भी थे।

1870 का राजद्रोह एक्ट

अंग्रेजी शासन के मनमानेपन की मिसाल था। इस कानून में राजद्रोह की परिभाषा बहुत व्यापक थी। इसके मुताबिक अगर कोई भी व्यक्ति ब्रिटिश सरकार का विरोध या आलोचना करता था तो उसे मुकदमा चलाए बिना ही गिरफ्तार किया जा सकता था।

- **घरेलू हिंसा कानून**, 2005 में महिलाओं की सुरक्षा की परिभाषा ने घरेलू शब्द की समझ को और अधिक व्यापक बना दिया है। अब ऐसी महिलाएँ भी घरेलू दायरे का हिस्सा मानी जाएँगी जो हिंसा करने वाले पुरुष के साथ एक ही मकान में 'रहती हैं या 'रह चुकी' हैं।

न्यायपालिका के कार्य (Functions Of Judiciary)

न्यायपालिका के कामो को मोटे तौर पर निनलिखित भागों में बाँटा जा सकता है-

SACHIN ACADEMY

विवादों का निपटारा (settlement of disputes) - न्यायिक व्यवस्था नागरिकों, नागरिक व सरकार, दो राज्य सरकारों और केंद्र व राज्य सरकारों के बीच पैदा होने वाले विवादों को हल करने की क्रियाविधि मुहैया कराती है।

न्यायिक समीक्षा (judicial review) - संविधान की व्याख्या का अधिकार मुख्य रूप से न्यायपालिका के पास ही होता है।

कानून की रक्षा और मौलिक अधिकारों का किर्यान्वयन (Protection Of Law And Execution Of Fundamental Rights)

संविधान के अनुच्छेद 21 में प्रत्येक नागरिक को जीवन का मौलिक अधिकार दिया गया है और इसमें स्वास्थ्य का अधिकार भी शामिल है।

- **उच्च न्यायालयों की स्थापना** सबसे पहले 1862 में कलकत्ता, बंबई और मद्रास में की गई ये तीनों **प्रेसिडेंसी** शहर थे। दिल्ली उच्चन्यायालय का गठन 1966 में हुआ। आज देश भर में **25 उच्च न्यायालय** हैं। बहुत सारे राज्यों के अपने उच्च न्यायालय हैं जब कि पंजाब और हरियाणा का एक साझा उच्चन्यायालय चंडीगढ़ में है। दूसरी तरफ चार **पूर्वोत्तर राज्यों** (Northeast states) असम, नागालैंड, मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश के लिए गुवाहाटी में एक ही उच्च न्यायालय रखा गया है। 1 जनवरी 2019 से आंध्र प्रदेश (अमरावती) और तेलंगाणा (हैदराबाद) में अलग-अलग उच्चन्यायालय है। ज्यादा से ज्यादा लोगों के नजदीक पहुँचने के लिए कुछ उच्चन्यायालयों की राज्य के अन्य हिस्सों में **खण्डपीठ** (Bench) भी हैं
- **अधीनस्थ अदालतों (Subordinate courts)** को कई अलग-अलग नामों से सम्बोधित किया जाता है। उन्हें **ट्रायल कोर्ट या जिला न्यायालय**, अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, प्रधान न्यायिक मजिस्ट्रेट, मेट्रोपालिटन मजिस्ट्रेट, सिविल जज न्यायालय आदि नामों से बुलाया जाता है।

SACHIN ACADEMY 9956697782

फौजदारी कानून (Criminal law)

1. ये ऐसे व्यवहार या क्रियाओ से संबंधित हैं जिन्हें कानून में अपराध माना गया है। उदाहरण के लिए चोरी, दहेज के लिए औरत को तंग करना, हत्या आदि।

2. इसमें सबसे पहले आमतौर पर प्रथम सूचना रिपोर्ट/प्राथमिकी (F.I.R) दर्ज कराई जाती है। इसके बाद पुलिस अपराध की जाँच करती है और अदालत में केस फाइल करती है।

3. अगर व्यक्ति दोषी पाया जाता है तो उसे जेल भेजा जा सकता है और उस पर जुर्माना भी किया जा सकता है।

दीवानी कानून (Civil law)

1 इसका संबंध व्यक्ति विशेष के अधिकारों के उल्लंघन या अवहेलना से होता है। उदाहरण के लिए जमीन की बिक्री, चीजों की खरीदारी, किराया, तलाक आदि से संबंध्ति विवाद।

2. प्रभावित पक्ष की ओर से न्यायालय में एक याचिका दायर की जाती है। अगर मामला किराये से सम्बंधित है तो मकान मालिक या किरायेदार मुकदमा दायर कर सकता है।

3. अदालत राहत की व्यवस्था करती है। उदाहरण के लिए अगर मकान मालिक और किरायेदार के बीच विवाद है तो अदालत यह आदेश दे सकती है कि किरायेदार मकान को खाली करे और बकाया किराया चुकाए।

SACHIN ACADEMY 9555697782

जनहित याचिका (Public interest litigation)

1980 के दशक में सर्वोच्च न्यायालय ने जनहित याचिका (P.I.L.) की व्यवस्था विकसित की थी अब सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय के नाम भेजे गए **पत्र या तार** (Telegram) को भी जनहित याचिका माना जा सकता है।

हाशियकरण समुदाय (Marginalization community)

- 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की आबादी में मुसलमानों की संख्या 14.2 **प्रतिशत** है। उन्हें हाशियाई समुदाय माना जाता है इस बात को ध्यान में रखते हुए

कि मुसलमान विकास के विभिन्न संकेतकों पर पिछड़े हुए हैं, सरकार ने 2005 में एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया। **न्यायमूर्ति राजिन्दर सच्चर की अध्यक्षता** में बनाई गई इस समिति ने भारत में मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति का जायजा लिया। रिपोर्ट में इस समुदाय के हाशियकरण का विस्तार से अध्ययन किया गया है।

- समिति की रिपोर्ट से पता चलता है कि विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं **शैक्षणिक संकेतकों** **(Educational indicators)** के हिसाब से मुसलमानों की स्थिति अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति जैसे अन्य हाशियाई समुदायों से मिलती-जुलती है। उदाहरण के लिए, 7-16 **साल** की उम्र के मुसलिम बच्चे अन्य सामाजिक-धर्मिक समुदायों के बच्चों के मुकाबले औसतन काफी कम साल तक ही स्कूली शिक्षा ले पाते हैं
- मुसलमानों के इसी सामाजिक हाशियकरण के कारण कुछ स्थितियों में वे जिन इलाकों में पहले से रहते आए हैं, वहाँ से निकलने लगे हैं जिससे अकसर उनका '**घेटोआइजेशन**' **(Ghettoisation)** होने लगता है। कभी-कभी यही **पूर्वाग्रह (Prejudice)** **घृणा और हिंसा** को जन्म देता है।
- **सच्चर समिति रिपोर्ट** ने मुसलमानों के बारे में प्रचलित दूसरी गलतफहमियों को भी उजागर कर दिया है। आमतौर पर माना जाता है कि मुसलमान अपने बच्चों को सिर्फ मदरसों में भेजना चाहते हैं। आँकड़ों से पता चलता है कि केवल 4 प्रतिशत मुसलमान बच्चे मदरसों में जाते हैं। मुसलमानों के 66 प्रतिशत बच्चे सरकारी और 30 प्रतिशत बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ रहे हैं।

कबीर

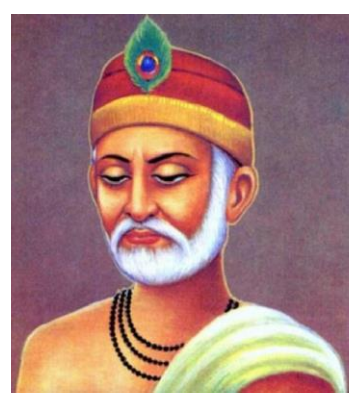

- कबीर पंद्रहवीं सदी के कवि थे। पेशे से **बुनकर (Weaver)** कबीर **भक्तिपरंपरा** से जुड़े थे। कबीर की कविता परमसत्ता के प्रति उनके प्रेम पर केंद्रित थी। उनका यह प्रेम रस्मों और पंडे-पुजारियों के चंगुल से आजाद था। उनकी कविताओं में ताकतवर लोगों की तीखी आलोचना दिखाई देती है। कबीर ने ऐसे लोगों पर बार-बार प्रहार

SACHIN ACADEMY 9955697782

किया जो अपनी धार्मिक और जातीय पहचानों के लिए लोगों को साँचे में कैद कर देते हैं।

- उनकी राय में हर व्यक्ति के पास **आध्यात्मिक मुक्ति** प्राप्त करने की क्षमता होती है और वे अपने अनुभवों के जरिये भीतर के गहरे ज्ञान को हासिल कर सकते हैं। उनके पद सभी मनुष्यों की समानता और श्रम की महत्ता के शक्तिशाली विचारों को सामने लाते हैं।
- वे एक साधारण कुम्हार बुनकर और घड़े में पानी लाती औरत, सबके श्रम का सम्मान करते हैं। उनके पदों में **श्रम ही समूचे ब्रहमांड** को समझने का आधार है। उनकी प्रत्यक्ष, साहस भरी चुनौती आज भी लोगों को प्रेरित करती है।
- उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, मध्य प्रदेश, बंगाल, बिहार और गुजरात में दलित, **हाशियाई समूह** और सामाजिक ऊँच -नीच से घृणा करने वाले लोग आज भी कबीर के पदों को गाते हैं।

- **अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति** (अत्याचार निवारण) अधिनियम यह कानून 1989 में दलितों तथा अन्य समुदायों की माँगों के जवाब में बनाया गया था।जाता है।
- **1993 में सरकार ने एम्प्लॉयमेंट ऑफ मैन्युअल स्केवेंजर्स एंड कंस्ट्रक्शन ऑफ ड्राई लैट्रीन्स (प्रॉहिबिशन) एक्ट,** 1993 पारित किया था। यह कानून सिर पर मैला उठाने वालों को काम पर रखने और सूखे शौचालयों के निर्माण पर पाबंदी लगाता है हाथ से मैला उठाने वाले कर्मियों के नियोजन का प्रतिषेध् और उनका पुनर्वास अधिनियम 6 दिसंबर 2013 से लागू हुआ है।
- **पानी से संबंधित बीमारियों** के कारण हर रोज 1600 से ज्यादा भारतीय मौत के मुँह में चले जाते हैं। उनमें से ज्यादातर पाँच साल से भी कम उम्र के बच्चे होते हैं।
- **भारतीय संविधन 6 से 14** वर्ष की आयु के सभी बच्चों को शिक्षा के अधिकार की गारंटी देता है। इस अधिकार का महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि सभी बच्चों को समान रूप से स्कूली शिक्षा उपलब्ध हो। लेकिन शिक्षा पर अध्ययन करने वाले कार्यकत्ताओं

एवं शोधर्थियों के निष्कर्षों से यह तथ्य सामने आया है कि भारत में स्कूली शिक्षा में हमेशा से काफी असमानता रही है

- **बजट में सरकार को** इस बात का भी ऐलान करना पड़ता है कि अगले साल की योजनाओं के लिए पैसे की व्यवस्था कहाँ से की जाएगी। जनता से मिलने वाला कर सरकार की आमदनी का मुख्य जरिया होता है।

पानी की आपूर्ति (water supplies)

- ग्रामीण इलाकों में मनुष्यों और **मवेशियों** (Cattle), दोनों के लिए पानी की जरूरत पड़ती है। यहाँ कुआँ, हैंडपंप, तालाब और कभी-कभार छत पर स्थित टंकियों से पानी मिलता है। इनमें से ज्यादातर निजी स्वामित्व में हैं। शहरी इलाकों के मुकाबले ग्रामीण इलाकों में सार्वजनिक जलापूर्ति का और भी ज्यादा अभाव है।
- शहरी इलाकों में प्रति व्यक्ति लगभग 135 **लीटर** पानी प्रतिदिन मिलना चाहिए। पानी की यह मात्रा लगभग 7 बाल्टी के बराबर है। शहरी जल आयोग ने यह मात्रा तय की है। लेकिन झुग्गी बस्तियों में लोगों को रोजाना प्रति व्यक्ति 20 **लीटर पानी (एक बाल्टी)** भी नहीं मिलता। दूसरी तरफ आलीशान होटलों में रहने वाले लोगों को रोजाना प्रति व्यक्ति 1600 **लीटर** (80 बाल्टी) तक पानी मिलता है।
- पानी की कमी के कारण बोलीविया आदि देशों में तो दंगे भी फेल गए जिसके दबाव में सरकार को जलापूर्ति व्यवस्था निजी हाथों से छीन कर दोबारा अपने हाथों में लेनी पड़ी।
- पानी के टैंकरों की दर सरकारी **जलापूर्ति विभाग** ही तय करता है और वही उन्हें काम करने की इजाजत देता है। इसलिए इन टैंकरों को **'अनुबंधित'** कहा जाता है।

- **न्यूनतम मेहनताना कानून (Minimum wage law)।** इसमें यह निश्चित किया गया है कि किसी की भी मेहनताना एक निर्धरित न्यूनतम राशि से कम नहीं होना चाहिए। शोषण से मुक्ति के अधिकार का अर्थ है कि किसी को भी कम मेहनता पर काम करने या बंधुआ मजदूर के तौर पर काम करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।

SACHIN ACADEMY 9955697782

- **संविधान में यह भी कहा गया है कि** 14 साल से कम उम्र के किसी भी बच्चे को किसी कारखाने या खदान या किसी अन्य खतरनाक व्यवसाय में काम पर नहीं रखा जाएगा।
- **40 लाख से .ज्यादा बच्चे विभिन्न व्यवसायों** में नौकरी करते हैं। इनमें से बहुत सारे बच्चे खतरनाक व्यवसायों में हैं। 2016 में संसद ने **बाल श्रम (child labour) (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम, 1986** में यह संसोधन **(amendment)** किया है कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के सभी व्यवसायों में तथा किशोरों (14-18 वर्ष) के जोखिमकारी व्यवसायों और प्रक्रियाओं में नियोजन करने पर प्रतिबंध है। बच्चों या किशोरों के नियोजन को अब एक संज्ञेय अपराध बना दिया गया है। 2017 में, एक ऑनलाइन पोर्टल, प्लेटफॉर्म. फॉर इफेक्टिव इनफोर्समेंट. फॉर नो चाइल्ड लेबर (पेंसिल) प्रारंभ हुआ है। यह पोर्टल शिकायतें दर्ज कराने, **Child Tracking** तथा राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना **(NCLP)** के कार्यान्वयन एवं मॉनिटरिंग के लिए है
- **1978 में मिक उत्पादन** कारखाने की स्थापना सुरक्षा मानकों के खिलाफ थी तो सरकार का कहना था कि प्रदेश को भोपाल के संयंत्रा में लगातार निवेश चाहिए ताकि रोजगार मिलते रहे

SACHIN ACADEMY 9755697782

SACHIN ACADEMY YouTube

https://www.youtube.com/channel/UC7Pb8pDlwmU8UvEx2Q6K5GA

CP STUDY POINT YouTube

https://www.youtube.com/results?search_query=CP+STUDY+POINT